प्रकाशक—

सुब्बय्या-शास्त्री न्यायतीर्थ,
गाँधी हिन्दी-पुस्तक भंडार;
कालबादेवी—बम्बई।

मुद्रक,
चिंतामण सखाराम देवळे,
'मुंबई-वैभव प्रेस,' सँढर्स्ट रोड,
गिरगांव—बम्बई।

पितृचरणेषु ।

लेखककी दो बातें

प्रिय देशबन्धु,

वन्दे मातरम्। भारतभक्त सी. ऐफ. ऐण्ड्रूयूज़का जीवन चरित्र आपके सम्मुख उपस्थित करते हुए इसके विषयमें दो बातें मुझे आपकी सेवामें निवेदन करनी हैं।

(१) यह जीवनी कैसे प्रारम्भ हुई ?

(२) इसके लिखनेका मुझे क्या अधिकार है ?

अक्टूबर सन् १९१८ में मेरे पूज्य पिताजी अत्यन्त बीमार होगये थे और उनके बचनेकी कोई आशा नहीं थी। जिस समय एक विद्यालयमें मैं अपने विद्यार्थियोंको पढ़ा रहा था मुझे अपनी बहनके एक पत्रद्वारा यह समाचार मिला। पत्र पढ़ते ही दिल घबड़ा गया। उस समयकी चिन्ताका स्मरण अब भी हृदयको व्यथित कर देता है। जब अनेक दुष्ट कल्पनायें मेरे मनको विचलित और अव्यवस्थित कर रही थीं मैंने क्लासकी पढ़ाई बन्द करके मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़की जीवनी प्रारम्भ की थी और इस प्रकार अपने व्यथित हृदयको सान्त्वना दी थी। यद्यपि मैं जानता हूं कि किसी पुस्तकमें अपनी इस प्रकार की निजी बात लिखना वास्तवमें अनुचित है तथापि मुझे आशा है कि सहृदय पाठक मेरी तत्कालीन मानसिक स्थितिका अनुमान करके मुझे उदारतापूर्वक क्षमा प्रदान करेंगे। सम्भव है कि किसी किसी सज्जनको इसमें ' भावुकता ' दीख पड़े उनसे मैं यही निवेदन करूंगा कि मेरी तुच्छ सम्मतिमें ' हृदय हीन नीरसता ' की अपेक्षा ' स्पष्ट भावुकता ' कहीं अच्छी चीज़ है और भाषा हृदयके भावोंको प्रगट करनेके लिये है, उनको दबानेके लिये नहीं।

भारतभक्त ऐण्ड्रूयूज़के चरित्रको अध्ययन करनेके लिये मुझे पूरा पूरा अवसर मिला है। गत ६½ वर्षसे मेरा उनके साथ पत्र व्यवहार रहा है पिछली ३½ वर्षोंसे उनके लेखोंका अनुवाद करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है और ल---

१ वर्ष मैं बराबर उन्हींकी सेवामें रहा हूं। उनके लिखे हुए सैकड़ों ही पत्र मैंने पढ़े हैं और उनके पास आई हुई सहस्रों ही चिट्ठियां मैंने खोलकर देखी हैं। मई जून की कड़ी दोपहरीमें अथवा जाड़ोंकी रातमें एक दो बजे तक लेख लिखते हुए उन्हें मैंने देखा है, रेलमें उनके साथ अनेक बार यात्रा की है और पचासों ही अवसरोंपर मुझे उनके साथ बातचीत करनेका अवसर प्राप्त हुआ है। इसके सिवाय जिन प्रवासी भारतीयोंके लिये मि. ऐण्ड्रयूज़के जीवनका सर्वोत्तम समय व्यय हो रहा है उन प्रवासी भाइयोंकी कुछ सेवा करनेका सौभाग्य मुझे भी मिला है। इन कारणोंसे मेरा यह प्रयत्न अनधिकार चेष्टा नहीं कहा जा सकता।

मालूम नहीं इस जीवनीको पढ़नेके बाद पाठकोंके विचार भारतभक्त मि.ऐण्ड्रयूज़के विषयमें किस प्रकारके होंगे, परन्तु बहुत दिनों तक उनके चरित्रको अध्ययन करके मैं तो विना किसी अत्युक्तिके कह सकता हूं कि उनका सत्संग मनको उत्साह दायक है, उनका सम्भाषण आत्माके लिये शिक्षाप्रद है और उनका आचरण हृदयको पवित्र करनेवाला है। अधिक क्या कहूं,

विद्या विलास मनसो धृतशील शिक्षाः
सत्यव्रता रहितमान मलापहाराः
संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः

शान्तिनिकेतन,
बोलपुर। }

विनीत
एक भारतीय हृदय

सम्पदं स्वयमुपागतां पुरो, मन्यसे ननु तृणाय लीलया ।
स्वेच्छयोरसि पुनर्विपत्तर्ति मालिकामिवनवां बिभर्ष्यहो ॥ १ ॥
त्यज्यसे यदि जनैर्निजैरपि, च्छिद्यसे कुवचनैश्चमर्म्मसु ।
पीड्यसेऽथ सततं यथा तथा, सत्यमल्पमपि नोत्सृजस्यहो ॥ २ ॥
नात्मने किमपि नाम काम्यते, दीनदैन्यदलने धृतं व्रतम् ।
दुष्करं जनहिताय कुर्वता, खिद्यते न कलयापि च त्वया ॥ ३ ॥
साधुना जयसि तन्न साधु यत् प्रीयसे द्विषति चापि सन्ततम् ।
कुप्यतेऽपि नहि कुप्यसि भ्रमे ऽप्येवमेव चरितं तवाद्भुतम् ॥ ४ ॥
एकतः सुचिरवासतः स्वयं दृष्टमत्र तव यत्स्वचक्षुषा ।
चिन्तयत्तदखिलं निरन्तरं चित्तमस्य मम विस्मितं परम् ॥ ५ ॥
वाच्यमन्यदिह किं, विचारयन् वेद्म्यहं मनसि सुस्फुटं खलु ।
ब्राह्मणोत्तमतया त्वमेव मे नेत्रयोः पतसि भारतेऽधुना ॥ ६ ॥
तां त्वदीयघनबाहुवेष्टनाश्लेषणोद्भवसुखावगाढ़ताम् ।
विस्मरेन्ननु कथं मनो मम त्वां नमामि शिरसा सुहृद्वर ॥ ७ ॥

शान्तिनिकेतनम्,
१९७७ वि. स.
चैत्र शुक्ल द्वितीया ।

श्रीविधुशेखरभट्टाचार्यः

Foreword.

It is not an easy thing for me to write a foreword to a life-sketch of Mr. Andrews between whom and me there exists a tie closer than between blood-brothers. But if I may say without presumption, I would like to note down my conviction that there does not exist in India a more truthful, more humble and more devoted servant of hers than C. F. Andrews. May the lesson of his life prove to the youth of India an encouragement for greater devotion to the motherland.

M. K. Gandhi.

भूमिका।

लेखक—महात्मा गान्धी।

मिस्टर ऐण्ड्रूचूज़के और मेरे बीचमें सगे भाइयोंसे भी अधिक घना सम्बन्ध है, इसलिये उनकी जीवनीकी भूमिका लिखना मेरे लिये कोई आसान बात नहीं। फिर भी यदि धृष्टता न समझी जावे तो मैं अपना यह विश्वास लेखबद्ध कर देना चाहता हूँ कि सी. ऐफ. ऐण्ड्रूचूज़से ज्याद: सच्चा, उनसे बढ़कर विनीत और उनसे अधिक भारतभक्त इस भूमिमें कोई दूसरा देशसेवक विद्यमान नहीं।

उनके जीवनसे शिक्षा ग्रहण कर भारतीय युवक अपनी मातृभूमिकी अधिकाधिक भक्ति करनेके लिये उत्साहित हों—यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।
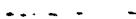
कृतज्ञता-प्रकाश ।

श्रीमान महात्मा गान्धीजीने मेरे जैसे क्षुद्र लेखककी पुस्तककी भूमिका लिखकर उसे गौरव प्रदान किया है तदर्थ मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। भूमिकाके अंग्रेजीमें लिखे जानेका कारण यही है कि वह मेरी अंग्रेजी पुस्तकके लिये लिखी गई है।

प्रारम्भिक संस्कृत कविताके लिये मैं पं. विधुशेखरजी शास्त्री भट्टाचार्य्य (प्रिंसिपल विश्वभारती शान्ति निकेतन आश्रम) के प्रति तथा अन्तिम हिन्दी कविताके लिये श्रीयुत ठाकुर प्रसादजी शर्माके प्रति कृतज्ञता प्रगट करता हूँ।

लेखक ।

प्रथम परिचय

३ मई सन् १९१८—

तीन दिनकी लम्बी यात्राके बाद कलकत्ते पहुँचा। १०२ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट को गाड़ीकी और सीध 'भारत मित्र—कार्य्यालय' जा उतरा। बहुत दिनोंसे मेरी इच्छा भारतमित्रके संचालकोंसे मिलनेकी थी। जब जब मैं अपने मित्रोंके साथ भारतके समाचार पत्रोंके विषयमें बातचीत करता था मेरे अनेक मित्र मुझसे कहते थे "जितनी स्पष्टता और निर्भयताके साथ भारत मित्र अपने राजनैतिक विचार प्रगट करता है उतनी निर्भयताके साथ और उतनी योग्यतापूर्वक भारतके कितनेही अँग्रेज़ी दैनिक भी नहीं करते" मेरा निजका मत भी यही था। थोड़ी देर बाद मैं भारतमित्र कार्य्यालयमें जा पहुँचा। सम्पादकीय विभागके सज्जनोंसे मिलकर बड़ा हर्ष हुआ। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मैं घरपर ही बातें कर रहा हूँ। न वहाँ ऊपरी दिखावट थी, और न झूठा शिष्टाचार था यों कहिये तकल्लुफ बाज़ी। कुछ विश्राम करनेके बाद मैंने श्रीयुत बाजपेयी जी से पूँछा "मैं ऐण्ड्रयूज़ साहबके दर्शन करना चाहता हूँ, वे कहाँ मिल सकेंगे?" उन्होंने कहा "वे रविबाबूके घर पर जोरा संकोमें होंगे। क्या अभी मिलना चाहते हो?" मैंने कहा "हाँ" सम्पादक जीने कृपा कर मेरे साथ एक सज्जन कर दिये जो मुझे कवि सम्राट् रवींद्रनाथके घरपर पहुँचा आये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उस समय उस विशाल भवनके ऊपरी भागमें बैठे हुए किसीसे बातचीत कर रहे थे। मैंने उनका चित्र एक बार "इण्डियनओपीनियन" के स्वर्णाङ्कमें देखा था, इसलिये दूरसे ही मैंने उन्हें पहचान लिया। अपने परिचयका पत्र एक नौकरके हाथ उनके पास भिजवाया। उस नौकरने मुझे तब तक पुस्तकालयमें बैठनेके लिये कहा। थोड़ी देर बाद ही मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ धोती और कमीज़ पहने हुए वहाँ आ गये। खड़े होकर मैंने 'नमस्कार' किया मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने भी बिल्कुल भारतीय ढङ्गसे नमस्कार किया। उन्होंने मुझसे पूँछा "पं. तोताराम अच्छी तरह है?" मैंने कहा "बहुत अच्छी तरह हैं और उन्होंने आपको प्रणाम कहा है" तदनन्तर

प्रवासी भारतीयोंके विषयमें बहुत देर तक बात चीत होती रही। फिर मिस्टर ऐण्ड्रूयूजने कहा " Will you not like to see Shantiniketan at Bolpur ? " अर्थात् " क्या शान्ति निकेतन नहीं देखोगे ? " मैंने कहा " क्यों नहीं ? मैं तो उसे एक तीर्थस्थान समझता हूँ। " तदनन्तर मैं बोलपुर गया और वहाँ शान्ति निकेतनमें कई दिन तक रहा। मेरा प्रथम परिचय मिस्टर ऐण्ड्रूयूजके साथ इस प्रकार हुआ। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मैं उनसे पहले भी कई बार मिल चुका हूँ। इसका कारण यही था कि मैं कई वर्षसे माडर्न रिव्यू आदि पत्रोंमें उनके लेख पढ़ता रहा था, और शर्तबन्दीकी कुली प्रथाके विषयमें सन् १९१५ से मेरा उनके साथ पत्रव्यवहार भी हो रहा था। मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ उन व्यक्तियोंमें से हैं जिनके हृदयकी स्वच्छता और सरलता उनसे मिलनेके पाँच मिनट बाद ही प्रगट हो जाती है। उनकी सरलता स्वाभाविक है उसमें कृत्रिमता और आडम्बरका नामो निशान नहीं और उनका हृदय निर्मल दर्पणके समान है जिसमें उनकी सच्चाईका प्रतिबिम्ब ज्यों का त्यों दीख पड़ता है। जिन्हें मि. ऐण्ड्रूयूजके साथ घंटे दो घंटे भी रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे भी उनकी मनोहर सादगी और स्वाभाविक सरलता पर मुग्ध हो गये हैं।

९ सितम्बर सन् १९२० को कलकत्तेमें प्रवासी भारतीयोंके विषयमें कुछ निवेदन करनेके लिये मुझे **महात्मा गान्धीजीकी** सेवामें उपस्थित होना पड़ा था। ऐण्ड्रूयूज़ साहबका ज़िक्र आते ही महात्माजीने बड़ी सरल गम्भीरताके साथ कहा **" ऐण्ड्रूयूज़ तो आजकल ऋषि है "**

आइये पाठक गण, हम लोग श्रीयुत ऐण्ड्रूयूज़के जीवन पर एक दृष्टि डालें और फिर सोचें कि महात्मा गान्धीजीका उपर्युक्त कथन कहाँ तक सत्य है।

जीवनचरित्रका श्रीगणेश !

११ जून सन १९२० की बात है। रात्रि का समय था। लगभग ९ बजे थे। शान्तिनिकेतन में उस समय वर्षा होरही थी। ग्रीष्म ऋतु में पहले ही पहल पानी पड़नेसे भूमिसे भीनी भीनी सुगन्धि आरही थी। ऐसे अवसर पर शान्तिनिकेतन की जो शोभा होती है वह अवर्णनीय है। भोजन कर चुकने के बाद श्रीयुत ऐण्ड्रूयूज़

साहब " वेणु कुंज " में पधारे। फिजी के विषयमें मैंने उन्हें बहुत से समाचार सुनाये। उन्हें सुनकर उनका हृदय कितना विचलित हुआ यह मैं कभी नहीं भूल सकता। वे अपने कमरेमें टहलरहे थे। टहलते टहलते वे एक साथ रुक गये और करुणोत्पादक शब्दोंमें कहने लगे " भारतीय नेताओंने यह आलस्य क्यों किया है? फिजी-प्रवासी हिन्दुस्तानियों की ओर वे ध्यान क्यों नहीं देते? " रात्रि के ११ ½ बजे तक प्रवासी भारतीयोंके विषयमें बातचीत होती रही। तत्पश्चात् देशकी राजनैतिक परिस्थिति का विषय आया। मैंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया " आप की जाति वालोंने—आपकी अँग्रेज़ जाति की सरकारने--पंजावमें जो अत्याचार किये हैं उनका हम हिन्दुस्तानियोंके हृदय पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा है। जातीय विद्वेष इस समय अपनी पराकाष्ठाको पहुँच गया है। हम लोग अँग्रेज़ मात्र के प्रति अविश्वास और घृणा करने लगे हैं। ग़दरके समयके अत्याचारोंको छोड़कर कभी भी इतने जुल्म हम पर नहीं हुए। जातीय विद्वेषके ये भाव इतनी गहराई तक पहुँच गये हैं कि उनको जड़ मूलसे दूर करने के लिये आपकी तरह के अनेक व्यक्ति भी पर्य्याप्त न होंगे। किन्तु इस द्वेषांधकार परिपूर्ण आकाश मंडलमें आपके वे कार्य्य, जो इस संकटमय अवसर पर आपने पंजावमें जाकर किये हैं, आशामय विद्युत की तरह चमक रहे हैं।

वर्तमान जातीय विद्वेष को दूर करना हम लोगों का परम कर्तव्य है। आप की सुप्रसिद्ध पुस्तक The Renaissance in India (भारतीय-जागृति) की भूमिका में कलकत्ते के लार्ड विशप ने लिखा है " The heart of the author is wholly set on the realisation of that noble aim, the lessening of race prejudices and exclusiveness " अर्थात 'ग्रन्थकार का हृदय पूर्णतया एक महान् उद्देश्य की पूर्ति में लगा हुआ है और वह है जातीय कुसंस्कारों और भेदों को दूर करना'

जिस समय मैं यह बातें कह रहा था मिस्टर एण्ड्रयूज़ धीरे धीरे सिर हिला रहे थे और सरलता तथा सच्चाई उनके चहरे से टपक रही थी। फिर मैंने कहा " आपके कार्य्य जातीय विद्वेष को दूर करने में कितनी सहायता देरहे हैं, इसका यदि मैं यहाँ एक उदाहरण देदूँ तो आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे। एक बार मैं अपने

नगरके बाहर हनूमानजी के मन्दिर पर बैठा हुआ था। मेरी जाति के कितने ही वृद्ध तथा युवक बातचीत कर रहे थे। 'लीडर का' वह अङ्क मैं लेता गया था जिस में आप की लाहौर वाली स्पीच छपी थी। उसका अनुवाद पढ़कर सुनाया गया। मैं जानता हूँ कि उसका कितना अधिक असर पड़ा। जहाँ आपने अमृतसर के हत्याकाण्ड की उपमा ग्लाङ्कोके कतल से दी थी वह भाग पढ़ा गया। तद-नन्तर आपने कहा था कि मिस शेर वुड को पीटना वड़ा भारी अन्याय था और साथ ही साथ यूरोपियनों को जानसे मार देना भी वैसा ही अनुचित और अमा-नुषिक कार्य्य था। इस बातको सुनकर सुनाने वालों पर विचित्र प्रभाव पड़ा। एक वृद्ध पुरुष ने कहा "देखो, यह एक सच्चा अँग्रेज़ है। जहाँ इसने अपने भाइयों की इतनी निन्दा की है वहाँ साथ ही साथ हम लोगों की, भारत वासियों की, भी भूल बतलाई है। अब हम यह नहीं मान सकते कि एक ही तरफसे सारा अन्याय हुआ है। हिन्दुस्तानियों ने भी कुछ अनुचित कार्य्य किया और फिर सरकार नें उसका पचास गुना बदला लिया" सब के सब आदमी जब रातके वक्त घर लौट रहे थे तो बातचीत करते हुए किसी किसी ने कहा था भाई सब अँग्रेज़ बुरे नहीं होते, कोई कोई ऐण्ड्रयूज साहब की तरह अच्छे भी होते हैं। मैंने अनेक बार अपने विद्यार्थियोंको आपके जीवनकी घटनाऐं सुनाई हैं। सुनानेके बाद मैंने प्रायः देखा है कि उनके चहरे कृतज्ञताके भावोंसे परिपूर्ण हो जाते हैं। जब वे सुनते हैं कि आप हमारी भारतमाताके लिये इतना स्वार्थत्याग और परि-श्रम कर रहे हैं उनके हृदयको अत्यन्त सन्तोष होता है और वे समझ जाते हैं कि अँग्रेज़ मात्रके प्रति घृणा करना हमारे लिये अनुचित है। स्वाधीनताके लिये हमारा जो संग्राम होना चाहिये वह जातीय विद्वेषके निर्बल अस्त्रकी सहायतासे नहीं बल्कि न्याय और प्रेमके सबल अस्त्रोंद्वारा होना चाहिये। आपके जीवनका उद्देश्य जैसा कि लार्ड विशप साहबने लिखा है, जातीय विद्वेषको दूर करना है। यदि मैं हिन्दीमें आपके विचारोंको लिख सकूं तो मुझे विश्वास है कि कमसे कम पांच सात सहस्र हिन्दी पाठकोंके सम्मुख आपकी आत्माका सन्देश पहुँच जावेगा।" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ गम्भीरतापूर्वक मेरी इस बातको सुन रहे थे और अब वे समझ गये थे कि मैं क्या प्रार्थना करनेवाला हूं। मैंने फिर कहा "यह हो नहीं सकता कि आपकी जीवनी न लिखी जावे। कभी न कभी कोई न कोई आपकी जीवनी अवश्य

लिखेगा। क्या ही अच्छा हो यदि आपकी प्रथम जीवनी लिखनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हो! यद्यपि मैं इस कार्य्यके लिये योग्य नहीं, लेकिन मेरी मातृभाषा हिन्दी है जिसके बोलनेवालोंकी संख्या १३ करोड़ है और समझनेवालोंकी संख्या २० करोड़। मुझे आशा है कि आप मेरे इस प्रस्तावको स्वीकृत करेंगे।" कुछ देर सोचकर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कहा "Yes, at this crisis it may do some good" "हां सम्भव है कि इस कठिन अवसर पर इससे कुछ भलाई हो" इस प्रकार मेरे कार्य्यका श्रीगणेश हुआ।

महात्मा गांधीजीने यंग इंडियामें एक बार लिखा था "मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पर यह कहावत चरितार्थ होती है कि उनका दाहिना हाथ भी यह नहीं जानता कि उनका बांया हाथ क्या काम कर रहा है" वे ख्याति-प्रेमी नहीं हैं और न 'लीडर' बननेका उन्हें शौक है। "लीडरी" से वे सदा दूर भागते हैं। इन कारणोंसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से यह प्रस्ताव स्वीकृत कराना कोई सरल बात नहीं थी।

इस समय सम्पूर्ण भारतवर्षमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ही एक ऐसे अँग्रेज़ है जिन पर भारतीय नेताओं तथा भारतीय जनताका पूर्ण विश्वास है। लाला लाजपतरायजीने अपने स्पेशल कांग्रेसवाली वक्तृतामें कहा था "The one Englishman, whose name I must mention with gratitude is Mr. C. F. Andrews, who is now one of us." अर्थात "केवल एक अँग्रेज ऐसा है जिसका नाम हमें कृतज्ञतापूर्वक लेना चाहिये और वह है मिस्टर सी. ऐफ. ऐण्ड्रयूज़। वे अब हमारे जातीय ही हैं"

श्रीयुत विजयराघवाचार्य्यने अपनी कांग्रेस स्पीचमें कहा था "रैवरेण्ड ऐण्ड्रयूज़में हावर्ड और काउपर दोनोंकी सम्मिलित मानव जाति सेवाका भाव विद्यमान हैं" और अपनी अन्तिम स्पीचमें उन्होंने फिर कहा था "रैवरेण्ड ऐण्ड्रयूज़ केवल हमारे बीचमें ही नहीं रहते, वल्कि वे हमारे घरके ही हैं"

जिन जिन असाधारण गुणोंके कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को भारतीय जनताके हृदयमें यह उच्च स्थान प्राप्त हुआ है उनका परिचय करानेका प्रयत्न अगले पृष्ठोंमें किया जावेगा।

विषय-सूची ।

भारत-भक्त

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज ।

भारत-भक्त ऐण्ड्रयूज ।

पहला अध्याय ।

जन्म और बाल्यावस्था ।

श्रीयुत ऐण्ड्र्यूज साहबका पूरा नाम चार्ल्स फ्रीअर ऐण्ड्रयूज है। आपका जन्म इङ्गलैण्डके उत्तरी भागमें कार्लाइल नामक नगरमें १२ फरवरी सन् १८७१ ई० को हुआ था। आपके पितामह **जान ऐण्ड्र्यूज** एक सुप्रसिद्ध शिक्षक थे। उन दिनों विलायतमें शिक्षकोंके तय्यार करनेके लिये एक कालेज खोला गया था। जान एण्ड्र्यूज उस कालेजके संस्थापकोंमेंसे थे। स्वयं वे हैडमास्टर थे। अपने सरल स्वभाव और विद्वत्ताके कारण उनका नाम चारों ओर फैल गया था। वे इतने सीधे थे कि अपने विद्यार्थियोंको कभी नहीं पीटते थे। कहा जाता है कि एक बार उनके वहुतसे विद्यार्थियोंने उनके पास जाकर निवेदन किया था—"Sir, you are tco kind to us. Will you please use this cane on us"? अर्थात् "आप हम पर हदसे ज्यादः कृपा करते हैं। अव आप इस बेंतसे हमारी अच्छी तरह खबर लिया कीजिए!" ईसाई धर्मके जिस सम्प्रदायसे आपका सम्बन्ध था उसे आपने अपने अन्तःकरणके विरुद्ध होनेके कारण छोड़ दिया था और दूसरे सम्प्रदायमें सम्मिलित हो गये थे; लेकिन

ऐसा करनेसे उन्हें बड़ी भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ी थी और इस सबबसे वे बिल्कुल निर्धन हो गये थे। एकबार फर्श परसे पाँव रपट जानेके कारण उनके पैरमें बड़ी चोट आ गई थी और उसीकी बीमारीमें उनके प्राण गये। उनका चित्र Royal Academy रायल ऐकेडेमीमें प्रदर्शित किया गया था। उनका चेहरा बड़ा गम्भीर और प्रभावशाली था। लोग उन्हें बड़े आदरकी दृष्टिसे देखते थे और शिक्षा-जगत्में उनका अच्छा सम्मान था।

वंश।

मिस्टर ऐण्ड्रयूजके पिताके पूर्वज सैक्सन-वंशीय थे, लेकिन उनके माताके पूर्वज कुछ अंशोंमें कैल्टिक-वंशीय थे। कहा जाता है कि सैक्सन-वंशीय अँगरेजोंमें प्रायः परिश्रमी होते हैं और कैल्टिक-वंशवालोंमें आदर्शवादियोंकी प्रधानता होती है। इसी कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूजमें दोनों बातें पाई जाती हैं। वे असाधारण परिश्रमी हैं और पक्के आदर्शवादी हैं। जिन्होंने ऐण्ड्रयूज साहबको प्रातःकाल ६ बजेसे रात्रिके ९—१० बजे तक निरन्तर—बिना विश्राम किये—काम करते हुए देखा है वे कह सकते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्रयूजमें परिश्रम करनेकी आश्चर्य-जनक शक्ति है। उनके लेखों तथा ग्रन्थोंमें कल्पना-शक्ति और भावोंकी प्रधानता रहती है और इसका कारण उनका कैल्टिक-वंशीय रक्त ही है।

माता पिता।

मिस्टर ऐण्ड्रयूजके पिताका नाम जान ऐडविन ऐण्ड्रयूज और माताका नाम मेरी शारलोट था। जे० ई० ऐण्ड्रयूजके पाँच लड़के और ९ लड़कियाँ हुईं। इनमें एक लड़कीका देहान्त बाल्यावस्थामें ही हो गया था और दूसरी ३० वर्षकी उम्रमें स्वर्ग सिधारी। तीसरी अभी गत मार्चमें परलोक सिधारी है। शेष ११ जीवित हैं।

ऐण्ड्र्यूज साहब अपने माता-पिताके चतुर्थ सन्तान हैं। उनके चार भाई और छः बहनें हैं। इनमें दो बहनोंने अपना विवाह न्यूजीलैण्डमें किया है और वे वहीं रहती हैं। मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके पिता भी पहले शिक्षकका काम करते थे। जिस प्रकार पितामह **जान ऐण्ड्र्यूजने** अपने धार्मिक विश्वासोंमें परिवर्तन होनेके कारण दूसरे सम्प्रदायको ग्रहण कर लिया था उसी प्रकार पिताजीने भी अपना सम्प्रदाय अन्तःकरणके अनुकूल न पाकर छोड़ दिया था। जिस प्रकार मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके पितामहको अपना सम्प्रदाय परिवर्तन करनेके कारण अनेक कष्ट उठाने पड़े उसी प्रकार मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके पिताको भी इसी मत-परिवर्तनके सबबसे बहुत-सी मुसीबतोंका सामना करना पड़ा। आगे चल कर पाठक पढ़ेंगे कि हमारे चरित-नायक श्रीयुत ऐण्ड्र्यूज साहबको भी अपने धार्मिक विश्वासोंमें महान् परिवर्तन करना पड़ा था और इसके कारण उन्हें भी अनेक मानसिक कष्ट झेलने पड़े थे। इस प्रकार तीन पीढ़ियोंसे यह विचित्र घटना मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके वंशमें होती चली आई है। अपने अन्तःकरणकी आज्ञा मान कर ऐण्ड्र्यूज साहबके पितामहने, पिताने और स्वयं मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने अपने अपने धार्मिक सम्प्रदायोंको छोड़ दिया और इसकी वजहसे इन तीनोंको ही बहुत-सी तकलीफें उठानी पड़ीं।

पिताका सम्प्रदाय।

ऐण्ड्र्यूज साहबके पिता ईसाई धर्मके उस सम्प्रदायके अनुयायी थे जो Irvingites अर्विङ्गाइट्सके नामसे प्रसिद्ध है। इस सम्प्रदायके संस्थापक ऐडवर्ड आर्विङ्ग थे। इस सम्प्रदायके अनुयायियोंका यह विश्वास है कि परमात्माने ईसाइयोंको विशेष विशेष और असाधारण शक्तियाँ प्रदान की हैं— जैसे रोगियोंको अपने प्रभावसे नीरोग करना और भविष्य-वाणी कहना इत्यादि। इन लोगोंका यह भी विश्वास है कि वर्तमान युगका अन्त करनेके लिये शीघ्र ही क्राइस्टका अवतार होगा।

बाल्यावस्थामें चार्ली एण्ड्रयूजको उनके पिता धर्म-सम्बन्धी शिक्षा दिया करते थे। मिस्टर ऐण्ड्रयूजके ही शब्दोंमें

बाल्यावस्था। उस समयका वर्णन सुन लीजिये— "लड़कपनमें मेरे माता-पिता मुझे धार्मिक बातें बतलाया करते थे और उनका मेरे ऊपर बहुत असर पड़ता था। बाल्यावस्थामें मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि शीघ्र ही प्रभु क्राइस्टका अवतार होगा। एकान्तमें बैठे बैठे मैं बहुतसी बातें सोचा करता था। कल्पना-शक्ति मुझमें थी और स्वप्न भी मैं बहुत देखा करता था। प्रायः मैं यही विचार किया करता था कि वह दिन अब आने ही वाला है कि क्राइस्ट इस भूमि पर फिर अवतार लेंगे। इस सिद्धान्तके माननेवालोंका यह भी विश्वास था कि प्रभु ईसाके आते ही मुर्दे उठ खड़े होंगे। जिस मार्गसे होकर मैं अपने स्कूलको जाया करता था उसके बीचमें एक स्थान ऐसा पड़ता था जहाँ मुर्दे गाड़े जाते थे। जब मैं इस स्थानके निकट होकर निकलता तो उस वक्त मैं सोचा करता कि बस अभी हाल ये मुर्दे, जो यहाँ गड़े हुए हैं, उठ खड़े होंगे, और प्रभु क्राइस्ट बस अभी आते हैं, और ये मकान भी अब गिरे। इसके सिवाय न जाने क्या क्या कल्पनाएँ किया करता था और मनमें आश्चर्य किया करता था कि क्राइस्टके आने पर क्या क्या घटनाएँ होंगी। ये सब बातें मुझे बिल्कुल सच्ची मालूम होती थीं, क्योंकि धार्मिकता और कल्पना-शक्तिका अंश मुझमें बहुत अधिक था। कभी कभी तो मुझे इन कल्पनाओंके कारण बड़ा डर भी लगा करता था और पीछे देखता भी जाता कि कहीं ये मुर्दे सचमुच उठ कर खड़े तो नहीं हो गये? परन्तु कभी कभी ये कल्पनाएँ मेरे हृदयको असीम आनन्द भी देती थीं और मैं परमात्मासे प्रार्थना किया करता था कि वह दिन शीघ्र ही आवे।"

जब चार्ली ऐण्ड्र्यूजकी उम्र ६ वर्षकी थी वे ज्वरसे पीड़ित हो गये। बीमारी यहाँ तक बढ़ गई कि डाक्टरोंने जीवनकी

भयंकर बीमारी। आशा बिलकुल छोड़ दी। ६ महीने तक खाट पर इसी दशामें पड़े रहना पड़ा। कभी तबीयत कुछ ठीक हो जाती, लेकिन फिर बीमारी बढ़ जाती और हालत निराशा-जनक हो जाती। उस बीमारीकी एक विचित्र घटनाका ऐण्ड्र्यूज साहबको अब तक स्मरण है। वे कहते हैं—"मेरी माताने उस बीमारीमें मेरी बड़ी सेवा की और उन्हींके प्रेमके कारण मेरी जान बची। मेरे पैरोंमें बड़ा दर्द होता था और मुझे यह बात अब तक याद है कि मेरी मा मेरे पाँवों पेर ऊन रक्खा करती थी। कितनी ही बार दर्दके मारे मैं बेहोश भी हो गया था। उस समयकी भयंकर पीड़ाका कुछ कुछ स्मरण मुझे अभी तक है। अनेक बार मेरे घरवालोंने मेरी जीवनकी आशा छोड़ दी थी। एक विचित्र घटनाके कारण मेरी बीमारीने पलटा खाया। वह घटना अब भी मेरी आँखोंके सामने है। एक दिन जब मैं खाट पर इसी तरह बीमार पड़ा हुआ था, किसीने एक सफेद फूल लाकर मेरी खाटके नजदीककी मेज पर रख दिया। यह मुझे याद नहीं है कि वह पुष्प किस वृक्षका था; लेकिन इतना मैं जानता हूँ कि वह श्वेत रंगका था और अत्यन्त सुन्दर था। उस मनोहर फूलको देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई थी। मैं पड़ा हुआ था और आँखें खोलने पर एक साथ मेरी दृष्टि उसी पर पड़ी थी। मेरी माता मुझसे कहा करती थीं कि बीमारीकी हालतमें मुझे कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी, लेकिन जिस समयसे वह सुन्दर सफेद फूल मेरी आँखोंके सामने आया मुझे बड़ी खुशी हुई और तभीसे मेरी बीमारी अच्छी होने लगी।"

ऐण्ड्र्यूज इस बीमारीसे आरोग्य तो हो गये, लेकिन इसके कारण उनका शरीर बहुत निर्बल हो गया। कमजोरी इतनी ज्यादः हो गई थी

कि कुछ अधिक दूर चलनेसे ही थकावट आ जाती थी और हाँफने लगते थे। शायद इसी वीमारीकी वजहसे उनकी कल्पना-शक्ति वढ़ गई। वे वैठे वैठे अनेक प्रकारकी कल्पनाएँ किया करते थे। जव कि वह वहुत छोटे थे तव भी दिन भर वैठे हुए पढ़ा करते थे। यात्रा-सम्वन्धी वहुत-सी पुस्तकें उन्होंने वाल्यावस्थामें ही पढ़ डाली थीं। W. H. G. किंगस्टन-की छपाई हुई कितनी ही कितावें उन्होंने उसी समय पढ़ ली थीं और आगे चल कर स्काटके सुप्रसिद्ध उपन्यास भी समाप्त कर दिये थे। ऐण्ड्र्यूज साहव कहते हैं—"मेरी माता प्रायः मुझे पढ़नेसे रोका करती थी। वह कहा करती थी—'वेटा, अव मत पढ़ो, पढ़ते पढ़ते वहुत देर हो गई। इससे तुम्हारी तन्दुरुस्ती खराव हो जायगी।' लेकिन मैं पढ़ना वन्द नहीं करता था। मेरे भाई-वहन भी मुझे पढ़नेसे वहुत रोका करते थे। मेरी दो वहनें मुझसे उम्रमें वड़ी थीं और एक भाई भी मुझसे वड़े थे। मेरी एक वहन जो मुझे वड़ा प्रेम करती थी, क्षयी रोगसे ३० वर्ष-की उम्रमें मर गई।"

कौटुम्बिक आपत्ति और निर्धनता।

यद्यपि ऐण्ड्र्यूज साहवके पिता विशेष धनवान् नहीं थे। लेकिन खाने-पीनेका कष्ट किसीको नहीं था। सन् १८८०–८१ में, जव कि चार्ली ऐण्ड्र्यूजकी उम्र लगभग ९–१० वर्ष थी, एक वड़ी दुर्घटना हो गई। इस दुर्घटनाके कारण तमाम कुटुम्ब विल्कुल निर्धन हो गया। यह घटना इतनी हृदय-वेधक है कि उसे ऐण्ड्र्यूज साहवके ही शब्दोंमें लिखना उचित होगा।

" At that time when I was nine years old there came about an event of my life. The chief trustee of my mother's property proved to be a scoundrel. He was a great friend of the family and my father trusted and

loved him as a brother. Then one day my father suddenly discovered that he had speculated and robbed my mother of all the money she had. This was discovered in the afternoon by telegram by my father asking the manager of the Bank if there was any money in my mother's account, and the reply came that there was none. And I shall never forget the great shock that it was to my father. I think he felt it most because it was my mother's money and also because the friend whom he loved most had so deceived him. My father was very silent and my mother told me all about it. She was more anxious about my father than about the loss of the money. Then the evening time came and we had our evening prayers together. That evening my father read a passage of the Bible in which the words came "If it had been an enemy then I could have borne it, but it was thou my familiar friend in whom I trusted."—After reading the passage he remained quite quiet and I could see that he was trying to keep back his tears. Then we knelt down to pray and I shall never forget how his whole prayer was on behalf of his friend that he might be forgiven for the wrong he had done and that he might be brought to repentance and to a better life. He used to speak to us and tell us that we must not feel any bitterness against his friend, because although he had done that great wrong still he hoped that he would in time come to see the wrong. When people urged my father to prosecute him

he indignantly refused and those who suggested never asked him a second time. This incident had a very great effect indeed on my life. It made me love my father as I had never loved him before and my mother also who was entirely of one mind with my father in this matter. It seemed to bind the whole family together in love and was in this way a great blessing. But the greatest blessing of all was that we became exceedingly poor—so poor that we children often had to eat dry bread and nothing else for our meal and we were obliged to live in a very small house with the poor people of the town. Thus from being fairly rich we were reduced to poverty and the struggle that my father and mother had to make to educate us during the next few years was very great indeed."

अर्थात् "जिस समय मेरी उम्र नौ वर्षकी थी, एक ऐसी घटना हुई जिसका मेरे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मेरी माताके नाम कुछ धन-सम्पत्ति थी। उसका जो मुख्य ट्रस्टी था वह बड़ा दुष्ट निकला। हमारे घरका वह बड़ा मित्र था, और मेरे पिता उसे अपने भाईके समान प्रेम करते थे और उस पर पूरा पूरा विश्वास भी करते थे। एक दिन पिताजीको ज्ञात हुआ कि इन महाशयने सट्टा खेल कर मेरी माताकी सम्पूर्ण सम्पत्ति नष्ट कर दी। तीसरे पहरके समय पिताजीने बैङ्कके मैनेजरके नाम तार देकर पूछा कि मेरी माताके नाम बैङ्कमें कितना रुपया बाकी है। तारका जवाब आया कि बैङ्कमें अब कुछ भी रुपया नहीं रहा। इस समाचारको पाकर मेरे पिताजीके हृदयको जो धक्का लगा उसकी याद मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता। पिताजीको इस लिये और भी अधिक दुःख हुआ कि वह रुपया मेरी माताका था, और इसके सिवाय

एक ऐसे मित्रने जिसको वे सबसे अधिक प्रेम करते थे, उनके साथ इस प्रकार विश्वासघात किया था। पिताजी दुःखके कारण बिल्कुल चुप रहे और मेरी माने यह सम्पूर्ण बात मुझे सुनाई। माको उतना दुःख अपनी सम्पत्तिके नष्ट होनेका नहीं था जितनी उन्हें पिताजीके लिये चिन्ता थी। जब सन्ध्या हुई तो हम सबने मिल कर नित्यके नियमानुसार प्रार्थना की। उस संध्याको पिताजीने बाइबिलका वह भाग पढ़ा जिसमें कि निम्न-लिखित शब्द आये थे—"यदि मेरा कोई शत्रु इस प्रकार विश्वासघात करता तो मैं उसे सहन कर सकता था, लेकिन यह कार्य तूने—मेरे परिचित मित्रने—किया जिसपर कि मेरा इतना अधिक विश्वास था।" इस वाक्यको पढ़नेके बाद पिताजी बिल्कुल चुप हो गये, और उस समय मैंने देखा कि वे अपने आँसुओंको रोकनेकी चेष्टा कर रहे थे। तदनन्तर हम सबने घुटने टेक कर प्रार्थना की। पिताजीकी उस दिनकी सम्पूर्ण प्रार्थनाका तात्पर्य्य यही था कि 'हे परमात्मा, मेरे मित्रने जो अपराध किया है, तदर्थ उसे क्षमा प्रदान कीजिये, उसके हृदयमें ऐसी प्रेरणा कीजिये कि वह अपनी भूलको समझ कर पश्चात्ताप करे, और उत्तमतर रीतिसे अपना जीवन व्यतीत करे'। अपने पिताजीकी यह प्रार्थना मुझे जीवन भर याद रहेगी। वे हम सबको समझाया करते थे—"देखो, तुम लोग अपने हृदयमें मेरे मित्रके प्रति द्वेष-भाव मत रखना। मैं मानता हूँ कि उसने बड़ा घोर अपराध किया है, लेकिन मुझे आशा है कि वह आगे चलकर अपने अपराधको स्वीकार कर लेगा"। जब दूसरे आदमी पिताजीसे कहते थे—"आप उस पर मुकदमा चलावें तो ठीक होगा," तो पिताजी बड़े क्रुद्ध होकर यही कहते कि मैं कदापि यह काम नहीं कर सकता। इस उत्तरको पाकर मुकदमा चलानेका उपदेश देनेवालोंकी हिम्मत दूसरी बार इस प्रकारके प्रस्ताव करनेकी नहीं होती थी। इस घटनाका मेरे जीवन

पर बड़ा भारी असर पड़ा । मेरे हृदयमें अपने पिताजीके लिये पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक प्रेम बढ़ गया, और माताके प्रति भी मेरी श्रद्धा अधिक हो गई, क्योंकि इस विषयमें वे भी पिताजीसे पूर्णतया सहमत थीं । यह घटना हम लोगोंके लिये एक प्रकारसे दैवी आशीर्वादके समान थी, क्योंकि इसके कारण सम्पूर्ण कुटुम्बका पारस्परिक प्रेम-बन्धन और भी दृढ़ हो गया । **लेकिन सर्वोत्तम दैवी कृपा यह हुई कि हम लोग नितान्त निर्धन हो गये ।** हम सब इतने गरीब हो गये कि हम बच्चोंको खानेके लिये सूखी रोटी छोड़ कर और कुछ नहीं मिलता था; और हम सबको नगरके उस भागमें, जहाँ निर्धन आदमियोंकी बस्ती थी, एक क्षुद्र मकानमें रह कर अपनी गुजर करनी पड़ती थी । इस प्रकार साधारण धनीसे हम बिल्कुल निर्धन बन गये; और इस कारण पुत्रों और कन्याओंको शिक्षा देनेके लिये आगे चल कर कई वर्ष तक हमारे माता-पिताको घोर परिश्रम करना पड़ा था ।”

दूसरा अध्याय।

विद्यार्थी-जीवन।

नौ वर्षकी उम्र तक ऐण्ड्रयूजके माता-पिताने उन्हें घर पर ही शिक्षा दी। इसके बाद आप स्कूलमें भर्ती किये गये। अपने क्लासमें आप सबसे छोटे थे, लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होनेके कारण लिखने पढ़नेमें बड़े तेज थे। ९ वर्षकी उम्रसे लेकर २५ वर्षकी उम्र तक—जब कि आपने केम्ब्रिज विश्वविद्यालयकी अन्तिम परीक्षा पास कर अपनी शिक्षा समाप्त की थी—आपको बराबर पारितोषक और छात्र-वृत्तियाँ मिलती रहीं। शरीरके कमजोर होनेके कारण आप प्रायः बीमार रहते थे, इस लिये आपकी माको बड़ी देख-भाल करनी पड़ती थी। इसी कारणसे मा चार्ली ऐण्ड्रयूजको अपने सब बच्चोंसे अधिक प्रेम करती थीं। इंगलैण्डमें भयंकर शीत पड़ता है इस लिये अगर मा अच्छी तरह उनकी रक्षा न करती तो ऐण्ड्रयूज जैसे निर्बल बालकका जीवित रहना अत्यन्त ही कठिन था। ऐण्ड्रयूज साहब कहते हैं—" मेरी निर्बलताके ही कारण मेरी माता मुझे और भी अधिक प्यार करती थी। मासे दूर होना मुझे बहुत बुरा मालूम होता था। इसके सिवाय उपद्रवी अधिक होनेके सबबसे मुझे अक्सर आफतमें फँसना पड़ता था। मेरा यह स्वभाव था कि जब किसी नई चीजको देखता तो उसके बारेमें बहुत पूछ-ताछ करता, यहाँ तक कि लोग तंग आ जाते थे। चीजें भी मैं बहुत तोड़ा करता था। दूसरोंकी सुन्दर वस्तुओंको तोड़ने फोड़नेसे मुझ पर प्रायः आपत्ति

आया करती थी। ऐसे अवसरों पर मेरी मा बराबर मेरा ही पक्ष लेती थीं, क्योंकि वह मेरे स्वभावको अच्छी तरह समझ सकती थीं और दूसरे आदमी मेरी आदतको नहीं जानते थे। हर एक बातके जाननेकी मैं इच्छा करता था, इससे दूसरे आदमी बहुत तंग होकर कहा करते थे—"बड़ा बाहियाद लड़का है, इसके मारे हमारी नाकों दम आ गई है"।

माकी बीमारी। अपनी माकी बीमारीकी एक घटना ऐण्ड्रूयूज साहबको अब तक स्मरण है। आप कहते हैं—"एक बार मेरी मा बहुत बीमार हो गईं। उस समय मेरी उम्र ७-८ वर्षकी थी। माके बाल-बच्चा होनेवाला था और उसीके कारण वह बीमार पड़ गई थीं। डाक्टर देखनेके लिये आया हुआ था। मैं अपनी माके कमरेके बाहर बड़ा रंजीदा बैठा हुआ सोच रहा था कि कहीं मेरी प्यारी मा मर न जावे। यद्यपि किसी आदमीने मुझसे यह बात नहीं बतलाई थी कि मा इतनी अधिक बीमार है कि उसके मरनेकी आशङ्का है, लेकिन फिर भी मुझे बड़ी चिन्ता हो गई थी। डाक्टरने कमरेके भीतर जाकर दरवाजा बन्द किया तो मुझे बड़ा भारी डर लगा, मैं सोचने लगा कि अब मेरी मा मरी। उस समय मेरी बड़ी बहनने आकर मुझे फटकारा—"Get up, what are you doing here? उठो, यहाँ बैठे बैठे क्या कर रहे हो?" मैं इसका जवाब कुछ नहीं दे सका। उस वक्त मैं इतना अधिक कमजोर था कि मुझे चक्कर आया करते थे। निर्बलताके कारण मुझे मूर्च्छा भी आ जाया करती थी।"

स्कूलमें। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है आप नौ वर्षकी उम्रमें स्कूलमें भेजे गये थे। स्कूलका नाम था किंग-ऐडवर्ड-स्कूल बर्मिङ्घम। जानेके थोड़े दिनों बाद ही आपको एक छात्र-वृत्ति मिली। इससे आपकी फीस माफ हो गई और एक पौण्ड यानी १५, रु० प्रति मास मिलने लगे। जब आप

स्कूल छोड़ कर कालेजमें गये उस समय भी आपको ५० पौण्ड यानी ७५०, रु० की वार्षिक छात्र-वृत्ति चार वर्षके लिये मिली थी। यह छात्र-वृत्ति स्कूल-कालरशिप कहलाती थी । विश्वविद्यालयमें ४ वर्ष पढ़नेके समय फिर आपको ८० पौण्ड यानी १२००, रु० की वार्षिक छात्र-वृत्ति मिली थी। मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके माता-पिताको उनकी शिक्षाके लिये कुछ खर्च नहीं करना पड़ा। इन वजीफोंसे वे अपना सब खर्च चला लेते थे और अपने भाई-बहनोंकी भी मदद किया करते थे।

स्कूलमें ऐण्ड्र्यूजको उनके साथी लड़के बहुत तंग किया करते थे, क्योंकि वे अपने क्लासमें हमेशा सबसे छोटे लड़के थे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज कहते हैं—" उन दिनों मास्टरोंके पास बड़े लम्बे लम्बे दर्जे थे और वे बेंतके द्वारा अपनी कक्षाओं पर शासन करते थे। मैं जल्दी जल्दी दर्जा चढ़ता गया, और मुझे इनामें भी बहुतसी मिलीं, लेकिन इसकी वजहसे मैं अपने दर्जेमें हमेशा सबसे छोटा लड़का रहा, और इस लिये बड़े लड़के मुझे अक्सर तंग करते और हाथ पकड़ कर मरोड़ देते थे, जिससे बड़ी तकलीफ होती थी। हमारे हैडमास्टर साहब रैवरेण्ड, ए० आर० वार्डी बड़े ही भलेमानस थे। वे ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिजके फैलो थे। जब मैं उनके क्लासमें पहुँचा तब बड़े लड़कोंने तंग करना छोड़ दिया। इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। हैडमास्टर साहब उच्च कोटिके विद्वान् थे और बड़े साहित्य-प्रेमी थे। उनके सम्बन्धकी एक घटना मुझे स्मरण है। एक बार उन्होंने प्लेटो द्वारा लिखित सुकरातकी मृत्युका वृत्तान्त अनुवाद करके क्लासको सुनाया। यद्यपि वे बड़े पक्के हृदयके थे और कभी किसीको अपने कष्ट और भाव नहीं जानने देते थे, लेकिन जिस समय वे सुकरातकी मृत्युका हाल पढ़ने लगे तो उनके आँसू निकल आये और वे रोने लगे। फिर कुछ देर तक चुपचाप रह कर वे क्लासके बाहर चले गये। जब हम लोगोंने

देखा कि हमारे हैडमास्टर साहबका हृदय करुणासे इतना द्रवित हो गया है तो हमारे सम्पूर्ण क्लासमें सन्नाटा छा गया और हम लोग बिल्कुल शान्त हो गये।"

ऐण्ड्रयूजको लैटिन और ग्रीक भाषाकी कविता करनेका बड़ा शौक था। गणितमें आपका मन कभी नहीं लगता था, उससे आप घृणा करते थे। साहित्यसे आपको अत्यन्त प्रेम था और घंटों तक पुस्तकालयमें बैठे हुए आप भिन्न भिन्न विषयोंकी पुस्तकें देखा करते थे। लड़कोंने आपकी पढ़नेकी इस प्रवृत्तिको देख कर आपको "प्रोफेसर" की उपाधि दे दी थी। बहुत पढ़नेके कारण आप कुछ झुक कर चलते थे, कमर बिल्कुल सीधी करके नहीं। इस लिये लड़के आपको चिढ़ाया करते थे और आपको आते हुए देख कर कहते थे—"लो, ये आये प्रोफेसर साहब!" स्कूलसे विद्यार्थी एक मासिक पत्रिका निकालते थे। ऐण्ड्रयूजके एक मित्र उसके सम्पादक थे और स्वयं ऐण्ड्रयूज उसके सहायक-सम्पादक। इन सम्पादक-द्वयको जितनी चिन्ता अपनी मासिक पत्रिका निकालनेकी रहती थी उतनी अपनी कक्षाके पाठ याद करनेकी नहीं। ऐण्ड्रयूज ड्राइङ्ग और चित्र-विद्यामें बड़े कुशल थे और इस कारण आर्ट-स्कूलमें आपको बहुतसे पारितोषक भी मिले थे। हर रोज शामके वक्त आप आर्ट-स्कूलमें जाया करते थे। वहाँके प्रिंसीपल आपके कामसे इतने खुश थे कि एक बार वे आपके पिताके पास आये और बोले—"इस लड़केको आप आर्टिस्ट बनने दीजिये। इसकी स्कूलकी पढ़ाई बन्द करा दीजिये। हम इसे चित्र-विद्याके लिये एक छात्र-वृत्ति देनेको तय्यार हैं। यह अत्युत्तम आर्टिस्ट बनेगा।" ऐण्ड्रयूजकी भी यही इच्छा थी। आपके पिताने मिस्टर बार्डी साहबसे जा स्कूलके हैडमास्टर थे, इस विषयमें सलाह ली। हैडमास्टर साहबने यह बात स्वीकृत नहीं की। उन्होंने ऐण्ड्रयूज साहबके पितासे यही कहा—"आप इसे हमारे स्कूलमें ही

पढ़ने दीजिये, हमारे यहाँसे उठाइये नहीं।" आखिर हैडमास्टर साहबकी सलाह ही मानी गई और ऐण्ड्रयूज उसी स्कूलमें पढ़ते रहे।

उम्र बढ़ने पर ऐण्ड्रयूजकी निर्बलता भी दूर होने लगी। आपको क्रिकेट खेलनेका बड़ा शौक था और आप स्कूलकी क्रिकेट टीममें खेला करते थे। एक बार स्कूलकी पार्टी क्रिकेट खेलनेके लिये किसी दूसरी जगहको गई थी। उसके साथ आप भी गये थे। लड़कोंने एक कम्पार्टमेण्ट अपने लिये अलग लगवा लिया था। यह डिब्बा रेलवे स्टेशन पर एक कोनेकी लाइनमें अलग खड़ा कर दिया गया था। ऐण्ड्रयूज लाइनको पार करके उस डिब्बेकी ओर जाना चाहते थे। प्लेटफार्मसे आप उधरकी ओर कूदनेहीवाले थे कि दूसरी ओरसे बड़े जोरके साथ ऐक्सप्रैस गाड़ी चली आ रही थी। ऐण्ड्रयूजके दिलमें बड़ी भारी इच्छा हुई कि ट्रेनके सामने होकर कूद जावें और इस इच्छाको रोकना अत्यन्त कठिन हो गया। बड़ी कठिनाईके साथ आप अपनेको सँभाल सके। उस समय एक सैकंड भरके लिये अपनेको रोकनेमें आपको इतना परिश्रम पड़ा कि आप अपनी जगह पर बैठ कर हाँफने लगे। अगर उस समय एक सैकंडके लिये आप अपनेको न रोकते तो अपनी जानसे हाथ धो बैठते। मिस्टर ऐण्ड्रयूजके स्वभावमें एक विचित्रता है। वे कहते हैं—"बराबर मेरी प्रवृत्ति यही रहती है कि जोरके साथ आती हुई चीजके साथ मैं भी मिल जाऊँ। जब कोई ट्रेन स्टेशन पर आती है तो मुझे एक विचित्र प्रकारकी इच्छा होती है कि मैं भी उसके साथ हो जाऊँ। मेरी प्रवृत्ति गतिको देख कर उसके साथ सम्मिलित होनेकी होती है। जब मैं पानीको बड़े जोरके साथ गिरते हुए देखता हूँ तब भी मेरे मस्तिष्क पर ऐसा ही प्रभाव पड़ता है। जब मैं पिछले वर्ष पूर्वी अफ्रिका-प्रवासी भाइयोंकी हालत देखने गया था तो मैंने वहाँ एक बड़ा भारी जलप्रपात—जिसका नाम 'रिपन्स वाटर फौल' है—देखा। वहाँ विक्टो-

रिया न्यांजाके झीलका पानी नील नदीके निकासके स्थान पर बड़ी ऊँचाईसे गिरता है। जब मैं एक चट्टान पर खड़ा हुआ था और मेरे चारों ओर इधर उधर पानी नीचे गिर रहा था, तब मेरा दिमाग चक्कर खाने लगा और मेरे मनमें यही इच्छा हुई कि मैं भी पानीके साथ कूद पड़ूँ। ऐसे अवसरों पर मुझे बड़ा संयम करना पड़ता है, नहीं तो दुर्घटना हो ही जावे।"

मि० ऐण्ड्रयूजकी गतिके साथ स्वयं मिल जानेकी यह इच्छा अन्य दिशाओंमें भी काम करती है। जिस समय आप शान्तिनिकेतन विद्या-लयमें रहते हैं आप बड़ी शान्ति-पूर्वक, लेकिन प्रातःकालसे लेकर रात्रिके दस बजे तक बिना विश्राम लिये, परिश्रम करते रहते हैं। परन्तु शान्तिनिकेतनसे बाहर निकलते ही आप वर्तमान आन्दोलनोंमें बड़ी तेजीके साथ सम्मिलित हो जाते हैं। आज महात्मा गान्धीजीके आश्रममें अहमदाबादमें हैं तो कल बम्बईमें; परसों कराचीमें प्रवासी भारतीयों पर व्याख्यान दे रहे हैं तो अगले दिन हैदराबादकी जनताके सामने "पूर्ण-स्वराज्य" पर लैक्चर हो रहा है। वहाँसे छूटे कि सीधे बेगार-पीड़ित पहाड़ी आदमियोंकी दशा देखनेके लिये सुदूर उत्तरमें शिमलाके निकट कोटागढ़ जा पहुँचे। उधरसे लौटे तो मुसलिम यूनीव-र्सिटीके सम्बन्धमें अलीगढ़ जा उतरे। वहाँ सुना कि महात्मा गान्धीजी कलकत्तेमें हैं तो फौरन अलीगढ़से कलकत्ते चल दिये। जिस समय आपने कुलीप्रथाको बन्द करनेका आन्दोलन उठाया था उस समय भी आपने बड़ी तेजीके साथ सम्पूर्ण भारतके प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरोंका चक्कर लगा दिया था। प्रयागमें बड़ा जोश-पूर्ण व्याख्यान दिया, बीमार पड़ गये, लेकिन कमजोरीकी हालतमें ही मदरास पहुँचे। वहाँ सभा की और शर्तबन्दीके बन्द करानेके लिये 'ऐण्टी इण्डेंचर लीग' कायम की। वहाँसे पूना पहुँचे और महात्मा तिलकसे मिले, वहाँ भी व्याख्यान दिया।

वहाँसे अहमदाबाद और फिर बम्बई जा पहुँचे। एक बार जहाँ किसी आन्दोलनमें सम्मिलित हुए कि फिर बीचमें अपनेको रोकना आपके लिये असम्भव हो जाता है। इस लिये मिस्टर ऐण्ड्रयूजका यह कथन कि 'गतिको देख कर मेरी इच्छा उसके साथ चलनेकी होती है' उनकी मानसिक प्रवृत्तिको भी बड़ी अच्छी तरह प्रगट करता है।

ऐण्ड्रयूजके पिछले दो वर्ष स्कूलमें बड़े आनन्द-पूर्वक व्यतीत हुए, क्योंकि हैडमास्टर साहब मिस्टर बार्डी आप पर बड़ी कृपा रखते थे। हैडमास्टरके क्लासमें आनेके पूर्वकी सालें आपके लिये एक प्रकारसे नीरस और कष्ट-पूर्ण ही रहीं। इसके सिवाय बर्मिङ्गहम नगरका जीवन भी आपको बहुत ना-पसंद था। बड़े बड़े नगरोंमें जैसा अशान्तिमय जीवन लोगोंको व्यतीत करना पड़ता है उसका यहाँ वर्णन करनेकी आवश्यकता नहीं। बर्मिङ्गहममें ८ मीलकी दूरी पर एक बड़ा लम्बा-चौड़ा पार्क था। यह सट्टन नामक स्थानमें कई मीलकी दूरी तक फैला हुआ था। जब कभी अवकाश मिलता तो आप नगरकी अशान्तिसे बचनेके लिये इस सट्टन पार्कको चले जाया करते थे। ग्राम्य जीवनकी सरलता और स्वतंत्रता आपके हृदयको बहुत आकर्षित करती थी।

पैम्ब्रोक कालेजमें अध्ययन और धर्म-सम्बन्धी विश्वासमें परिवर्तन।

पैम्ब्रोक कालेजमें अध्ययन करते समय मिस्टर ऐण्ड्रयूजके विश्वासोंमें बहुत कुछ परिवर्तन हो गया। सबसे कठिन प्रश्न आपके सामने यह था कि "बाइबिल निर्भ्रान्त है या नहीं?" बहुत कुछ सोच विचार करनेके बाद आपने बाइबिलको निर्भ्रान्त मानना छोड़ दिया। मिस्टर ऐण्ड्रयूजके पिताजीका यह विश्वास था, और करोड़ों ईसाइयोंका यही यकीन है कि बाइबिलका प्रत्येक शब्द ईश्वर-प्रेरित है। मिस्टर ऐण्ड्रयूजने यह विश्वास

सदाके लिये छोड़ दिया। आप कहते हैं—“इस विश्वासको छोड़ देनेके वाद मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मैंने एक प्रकारकी मानसिक दासतासे मुक्ति पा ली।” पाठकोंको यह सुन कर आश्चर्य होगा कि कवि-सम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुरके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरके विश्वासमें भी इसी प्रकारका परिवर्तन हुआ था। पहले वे वेदोंको विल्कुल निर्भ्रान्त और ईश्वर-प्रेरित मानते थे, लेकिन फिर पीछेसे उन्होंने इस विश्वासको तिलाञ्जलि दे दी थी। यद्यपि कालेजके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजको वहुतसे पारितोषक और वजीफे मिलते रहे, लेकिन उनका मन वरावर धार्मिक कठिनाइयोंमें फँसा रहा। चार वर्ष वाद मिस्टर ऐण्ड्रयूजने—जव कि वे अपनी अन्तिम परीक्षाके लिये तय्यारी कर रहे थे—पिताके सम्प्रदायको किस प्रकार छोड़ दिया, और उस समय उन्हें कितने अधिक मानसिक कष्ट उठाने पड़े, इसका वर्णन आगे चल कर किया जावेगा।

भारतके प्रति प्रेम।

भारतके प्रति मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी सहानुभूति वहुत दिनोंसे है। जव आप वहुत छोटे ही थे उस वक्त अपनी मासे कहा करते थे—“मा, मैं हिन्दुस्तान जाऊँगा”। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं—“मैंने यह वात सुन रक्खी थी कि हिन्दुस्तानी चावल खाते हैं। इस लिये मैं अपनी मासे भात वनवा कर खाया करता था। जव मैं भात खाने वैठता तो मेरी मा वहुत हँसती और कहती—“चार्ली, तुम किसी न किसी दिन हिन्दुस्तान जरूर जाओगे”। जव आप कालेजमें पढ़ते थे उन दिनों आपकी भारतवर्षके दर्शन करनेकी इच्छा और भी अधिक वढ़ गई थी। आपके एक मित्र मिस्टर वेसिल वैस्टकौट केम्ब्रिज-मिशनके मिशनरी वन कर दिल्ली आये थे। उस समय आपकी इच्छा भी अपने मित्रके साथ यहाँ आनेकी थी।

मिस्टर बेसिल वैस्टकौटके पिता **डाक्टर वैस्टकौट** डरहमके बिशप थे। इङ्गलैण्डके बड़े बड़े दिग्गज विद्वानोंमें उनकी गणना होती थी। छुट्टियोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज उन्हींके घर पर जाया करते थे और वहीं रहा करते थे। बिशप साहब दर्शनशास्त्रके अच्छे विद्वान् थे और बड़े उदार-हृदय भी थे। भारतीय दर्शन और धर्मके लिये उनके हृदयमें श्रद्धा थी। संपूर्ण संसारके इतिहासमें भारतका क्या स्थान है? इस प्रश्न पर उन्होंने बड़ी गम्भीरता-पूर्वक विचार किया था। उस समय जो लोग भारतीय धर्म और दर्शनशास्त्रकी कदर करते थे उनमें डरहमके बिशप डाक्टर वैस्टकौटका नम्बर सबसे ऊँचा था। वे कहा करते थे—"भारतवर्ष एशियाका मास्तिष्क है, विचार वहींसे उत्पन्न होते हैं।" उनकी सम्मति थी कि जिन दो जातियोंने संसारके बुद्धि-विकाशमें सबसे अधिक सहायता दी है वे भारत और यूनान हैं। एक दिन उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्रयूजसे कहा था:—

साथियोंका प्रभाव।

" India will always be the leader of Asia. Japan can never be so. It was India which taught both to Japan and to China their noblest civilisation. The only religious movement which has unified Asia has been that of Buddhism which started from India."

अर्थात् "भारत ही सदा एशियाका नेता रहेगा, जापान कदापि नहीं हो सकता। भारतने ही चीन और जापानको सर्व्वोच्च सभ्यताका पाठ पढ़ाया। जिस धर्मने एशियाको एक कर दिया वह बौद्ध धर्म था और बौद्ध धर्मका जन्म भारतमें ही हुआ था।"

बिशप साहब कहा करते थे कि भारतवर्षके विचारक ही न्यूटेस्टेमेण्ट (बाइबिल) का अर्थ समुचित रीतिसे कर सकेंगे। उनका मत था—

"हम लोग जो पश्चिमी देशोंके निवासी हैं, सैण्ट जानकी इंजीलको नहीं समझ सके। कभी समय आवेगा कि भारत उसका अर्थ ठीक तरहसे करेगा।"

मिस्टर ऐण्ड्रयूज विशप साहवके साथ टहलने जाया करते थे और प्रायः भारतके विषयमें बातचीत किया करते थे। विशप साहव वड़े वृन्द्ध थे और वड़े धर्मात्मा थे। और उनका चरित्र अत्यन्त पवित्र था। हिन्दू-काल और वौद्धकालके भारतसे उन्हें प्रेम था। जर्मनीके तत्त्ववेत्ताओं और विद्वानोंके अनेक ग्रन्थोंका उन्होंने अध्ययन किया था। प्रोफेसर मैक्स-मूलरके साथ उनकी गहरी मित्रता थी और वे मैक्समूलरकी प्रायः प्रशंसा भी किया करते थे। विशप वैस्टकौटकी विद्वत्ता और भारत-प्रेमका मिस्टर ऐण्ड्रयूज पर वड़ा प्रभाव पड़ा। हिन्दूकालीन भारतके प्रति ऐण्ड्रयूज साहव-के हृदयमें जो श्रद्धा और सम्मान है उसका मूल कारण विशप वैस्टकौट साहबका सत्सङ्ग ही है। कलकत्तेके वर्तमान लार्ड विशप डरहमके विशप वैस्टकौट साहबके सुपुत्र हैं।

मिस्टर ऐंड्रयूजके दूसरे साथी **प्रोफेसर ई० जी० ब्राउन** थे। लोगोंने उनका नाम पर्शियन ब्राउन रख छोड़ा था। वे पर्शियामें रह चुके थे और उनके साथ फारसी भाषाके कई विद्वान् भी रहते थे। वे फारिसके राष्ट्रीय आन्दोलनके वड़े पक्षपाती थे। वे तुर्की, अरवी और फारसी भाषा धारा-प्रवाह वोल सकते थे। इसलाम मजहबसे उन्हें वड़ी मुहब्बत थी। वे कहा करते थे—"इसलाम धर्मकी सभ्यता यूरोपीय सभ्यतासे भिन्न ढङ्गकी है और वह उच्च कोटिकी है।" पूर्वी देशोंके लिये उनके हृदयमें असाधारण प्रेम था। पूर्वीय देशोंमें यात्रा करनेका भी उन्हें वड़ा शौक था। किस्से कहनेमें तो वे एक ही थे, और मिस्टर ऐण्ड्रयूज रातके एक-एक वजे दो-दो वजे तक उनके पास वैठे हुए उनकी यात्राओंका मनोरंजक वर्णन सुना करते थे।

मिश्र देशकी स्वाधीनताके भी वे बड़े पक्षपाती थे और जिस समय फरासीसियोंने उत्तरी अफ्रिकामें मोरक्को हड़प किया था उस समय प्रोफेसर ई० जी० ब्राउनने बड़ी दृढ़ता-पूर्वक इस अन्यायका घोर विरोध किया था। यद्यपि इस विषयमें बहुत ही कम अँगरेजोंने उनका साथ दिया था, लेकिन न्यायप्रिय होनेके कारण उन्होंने अपनी आवाज इस लूटके विरुद्ध उठाई थी। प्रोफेसर ब्राउन साहब सन् १८९० से अब तक पैम्ब्रोक कालेजमें, जहाँ कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज पढ़ते थे, अध्यापक हैं। उनका कमरा ऐण्ड्र्यूज साहबके कमरेके ठीक सामने ही था।

प्रोफेसर ब्राउन साहबने इसलाम मतका जो चित्र मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके सम्मुख उपस्थित किया था वह उस चित्रसे बिल्कुल भिन्न था जो ईसाई मिशनरियोंकी किताबोंमें खिंचा हुआ पाया जाता है। यूरोपके इतिहासके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके पहले जो भ्रमात्मक विचार थे उन्हें भी प्रोफेसर ब्राउन साहबने ठीक कर दिया था।

अरब-सभ्यताने यूरोपियन लोगोंके बुद्धि-विकाशमें जो महत्त्व-पूर्ण सहायता दी थी और जिस प्रकार इस अरब-सभ्यताने विज्ञानका बीज यूरोपकी भूमिमें बोया था ये बातें प्रोफेसर ब्राउन साहबने मिस्टर ऐण्ड्र्यूजको भली भाँति समझा दी थीं। वे कहा करते थे—"यूरोप दो जातियोंका ऋणी है—एक तो अरब और दूसरी यूनानी।"

ईसाई मिशनरियोंका भारत।

ईसाई मिशनरी लोग जो भारतसे लौट कर विलायतको जाया करते थे, मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके सामने भारतका बड़ा अन्धकारमय चित्र खींचा करते थे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज कहते हैं—"दो उदार-हृदय महानुभावोंने मेरे विचारों पर बहुत प्रभाव डाला। एक तो डरहमके विशप साहब और दूसरे प्रोफेसर ब्राउन साहब। लेकिन इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तानसे लौटे हुए मिशनरियोंका भी मेरे ऊपर कुछ प्रभाव पड़ा

था। ये मिशनरी लोग भारतका तथा पूर्वी देशोंका जो चित्र मेरी आँखोंके सामने खींचते थे वह बिल्कुल अन्धकारमय था। इन लोगोंमेंसे कितने ही बड़े भलेमानस भी थे, बड़े बड़े विद्वान् भी थे और अधिकांशने प्रशंसनीय स्वार्थत्याग भी किया था, लेकिन जब कभी मिशन-सम्बन्धी विषयों पर बातचीत होती तो इन लोगोंकी बातें हठधर्मी और संकुचित-हृदय मनुष्योंकी-सी होती थीं। अपने भारत-सम्बन्धी संकुचित विचारोंमें ये लोग लगभग सभी एक-मत थे। मैंने इन लोगोंके मुखसे हिन्दुस्तानके निवासियोंकी बड़ाई शायद ही कभी सुनी हो ? इन लोगोंके किस्से-कहानी सुन सुन कर मैं यह सोचने लगता था कि क्या भारतवर्ष सचमुच ही महान् अन्धकारमय देश है जहाँ हर तरहकी बुराइयाँ फैली हुई हैं और जहाँ प्रकाशकी केवल दो-चार रेखा ही पाई जाती हैं! एक मिशनरी मेरे बड़े भारी मित्र और प्रेमी थे। आप भारतमें काम करके वापिस गये थे। भारतवासियोंकी और विशेषतः भारतीय विद्यार्थियोंकी निन्दा करते हुए आपने कहा था कि इन लोगोंकी अकल बड़ी मोटी होती है। उनकी मन्दबुद्धिकी उपमा देते हुए आपने हैमलेट नाटककी यह पंक्ति पढ़ी—Duller than the fat weed that rots itself in ease on lethe's bank. भारतवासियोंकी बुद्धिका मजाक उड़ाना तो खैर कोई ऐसी भयंकर बात नहीं थी, लेकिन बड़ी वाहियाद बात तो यह थी कि ये लौटे हुए मिशनरी लोग हिन्दुस्तानियोंके आचरणों पर कलङ्क लगाया करते थे। भारतवर्षमें स्त्रियोंके साथ, अछूत जातियोंके संग और विधवाओंके प्रति जो व्यवहार किये जाते हैं उनके विषयमें ये मिशनरी लोग मुझे बहुतसे किस्से सुनाया करते थे। अब हिंदुस्तानमें आकर रहने पर मुझे मालूम हुआ है कि ये किस्से बिल्कुल इकतर्फा थे। ये किस्से केवल पुरुषों द्वारा ही नहीं सुननेमें आते थे, बल्कि मिशनरी लेडीज भी अक्सर ऐसे ही किस्से सुनाया करती

थीं और उनका खींचा हुआ भारतका चित्र और भी अधिक अन्ध-कारमय होता था।

पिताजीके विचारोंका प्रभाव।

मिस्टर ऐण्ड्रूजके पिता पुराने विचारोंके थे इस लिये ब्रिटिश शासनकी न्याय-प्रियताके विषयमें और भारतके इतिहासके विषयमें भी उनके विचार इकतर्फा ही थे। बाल्यावस्थासे पिताके साथ रहनेसे मिस्टर ऐण्ड्रूजके खयालात भी वैसे ही बन गये थे। वे कहते हैं—"पिताजी बड़े पक्के कंसर्वेटिव थे। उन्हें जो शिक्षा मिली थी वह 'अनुदार-दल' के विचारोंकी थी। वे देशभक्त अव्वल नम्बरके थे, लेकिन उनकी देशभक्ति संकीर्ण थी। बाल्यावस्थामें मैं भी पूर्णतया उन्हीं कैसे विचारोंका था। यहाँ पर मैं यह भी बतला देना चाहता हूँ कि आगे चल कर पिताजीके विचारोंमें बड़ा भारी परिवर्तन हो गया था। वृद्धावस्थामें पिताजीको इस बातसे अत्यन्त दुःख होता था कि ब्रिटिश लोग हिन्दुस्तानियोंके साथ इतना बुरा बर्ताव करते हैं। जब मिस्टर गोखलेकी अनुमतिसे महात्मा गान्धीजीकी सहायता करनेके लिये मुझे दक्षिण-अफ्रिका जाना पड़ा था और जब मैं फिजी-प्रवासी भारतीयोंकी दशा देखनेके लिये फिजी द्वीपको गया था तो मेरे पिताजीको बड़ी प्रसन्नता हुई थी। वे मेरे इन कामोंसे पूर्ण सहानुभूति रखते थे। लेकिन जब मैं बालक था उस समय वे पक्के अनुदार-दलवादी थे। यहाँ तक कि वे मिस्टर ग्लैडस्टनके घोर विरोधी थे। उनके 'होमरूल' के विचारको अनुचित समझते थे और ब्रिटिश साम्राज्यके प्रति उनकी अनन्य भक्ति थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि इस संसारमें यदि कोई सर्वोत्तम वस्तु है तो वह ब्रिटिश साम्राज्य ही है। मुझे वह ब्रिटिश साम्राज्यकी खूबियाँ बतलाया करते थे, और उसकी तारीफ करते करते नहीं अघाते थे। वे मुझे क्लाइव और हेस्टिङ्गसके चरित्र-सम्बन्धी किस्से-कहानियोंकी किताबें दिया करते थे। मुझे

याद है कि एक वार उन्होंने एक सचित्र पुस्तक मुझे पढ़नेके लिये दी थी। इस पुस्तकमें उन वीरता-पूर्ण कार्योंका वर्णन किया गया था जिनके कारण ब्रिटिश साम्राज्यकी नींव पड़ी। इस पुस्तकमें उन अन्याय-पूर्ण युद्धोंकी भी जो अँगरेजोंने अपनी अफीम चीनमें जवरदस्ती घुसेड़नेके लिये किये थे, प्रशंसा की गई थी, और ये युद्ध भी ब्रिटिश वीरताके उदाहरण-स्वरूप पेश किये गये थे। इस पुस्तककी एक अत्यन्त चित्ता-कर्षक तस्वीरका भी मुझे स्मरण है। इस तस्वीरमें अँगरेजी जलसेनाके आदमी चीनी नौकाओं पर धावा और कब्जा करते हुए दिखलाये गये थे।"

"वाल्यावस्थामें मस्तिष्क पर जो असत्य विचार जम कर वैठ जाते हैं उनका आगे चल कर मिटना अत्यन्त ही कठिन होता है। वाल्यावस्थामें मुझे किसीने एक वात भी ऐसी नहीं वतलाई जिससे यह मालूम होता कि ब्रिटिश शासकोंने भारतमें कुछ अन्याय भी किये हैं। वरावर मेरे दिमाग पर यही असर पड़ता रहा कि ब्रिटिश राज्यके इतिहासमें और दुनियाकी तवारीखमें अगर कोई प्रशंसनीय चीज है तो वह हिन्दुस्तानमें अँगरेजोंका राज्य ही है! पिताजीके लिये तो मानों यह एक धार्मिक विश्वास था। इसमें उनका विशेष दोष नहीं था, क्योंकि वे अनुदार वायुमंडलमें शिक्षित हुए थे और सच्चाईके साथ वे यही विश्वास करते थे कि दैवी ब्रिटिश साम्राज्यकी महिमा अनन्त है। जव हिन्दुस्तानमें आकर और सव वातें अपनी आँखोंसे देख कर मैंने यहाँकी वास्तविक दशा और ब्रिटिश लोगोंकी करतूतोंके वारेमें अपने पिताजीको पत्र लिखे तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ था। जव मैं इन सव पुरानी वातोंको स्मरण करता हूँ तो मुझे यही पता लगता है कि जव तक मैं विश्वविद्यालयमें पढ़नेके लिये नहीं पहुँचा तव तक मेरा संसर्ग उदार-दलके राजनैतिक विचारोंसे नहीं हुआ। मैं अपने पिताजीका भक्त था और वे कंसर्वेटिव (पुराने विचारके) थे। पिताजी वर्मिङ्घमके राजनैतिक नेता थे और अच्छे व्याख्यानदाता भी

थे। मैं प्रायः उनके व्याख्यानोंको सुना करता था और उन्हींके विचारोंके रंगमें रँग गया था। यद्यपि विश्वविद्यालयमें भर्ती होने पर मेरे विचारोंमें बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था और मजदूर-दलके प्रश्नोंको अध्ययन करने पर मैंने अपने पिताजीके बहुतसे विचार भी छोड़ दिये थे, तथापि सन् १९०४ में भारतको आने पर भी मैंने इन विचारोंसे पूर्णतया मुक्ति नहीं पाई थी।"

इस प्रकार जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज कालेजमें पढ़ते थे तब भारतके विषयमें उनके विचार बड़े गड़बड़ और अनिश्चित थे। एक ओर तो डरहमके लार्ड बिशपने उन्हें हिंदुओंके अतीत कालकी महिमा बतलाई थी और प्रोफेसर ब्राउन साहबने उन्हें मुसलिम सभ्यताका यथार्थ ज्ञान कराया था, लेकिन दूसरी ओर ईसाई मिशनरियोंने भारतका घोर अन्धकार-मय चित्र उनकी आँखोंके सामने खींच दिया था। मिस्टर ऐण्ड्रयूजको कोई उदार मिशनरी नहीं मिले थे जो उन्हें भारतके विषयमें कुछ अच्छी बातें भी बतलाते।

पिताजीके सम्प्रदायका त्याग और जातिसे बहिष्कार।

सन् १८९५ में जब मिस्टर ऐंड्रयूज अपनी अन्तिम परीक्षाके लिये तय्यारियाँ कर रहे थे उनके जीवनकी एक बड़ी भारी घटना हुई। अपने पिताजीके धार्मिक विचारोंमें उनका जो विश्वास था वह जाता रहा। पिताजीकी इच्छा थी कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज उनके सम्प्रदायके प्रचारक बनें, लेकिन ऐण्ड्रयूज साहबने अपने पिताजीकी सेवामें यह बात स्पष्टतया निवेदन कर दी कि मैं अर्विङ्गा-इट सम्प्रदायका अनुयायी भी नहीं रह सकता। आपकी इस स्पष्टवादिताका बड़ा भयंकर परिणाम हुआ। आप जातिसे बहिष्कृत कर दिये गये। आप कहते हैं—"जितनी कठिनाई मुझे उस समय उठानी पड़ी उतनी मुझे अपने ज़ीवन भरमें कभी भी नहीं उठानी पड़ी।"

जातिसे बहिष्कृत होनेका अर्थ और उसका परिणाम भी मिस्टर ऐण्ड्रयूजके ही शब्दोंमें सुनाना ठीक होगा। आप कहते हैं—"हमारे यहाँ गिरजाघरोंमें एक विशेष प्रकारकी पूजा होती है जिसे Holy Communion (पवित्र संगति) कहते हैं। यह अत्यन्त पवित्र समझी जाती है। जो लोग इस "होली-कमूनियन" में सम्मिलित होते हैं वे अपने पापोंके लिये पश्चात्ताप करते हैं और सदा पवित्र जीवन व्यतीत करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। सदाचारी आदमी ही इसमें सम्मिलित होते हैं और इस बात पर पूरी पूरी दृष्टि रक्खी जाती है कि कोई भी दुराचारी आदमी इसमें शामिल न हो जावे। जिन लोगोंके चरित्रोंमें कुछ खराबी होती है वे अपने आप ही इसमें नहीं आते। मेरे माता-पिता वर्षोंसे इस पवित्र पूजामें सम्मिलित होते आये थे। चूँ कि मेरे पिताजी अर्विङ्गाइट सम्प्रदायके मुखिया थे, इस लिये इस सम्प्रदायके अनेक आदमी उनके अनुयायी थे। ज्यों ही मैंने अपना यह विचार प्रगट किया कि अर्विङ्गाइट सम्प्रदायकी बहुत-सी बातें मेरे अन्तःकरणको स्वीकार नहीं है, मेरा बहिष्कार कर दिया गया। अब मैं इस प्रार्थनामें शामिल नहीं हो सकता था। मेरे इस मत-परिवर्तनसे पूज्य माताजीके हृदयको बड़ा भारी धक्का लगा। उस समय यदि मुझे कुछ सन्तोष था तो यही था कि यह कार्य्य मैंने अपनी अन्तरात्माके अनुकूल किया हैं। हिन्दुस्तानमें जातिसे बहिष्कृत लोगोंको जो तकलीफें उठानी पड़ती हैं वे मुझे भी उठानी पड़ीं। एक बड़ा भारी दुःख मुझे और था, वह यह कि उन दिनों पिताजीको हृदयकी निर्बलताकी बीमारी थी, और मुझे इस बातकी आशङ्का बराबर रहती थी कि कहीं पिताजीके निर्बल हृदयको भारी धक्का न पहुँचे और इसके कारण उनकी मृत्यु न हो जावे। पिताजी उन दिनों मुझसे प्रायः वाद-विवाद किया करते थे और वाद-विवादका जोश उनके स्वास्थ्यके लिये और भी हानिकारक

था। इस लिये मैं बराबर यही कोशिश किया करता था कि उनसे वाद-विवाद करनेका अवसर ही न आवे। पिताजी तो किसी न किसी तरह मेरे बहिष्कृत होनेके दुःखको सह गये, लेकिन मेरी माताको यह दुःख बहुत दिनों तक रहा। पहले प्रत्येक रविवारको मैं अपनी माताके साथ उपर्युक्त पवित्र पूजामें जाया करता था। पिताजी भी जाते थे, लेकिन मैं सदा अपनी माके निकट ही खड़ा होता था। यह बात वर्षोंसे होती चली आई थी। अब मेरे बहिष्कृत होनेके बाद जब रविवार आता था तो माताजीको उस दिन इस बातसे अत्यन्त दुःख होता था कि मैं उनके साथ गिरजाघरमें नहीं जा सकता था। वे बराबर इस बारेमें मुझसे कहा भी करती थीं। ऐसी घटना मेरे घराने भरमें पहले कभी नहीं हुई थी। यह सम्पूर्ण कठिनाइयाँ मेरे सामने तब उपस्थित हुई थीं जब मेरी अन्तिम परीक्षाके कुछ सप्ताह ही बाकी थे। एक बार ६ सप्ताहके लिये मैंने सब पढ़ाई बन्द कर दी और इसी प्रश्न पर विचार करता रहा कि "अर्वि-ङ्गाइट सम्प्रदायके विश्वास मेरे अन्तःकरणके अनुकूल हैं या नहीं ?" ६ सप्ताह विचार करनेके बाद मैंने अपना निश्चय माता-पिताकी सेवामें निवेदन कर दिया था, यद्यपि इस निश्चयके कारण मुझे घोर मानसिक कष्ट सहना पड़ा था। उस समय मुझे अपने मित्र मिस्टर बेसिल वैस्टकौटसे जो आगे चल कर दिल्लीमें मिशनरी बन कर आये थे, बड़ी भारी सहायता मिली थी। इन धर्म-सम्बन्धी कठिनाइयोंके कारण पढ़ने लिखनेमें बड़ी भारी बाधा पड़ती थी। मेरे मित्र मिस्टर वैस्टकौटने मुझे यही सलाह दी कि मैं सेकण्ड ट्राइपसकी परीक्षाको छोड़ दूँ और इस धर्म-सम्बन्धी जटिल प्रश्नको पहले हल कर लूँ। फैलोशिप उन्हींको मिलती थी जिनका पिछला विद्यार्थी जीवन भी बहुत सफलता-पूर्ण होता था और जो अन्तिम परीक्षामें भी सर्वोत्तम रहते थे। अब तक मैंने जो सफलता प्राप्त की थी वह यह थी। बी० ए० में मैं प्रथम कक्षामें उत्तीर्ण हुआ था, Classics में मैंने

फर्स्ट क्लास प्राप्त किया था, ग्रीक और लेटिन भाषामें आनरकी परीक्षा पास की थी। यूनीवर्सिटीके दो बड़े बड़े पुरस्कार प्राप्त किये थे, एक तो यूनीवर्सिटीकी छात्रवृत्ति और दूसरा एक निबन्धके लिये विश्वविद्यालयसे पुरस्कार। परीक्षक लोग विद्यार्थियोंकी पिछली सफलताओंके लिये भी नम्बर देते थे। इन धार्मिक कठिनाइयोंकी वजहसे मुझे अपनी अन्तिम परीक्षामें फर्स्ट क्लास पानेकी आशा नहीं थी, क्योंकि सम्पूर्ण समय इन्हीं धार्मिक चिन्ताओंमें व्यतीत होता था। मैंने मित्रवर वैस्टकौटसे कहा—"यदि इस परीक्षामें थियालाजीमें फर्स्ट क्लास प्राप्त नहीं कर सका तो फैलोशिपका मिलना असम्भव ही है। इधर यह जटिल प्रश्न बड़ी भारी बाधा डाल रहा है। क्या मैं इस जटिल प्रश्नको कुछ सप्ताहके लिये टाल दूँ या अभी तय कर लूँ? कहिये मैं क्या करूँ?" मिस्टर वैस्टकौटने मुझे बाइबिलका यह वाक्य दिखला दिया—"But seek ye first thy kingdom of God and his righteousness, and all these things shall be added unto you" अर्थात् "सबसे प्रथम तुम परमात्माके राज्य और उसके धर्मकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न करो, अन्य सब सांसारिक वस्तु तो फिर तुम्हें अपने आप प्राप्त हो जावेंगी"।

तदनन्तर उन्होंने कहा—"यदि तुम अपने अन्तःकरणके प्रश्नको पीछे रख कर परीक्षाकी सफलताके प्रश्नको आगे रक्खोगे तो इसका सीधा सादा अर्थ यही होगा कि तुम परमात्माके राज्यके सवालकी उपेक्षा कर रहे हो"।

मैंने कहा—"क्या इस सवालको परीक्षाके अन्त तक टालना अनुचित होगा?" मित्रने कहा—"मेरा यह सुनिश्चित मत है, तुम परीक्षाकी कुछ भी पर्वाह न करते हुए पहले इस जटिल धार्मिक प्रश्नका निवटारा कर लो, अगर तुम मेरी सलाह नहीं मानोगे तो हम लोगोंकी मित्रतामें भेद पड़ जावेगा"।

" मैंने इस बात पर बड़ी गम्भीरता-पूर्वक विचार किया और आखिर मेरी अन्तरात्माने भी यही बात स्वीकृत की । मैंने यही निश्चित किया कि पहले घर जाकर अर्विङ्गाइट सम्प्रदायको तिलाञ्जलि दे आऊँगा, इसमें चाहे जितने दिन नष्ट हों, परीक्षाकी कोई पर्वाह नहीं करूँगा । जब यह बात मेरे शिक्षकोंको मालूम हुई तो वे बड़े नाराज हुए और उन्होंने मुझे मूर्ख भी कहा, लेकिन एक अध्यापक जिन्हें मैं अत्यन्त आदरकी दृष्टिसे देखता था, मुझसे इस बातमें सहमत थे । इन अध्यापकका नाम मिस्टर प्रायर था और ये डाक्टर वैस्टकौटके जामाता थे । जब मैं छुट्टी लेकर अपना निश्चय माता-पिताकी सेवामें निवेदन करने और अर्विङ्गाइट सम्प्रदायको परित्याग करनेके लिये घर आया था तब उसके पहले ६ सप्ताह मेरे इसी चिन्तामें नष्ट हो चुके थे और परीक्षाके केवल तीन सप्ताह बाकी थे और इन चिन्ताओं तथा जातिसे बहिष्कृत होनेके कष्टोंने मुझे इस योग्य नहीं छोड़ा था कि मैं अधिक परिश्रम कर सकता । मैंने अपना निश्चय माता-पिताके सामने प्रगट कर दिया और उनके सम्प्रदायको छोड़ दिया । इसके बाद परीक्षाके पूर्वके तीन सप्ताह तक मैंने विश्राम किया और प्रतिदिन दो तीन घंटे पढ़ी हुई पुस्तकोंको दुहराया भी । रटनेका मैं सदा विरोधी रहा हूँ और मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि परीक्षाके दिनोंके निकट आने पर जो विद्यार्थी घोर परिश्रम करके अपने दिमागको खराब कर देते हैं वे बड़ी भारी भूल करते हैं । जब परीक्षा हुई तो मेरा दिमाग बिल्कुल साफ था और मैंने सब प्रश्नोंके उत्तर अच्छी तरह दिये । परीणाम यह हुआ कि मैं फर्स्ट क्लासमें Special distinction (विशेष सम्मान) के साथ उत्तीर्ण हुआ । "

इस परीक्षामें उत्तीर्ण होनेके कारण आगे चल कर आप अपने कालेजके उन ११ आदमियोंमें सम्मिलित कर लिये गये थे जो कालेजके प्रबन्ध-कर्ता थे । केम्ब्रिज यूनीवार्सिटीके किसी कालेजकी फैलोशिप प्राप्त करना

कोई मामूली बात नहीं है। केवल वे ही विद्यार्थी फैलो होनेका सम्मान प्राप्त कर सकते हैं जो वस्तुतः 'विद्यार्थी' हों। हमारे यहाँ भारतके विश्वविद्यालयोंमें फैलोशिप इतनी सस्ती कर दी गई है जिसकी कुछ हद नहीं। यहाँ पर ऐसे महानुभाव भी अपनी धन-सम्पत्ति या प्रभावके कारण फैलो बना दिये जाते हैं जिनमें विद्वत्ताका नामो-निशान नहीं!

कालेजके जीवन-पर एक दृष्टि।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके कालेजके जीवन पर विचार करते हुए दो बातें हमारे ध्यानमें आती हैं। एक तो यह कि अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके कारण वे अपने कालेजके एक रत्न थे और दूसरी यह कि उनके कालेजके जीवनका अधिकांश भाग धर्म-सम्बन्धी जटिल प्रश्नोंके हल करनेमें व्यतीत हुआ था। इन धार्मिक प्रश्नोंके कारण उन्हें इतने मानसिक कष्ट उठाने पड़े थे कि कभी कभी तो वे एकदमनिराश हो गये। जिन बातों पर पहले उनका पूर्ण विश्वास था उन्हीं बातोंके विषयमें अब उन्हें बड़ी भारी आशङ्काएँ होने लगी थीं। मुख्यतया दो प्रश्नोंने उन्हें बहुत तंग किया था, एक प्रश्न तो यह था कि क्या सचमुच आत्माको अनन्त कालके लिये दण्ड दिया जा सकता है और क्या नरक भी कोई स्थान है? और दूसरा प्रश्न यह था कि क्या वास्तवमें बाइबिलका प्रत्येक शब्द सत्य है? मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके पिताजीका यह दृढ़ विश्वास था कि कुछ पापी आत्माएँ सदाके लिये नरकमें डाल दी जावेंगी और बाइबिल वास्तवमें निर्भ्रान्त है; लेकिन मिस्टर ऐण्ड्र्यूज इन दोनों ही सिद्धान्तों पर अविश्वास करने लगे थे। वे कहते हैं—"मेरे पिताजी बाइबिलकी निर्भ्रान्ततामें इतना अधिक विश्वास करते थे कि वे इस सिद्धान्त पर अविश्वास करनेवालोंको चरित्र-भ्रष्ट समझते थे। मेरे अर्विङ्गाइट सम्प्रदायके परित्याग करनेसे जितना दुःख उन्हें

हुआ था उतना ही दुःख उन्हें इस बातसे भी हुआ था कि मैंने बाइबिलको निर्भ्रान्त मानना छोड़ दिया था। वे कहते थे—"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे आचरणमें कोई न कोई त्रुटि है, अन्यथा तुम बाइबिल को निर्भ्रान्त मानना किस प्रकार छोड़ सकते थे? तुम्हें अपनी तीक्ष्ण बुद्धि पर अभिमान है। इस तरहका आभिमान कभी मत करना, क्योंकि अभिमान शैतानका प्रलोभन है।" बात वास्तवमें यह थी कि जब तक मैं यह यकीन करता रहा कि बाइबिलका प्रत्येक शब्द सत्य है तब तक मेरी बुद्धि गुलामीकी शृङ्खलामें बँधी रही। इस विश्वासको छोड़ देने पर ही मेरी बुद्धि स्वतंत्र हुई। जब मैंने बाइबिलको निर्भ्रान्त मानना छोड़ दिया तो आत्माको अनन्त काल तक दण्ड मिलनेके सिद्धान्तको छोड़ना आसान ही था। मैंने अपने मनमें कहा कि अगर बाइबिलमें यह बात लिखी भी है कि कुछ आत्माओंको अनन्त कालके लिये दण्ड मिलेगा तो बाइबिल निर्भ्रान्त तो है ही नहीं।"

इस अध्यायके समाप्त करनेके प्रथम हमें एक निवेदन करना है। वह यह कि मिस्टर ऐण्ड्रूजके मत-परिवर्तन पर विचार करते हुए पाठकोंको यह अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि मिस्टर ऐण्ड्रूज अपने पिताके अत्यन्त आज्ञाकारी पुत्र रहे हैं, लेकिन जहाँ पिताकी आज्ञा और अन्तःकरणकी आज्ञाका विरोध होता था, वहाँ वे नम्रता-पूर्वक पिताकी आज्ञाको अस्वीकार कर अन्तरात्माकी आज्ञाको ही मानते थे।

कालेजका जीवन समाप्त करनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्रूजने निर्धन मजदूरोंके बीचमें उन्हींकी भाँति रह कर जो कार्य किया वह महत्व-पूर्ण था और उसका वर्णन हम आगे चल कर करेंगे।

तीसरा अध्याय।
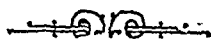
दीन-दुखियोंकी सेवा और धर्म-प्रचार।

कालेजका जीवन समाप्त करनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्रूजने लगभग चार वर्ष दीन दुखियोंकी सेवामें व्यतीत किये। ये चार वर्ष विशेषतः दो स्थानोंमें व्यतीत हुए थे। (१) **सण्डरलैण्ड**, (२) **वालवर्थ (दक्षिण-पूर्व लंदन)**। पहले स्थानमें आपने उस समय कार्य्य किया था जब कि आप कालेजको छोड़ कर ही आये थे और धर्म-प्रचारक नहीं बने थे और दूसरे स्थानमें आपने धर्म-प्रचारक बननेके बाद कार्य किया था। इन दोनों स्थानोंमें रहनेके कारण मिस्टर ऐण्ड्रूजको बहुत कुछ अनुभव हुए। इन अनुभवोंका वृत्तान्त हम आगे चल कर उन्हींके शब्दोंमें पाठकोंको सुनावेंगे। इसके पूर्व मिस्टर ऐण्ड्रूजकी उस समयकी मानासिक प्रवृत्तिका कुछ वर्णन करना उचित होगा।

मिस्टर ऐण्ड्रूजकी प्रवृत्ति स्वभावतः धार्मिक थी और राजनीतिसे आपको विशेष प्रेम नहीं था। प्रार्थना, ईश्वर-भक्ति, ध्यान और स्वाध्यायमें आपका मन जितना लगता था उतना राजनैतिक वाद-विवादमें नहीं लगता था। दीन-दुखियोंके प्रति आपके हृदयमें बड़ा भारी प्रेम था और उनकी सेवा करनेकी प्रबल इच्छा भी थी। भारतको आनेका विचार भी आपके मनमें था। आपके मित्र मिस्टर बेसिल वैस्टकौट धर्म-प्रचारक बन-कर दिल्ली चले आये थे। और आप भी उनके पीछे भारतको आनेका विचार कर रहे थे। लेकिन आपने इसके पूर्व यह निश्चित किया कि दीन-दुखियोंके साथ रह कर उनकी सेवा करनी चाहिए। आप कहते हैं—

"मैंने यह तय कर लिया था कि अगर मैं गरीब आदमियोंके बीचमें रहूँगा तो उनकी बराबरीका होकर रहूँगा, उनसे ऊँचा होकर नहीं। मैंने अपने हृदयमें सोचा कि स्वयं क्राइस्ट निर्धन मनुष्योंके बीचमें निर्धन होकर रहे थे और जो लोग ईसाई मिशनरी होकर भी प्रभु ईसाके आदर्शको नहीं मानते वे सच्चे मिशनरी कदापि नहीं बन सकते। गरीबोंके बीचमें स्वयं अमीर बन कर रहना और धर्म-प्रचारक होनेका दावा करना यह बात क्राइस्टके आदर्शके लिये अपमान-जनक है।"

उन दिनों विलायतमें मजदूरोंको प्रति सप्ताह २५ शिलिङ्ग वेतन मिलता था। मिस्टर ऐण्ड्रयूजने १० शिलिङ्ग प्रति सप्ताह पर अपनी गुजर करना शुरू किया, क्योंकि वे अविवाहित थे। ऐसा करनेमें उन्हें बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ता था और प्रायः भूखे पेट सोना पड़ता था। आपको इन दस शिलिङ्गमेंसे प्रत्येक पैनी बहुत समझ-बूझ कर खर्च करनी पड़ती थी, क्योंकि अधिक खर्च हो जानेसे पेट भर भोजन मिलना असम्भव था। जो आदमी मिस्टर ऐण्ड्रयूजके लिये खाना बनाता था वह बराबर इस बातके लिये चिन्तित रहता था कि कहीं वे भूखे न रहें। यह बात ध्यान देने योग्य है कि केम्ब्रिज विश्वविद्यालयसे इतने सम्मानके साथ परीक्षा पास करनेके कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूजको बहुत अच्छी नौकरी मिल सकती थी और आप बड़े मज़ेके साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़र कर सकते थे, लेकिन आपको धनके प्रति प्रेम न तो तब था और न अब ही है। आप लक्ष्मीके उपासक बनना नहीं चाहते थे। गरीबोंके साथ रहनेसे आपको बड़ा भारी अनुभव हुआ। आप उस समय अच्छी तरह समझ गये कि मज़दूरोंको अपना पेट भरनेमें कितनी कठिनाई होती है। आप लगभग चार वर्ष तक इसी प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते रहे। अगर कोई हमसे पूछे कि प्रवासी भारतीय मज़दूरोंके कठिन

प्रश्नोंको हल करनेमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज इतने अधिक सफल कैसे हो सके हैं तो हम यही उत्तर देंगे कि लन्दनके निर्धन मज़दूरोंके बीचमें उन्होंने तीन चार वर्ष तक जो कठोर तपस्या की थी वही उनकी इस सफलताका मुख्य कारण है। यदि मिस्टर ऐण्ड्रयूजने लन्दनमें यह तपस्या न की होती तो क्या यह सम्भव था कि वे फिजीकी कुली लेनोंमें अत्यन्त साधारण दर्जेका भोजन करके फिजीमें काम कर सकते? जब पंजाबमें आपको गाँव गाँवमें घूम कर मार्शल-लाके अत्याचारोंका पता लगाना पड़ा था तब भी आपको बहुत ही मामूली खाना खाना पड़ा था। सर्व-साधारणकी सेवा करनेकी इच्छा करनेवाले भारतीय नवयुवकोंको मिस्टर ऐण्ड्रयूजके चरित्रसे यह शिक्षा मिल सकती है कि निर्धन मनुष्योंकी सेवा करनेके पूर्व उन्हें निर्धनोंकी तरह जीवन व्यतीत करने और उन्हींके-सा भोजन करनेका अभ्यास अवश्य होना चाहिए। अस्तु, मिस्टर ऐण्ड्रयूज मज़दूरोंके बीचमें उन्हींकी भाँति रहते थे। बहुतसे ग़रीब आदमी आपके मित्र हो गये थे। मज़दूर-दलके आन्दोलनमें भी आप शामिल हो गये। आपको यह देख-देख कर बहुत दुःख होता था कि बिचारे मज़दूर तो घंटों मिहनत करने पर भी पेट भर भोजन नहीं पाते और पूँजीवाले सट्टा खेल-खेल कर लखपती करोड़पति बन कर मौज़ उड़ाते हैं। इस बातको आप असह्य और अन्याय-पूर्ण समझते थे। मज़दूरोंके नेता मिस्टर ऐण्ड्रयूजसे कहा करते थे—"देखिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज, ये पूँजीवाले किस तरह मज़दूरोंका खून चूँस-चूँस कर भारी भारी मुनाफ़े उठाते हैं और ये बिचारे मज़दूर रोटियोंके टुकड़े ही पाते हैं।" इन बातोंका समझना मिस्टर ऐण्ड्रयूजके लिये आसान था, क्योंकि वे स्वयं १० शिलिङ्ग प्रति सप्ताह पर अपनी गुज़र करते थे। इन्हीं बातोंके कारण आपका यह विश्वास हो गया था कि पूँजीवालोंकी नीति अत्यन्त अन्याय-पूर्ण है।

मिस्टर ऐण्ड्रयूजके उस समयके अनुभव इतने मनोरंजक हैं कि मैं उन्हें अपनी ओरसे न लिख कर उन्हींके शब्दोंमें उनका वर्णन करूँगा। * मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं:—

"लोग मुझसे अक्सर पूछा करते हैं—"तुम्हारे जीवनका सर्वोत्तम भाग कौनसा था?" मैं इस प्रश्नका उत्तर बिना किसी कठिनताके यही देता हूँ कि केम्ब्रिज विश्वविद्यालयको छोड़नेके बादके चार वर्ष मेरे जीवनके सर्वोत्तम वर्ष थे। केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें मैं ६ वर्ष रहा था। सन् १८९५ में मैंने अपनी पढ़ाई समाप्त की। तत्पश्चात् मैं टाइन नदीके किनारे धर्म-प्रचारार्थ गया।

इङ्गलैण्डके उत्तरमें संडरलैण्ड एक बड़ा नगर है। वहाँ जहाज बनते हैं। चारों ओर जिधर देखो उधर फैक्टरी ही फैक्टरी दीख पड़ती हैं। अशान्तिका वहाँ साम्राज्य है। संडरलैण्डके मौङ्कवियरमाउथ नामक मुहल्लेमें मुझे धर्म-प्रचारका काम करना था। वहाँ एक गिरजा घर था। बस उस अशान्तिमय वायुमंडलमें वही गिरजाघर एक शान्तिका स्थान था। दिन-रात खटा-खट धड़ाधड़की आवाज़ आया करती थी। जहाँ जहाज बनते थे वहाँ सहस्रों ही मज़दूरोंको काम करना पड़ता था। इन मज़दूरोंका जीवन अत्यन्त दुराचार-पूर्ण था। ये लोग जुआ खेलते थे, शराब पीते थे, और आपसमें खूब लड़ते थे। व्यभिचार भी भयंकर रूपसे फैला हुआ था। शनिश्चरके दिन इन लोगोंको सप्ताह भरका वेतन मिला करता था और शनिश्चरकी रात्रि ये और भी भयंकर रीतिसे व्यतीत करते थे। मज़दूरोंमें जो कारीगर लोग थे उन्हें तो वेतन बहुत अच्छा मिलता था लेकिन साधारण मज़दूरोंको बहुत कम। पूँजीवालोंका एक मात्र उद्देश्य यही था कि किसी तरह शीघ्रता-पूर्वक जहाज

* मिस्टर ऐण्ड्रयूजके ये अनुभव 'माडर्न-रिव्यू'के फरवरी तथा मार्च १९१५ के अङ्कोंमें छपे थे।—लेखक।

बन कर तय्यार हों। मजदूरोंको भर पेट भोजन मिलता है या नहीं, उन्हें कैसी हालतमें रहना पड़ता है, उनके चाल-चलन कैसे खराब हो जाते हैं, इन प्रश्नोंकी ओर पूँजीवाले कभी भी ध्यान नहीं देते थे। संडरलैण्डमें रह कर दो बातें मेरी समझमें अच्छी तरह आ गईं। पहली बात तो यह थी कि किसी मनुष्यकी निन्दा करनेके पहले हमें उसकी परिस्थिति पर भी खयाल कर लेना चाहिए और दूसरी बात यह कि राष्ट्रका यह कर्तव्य है कि वह अपने नागरिकोंकी परिस्थिति ठीक रखने और सुधारनेका पूरा पूरा प्रयत्न करे।

जहाँ जहाज बनते थे उसके फाटकके बाहर ही शराबकी दूकानोंकी लैनकी लैन थी। दिनभरके थके-थकाये मजदूर फाटकके बाहर निकलते और अपने सामने ही सजी हुई शराबकी दूकानें उन्हें दीख पड़तीं। इस प्रलोभनसे बचना उनके लिये आसान नहीं था। मैं देखा करता था कि झुंडके झुंड आदमी इन दूकानों पर शराब पीनेके लिये इकट्ठे हो जाते थे; और मैं अपने मनमें सोचा करता था—“अगर मुझे इसी हालतमें कितने ही वर्षों तक काम करना पड़ता तो क्या यह मुमकिन था कि मैं इन प्रलोभनोंसे बच जाता? अगर मुझे सवेरेसे लेकर शाम तक बिना विश्राम किये लाल लाल गरम लोहेको घनसे कूटना पड़ता तो क्या यह मेरे लिये सम्भव था कि मैं शामके वक्त शराब न पीता? अगर मुझे उसी तरहका अमानुषिक जीवन व्यतीत करना पड़ता जैसा कि इन मज़दूरोंको करना पडता है, तो क्या मैं चरित्र-भ्रष्ट होनेसे बच सकता?” इस प्रकारके प्रश्नोंका एक ही उत्तर मेरे मनमें आता था और वह यह कि अगर मुझे भी ऐसी परिस्थितिमें बराबर काम करना पड़ता तो मैं भी इन्हींकी तरह दुराचारी बन जाता। उस दशामें सदाचार-पूर्ण जीवन व्यतीत करना मेरे लिये भी सम्भव न होता। मैं सोचा करता था—“क्या यह भयंकर अन्याय और घोर पाप नहीं है कि जब

इन मजदूर पुरुषों और स्त्रियोंके शरीर काम करते करते थक गये हों, और मन निर्बल हो गये हों उस समय इनके सामने चित्ताकर्षक शराबकी बोतलें रख दी जावें? क्या यह दुराचार और व्यभिचारके लिये सीधा मार्ग नहीं है?"

"जब मैं संडरलैण्डकी हालतका स्मरण करता हूँ और यहाँ हिंदुस्तानकी मिलोंकी वर्तमान दशा देखता हूँ तो मुझे यह देख कर हार्दिक दुःख होता है कि पश्चिमकी यह महामारी अब हमारे भारतवर्षमें भी भयंकर रूपसे बढ़ रही है। प्राचीन कालके धार्मिक और सामाजिक बंधन यहाँ टूटते जाते हैं और यह शराबकी प्लेग यहाँ भी खूब फैलती जाती है। धार्मिक और जातीय बंधनोंके कारण भारतवर्षने इस प्रकारके दुराचारोंको रोकनेमें आश्चर्य-जनक सफलता प्राप्त की थी। कितनी ही शताब्दियों तक भारतवर्षमें शराबका नामो-निशान नहीं था। अब उन धार्मिक वन्धनोंको लाना अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। लेकिन कमसे कम इतना तो हम कर सकते हैं कि जहाँ ग़रीब मज़दूर रहते हैं उन स्थानोंकी परिस्थितिको सुधारनेका यथाशक्ति प्रयत्न करें। हिंदुस्तानकी फैक्टरियोंके मजदूरोंमें शराब पीनेकी प्रवृत्ति बराबर बढ़ती जाती है। जिन औरतोंके बाल-बच्चा होनेवाला होता है वे भी बराबर अपना पेट भरनेके लिये मजदूरी करती हुई पाई जाती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जो बच्चे पैदा होते हैं वे अत्यन्त निर्बल होते हैं। क्या हम लोगोंका कर्तव्य नहीं है कि हम इस ओर ध्यान दें? अस्तु, संडरलैण्डमें मुझे जो अनुभव हुए उनसे मेरी आँखें खुल गईं। जब मैं वहां पर काम करता था तो मैंने वहाँ मजदूरोंके लड़कोंके लिये एक क्लब खोल रक्खा था। ये लड़के भट्टियोंसे गरम लोहा निकाल कर जहाज़ बननेके स्थानको ले जाया करते थे। दिन भरके हारे-थके ये लड़के रातके वक्त हमारे यहाँ

क्लबमें आया करते थे। पहले तो हम सब लोग तरह तरहके ऊट-पटां खेल खेलते और फिर हम सब एक चक्कर बना कर बैठ जाते थे। मैं उ वक्त उन्हें नाना प्रकारके असम्भव किस्से सुनाया करता था। ह लोगोंने अपने क्लबका नाम "जनरल गौरडन क्लब" रख लिया था वहाँ एक दीवाल पर जनरल गौरडन साहबकी एक रंग-बिरंगी तस्वीर टँ रक्खी थी, जिसमें जनरल साहब ऊँटकी पीठ पर सवार होकर लाल टोपं पहने हुए रेगिस्तानके बीचमें जाते हुए दिखलाये गये थे। उस समय उन लड़कोंमें मेरा एक बड़ा भारी सहायक था। उसका नाम जैक जोबलिंग था। जैक जोबलिंगके जीवनमें एक बड़ा विचित्र परिवर्तन हुआ था। पहले वह घूँसेबाजीमें बड़ा होशियार था। उस नगर भरमें उसके मुक़ाबिलेमें बहुत कम आदमी आ सकते थे और जिले भरमें उसका आतङ्क छाया हुआ था। उसका सिर पत्थरकी तरह मजबूत था और उसका घूँसा लोहेकी तरह। एक दिन जैक जोबलिङ्गने शराब पी ली और शराबके नशेमें एक स्त्रीका जो रोगियोंकी सेवा करती थी, अपमान किया। यह देख कर मिस्टर अर्मसन नामक एक आदमीने जो वहाँ उन लोगोंका सरदार था, जैक जोबलिङ्गको उठा कर पटक दिया। देखनेवालोंको यही आशङ्का थी कि अब जैक उठ कर अर्मसनके घूँसे लगावेगा और उसके होश ठिकाने ला देगा। लेकिन जैकने उठ कर बिल्कुल शान्ति-पूर्वक अर्मसनसे हाथसे हाथ मिलाया और कहा—"I am your man!" "बस मैं अब आपका ही सेवक हूँ।" उसी वक्तसे जैकने शराब पीना छोड़ दिया और वह नियमानुसार गिरजेघरको जाने लगा। इस घटनाके बाद जैकके जीवनमें कितने ही हेर-फेर हुए, लेकिन तबसे लेकर उसने शराब फिर कभी नहीं पी। उसने घूँसेबाजी करना छोड़ दिया और उसका सम्पूर्ण समय अब अपने साथियोंकी शराब छुड़ानेमें ही व्यतीत होने लगा। शराबके विरुद्ध बोलते समय उसके शराबी साथियोंने उसका कई बार घोर अपमान किया, लेकिन जैक

बराबर शान्त रहा। एक बार एक कायर शराबीने शराबका बर्तन फेंक मारा और वह जैकके मुँह पर आकर लगा। उसके ओंठमें बड़ी चोट आई और खून गिरने लगा। अगर जैक चाहता तो घूँसेके मारे उसका मुँह तोड़ देता, लेकिन जैकने अपना हाथ नहीं उठाया। यद्यपि जैकको कितनी ही बार घूँसेबाजीमें इनाम मिल चुका था, लेकिन उस दिन उस चोटको शान्ति-पूर्वक सह कर जैकने अपनी सर्वोत्तम विजय प्राप्त की।

जब मैं संडरलैण्डमें इन लोगोंके साथ रहता था तो १० शिलिंग प्रति सप्ताह खर्च किया करता था। जब तक मैं वहाँ रहा मैंने शायद ही कभी इससे अधिक खर्च किया हो। लेकिन ऐसा करनेमें मुझे बड़ी कठिनाई होती थी और मैं आश्चर्य किया करता था कि १८ शिलिङ्ग या २० शिलिङ्ग प्रति सप्ताहमें मजदूर अपनी स्त्री तथा दो-तीन बच्चोंका पालन-पोषण किस तरह कर सकते हैं! उन दिनों विलायतमें मजदूरोंका वेतन २० शिलिङ्ग प्रति सप्ताहसे अधिक नहीं होता था और इस कारण बिचारे बच्चोंको अत्यन्त कष्ट-पूर्ण दशामें रहना पड़ता था। कभी कभी जब मेरे १० शिलिङ्ग सप्ताहके अन्त होनेके पहले ही खर्च हो जाते थे और मुझे रातको भूखे सोना पड़ता था उस समय मुझे उन दीन मजदूरोंके कष्टोंका कुछ कुछ अनुभव होता था।"

वालवर्थमें मजदूरोंके साथ निवास और वहाँके अनुभव।

संडरलैण्डमें काम करनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्रयूज लन्दनको वापिस चले आये और वहाँ धर्म-प्रचारक बननेके लिये दीक्षा ली। आप अपने ही कालेजके मिशनमें सम्मिलित हो गये और लंदनके दक्षिण-पूर्वमें बसे हुए वालवर्थ नामक मुहल्लेमें काम करने लगे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं—"यहाँके आदमी लापर्वाह और अपव्ययी थे। मनमौजी भी खूब थे। इन लोगोंकी संख्या ५ हजार थी। इन्होंने प्रारम्भसे ही मुझे अपना मित्र बना लिया था और मुझ पर ये पूर्ण विश्वास करते थे। ये लोग मुझे अपने

घर पर ले जाते थे और अपने सुख-दुःखमें मुझे भी सम्मिलित कर लेते थे। इनके दुःखोंका यथार्थ वर्णन करना कठिन है। ये बिल्कुल निर्धन थे और मकानोंके मालिकों तथा दलालोंके अत्याचारोंसे अत्यन्त पीड़ित थे। अपने दुःखोंको भूल जानेके लिये ये शराब पिया करते थे। हर एक गलीके कोने पर बड़े बड़े शराब-घर थे और जो पैसे बाल-बच्चोंके पालन-पोषणमें खर्च होने चाहिए थे वे इन शराब-घरोंमें पहुँचते थे। स्त्री और पुरुष शराब पी-पी कर दुश्चरित्र होते जाते थे। ये लोग चाहे जितने कष्टमें होते, मेरे पहुँचने पर मुस्करा कर दो-एक हँसीकी बात मुझसे जरूर कहते थे। इतवारके दिन मैं इन लोगोंका एक क्लास लिया करता था। इस क्लासमें एक बड़ी भारी खूबी थी। वह यह कि इसमें कितने ही जेब-कट और चोर शामिल हुआ करते थे। इन लोगोंके नाम थे—जिजंर, सौसेज, मिल्की, पंचर, स्माइलर इत्यादि। मेरे क्लासमें तो ये कोई बद-माशी नहीं करते थे, लेकिन क्लासके बाहर इन पर विश्वास करना असम्भव था। किसीकी जेब काट ली, किसीकी चीज छीन कर भाग गये, किसीके यहाँसे चोरी कर लाये। बस यही इनकी दिनचर्या थी। मैं अपना घर बराबर खुला रखता था और कोई चीज तालेमें नहीं रखता था। सब लोगों पर अविश्वास कर हरेक चीजमें ताला लगानेके बजाय मैंने यही अच्छा समझा कि सब पर विश्वास किया जावे। इसका बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। ये लोग मुझे अपना मित्र समझने लगे। ये मुझे अपनेसे बड़ा नहीं खयाल करते थे और बराबर समानताका बर्ताव करते थे। इन लोगोंके सामने अपने रविवारके क्लासमें कोई धार्मिक व्याख्यान मैंने कभी नहीं दिया। प्रशान्त महासागर, मध्य आफ्रिका और न्यू-गिनीके नरमांस-भक्षियोंके किस्से मैं इन्हें सुनाया करता था। मैंने कभी भी इनको डाट-फटकार नहीं बतलाई। ये लोग मेरे पास आकर अपनी गुप्त बातें कहा करते थे,

चोरी करनेके ढङ्ग मुझे बतलाया करते थे, लेकिन इन्हें स्वप्नमें भी इस बातका खयाल नहीं था कि मैं उनकी बातें पुलिससे कह दूँगा। उनके साथ मैंने कभी भी विश्वासघात नहीं किया। मेरी लापर्वाही पर ये लोग हँसा करते थे और मेरे व्यवहारसे प्रसन्न होकर ये लोग आपसमें कहा करते थे—"ऐण्ड्रयूज तो भलामानस है। इससे कोई बात छिपानेकी जरूरत नहीं है। यह सीधा आदमी है। इसे धोखा भी न देना चाहिए।" मुझे याद है कि एक बार मेरे क्लासमें पढ़नेवाले एक चोरने मेरी एक चीज उठा ली और अपनी जेबमें डाल ली। इसका कारण उसका स्वभाव था। पीछेसे क्लास समाप्त होने पर उसने वह चीज मुझे वापिस दे दी। मैंने इन लोगोंके सामने उपदेशक बननेकी कभी कोशिश नहीं की। गर्मीके दिनोंमें एक बार हम लोग समुद्र या जंगलकी ओर यात्रा किया करते थे। हम लोगोंने आपसमें यह बात तय कर रक्खी थी कि इस यात्रामें कोई आदमी किसीकी जेब नहीं काटे और न इधर उधरसे चोरी करे। जब कभी ये किसी अच्छी दूकानके पास होकर निकलते तो मेरे पास आकर बड़ी खुशामद करके कहते—"मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ बस एक बार, ज्यादा नहीं बस एक बार, आज्ञा दे दीजिये और फिर हम आपको दिखला दें कि हम चीजें कैसे उड़ाया करते हैं।" ऐसे अवसरों पर मैं अत्यन्त कठोर बन जाता और आज्ञा नहीं देता था। देखता था कि इन मौकों पर इनके हाथ चोरी करने या जेब काटनेके लिये खुजलाया करते थे।

"बालवर्थमें काम करनेके ११ वर्ष बाद जब कि मैं शिमलेके निकट सनावर नामक स्थानमें था, बड़ी मज़ेदार घटना हुई। मैं वहाँ गर्मीके दिनोंमें गया हुआ था। एक दिन मैं अपने कमरेमें बैठा हुआ था कि इतनेमें खाकी पोशाक पहने हुए एक फौजी आदमी मेरे सामने आकर हँस कर बोला—"Hello! mister Andrews, dont ye know

me ? " "हैलो, मिस्टर ऐण्ड्रयूज, मुझे भूल गये क्या ?" मैंने उसके चेहरेकी ओर देखा। देखते ही मुझे वालवर्थकी याद आ गई जहाँ कि मैं इतवारके दिन क्लास लिया करता था। मैं अपनी कुर्सी परसे उठ बैठा और उसके दोनों हाथ अपने हाथोंमें लेकर मैंने कहा—
" Why, bless my soul, Ginger, what brings you here ! "
" जिंजर ! तुम यहाँ कहाँ ? तुम्हें भला मैं कैसे भूल सकता हूँ ?"
जिंजर बहुत ही खुश था। वह मेरे सामने ही बैठ गया और उसने अपने पुराने किस्से सुनाने शुरू किये। बात यह हुई थी कि उसने कहीं जबरदस्त डाका डाला था, इस लिये पुलिस उसका पीछा कर रही थी। जिंजरने सोचा कि यह अच्छी आफत पीछे लगी, इस कारण उसने फौजमें अपना नाम लिखा लिया और वहाँसे अपनी रैजीमेण्टके साथ हिन्दुस्तानको चला आया। जिंजर बैण्डमें बाजा बजाता था और अच्छे चाल-चलनके लिये उसे एक पट्टा भी मिला था। मैंने उससे पूछा—" भाई, तुमने मेरा पता कैसे लगा लिया ?" उसने कहा—" मैंने एक दिन तुम्हें अपने बैण्डके कमरेकी खिड़कीमेंसे देखा था। ज्यों ही मैं नीचे आया कि फिर तुम न जाने कहाँ चले गये। फिर मैंने तुम्हें तलाश किया और यहाँ बारह मील पर तुम्हारा पता लगा।" उसी शामको जिंजरको १२ मील वापिस जाना था। चलते वक्त उसने मुझे अपने यहाँके लिये निमंत्रण दिया। उसका बैण्ड सबाथूमें था। मैं बारह मील चल कर एक दिन उसके यहाँ पहुँचा। जिंजरने मेरा बड़ा स्वागत किया। रेजीमेण्टका रसोईदार जो जो चीजें बना सकता था सब मेरे लिये तय्यार कराई गईं। जिंजर बराबर मेरे सामने खड़ा हुआ मुझसे कभी एक चीज कभी दूसरी चीज लेनेके लिये आग्रह करता। उस वक्त मना करना अत्यन्त कठिन था। बीच बीचमें जिंजर मुझे वालवर्थके साथियोंके किस्से सुना रहा था। किसीको कठिन कारावास-

का दण्ड मिला था, कोई फौजमें भर्ती हो गये थे और दो मर भी गये थे। जिंजरसे यह वर्णन सुन कर मुझे बड़ा खेद हुआ, लेकिन स्वयं जिंजरको इस दशामें देख कर हर्ष भी मुझे कम नहीं हुआ। जब मैं वहाँसे चलने लगा तो जिंजर बोला—" Look ' ere mister Andrews, mother sends me the police news regular from home every week, and whenever I get it, I'll send it on you." "मिस्टर ऐण्ड्रयूज देखो, मेरी मा घरसे बराबर प्रति सप्ताह पुलिसकी खबर भेजा करती है, जब कभी यह खबर मेरे पास आया करेगी मैं तुम्हारे पास भेज दिया करूँगा।" मुझे इन खबरोंकी बिल्कुल जरूरत नहीं थी। लेकिन जिंजरकी इस कृपाको मैं अस्वीकार नहीं कर सका। थोड़े दिन बाद जिंजर मेरे पास लन्दनके अपराधियोंके समाचार-पत्र भेजने लगा। शायद ही मैंने इन समाचार-पत्रोंको कभी खोला हो! धन्यवाद-सहित मैं उसे वह पत्र वापिस भेज दिया करता था। थोड़े दिन बाद वह रैजीमेण्ट दक्षिण-आफ्रिका चली गई और मेरा जिंजर भी वहीं चला गया। फिर कभी उससे बातचीत करनेका मौका मुझे नहीं मिला। लेकिन उस दिनकी याद मुझे कभी नहीं भूल सकती जब जिंजरने मुस्कराते हुए मेरे सामने आकर कहा था—" Hello! mister, Andrews don't ye know me?"

ऐसी ही एक घटना एक बार कलकत्तेमें हुई थी। सन् १९०६ में कलकत्तेकी कांग्रेस देखनेके लिये मैं दिल्लीसे आया था। उस साल कांग्रेसके सभापति श्रीमान् दादाभाई नौरोजी थे जिन्हें मैं अत्यन्त पूज्यदृष्टिसे देखता था। कार्नवालिस स्ट्रीटमें आक्सफोर्ड मिशनका मकान है। वहीं मैं ठहरा हुआ था। लोगोंने मुझे आज्ञा दी थी कि मैं राष्ट्रीय आन्दोलन पर कुछ भाषण करूँ। मेरा यह व्याख्यान ओवर टाउनहालमें होनेवाला था। इस व्याख्यानका विज्ञापन बड़े बड़े अक्षरोंमें मकानकी एक दीवाल

पर चिपका दिया गया था। यह विज्ञापन जहाजी फौजमें काम करनेवाले एक लड़केने देखा और पता लगा कर वह मेरे ठहरनेकी जगह पर चला आया। इस लड़केका नाम स्माइलर था और यह भी मरे वालवर्थ स्कूलका एक विद्यार्थी था। इतवारके दिन यह भी उस चोर और जेब-कट और उठाईगीरोंकी पाठशालामें आया करता था। यह लड़का बड़ा धूर्त था और वड़े ऊटपटाँग मज़ाक किया करता था। इसी वजहसे मुझे इसकी याद नहीं भूली थी। जब यह मुझे इतने वर्षों बाद कल-कत्तेमें मिला तो इसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई और मुझे भी उससे कम हर्ष नहीं हुआ। जहाजी फौजमें काम करते करते इसके चरित्रमें जो परि-वर्तन हुआ था उसे देख कर मुझे अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ। 'जिंजर' और 'स्माइलर' ये दोनों ही सभ्य वन गये थे। शराब ये दोनों नहीं पीते थे। लेकिन एक बात देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई कि इन दोनोंमें थोड़ीसी पुरानी शरारत अब भी बाकी थी। जब इन दोनोंने अपने किस्से मुझे सुनाये तो वही पुरानी धूर्तता इनकी आँखोंमें कुछ समयके लिये फिर दीख पड़ती थी।

वालवर्थमें कितने ही लोग कैसा दुराचार-पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे इसके कुछ उदाहरण मैं यहाँ सुनाऊँगा। एक रातको मैंने गलीमें एक आदमी शराबमें धत पड़ा हुआ देखा। मैं उसे उठा कर अपने घर पर ले आया और मैंने उसे ऊपरके कमरेमें सुला दिया। जब सबेरेके वक्त वह उठा तब उसे मालूम हुआ कि रात भर वह कहाँ सोया था। इस बातसे वह अत्यन्त लज्जित हुआ और मेरे सामने पश्चात्ताप करने लगा। वह वड़ा मोटा-ताजा और मजबूत था। यह आदमी फौजमें काम कर चुका था इस लिये इसका फौजी रंग-ढंग अब भी नहीं गया था। उस समय उसके कपड़े बिल्कुल चिथड़े और गन्दे थ, इस लिये मैंने उसे अपने साफ कपड़े दे दिये। जब हम लोग साथ

साथ खाना खानेके लिये बैठे तब उसने धीरे धीरे अपना सारा किस्सा मुझे सुनाया। यह तीन जगह फौजमें काम कर चुका था। मिश्रदेश, दक्षिण-आफ्रिका और हिन्दुस्तानमें घूम चुका था। इसके अधःपतनका मुख्य कारण इसकी स्त्री थी। इसने एक अत्यन्त सुन्दर स्त्रीसे विवाह किया था और उसे यह बहुत प्रेम करता था। इस स्त्रीको शराब पीनेकी आदत थी और इसीने अपने पतिको भी शराब पिलाना शुरू किया था। बहुत दिनों तक तो इसने शराब नहीं पी, लेकिन आखिर उस दुष्ट स्त्रीके प्रभावसे यह न बच सका। मैं इस आदमीके साथ इसकी स्त्रीको देखनेके लिये घर पर गया। वहाँ जो भयंकर दृश्य मैंने देखा वह मुझे कदापि नहीं भूल सकता। सवेरेके अभी सात आठ बजे थे, लेकिन वह स्त्री इतनी शराब पिये हुई थी कि ठकि तरहसे बोल भी नहीं सकती थी। अत्यन्त हृदय-वेधक बात यह थी कि एक सुन्दर बच्चा उसकी गोदमें था और तीन बच्चे वहाँ उस कमरेमें पड़े हुए थे। ये बच्चे बड़ी दुर्दशामें थे। कमरेमें कुछ सामान नहीं था, पति-पत्नीने शराब पीकर सब सामान समाप्त कर दिया था। सिर्फ एक चटाई उस कमरेमें रह गई थी और उसी पर वह औरत अपने बच्चेको लिये हुए पड़ी हुई थी। कमरा शराबकी दुर्गन्धिसे परिपूर्ण था और उस स्त्रीके निकट शराबकी एक आधी भरी हुई बोतल रक्खी हुई थी। मैं इस दृश्यको अधिक देर तक नहीं देख सका। फ़ौरन ही मैं स्वयंसेविकाओंके पास गया और मैंने उन्हें यह सम्पूर्ण समाचार सुनाया। उन परिचारिकाओंने आकर उन बच्चोंकी देख-भाल की तब तक मैंने उसे आदमीको अपने घर पर रक्खा। उसे मैंने कुछ नौकरी भी दिलवादी। शराब न पीनेकी वजहसे उसकी शकल-सूरत बिल्कुल बदल गई। दिन भर वह काम करता और शामके वक्त मेरे पास नित्य प्रति आया करता था। उधर सेविकाओंने उसकी स्त्री तथा बाल-

बच्चोंकी देख-भाल करना शुरू किया। कुछ दिनोंमें उस कुटुम्बकी दशा ही बदली हुई प्रतीत होने लगी। पाँच वर्षकी एक लड़की जो पहले बिल्कुल मैली कुचैली थी, अब सेविकाओंकी कृपासे अत्यन्त सुन्दर दीख पड़ने लगी। बड़ी भोली भाली उसकी शकल थी। हम सबकी यह आशा हो गई कि यह कुटुम्ब सुधर जावेगा, लेकिन हमारी यह आशा निष्फल हुई। एक शामको वह आदमी अपने निश्चित वक्त पर मेरे यहाँ नहीं आया। मुझे कुछ आशङ्का हुई। फ़ौरन ही मैं उसके घर पहुँचा। वहाँ जाकर देखता क्या हूँ कि वह स्त्री शराबमें धत पड़ी हुई है और बिचारे बच्चे रो रहे हैं। उस छोटी लड़कीसे मुझे मालूम हुआ कि उसके पिताने आकर माको फिर शराबके नशेमें चूर देखा और वह देखते ही गलीकी ओर भाग गया। रातको मैंने उस आदमीको शराबकी दूकानके बाहर शराबके नशेमें लौटता हुआ देखा। बिचारी परिचारिकाओंने फिर एक बार प्रयत्न किया। दशा कुछ कुछ सुधरने भी लगी, लेकिन एक दिन सबेरे जाकर हमने देखा कि वे स्त्री पुरुष उस मकानको छोड़ कर न जाने कहाँ चले गये। फिर मैंने उन्हें कहीं नहीं देखा। लन्दनके अथाह जन-समुद्रमें उनका पता लगना असम्भव ही था।

इसी प्रकारकी एक करुणा-जनक घटना और भी हुई थी। एक बार मेरे घर पर एक आदमी आया। चेहरेसे वह भलामानस मालूम होता था। उस वक्त वह बहुत भूखा था। मैंने उसे अपने कमरेमें बिठलाया और मैं स्वयं उसके लिये कुछ खाना और चायका एक प्याला लेनेके लिये दूसरे घरमें गया। खाना खाकर वह चला गया। कई दिन बाद मै क्या देखता हूँ कि चाँदीके दो वर्तन जो गिरजाघरके थे और जो प्रार्थनाके समय काममें आते थे, गायब हैं! मुझे उस आदमी पर शक भी नहीं हुआ। एक दिन रातको बारह बजेके बाद अपने दरवाजेके बाहर मुझे कुछ शब्द सुनाई दिया। दरवाजा खोल कर देखा तो वही

महाशय शराबके नशेमें चूर और हाथमें चाँदीका एक वर्तन लिये हुए दीख पड़े! गिरजाघरका वह पवित्र वर्तन उसने विल्कुल खराब कर दिया था और दूसरे वर्तनको तो वेच कर शायद उसने शराब पी डाली थी। मैंने दिलमें सोचा कि अब क्या करना चाहिए? आखिर मैंने यही निश्चित किया कि इसे पुलिसके हवाले करके दण्ड दिलाना चाहिए। मैंने उसे थानेको भेज दिया। दूसरे दिन उस पर मुकद्मा चला। मेरी गवाही हुई। यह आदमी पुराना पापी था, पहले भी कई वार जेल भुगत चुका था। मैंने साक्षी देते हुए मजिस्ट्रेटसे निवेदन किया कि इसे जहाँ तक हो सके बहुत कम दण्ड दीजिये। उसे एक महीनेकी सादा कैद और कुछ जुर्मानेकी सजा हुई। जुर्माना मैंने अपने पाससे भर दिया। जब तक वह जेलमें रहा मैं वरावर उसको देखनेके लिये जाया करता था। वहाँ मेरी उसकी बड़ी मित्रता हो गई। उसके साथ मैंने घंटों बातचीत की। वहाँ जेलमें वह वड़ा प्रसन्न था। वह मुझसे कहा करता था—"यहाँ रह कर मैं शरावके प्रलोभनसे बचा रहता हूँ, क्योंकि शराव तो यहाँ मिल ही नहीं सकती!" फिर उसने मुझे अपने पिछले जीवनकी घटनाएँ सुनाईं। उसने कहा—"मैं एक भले आदमीका लड़का हूँ, लेकिन जुआ खेल-खेल कर मैंने अपनी यह दुर्गति कर ली है। घुड़दौड़के जुएका मुझे शौक था और इसीके कारण मेरा सत्यानाश हुआ। इसके साथ ही साथ मुझे शराब पीनेकी आदत पड़ गई। मैंने एक चेक पर अपने पिताके जाली अक्षर वना लिये थे। इस कारणसे तथा मेरे दुश्चरित्रोंसे पिताजीने मुझे घरसे निकाल दिया। जैसी चोरी मैंने आपके यहाँसे चाँदीके वर्तनों की की थी, इसी प्रकारकी चोरी मैंने कितनी ही की और कई वार मुझे जेलखानेकी हवा खानी पड़ी।" इस प्रकार उस आदमीने बड़ी स्पष्टताके साथ मुझे सब वातें कह दीं, लेकिन एक बात उसने मुझे नहीं

बतलाई यानी अपने पिताका नाम और पता। एक दिन वह आदमी मुझसे बोला—" मिस्टर ऐण्ड्रयूज, मैं अब अधिक दिन तक नहीं जीवित रहूँगा, क्योंकि मुझे क्षय रोग है और मेरे दोनों फेफड़े खराब हैं।" यह सुन कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। डाक्टरसे परीक्षा कराने पर ज्ञात हुआ कि सच-मुच उसे क्षय रोग है। बड़ी दौड़-धूपके बाद मैंने उसे लन्दनके एक सुप्रसिद्ध अस्पतालमें जो खास कर क्षय रोगके बीमारोंके लिये था भर्ती करा दिया। वहाँ पर मैं प्रति सप्ताह उसे देखनेके लिये जाया करता था। दो वर्ष बाद उसकी वहाँ मृत्यु हुई। मरनेके पहले वह मुझसे प्रायः कहा करता था मिस्टर ऐण्ड्रयूज तीस वर्ष पहले मैंने बाल्यावस्थामें अपनी प्यारी माताका घर छोड़ा था। उसके बाद इन तीस वर्षोंमें मेरे जीवनमें जो आनन्दके दिन बीते हैं वे इसी अस्पतालमें बीते हैं। मरते दम तक उसने अपने पिताका नाम और पता मुझे नहीं बतलाया।"

" इन उदाहरणोंसे यह न समझ लेना चाहिए कि बालवर्थमें मेरा अनुभव इसी प्रकारकी हृदय-वेधक दुर्घटनाओंसे परिपूर्ण था। यद्यपि इस प्रकारकी दुर्घटनाएँ प्रायः हुआ करती थीं तथापि वहाँ बहुतसी बातें ऐसी भी थीं जिनसे हृदयको प्रसन्नता भी होती थी। गरीब आदमियोंकी भलमनसाहतको देख कर मुझे आश्चर्य्य होता था। परोपकार उनका एक स्वाभाविक गुण था। जब किसी स्त्रीके बाल-बच्चा होनेवाला होता तो पास-पड़ोसकी स्त्रियाँ उसकी बड़ी सहायता करती थीं। वे उसके घरको साफ करतीं, लड़कोंकी देख-भाल करतीं और बापके लिये खाना बनाती थीं; और सबसे अधिक खूबीकी बात यह थी कि इन कामोंके करते वक्त उनके दिलमें यह विचार कभी भी नहीं आता था कि हम यह परोपकार कर रही हैं। उनके लिये यह काम साधारण और स्वाभाविक ही थे। ऐसी माताएँ मैंने प्रायः देखी थीं जिनको अपने बच्चोंका पालन-पोषण करना अत्यन्त कठिन था और जिनके पतियोंको इसी कारण दिन-रात

परिश्रम करना पड़ता था, लेकिन अगर पड़ोसमें कोई बच्चा अनाथ हो जाता तो उसे ये माताएँ अपने कुटुम्बमें रख लेती थीं, और यथाशक्ति उसका पालन-पोषण करती थीं।

सबसे अधिक प्रसन्नता मुझे बच्चोंके साथ होती थी। वार्षिक अधिवेशनके दिन मैं बहुतसे बच्चोंको लेकर नगरके बाहर गाँवोंमें घूमने जाया करता था। कभी कभी तो इन बच्चोंकी संख्या पाँचसौसे भी ज्यादा हो जाती थी। इन पाँचसौ बच्चोंको लंडनके गाड़ी-घोड़े, ट्राम-मोटर और भीड़मेंसे बचा कर स्टेशन ले जाना, रेलमें उनकी खबर करना, गाँवोंमें उनकी देख-भाल रखना और फिर इन पाँचसौ ऊधमी बच्चोंको सही-सलामत घर वापिस लाना मेरे लिये कोई आसान काम नहीं था। दिन भर मेरे पास तरह तरहकी भयंकर रिपोर्ट आया करती थी। कभी कोई लड़का आकर मुझसे कहता—ओह मिस्टर ऐण्ड्र्यूज! हमारी ऐमाको भूत-प्रेत उठा ले गये। कभी कोई दूसरा आकर कहता—आह मिस्टर ऐण्ड्र्यूज! हमारा जार्ज नदीमें गिर पड़ा। ईश्वर कृपासे मेरे यहाँका कोई लड़का कभी ला-पता नहीं हुआ। हाँ कभी कोई कोई बच्चे रास्तेमें तमाशा देखते रह जाते थे और इस लिये रातको मुझे बड़ा कष्ट होता था। रातके वक्त किसी बच्चेका पिता अथवा किसीकी मा मेरे दरवाज़े पर आती। कोई कहता हमारा टाम कहाँ रह गया और कोई कहता—" हमारी सारा कहाँ रह गई? उसी वक्त उठ कर उनके तलाश करनेके लिये मुझे जाना पड़ता। रेलवे स्टेशनके नज़दीक सड़क पर बच्चे प्रायः मिल जाते। प्रायः रातके १२ बजेके बाद मुझे सोनेका सुभीता होता। यद्यपि मेरे ये दिन अत्यन्त चिन्तामें बीतते थे, लेकिन बच्चोंके साथ रहनेसे जो हर्ष मुझे होता था वह इन चिन्ताओंसे सौगुणा था। जब भोले-भाले बच्चे खुश हो कर मेरे पास आते और बड़े विश्वास-पूर्वक अपने कोमल हाथ मेरे हाथोंमें देकर कहते—" Oh Mr Andrews! are not we enyoying ourselves" "ओह मिस्टर ऐण्ड्र्यूज! हम कैसा आनन्द

मना रहे हैं।" उस समय मेरे हृदयको असीम आनन्द होता था। जब ये लड़के सड़कों पर होते हुए लौटते थे तो सब राग मिला कर एक गीत गाया करते थे। यह गीत बिल्कुल ही ऊटपटाँग था। सुनिये वह क्या था—

Daisy, Daisy, give me your answer true, I'm half crazy, all for the love of you.
It won't be a stylish marriage, I can't
afford a carriage :
But we'll look neat, upon the seat of a bicycle
made for two.

"हम लोगोंके, जो वालवर्थमें रहते और काम करते थे, जीवनमें सबसे अधिक उत्साह-प्रद बात यही थी कि हम लोगोंके हृदय क्रिश्चियन धर्मके सेवा-भावसे परिपूर्ण थे। यदि ऐसा न होता तो उस परिस्थितिमें काम करना अत्यन्त कठिन हो जाता।"

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज वालवर्थमें काम करते थे केम्ब्रिज विश्वविद्यालयके तीन कालेजोंने आपको फैलोशिप देनेका वचन दिया था। लेकिन दीन-दुःखियोंके साथ रहनेमें आपको इतना अधिक आनन्द आता था कि आपने इन सबको बिना किसी सङ्कोचके अस्वीकृत कर दिया। असाधारण रीतिसे परिश्रम करते करते मिस्टर ऐण्ड्रयूजका यह स्वभाव हो गया है कि वे अपने स्वास्थ्यकी उपेक्षा करके भी परिश्रम करते रहते हैं। वालवर्थमें जब इस प्रकार मजदूरोंकी तरह रहते हुए उन्हें तीन वर्षसे अधिक व्यतीत हो गये तो उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा। आपको जीर्णज्वरकी बीमारी हो गई और दिमाग कमजोर होने लगा। डाक्टरोंसे सलाह लेने पर उन्होंने कहा—"आप यहाँ लन्दनमें अब एक दिन भी अधिक न ठहरिये।" आखिरकार आपको केम्ब्रिजमें नौकरी करनी पड़ी। नवम्बर सन् १८९९ में आप अपने पैम्ब्रोक कालेजके फैलो बना दिये गये। केम्ब्रिजकी नौकरीका वृत्तान्त हम अगले अध्यायमें लिखेंगे।

चौथा अध्याय ।

केम्ब्रिजमें नौकरी ।

केम्ब्रिजमें आकर मिस्टर ऐण्ड्रयूजका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया। वहाँ पर आप थियालाजी (Thiology) का अध्ययन किया करते थे और धर्मके इतिहास पर व्याख्यान दिया करते थे । आपकी प्रवृत्ति अब मुख्यतया पूर्वी धर्मोंकी ओर थी । यूनीवर्सिटीके पुस्तकालयमें जाकर आप वहाँ घंटों तक बैठे बैठे धर्म-सम्बन्धी पुस्तक पढ़ा करते थे । वहाँसे एक बारमें बारह पुस्तक घर लानेकी आज्ञा आपको मिल गई थी । Secred Books of the East (पूर्वके पवित्र ग्रन्थ) नामक पुस्तकमालाकी सब किताबें आपने पढ़ी थीं तथा मैक्स-मूलर और अन्य लेखकोंकी भी रचनाएँ आपने देखी थीं । मजदूरोंके प्रश्नोंकी ओर भी आपने विशेष ध्यान रक्खा था । मजदूर-दलके नेता-ओंसे आप मिला करते थे और उन्हें कालेजमें बुला कर अपने नवयुवक विद्यार्थियोंके सामने उनके व्याख्यान कराया करते थे । इसी प्रकार आपने भारतके प्रसिद्ध शुभचिन्तक मिस्टर केयर हार्डीसे जान-पहचा-न की थी । जब मिस्टर केयर हार्डी भारतमें यात्रा करनेके लिये आये थे उस समय वे दिल्लीमें कई दिन तक आपके अतिथि भी रहे थे ।

जब आप केम्ब्रिजमें रहते थे आपको कई बार बड़ा दुःख सहना पड़ा था । तीन वर्षोंमें आपके चार अध्यापक, जिन्हें आप अत्यन्त श्रद्धा-की दृष्टिसे देखते थे और जो आपसे अत्यन्त प्रेम करते थे, एकके बाद एक स्वर्ग सिधारे । डरहमके बिशपके दामाद मिस्टर प्रायरका देहान्त

सबसे पहले हुआ, इसके बाद मिस्टर आर० ए० नीलकी मृत्यु हुई, तदनन्तर रैवरेण्ड डाक्टर सर्ले स्वर्ग सिधारे और फिर सर जार्ज ग्रेब्रियल स्टोक्सकी मौत हुई। न्यूटनके बादके सबसे बड़े भौतिक विज्ञान-वेत्ताओंमें सर जार्ज गेब्रियलका नम्बर बहुत ऊँचा था। Undulatory theory of light (प्रकाश-तरङ्ग) का आविष्कार सर जार्ज गेब्रियलने ही किया था। यद्यपि ये चारों अध्यापक उम्रमें मिस्टर ऐण्ड्रूयूजसे बहुत बड़े थे, लेकिन वे सबके सब मिस्टर ऐण्ड्रूयूजके घनिष्ट मित्र थे। ऐण्ड्रूयूज साहब कहते हैं—“विश्वविद्यालयके जीवनमें ये ही चारों सज्जन मेरे आदर्श थे और मैंने अपने उद्देश्योंका निर्माण इन्हींके उदाहरणोंको ध्यानमें रख कर किया था।”

उन दिनों मिस्टर ऐण्ड्रूयूजको अपनी बड़ी बहनकी बीमारीसे भी अत्यन्त चिन्तित होना पड़ता था। उसे क्षय-रोग था। आपको उसके लिये सैकड़ों रुपये प्रति वर्ष देने पड़ते थे। डाक्टरोंके कहनेसे उसे स्विट्जरलैण्ड जाना पड़ा था। लेकिन वहाँ भी उसे आरोग्य लाभ न हुआ और अकस्मात् उसकी मृत्यु हो गई। मिस्टर ऐण्ड्रूयूज कहते हैं—“मेरी बहन अत्यन्त धार्मिक थी, उसका चरित्र अत्यन्त पवित्र और स्वभाव बड़ा नम्र था। उसकी मृत्युसे मेरे हृदयको बड़ा दुःख हुआ था। उसकी मृत्युके बाद मैंने उसकी लिखी हुई कई सुन्दर कविताएँ देखी थीं।”

भारतमें आनेका विचार।

हम पहले लिख चुके हैं कि मिस्टर ऐण्ड्रूयूजके हृदयमें बाल्यावस्थासे ही भारतके प्रति प्रेम था। जब आप केम्ब्रिजमें अध्यापक थे तब आपने भारत आनेका दृढ़ विचार कर लिया। आपने भारत आनेका निश्चय किस प्रकार किया और आपकी भारत-यात्रा कैसी हुई इन बातोंका वृत्तान्त मिस्टर ऐण्ड्रूयूजके ही शब्दोंमें सुनाना ठीक होगा। आप कहते हैं:—

" जब मैंने हिन्दुस्तानको आनेका पक्का विचार कर लिया तो बहुतसे लोगोंने इसका विरोध किया। मेरे कालेजमें जो अध्यापक मुझसे सीनियर थे उन्होंने बार बार मुझे यही सलाह दी कि मैं केम्ब्रिजमें ही रहूँ। केम्ब्रिज विश्वविद्यालयके अनेक मुख्य मुख्य संचालकोंने भी मुझे यही आज्ञा दी। वे कहते थे—' यहाँ रह कर तुम बहुत उन्नति कर सकते हो, हिन्दुस्तानको न जाओ। ' लेकिन डाक्टर रायलने जो उस समय क्वीन्स कालेजके प्रधान थे, और जो अब वैस्टमिनिस्टरके डीन हैं, मुझे भारतको जानेकी ही सलाह दी। उन्होंने कहा—" अगर तुम्हारा मन हिन्दुस्तान जानेको है तो तुम्हें अभी चल देना चाहिए। तुम्हारी उम्र अब अधिक होती जाती है और जितने ही दिन तुम यहाँ इङ्गलैण्डमें रहोगे उतनी ही कठिनता तुम्हें वहाँकी भाषा सीखनेमें होगी। इसके सिवाय तुम्हें अपनेको वहाँके जल-वायुके अनुकूल भी बनाना है। उम्र अधिक होने पर वहाँकी आब-हवा तुम्हारे लिये कष्टदायक होगी। अगर तुम्हें भारतको जानेका अवसर है तो वह अभी है। पाँच वर्ष बाद बात दूसरी ही हो जावेगी। " मेरे मातापिता भी मेरे भारतके आनेके विरोधी थे। पिताजी विदेशोंमें ईसाई धर्मप्रचारको निरर्थक समझते थे। वे मुझसे कहते थे—" तुम केम्ब्रिज विश्वविद्यालयकी अच्छी नौकरी छोड़ कर बड़ी भारी भूल कर रहे हो। जब यहीं तुम्हारी उन्नतिके लिये इतना बड़ा क्षेत्र है तो फिर हिन्दुस्तानको जाकर क्या करोगे?" मेरी माताकी इच्छा भी यही थी कि मैं इङ्गलैण्डमें ही रहूँ, लेकिन माने कभी इस बात पर जोर नहीं दिया। हमारे कुटुम्बसे कभी कोई आदमी विदेशमें रहनेके लिये नहीं गया था और पहले ही पहल मैं ही अपने घरसे विदेश जाना चाहता था। जब मैं इन सब पुरानी बातोंका स्मरण करता हूँ तो मुझे यही प्रतीत होता है कि उस समय मेरे हृदयमें ईसाई धर्म प्रचार करनेकी प्रबल इच्छा थी और इसी

इच्छाके कारण मैंने भारतको आनेका निश्चय किया । क्राइस्टने कहा था "Go ye into all the world and preach the gospel to every creature" "जाओ और सम्पूर्ण संसारके प्राणियोंमें इंजीलका प्रचार करो" मैंने अपने दिलमें सोचा था कि क्राइस्टकी आज्ञा पालन करनेके लिये मुझे भारत वर्षको जाना चाहिए । यदि मेरे हृदयमें धर्मप्रचारकी इच्छा न होती तो मैं कदापि विदेश-यात्रा न करता । उस समय मैं यह समझता था कि हिन्दुस्तानमें अज्ञान रूपी अन्धकार छाया हुआ है और इस अन्धकारको दूर करनेका एकही मार्ग है यानी ईसाई धर्मका प्रचार तथा इंजीलका प्रकाश । उस समय मैं कट्टर मिशनरी था । मैं दिलमें ख्याल करता था कि अगर हिन्दुस्तानका उद्धार हो सकता है तो बस ईसाई धर्मके प्रचारसे ही हो सकता है । मैंने इस बातपर कभी ख्याल भी नहीं किया था कि जो देश ईसाई मतके बिल्कुल अनुयायी नहीं हैं उनका उद्धार करनेमें ईसाई मत कहाँ तक समर्थ हो सकता है । मैंने उन दिनोंमें पढ़ा था कि पूर्वी अफ्रिकाके उगैण्डाकी प्रान्तमें ईसाई मतका प्रचार कितनी शीघ्रतासे हुआ था और मैं अपने मनमें यही आशा करता था कि उगैण्डाकी तरह किसी न किसी दिन सम्पूर्ण भारत ईसाई मतका अनुयायी बन जावेगा । भारतके आध्यात्मिक जीवनका मुझे उन दिनों अधिक ज्ञान नहीं था और न यहाँके निवासियोंके नैतिक सदाचारका ही अधिक वृतान्त मालूम था । मेरी आँखोंके सामने तो हिन्दुस्तानसे लौटे हुए ईसाई मिशनरियों द्वारा खींचा हुआ भारत वर्षका अन्धकारमय चित्र था ।

केम्ब्रिजके एक सुयोग्य विद्वानने, जो बौद्ध धर्मके अच्छे ज्ञाता थे, और जिन्होंने भारतमें बौद्ध धर्मके उत्थानका इतिहास अच्छी तरह अध्ययन किया था, मुझसे कहा था ।

"भारत वर्षमें, जो धर्मोंकी उत्पत्तिका स्थान है, धर्म प्रचारके लिये जाना मानों न्यूकैसिलको, जहाँ कोयलेकी खानोंकी भरमार है, कहीं

वाहिरसे कोयला लेजाना है।" उन्होंने मुझे वतलाया था कि Sermon on the mount (उपदेश भूमि) के आदर्श वहुत पहलेसे ही भारतीय जीवनके आधार हैं। मुझे इन वातोंका उस समय ज्ञान नहीं था। मैंने यह वात समझ रक्खी थी कि एक हजार वर्ष पहलेसे ही भारतमें बौद्ध धर्मका नाश हो चुका है और उसके नाशके परिणाममें भ्रष्टाचार भारतमें फैल गये हैं। सच वात तो यह है कि भारतसे लौटे हुए मिशनरी लोगों द्वारा खींचे हुए हिन्दुस्तानके अन्धकारमय चित्रके सामने विशप वैस्ट कौट, प्रोफेसर व्राउन तथा मैक्समूलर इत्यादिके विचारोंका प्रभाव मेरे हृदयपर वहुतही कम होगया था। इसका कारण यही था कि मैंने हिन्दुस्तानसे लौटे हुए मिशनरियोंके साथ महीनों व्यतीत किये थे और उनके किस्से अच्छी तरह सुने थे। यह वात ध्यान देने योग्य है कि ये वातें मैं २० वर्ष पहले की कह रहा हूँ। उस समय डाक्टर फरकुहर या पूनेके मिस्टर मैकनीकलकी तरहके उदार मिशनरी वहुत कम थे।

भारतको यात्रा

जव मैंने भारतको आनेका दृढ़निश्चय कर लिया तो मैं अपनी माताके दर्शन करनेके लिये वर्मिङ्गहमको गया। मेरे अलग होनेसे माताको हार्दिक दुःख हुआ था, क्योंकि मैं अपनी माताका सवसे प्यारा लड़का था। मुझे भी उस समय वड़ा खेद हुआ था। फिर मैं अपनी वुआसे मिलने गया था। ये मेरे पिताजीकी सवसे वड़ी वहन थी। इन्होंने विवाह नहीं किया था। मैं इन्हें अपनी माँ के समान ही समझता था और अपने सव भतीजोंमें वह मुझे ही सवसे अधिक प्यार करती थी। जव मैंने अपनी वुआ को भारत जानेका समाचार सुनाया था तो उसके हृदयको वड़ा धक्का लगा था। यह कौट नामक स्थानमें एक छोटेसे घरमें रहती थी। जव गाड़ी डोवरसे चली थी तो मेरी

बुआ अपने घर की खिड़कीमेंसे मुझे देख रही थी। बीमार होनेकी वजह से वह डोवरके स्टेशन तक नहीं आसकी थी। मेरे भारत पहुँचने-पर उसने जो चिट्ठी मुझे भेजी थी उसमें उसने लिखा था "जिस दिन तुम यहाँसे चले थे, वह दिन मैंने पूर्णतया ईश्वर प्रार्थनामेंही व्यतीत किया था। जब तुम्हारी एक्सप्रैस ट्रेन डोवरसे तुम्हें लिये जा रही थी मुझे ऐसा मालूम होता था कि मानों वह मेरे शरीरकी जान लिये जारही है" वह बराबर मुझे चिट्ठी भेजा करती थी और मैं भी प्रति सप्ताह दो चिट्ठी विलायतको जरूर भेजता था, एक तो माँको और एक बुआ को।

भारतको आनेके पहले मैं वालवर्थमें अपने ग़रीब भाई बहनोंसे मिलनेके लिये भी गया था। माता पिताके वियोगके दुःखके सिवाय मुझे उतनाही दुःख यह था कि मैं वालवर्थके इन ग़रीब भाइयोंसे अलग होरहा था। ये लोग मुझे प्रेम करते थे और इन लोगोंने मिलकर मेरे सकुशल भारत पहुँचनेके लिये प्रार्थना की थी। ये लोग बिल्कुल अशिक्षित थे और हिन्दुस्तानके बारेमें इनके विचार बड़े आश्चर्य जनक थे। एक बुढ़ियाने जो मुझपर लाड़ प्यार करती थी, आँखोंमें आँसू भर कर मुझसे कहा "I have heard that they are cannibals over there Mr. Andrews. I shall pray to God night and day that they would not eat you up"

"मिस्टर ऐण्ड्रयूज, मैंने सुना है कि हिन्दुस्तानके निवासी आदमियोंको खाजाते हैं। मैं दिन रात तुम्हारे लिये ईश्वरसे प्रार्थना करती रहूँगी कि वे तुम्हें खा न जावें" यह सुनकर मुझे बडी हँसी आई। जब मैंने बुढ़िया माँईको बतलाया कि प्रायः हिन्दू लोग किसी प्रकारका माँस छूतेभी नहीं तब कहीं उसे तसल्ली हुई।

मेरे भारतमें आने परभी ये ग़रीब आदमी मुझे अक्सर चिट्ठी भेजा करते थे। कभी कभी ये लोग मेरे पास अपनी कठिन कमाईके रुपये भी इसलिये भेज देते थे कि मैं उनके द्वारा हिन्दुस्तानके ग़रीव भाइयों की मदद करूँ। इङ्गलैण्डमें मेरे जो ३३ वर्ष व्यतीत हुए उनमें ये तीन चार वर्ष ही, जो वालवर्थमें वीते थे, सर्वोत्तम थे।

इङ्गलैण्डके धनवान आदमियोंमें दुनयवीपनकी मात्रा वहुत ज्यादा है। गरीबोंका खून चँस चूँस कर रुपया कमाना ही उनका उद्देश्य है। ये लोग न केवल अपने यहांके मज़दुरों की कठिन कमाईसे अपनी जेवें भरते हैं वल्कि अन्य देशोंके मज़दूरोंके पसीने की कमाईसे भी माला माल होने की कोशिश करते हैं। उन्हें अपनी फिज़ूल ख़र्ची के लिये रुपया चाहिये चाहे वह कहींसे आवे। लेकिन ग़रीव आदमियोंके हृदय—चाहे ये ग़रीव आदमी हिन्दुस्तानके हों या विलायतके—सचमुच उदार हैं। यदि उनके कानोंतक दुःखियोंकी पुकार पहुंचे तो उनके हृदय तुरन्त द्रवित हो जाते हैं और फिर ये यथा शक्ति सहायता करने के लिये सर्वदा उद्यत रहते हैं। ये लोग इस वात में भेद नहीं करते कि यह पुकार हमारे पड़ोसीके घरसे आरही है या दुनियाके किसी सुदूर स्थिर देशसे। इनका उदार हृदय सबके लिये खुला हुआ है। मेरे भारतको आनेके पहले एक वड़ी करुणात्पादक घटना हुई थी। वालवर्थ में एक ग़रीव कुटुम्ब था। एक वृद्ध पुरुष एक वृद्ध स्त्री और एक उनकी लड़की। वे स्त्री पुरुष मिलकर ५ शिलिङ्ग प्रति सप्ताह कमाते थे जिनमें २½ शिलिङ्ग प्रति सप्ताह उन्हें किराये के देने पड़ते थे। इनकी लड़की भी वहुत ग़रीव थी लेकिन वहभी अपने माँ वाप की कुछ सहायता करती रहती थी। ईसाई लोगों में वे चालीस दिन अत्यन्त पवित्र समझे जाते हैं जिनमें क्राइस्टने धर्म प्रचार प्रारम्भ करनेके पहले उपवास किया था। इन चालीस दिनोंको हम लोग "Ient" लैण्टके नामसे पुकारते हैं, और

सालके ये दिन जब आते हैं तब हम लोग कुछ न कुछ आत्मत्याग करते हैं। जब मैं भारतको आने लगा था तो दो महीने पहले मैंने इन ग़रीब भाइयोंसे कहा "आप लोग हिन्दुस्तानके ग़रीब आदमियोंकी कुछ सहायता कीजिये। मैं हिन्दुस्तानको जारहा हूँ, आप प्रेम पूर्वक जो कुछ देंगे मैं भारतके निर्धन आदमियों तक पहुँचाऊँगा" ये वृद्ध स्त्री पुरुष मेरे पास एक सन्दूकची लाये। मैंने ख्याल किया था कि ये दो चार पैंस लाये होंगे, लेकिन सन्दूकची खोलनेपर उसमें ३ शिलिङ्ग ६ पैंस निकले। ये विचारे प्रति सप्ताह मेरी प्रार्थनानुसार ६ पैंस बचाते रहे थे। २½ शिलिङ्ग किरायेके दे देनेके बाद इनकी साप्ताहिक आमदनी २½ शिलिङ्ग ही रह जाती थी। इसमें से भी इन्होंने ६ पैंस प्रति सप्ताह बचाना शुरू किया था। जब मैंने इनका यह स्वार्थत्याग देखा तो मेरी आँखोंमें आँसू आगये। उस निर्धन वृद्ध पुरुषने अपनी कठिन कमाइक ३½ शिलिङ्ग देते हुए बड़े भोलेपनके साथ मुझसे कहा था "Mr Andrws, I am sorry we could not do anything more to help those poor people, you told us about, in India".

"मिस्टर ऐण्ड्र्यूज मुझे खेद है कि हम लोग हिन्दुस्तानके उन ग़रीब आदमियोंकी सहायताके लिये, जिनके बारेमें आपने हमसे कहा था इससे अधिक नहीं दे सके।"

अब जब कभी मैं इङ्गलैण्ड और भारतके सम्बधके प्रश्न पर विचार करता हूं तो मैं इसी नतीजे पर पहुंचता हूं कि इङ्गलैण्डके बड़े आदमियोंसे सहानुभूतिकी आशा करना व्यर्थ ही होगा। यह सम्भव है कि इन बड़े आदमियोंमेंसे कुछ निस्स्वार्थ हों लेकिन निस्सन्देह इनमेंसे अधिकांश स्वार्थी ही होंगे और जब तक भारत स्वयं शक्ति शाली नहीं बन जावेगा तब तक विलायतके ये बड़े आदमी उसका धन बराबर चूसते रहेंगे। यदि संसारमें शान्तिकी मुझे कुछ आशा है तो वह सब

देशोंके निर्धन आदमियोंसे ही है। शायद कभी ऐसा समय आजावेगा जब संसारके ये ग़रीब आपसमें सहानुभूति रखना सीख जावेंगे और फिर ये मिलकर धनवान और शक्तिशाली आदमियोंकी परधीनतासे स्वतंत्र होजावेंगे। मेरा अभिप्राय यह है कि संसारके निर्धन मनुष्योंमें भ्रातृभाव स्थापित होनेकी बहुत कुछ सम्भावना है। भारत वर्ष में भी मुझे इसी प्रकारका अनुभव हुआ है। मैं हिन्दुस्तानके गाँवोंमें रहचुका हूं और गाँववालोंके साथ बैठकर उनसे बातचीत कर चुका हूं विदेशोंमें गन्नेके खेतोंपर प्रवासी भारतीय मज़दूरोंके साथ भी मैं रहचुका हूं और मैंने उन सब में वही उदारता देखी है। इन लोगों में अभिमानका नामनिशान नहीं। सहानुभूति इनके हृदयमें कूट कूट कर भरी है। जब कभी मैंने उन्हें अपने लन्दनके मज़दूरोंके साथ रहते समयके अनुभव सुनाये हैं तो उनके हृदयमें सहानुभूतिके भाव उत्पन्न होगये हैं। भारतके निर्धन आदमियोंकी उदारताके विषयमें भी मैं कितनेही दृष्टान्त देसकता हूं।

विलायतके मजदूर दलके आन्दोलन करनेवालों पर मैं इतना विश्वास नहीं करता यद्यपि मैं जानता हूं कि उन लोगोंमें कितनेही आदर्शवादी और उदार भी हैं। सबसे अधिक मेरा विश्वास ग़रीब आदमियों पर है, हाथ पांवसे महनत करनेवाले मजदूरों पर है। क्योंकि संसार भरके दीन दुःखी सब जगह एकसेही स्वभावके हैं।

फर्वरी—मार्च १९०४

१२ फर्वरी सन १९०४ को मैं अपनी ३३ वीं वर्ष पूरी करचुकाथा।

भारतको प्रस्थान और समुद्र यात्रा

२७ फर्वरीके दिन मैंने भारतके लिये प्रस्थान किया। वह दिन मुझे कभी नहीं भूल सकता। बेशुमार ठंड थी। भयंकर कुहरा पड रहा था और लन्दन पर घोर अन्धकार छाया हुआ था। इङ्गलिश चेनेल को पार करते वक्त भी यह कुहरा दूर नहीं हुआ था। मुझे

आस्ट्रियाके ट्रिऐस्ट नामक बन्दरगाहसे भारतको आनाथा, इसलिये मेरे रास्तेमें स्विटजर लैण्डभी पड़ा था। मैंने अपने जीवन भरमें ऐसा प्राकृतिक सौन्दर्य्य कभी नहीं देखा था। आल्पस पर्वतकी महिमा का अनुभव मुझे पहिली बारही हुआ था आल्पस पर्वत श्रेणी वहां दर्शकके इतनी निकटस्थ दीख पडती है कि वह अपने महत्वसे दर्शक पर अपूर्व प्रभाव डालती है। उसे देखकर परमात्माकी शक्ति और महत्वका चित्र आँखोंके सम्मुख आजाता है। अब भारतमें आकर मैंने भिन्न भिन्न स्थानोंसे नगाधिराज हिमालयके भी दर्शन किये हैं लेकिन हिमालयको देखकर मेरे हृदय पर जो प्रभाव पडा वह आल्पसके प्रभावसे भिन्न है। आल्पससे परमात्माकी शक्तिका परिचय मिलता है और हिमालयसे परमात्माकी अनन्तताका। हिमालयमें कुछ ऐसा सौन्दर्य है जो मनुष्यके मनको आकर्षित करके समय और आकाशसे दूर ले जाता है। आल्पस पर्वत दर्शक के इतने नज़दीक पड़ते हैं कि वे दर्शक पर इस प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकते। मुझे इस बातमें पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार भारत वर्ष की नदियोंने भारतीय मस्तिष्क के विकाश में सहायता दी है उसी प्रकार हिमालय पर्वत का भी भारतीय मस्तिष्क पर पूरा पूरा प्रभाव पडा है।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ, मैं भारतके लिये ट्रिऐस्ट नामक बन्दरगाहसे रवाना हुआ था। यह मेरी पहली समुद्र यात्रा थी। समुद्री बीमारीसे मैं रास्तेभर बीमार रहा। मिश्र और अरबके किनारेकी समुद्र यात्रा मेरे लिय अत्यन्त आश्चर्य जनक थी। इस यात्रामें मुझे मनुष्य जातिके अतीत इतिहासकी घटनाएं स्मरण हुईं। पूर्वीय देशोंके साथ यह मेरा प्रथम संसर्गही था और इसका प्रभाव मेरे मनपर यही पड़ा कि बुद्धि, ज्ञान और अनुभवमें पूर्व पाश्चिमसे बहुत पुराना है। लालसागरमें वह सुन्दर प्रकाश, जो अब मुझे रात्रिके समय दीखपडता था, मानों अनन्तताका सन्देश सुना रहा था। लालसागरके तीन दृश्य मुझे जीवन भर

नहीं भूल सकते, एक तो सूर्यके निकलते समयका दृश्य, दूसरा सूर्यके अस्त होते समयका दृश्य, और तीसरा रात्रिका सुन्दर दृश्य । आकाश रात्रिके समय बिल्कुल स्पष्ट दीख पड़ता था । ऐसा प्रतीत होता था कि मानों आकाशके तारे उतरकर परमात्माकी अनन्त महिमाका सन्देश सुना रहे हैं । रात्रिके अन्धकारका सौन्दर्य्य भी बड़ा कोमलता पूर्ण था। मैंने ऐसा स्पष्ट आकाश अपने जीवन भर में कभी नहीं देखा था। हमारे यहाँ **नार्थसी** (उत्तरी समुद्र) । में शायदही कोई ऐसा दिन होता हो जब कि आकाशमें बादल न हों, और जब वहाँ आकाश में बादल नहीं भी होते तब भी कुछ न कुछ कोहरा जरूर रहता है । पूर्वीय देशोंकी सौन्दर्य्यमय रात्रिकी महिमा मुझे पहलेपहल हीं ज्ञात हुई थी। तबसे भारतमें रहते हुए मुझे १७ वर्ष बीत गये। भारतीय आकाशमें जो अनन्त कमनीयता है वह मुझे लाल सागरके आकाशसे भी उत्तमतर और अधिक मनोहर प्रतीत होती है । भारतके आकाशके सौन्दर्य्यपर मुझे अत्यन्त आश्चर्य होता है और इस आकाशकी ओर देखते देखते मैं कभी नहीं थकता । भारतमें आनेके बाद मैं संसारके कितने ही देशोंकी यात्रा कर चुका हूँ । आस्ट्रेलिया, फिजी, न्यूजीलेण्ड, चीन, जापान इत्यादि की यात्रा मैंने की है, लेकिन जो मनोहरता सुन्दरता, और कोमलता मुझे भारतके आकाशमें प्रतीत होती है वह किसी दूसरे देशके आकाशमें प्रतीत नहीं हुई । आस्ट्रेलिया में भी आकाश बिल्कुल स्पष्ट होता है, लेकिन वहाँके आकाशमें मुझे कुछ भयंकरता प्रतीत हुई । भारतकी बात दूसरीही है । भारतके घन रहित स्पष्ट आकाशमें मातृप्रेमकी सी कोमलता है । अगर कोई मुझसे पूँछे कि भारतसे मुझे इतना अधिक प्रेम क्यों है तो इसका एक मुख्य कारण मैं यही बतलाऊँगा कि भारत भूमिका सौन्दर्य मेरे हृदयको अत्यन्त आकर्षित करता है और रात्रिके समय यहाँका आकाश मुझे अत्यन्त मनोहर दीख पड़ता है । जब कभी मैंभारतसे बाहर जाता हूँ तो मेरेहृदयमें बराबर यही इच्छा बनी रहती

है कि शीघ्रही भारतको लौट आऊँ। जब कभी मैंने इस बात पर विचार किया है तो मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि भारतकी भूमि तथा आकाशके प्रति मेरे हृदयमें जो प्रेम है वही मुझे आकर्षित करता है। दूसरे देश इसी कारण मुझे विदेश मालूम होते हैं और भारत घर मालूम होता है। अपने इन भावोंको मैं ठीक ठीक समझानेमें असमर्थ हूँ, लेकिन इतना मैं कह सकता हूँ यह आकर्षण मुझे प्रारम्भसेही प्रतीत हुआ है।

भारत में आगमन. २० मार्च सन १९०४ को मैं बम्बई आपहुँचा। २० मार्च के दिन मैं अपने लिये पवित्र मानता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस दिन मेरा द्वितीय जन्म भारत भूमि में हुआ। जिस दिन से मैंने लाल सागर में प्रवेश किया था मेरा हृदय एक विचित्र आनन्दका अनुभव करने लगा था। बम्बई से दिल्ली तक की यात्रा बड़ी मनोरंजक हुई। उस समय के अनुभवों को शब्दों द्वारा प्रगट करना असम्भव है। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मैं कोई स्वप्न देख रहा हूँ। भारतभूमि के महान सौन्दर्य में मुझे कुछ रहस्य दीख पड़ता था। दिन भर तो मैं पढ़ाने इत्यादिका काम करता रहता, लेकिन रात्रि के समय मैं १२ बजे तक बैठा बैठा भारतीय आकाश की सुन्दरता पर विचार किया करता था। जीवनभर में मुझे इस प्रकारके विचित्र अनुभव कभी नहीं हुए थे, और न मुझे आशा है कि भविष्य में कभी ऐसी आश्चर्य्य जनक रात्रि मेरे जीवन में फिर आवेगी। दक्षिण सागर के द्वीप समूह की गिनती दुनियाके सर्वोत्तम स्थानों में की जाती है, और प्राकृतिक सौन्दर्य्य दृष्टि से यह द्वीप समूह है भी अत्यन्त मनोहर, लेकिन जब मैंने इस द्वीप समूह की यात्रा की थी, तो वहाँकी भूमि और आकाश ने मेरे हृदय को उतना आकर्षित नहीं किया जितना भारतभूमि और भारतीय आकाश ने किया था। शायद इसका कारण यह हो कि जब मैं भारत को आया था उस समय मेरी उम्र केवल ३३ वर्ष ही थी और

जब मैं दक्षिण सागर के द्वीप समूह को गया था मेरी अवस्था अधिक होगई थी, अथवा शायद इसका कारण यह था कि जो अनुभव एक वार मुझे भारत में हो चुका था वह किसी प्रकार भी दूसरी वार नहीं हो सकता था। कुछभी कारणा क्यों न हों दक्षिण सागरके द्वीप समूहका प्राकृतिक सौन्दर्य्य मेरे हृदयको उतना आकर्षित नहीं कर सका भारत में मैं प्रकृतिसे जितना सामीप्य अनुभव कर सकता हूँ उतना मैं फिजी इत्यादि द्वीपोंमें नहीं कर सका। जिस प्रकार भारतभूमि मेरी मातृभूमि होगई है उसी प्रकार इन द्वीपोंको मैं अपनी मातृभूमी नहीं वनासकता था। दक्षिण अफ्रिकामें भी मुझे यही अनुभव हुआ। दक्षिण आफ्रिकाकी एकान्त उच्चभूमि से आकाशका जो सौन्दर्य्य दीखपढता है वह अत्यन्त मनोहर है। मैंने कितनेही रातें वहाँ आकाशकी ओर देखते हुए व्यतीत की हैं, लेकिन वहाँके भी आकाशमें मुझे परमात्माकी उस अनन्त कोमलता का अनुभव नहीं हुआ जो भारतीय आकाशको देखकर होता है। भारतभूमिके मेरे अंतःकरणके लिये यह विल्कुल सरल बात है कि मैं परमात्माको 'माता' के नामसे स्मरण करूं लेकिन इङ्गलैण्डमें मेरा अन्तःकरण कदापि ऐसा करनेके लिये उद्यत न होता।

मेरा विश्वास है कि उत्तरी देशोंसे आनेवाले यात्रिओंको भारत आनेपर कुछ न कुछ इसी प्रकारके अनुभव होते होंगे, लेकिन मेरे अनुभवोंमें एक मनोरंजक बात यही रही है कि जब कभी मैं भारतसे वाहिर जाकर फिर भारत भूमिको लौटता हूँ तो प्रत्येक वार मेरे ये अनुभव ताजे हो जाते हैं। पिछली वर्ष अफ्रिकासे लौटते समयभी मुझे यही अनुभव हुए थे। भारतभूमि तथा भारतीय प्राकाशसे १७ वर्ष पुराना सम्बन्ध होनेपर भी विदेशसे आते समय यहाँकी प्रकृति मुझे नित्य नवीन रूप धारण करती हुई दीख पड़ती है। सम्बन्ध पुराना होनेपरभी भारतीय भूमि और भारतीय आकाश मेरे हृदयको आज भी उतनेही आकर्षित करते हैं जितने कि वे मार्च सन १९०४ में करते थे।"

पांचवाँ अध्याय।

सैण्ट स्टीफन्स कॉलेज में प्रोफेसरी.

पिछले अध्यायमें पाठक मिस्टर ऐण्ड्र्यूजकी भारत यात्राका वृत्तान्त उन्हींके मुखसे सुन चुके हैं। यदि मैं चाहता तो उस मनोरंजक यात्राका वर्णन अपने शब्दोंमें भी कर सकता था लेकिन ऐसा करनेसे वर्णन की मनोहरता जाती रहती। इसके अतिरिक्त इस पुस्तकका उद्देश्य मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके चरित्रको हिन्दी पाठकोंके सम्मुख ज्यों का त्यों उपस्थित करना है, इसलिये विशेष अवसरोंपर मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके हार्दिक भाव उन्हींके शब्दोंमें प्रगट करना आवश्यक प्रतीत होता है। वर्तमान अध्यायमें उनके सैण्ट स्टीफन्स कॉलेजके अनुभव पाठकोंके सामने उपस्थित किये जावेंगे।

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज सैण्ट स्टीफन्स कॉलेजमें आये थे उस समय कॉलेजके स्टाफमें परिवर्तन होनेवाला था। कालेजके प्रिंसीपल साहब विलायत चले गये थे और उनकी जगह खाली थी। मिस्टर ऐण्ड्र्यूजकी विद्वत्ताके समाचार सैण्ट स्टीफन्स कॉलेजमें पहलेही आचुके थे। इस कॉलेजके एक पुराने विद्यार्थीने मुझसे कहा था "हमारे कॉलेजमें यह खबर पहलेही आचुकीथी कि, मिस्टर एण्ड्र्यूज केम्ब्रिज विश्व-विद्यालयसे बड़े सम्मानके साथ उत्तीर्ण हुए हैं और हम लोग यह बात सुन चुके थे कि उन्हें विश्वविद्यालयमें कई पारितोषक और स्कालरशिप मिले थे। हमारे कालेजमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूजका आना बड़े मार्केकी बात थी।" मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके कालेजमें अध्यापक होनेके एक वर्ष बादही कालेजके संचालकोंने अपनी यह इच्छा प्रगट की यदि मि. ऐण्ड्र्यूजका स्वास्थ्य ठीक रहे तो उन्हींको कालेजका प्रिंसीपल बना दिया जावे। उन दिनों मिस्टर

लिफ्रौय (Mr lefroy) लाहौरके लार्ड विशप थे। इंग्लैण्डमें रहने-वाले कालेजके सहायकों पर विशप साहबका पूरा पूरा प्रभाव था। उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूजसे कहा कि किसी अंग्रेज़को ही कालेजके प्रिंसीपलका पद मिलना चाहिये। उन्होंने अपने निश्चयके पक्षमें तीन युक्तियाँ दी थीं

(१) हिंदुस्तानी माता पिता अंग्रेज़ प्रिंसीपल पर ही विश्वास करेंगे।

(२) हिंदुस्तानी प्रिंसीपल कालेज में डिसीप्लिन नहीं रख सकेगा।

(३) यदि कालेजमें कभी कोई संकट उपस्थित होगा तो हिंदुस्तानी प्रिंसीपल अपनी कमजोरीकी वजहसे विद्यार्थियोंसे दब जावेगा और बलपूर्वक अपनी बात पर स्थिर नहीं रह सकेगा।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने विशप साहेबसे निवेदन किया " श्रीयुत सुशील कुमार रुद्र इस कालेजमें बहुत दिनोंसे अध्यापक हैं। उन्हें इस कामका २० वर्षसे अनुभव है, और प्रिंसीपलके पदके लिये वे सर्वथा योग्य हैं। मुझे कुछ भी अनुभव नहीं है क्योंकि मैं यहाँ नया आदमी हूँ। " विशप साहबने कहा " इस बातकी कोई चिन्ता नहीं कि आप नये आदमी हैं। आप अंग्रेज़ हैं और हमारे कालेजका प्रिंसीपल अंग्रेज़ही होना चाहिये।" मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने विशप साहबकी इस बातका घोर विरोध किया। उन्होंने विशप साहबसे साफ़ साफ़ कह दिया " अगर श्रीयुत सुशीलकुमार रुद्र प्रिंसीपल नहीं बनाये गये तो मैं कालेजकी अध्यापकीसे इस्तीफ़ा देदूँगा। वर्णभेदकी इस नीतिको मैं कदापि सहन नहीं कर सकता।" मिस्टर ऐण्ड्रूज कहते हैं " मैं इस बातको जानता था कि अगर मैं जबरदस्त विरोध न करूंगा तो विशप साहबकी ही बात मानी जावेगी। इसीलिये मैंने त्याग पत्र देनेकी धमकी दी थी। यदि मिस्टर रुद्र प्रिंसीपल न बनाये जाते तो अवश्यमेव मैं इस्तीफ़ा देदेता। कालेजमें एक अंग्रेज़ और भी अध्यापक थे मिस्टर वेस्टन।

आजकल आप केम्ब्रिज मिशनके अध्यक्ष हैं। मिस्टर वैस्टनकोभी मिशनके संचालक प्रिंसीपल बनाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने उदारतापूर्वक प्रिंसीपल बननेकी इच्छा न की। उन्होंनेभी मिस्टर रुद्रके ही प्रिंसीपल होनेका समर्थन किया। हम लोगोंके इस निश्चयके कारण बिशप साहबकी बात नहीं चली और मेरे मित्र मिस्टर रुद्र प्रिंसीपल बना दिये गये।

इस घटनासे जहां मिस्टर ऐण्ड्रयूजके स्वार्थत्याग और न्यायप्रियता का पता लगता है वहां इससे उनके स्वभावकी कुंजीभी हमें मिल जाती है। इस घटनाको हुए आज १६ वर्ष होगये लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रयूजके इन १६ वर्षोंके सब कार्योंमें वही सिद्धान्त स्पष्टतया दीख पड़ता है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज अपनेको पीछे रखते हुए निस्स्वार्थ रीतिसे भारतभूमिकी सेवा करना चाहते हैं। धन, पद और नेतृत्व इन तीनों प्रलोभनोंसे अपने आपको बचाते हुए भारतमाताकी सेवा करना उनके जीवनका लक्ष्य है। जब मिस्टर रुद्र प्रिंसीपल बना दिये गये तो ऐण्ड्रयूज साहब बड़ी प्रसन्नता पूर्वक उनके अधीन रहकर काम करते रहे। आप कहते हैं:—

"I have had the greatest joy of my life in being able to serve under Mr. Rudra instead of being made principal. I was not even Vice principal but simply one of the ordinary professors of the College. One of the things that I have learnt most of all in India is that the position of subordination is the only true position of an English man who wishes to serve in India. It is altogether a wrong position to assume authority and rule and I have been very fortunate in escaping from that wrong position."

अर्थात् " अपने जीवनभर में यदि मुझे कोई सबसे बड़ा आनन्द मिला तो वह यही था प्रिंसीपल बनाये जानेके बजाय मैं मिस्टर रुद्रकी अधीनतामें काम कर सका। मैं वाइस प्रिंसीपल भी नहीं था बल्कि कालेजका एक मामूली प्रोफेसर था। हिन्दुस्तानमें रहकर सबसे बड़ी शिक्षा मुझे यही मिली है कि अगर कोई अंग्रेज़ भारतकी सेवा करना चाहता है तो उसे अधीनतामें रहकर काम करना चाहिये। यही उसके लिये सच्चा मार्ग है। भारतकी सेवा करनेके इच्छुक अंग्रेज़के लिये यहां के कार्योंमें प्रधान बनकर शासन करना बड़ी भारी भूल है। मैं इसे अपना बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि मैं इस भूलसे बचसका हूं " यही मिस्टर ऐण्ड्रयूजके जीवनकी कुंजी है। हम लोग मिस्टर ऐण्ड्रयूजके जीवनसे यह शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। हमारे देशमें ऐसे कितनेही आदमी पाये जाते हैं जिनके सिरपर नेता बननेकी धुन सवार है। नेतृत्वभी इतना सस्ता हो गया है जिसका ठिकाना नहीं। देशके लिये जिन्होंने कुछभी परिश्रम नहीं किया, कुछभी स्वार्थत्याग नहीं किया, कुछभी कष्ट नहीं सहे, वे भी नेता बननेके लिये तय्यार बैठे हैं! लीडरीका यह रोग भयंकर रूप धारण कर रहा है। ऐसे कई भावी लीडरोंसे बात चीत करनेका दुर्भाग्य मुझे प्राप्त हो चुका है। उनके बनावटी देशप्रेमको देखकर हँसी आती हैं, उनकी बुद्धिके अजीर्णको देखकर उनपर दया आती है और उनके अभिमान तथा अहंकारको देखकर आश्चर्य होता है। जब मैं ऐसे महानुभावोंके चरित्रकी तुलना मिस्टर ऐण्ड्रयूजके चरित्रसे करता हूं तो मुझे ज़मीन आसमानका फर्क मालूम होता है। उच्च कोटिके विद्वान होनेपरभी वे अत्यन्त नम्र हैं, उनकी Personality (व्यक्तित्व) अत्यन्त प्रभावशाली है लेकिन उनमें अहंकार तथा अभिमानका नामो निशान नहीं, और भारतके लिये दिनरात परिश्रम करनेपरभी वे कदापि ' लीडर नहीं बनना चाहते। अस्तु, मिस्टर ऐण्ड्रयूज

बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मि. रुद्रके अधीन रहकर काम करने लगे। शीघ्र ही मिस्टर रुद्र दिल्लीकी जनताके पूर्ण विश्वासपात्र बन गये और कालेजमेंभी उन्होंने पूरी पूरी डिसीप्लिन कायम करदी। मिस्टर रुद्रकी इस आश्चर्यजनक सफलताको देखकर पीछे लार्ड विशपनेभी अपनी भूल मिस्टर ऐण्ड्रयूजके सामने स्वीकार की थी। सैण्ट स्टीफेन्स कालेजकी यह घटना मिस्टर ऐण्ड्रूजके जीवनकी एक मुख्य घटना है। उस समय आपकी उम्र कुल २४ वर्षकी थी और विशप साहबके लिये आपके हृदयमें बहुत कुछ सम्मान भी था, इसलिये विशप साहबके सामने त्याग-पत्र देनेका निश्चय प्रगट करना और इस प्रकार सत्याग्रह करके उनसे न्याय कराना मिस्टर ऐण्ड्रयूजके लिये कोई आसान काम नहीं था। इसके सिवाय उस समय उन्हें मिस्टर रुद्रकाभी विरोध करना पड़ाथा। वे कहते थे "मिस्टर ऐण्ड्रयूज आपही प्रिंसीपल बनजाइये, आपके प्रिंसीपल होनेपर मैं बड़ी प्रसन्नताके साथ आपके नीचे काम करूंगा" मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं "श्रीयुत रुद्र इतने प्रधान, नम्र और निरहंकार हैं कि वे बड़े आनन्दपूर्वक मेरे अधीन रहकर उसी तरह काम करते जिस तरह कि वे भूतपूर्व प्रिंसीपलके नीचे काम करते थे।"

ऐङ्गलो इण्डियनोंके उपदेश

मिस्टर ऐण्ड्रयूज केम्ब्रिज मिशनके मिशनरी बनकर भारत वर्षमें आये थे। यहां आतेही ऐङ्गलो इण्डियन लोगोंने आपको पाठ पढाना शुरू किया। एक दो बार नहीं बीसियों बार उन्हें ये उपदेश दिये गये।

*"Never, under any circumstances, give way to a 'native' or let him regard himself as your superior. We only rule India in one way—by up holding our

* देखो मिस्टर ऐण्ड्रयूजकृत South India पृष्ठ १६७

position. Though you are a missionary you must be an English man first, and never forget that you are a Sahib. You may do incalculable mischief if you lower the dignity of an English man, by allowing 'native' to treat you familiarly or take liberties with you, they are the inferior race and we hold India by the sword. Be kindly by all means, but always be on your guard, and do not give away English prestige."

अर्थात् "कभी, किसी हालतमें किसी 'नेटिव' से मत दबना और न कभी किसी 'नेटिव' के दिलमें यह ख्याल पैदा होने देना कि वह तुमसे ऊंचा है। हम भारतवर्षपर केवल एकही तरीकेसे राज्य करते हैं, और वह तरीका यही है कि हम अपनी 'पोज़ीशन (पद) को ऊंचा बनाये रक्खें। यद्यपि आप मिशनरी हैं तथापि पहले आपको अंग्रेज़ बनना होगा, और इस बातको तो आप कदापि न भूलिये कि आप साहब हैं। अगर आप किसी नेटिवको अपने साथ बहुत मेल-जोलका बर्ताव करने देंगे अथवा उसे अपने साथ मनमानी करने देंगे तो इससे आप बेशुमार हानि पहुंचावेंगे। हिन्दुस्तानी लोग नीच जातिके हैं और हम लोग अपनी तलवारके बलसे हिन्दुस्तानमें राज्य करते हैं। आप उनके साथ मेहरबानीका बर्ताव भलेही करें, लेकिन हमेशा सावधान रहें, अंग्रेज़पनके 'प्रेस्टीज' धाकको आप कभी न त्यागें।

इन उपदेशोंको सुनकर ऐण्ड्रयूज साहब बड़े हैरान हुए और वे सोचने लगे कि मामला क्या है? पहले तो भले मानस अंग्रेज़ हिन्दुस्तानमें आतेही कम हैं, और जो आतेभी हैं उनकी भलमनसाहत यहांके एङ्गलो इण्डियन लोगोंके उपदेशोंसे कर्पूरार्ककी तरह बहुत जल्दी उड़ जाती है और जो थोड़ी बहुत भलमनसाहत किसीमें रहभी जाती

है तो उसे हम लोगोंकी नीचता और खुशामद रफूचक्कर कर देती है । अपनी पुस्तक नार्थ इंडिया (उत्तरी भारत) में मिस्टर ऐण्ड्रूज लिखते हैः—

" मैं अपनी उन दिनोंकी स्थितिको शीघ्र नहीं भूल सकता जब कि मैं पहले पहल दिल्लीमें आया था । पुलिसमेन मुझे सलाम करता था, सब आदमी सलाम करते थे, हिंदुस्तानी सिपाही देखते ही सावधानीसे खड़े हो जाते थे और प्रत्येक आदमी रास्ता देनेके लिये तैयार था । पहले तो मैं यह समझा था कि यह सब सत्कार मेरे मित्रका किया जाता है जो मेरे साथ चलता था और जो दिल्लीमें एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति था लेकिन यह बात नहीं थी । जब मैं अकेला निकलता था, तब भी यही दृश्य दीख पड़ता था । इसकी वजह यही थी कि मैं ' साहब ' था "

आगे चलकर मिस्टर ऐंड्र्यूज लिखते हैं कि यह स्थिति, जिसमें विलायतके क्षुद्र मनुष्योंकोभी इतना महत्व दिया जाता है, अधिकांश अँग्रेज़ोंको बिगाड़ देती है । आपका यह कथन अक्षरशः सत्य है । जिस वायुमण्डलमें गौराङ्गदेवोंका चरणोदक लेनेवाले राय साहब, प्रिंसीपलकी खुशामद करके वेतनवृद्धि चाहनेवाले जासूस प्रोफेसर और तहसीलदारी अथवा डिप्टीकलक्टरीके उम्मेदवार नवयुवक विद्यार्थी विचरण करते हैं, वह वायुमण्डल नवागत अँग्रेजोंके लिये अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होता है । यहां इस बातका एक उदाहरण देना अनुचित न होगा । आगरा कालेजमें एक बार बायालाजी (जीवशास्त्र) के एक प्रोफेसर आये थे । वे हमारे बोर्डिङ्ग हाउसके निरीक्षक भी थे और वहीं कोठीपर रहा करते थे । पहले तो वे बड़े सीधे सादे दीख पड़ते थे और उनके सरल स्वभावने हम लोगोंके हृदयको आकर्षित कर लिया था । लेकिन शीघ्र ही सातसौ रुपयेके वेतन वे उनके दिमा-

गको आसमानपर चढ़ा दिया। फटे हुए कोट पतलूनकी जगह फर्स्टक्लास सूट ने ली। क्लबके उपदेशोंने "प्रेस्टीज" का ख्याल कराया और हमारे बोर्डिङ्ग हाउसके खुशामदी विद्यार्थियोंकी चापलूसी उनके कानोंमें मिठास डालने लगी। बस, साहबका सारा रङ्ग ढङ्ग बदल गया। एक दिन हमारे मानीटर साहबसे इन फ्रोफेसर महोदयने कहा था "अगर अँग्रेज़ लोग भारतवर्षमें दोहजार वर्ष पहले आते तो हिन्दुस्थानियों की Morality (सच्चरित्रता) का Standard (दर्जा) अब तक ठीक हो जाता।" इन भले मानस साहबसे कोई पूँछता "अगर आप उस समय हमारी सच्चरित्रताके स्टाण्डार्डको ऊंचा करनेके लिये यहां आते तो बन्दरों और लङ्गूरों की तरह वृक्षों पर कौन लटकता?"

इस प्रकारके वीसियों दृष्टान्त दिये जा सकते हैं। हम लोगोंके लिये यह बड़े सौभाग्यकी बात थी कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने अपने गोरे भाइयों-के उपदेशोंपर ध्यान नहीं दिया। मिस्टर ऐण्ड्रयूजके भारतीय जीवनमें यह खूबी रही है कि उन्होंने सदा अपनी आँखोंसे सब चीजें देखकर अपने विचार स्थिर किये हैं। सच बात तो यह है कि उनके सार्व-जनिक जीवनकी सफलताका मुख्य कारण यही है कि उन्होंने सैकंड-हैण्ड सुनी सुनाई बातोंपर विश्वास न करके स्वयं अनुसन्धान किया है और तब अपना मत प्रगट किया है। दूसरी बात यह है कि उन्होंने अपना मस्तिष्क बराबर निष्पक्ष रक्खा है। जो बात उन्हें अपने अन्तःकरणके विरुद्ध प्रतीत हुई है उसे छोड़नेमें आपने कभी सङ्कोच नहीं किया और अन्तःकरणके अनुकूल सत्य बातको ग्रहण करनेमें आपने कभी आना कानी नहीं की।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज इस बातकी पर्वाह कभी नहीं करते कि हम पहले तो यह बात कह चुके हैं अब इसके विरुद्ध दूसरी बात कैसे मान सकते हैं। अपनी भूल स्वीकार करनेके लिये और यदि विश्वास हो जाय

तो अपनी सम्मति परिवर्तन करनेके लिये आप सदा उद्यत रहते हैं। इसमें वे अपना अपमान नहीं समझते । प्रारम्भसेही मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ की यह प्रवृत्ति रही है। आज उनका नाम सम्पूर्ण भारतभूमिमें प्रसिद्ध होगया है। यही नहीं वल्कि ब्रिटिश साम्राज्यके भिन्न भिन्न भागोंमेंभी आपकी कीर्ति पहुंच चुकी है । फ़िज़ी, 'दक्षिण अफ्रिका' पूर्व अफ्रिका, आस्ट्रेलिया, सीलोनमें आपका यश विख्यात हो चुका है। लेकिन सन १९०५ ई. में भी जब कि आपको बहुत कम लोग जानते थे, आपके विचार उदारही थे सङ्कीर्ण नहीं। जब आपके अँग्रेज मित्र आपसे कहते " Never, under any circumstaneces, give way to a 'native "

अर्थात् " कभी किसी नेटिवसे मत दबो " तो उनको आप यही उत्तर देते थे " We must continually 'give way to the native' we are to show any humility worthy of the Name of christ we must try and lose our " supeeriority, " and become the servants of all, if we are to follow christ; we must come to India with the one wish in our hearts, to break down all barriers of race, not to build them up. "

अर्थात् " हमें वरावर 'नेटिवा' से दबनाही होगा, यदि हममें क्राइस्टके नामके अनुरूप कुछभी नम्रता है तो हमें ऐसा करनाही पड़ेगा। हमें प्रयत्न करके अपनी 'उच्चता' छोड़ देनी होगी, और यदि हम क्राइस्टके सच्चे अनुयायी होंगे तो हमें सबका सेवक बनना होगा। भारतवर्षको हमें केवल एकही उद्देश्यसे आना चाहिये यानी भिन्न भिन्न जातियोंके पारस्परिक मेलमें जो बाधाएं हैं उन्हें दूर करना। यही हमारी हार्दिक इच्छा होनी चाहिये। इन बाधाओंको उल्टी स्थापित करना यह हमारा उद्देश न होना चाहिये "

यह उपर्युक्त वाक्य मिस्टर ऐण्ड्र्यूजकी "नार्थ इण्डिया" नामक पुस्तकसे लिये गये हैं जो उन्होंने सन् १९०५ में लिखी थी।

शिमलाके अनुभव

गर्मीके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूजको दिल्लीसे सिमला जाना पड़ा। वहांके चरित्र देखकर आपको अत्यन्त आश्चर्य हुआ। आप अपनी पुस्तक 'नार्थ इण्डिया' में सब जगह लिखते हैं "हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब मुल्कमें, जहां लाखोंही आदमी भूखों मरते हैं और जहां मोटे अनाजके भोजनका दिनमें एक बारही मिलना लाखों लोगोंके लिये बड़े सौभाग्यकी बात है—ऐसे ग़रीब मुल्कमें ऐङ्गलो इण्डियन लोगोंकी फिज़ूल—खर्ची और भोग विलासपूर्ण जीवन वास्तवमें अत्यन्त निन्दनीय हैं। "शिमला—ऋतु (Simla Season) की मूर्खतासे और फिज़ूल खर्ची, बौल नाच तथा क्लबके जीवनके भोग विलास—हिन्दुस्तान जैसे निर्धन देशमें बिल्कुल शोभा नहीं देते। ऐङ्गलो इण्डियन लोगोंका यह अपव्यय—क्रिश्चियन धर्मके लिये अपमान जनक है। हिन्दुस्तानी लोग जब ऐङ्गलो इण्डियनोंकी इस शान शौकतको देखते हैं तो वे कहते हैं क्यों साहब, आपके ईसाई धर्मका 'त्याग' यही है। क्या इसी तरहका 'त्यागयुक्त' धर्म आप हम लोगोंको जो पूर्वी देशोंके निवासी हैं पढ़ावेंगे? हिंदुस्तानियोंका यह कटाक्ष युक्तिसंगत ही है।" मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके शिमला रहते समय एक ऐसी घटना हुई जिससे उनके हृदयको बड़ा धक्का पहुंचा। आप कहते हैं "मैं जब पहली बार शिमला गया था तब मैंने उर्दू सीखनेके लिए प्रबन्ध किया था। मुझे उर्दू पढ़ानेवाले एक वृद्ध मुसलमान थे। उनका नाम था मौलवी शमशुद्दीन। आप लाहौरके रहनेवाले थे। मौलवी साहब पहले कभी शिमला नहीं आये थे। बहुत बूढ़े होनेकी वजहसे शिमलेकी ठंड वे सहन नहीं कर सकते थे; इस कारण वे पाँवोंमें पट्टी बांधते और बूट

जूते पहनते थे । मैंने मौलवी साहबकी सिफारिश एक अफसरसे करदी और वे उस अफ़सरकोभी उर्दू पढ़ानेके लिये जाने लगे । यह अफ़सर मौलवी साहबको इस बातके लिये मजबूर करता था कि वे अपनी पट्टी और जूते उतार कर उसके कमरेमें घुसें और खुद वह अफ़सर अपने बूट पहने हुए पढ़नेके लिये बैठता था ! अफ़सर बिल्कुल जवान था और बिचारे मौलवी साहब बड़े वृद्ध और शरीफ़ आदमी थे । एक दिन सर्दी ज्याद:होनेकी वजहसे मौलवी साहब अपने जूते उतारे बिना उस अफ़सरके कमरेमें चले गये । इसपर उस अफ़सरने क्रुद्ध होकर मौलवी साहबको जूते उतार देनेकी आज्ञा दी ! शिमलेमें इस तरहकी बातें देखकर मेरे हृदयको बड़ा दुःख होता था । मेरा वहांपर कोई मित्र नहीं था । मौलवी साहबकी मेरे ऊपर बड़ी कृपा थी और उन्हींसे मैंने मित्रता की थी । मेरी इस बातको शिमलेवाले आश्चर्य जनक समझते थे । मौलवी साहबसे मेरा सम्बन्ध बहुत दिनों तक रहा था । मुझपर वे बहुत मुहब्बत करने लगे थे । ”

मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके बतलाये हुए इस दृष्टान्तसे पाठकोंको उस प्रकारकी असभ्यतापर अवश्यही क्रोध होगा, जो वृद्ध मौलवी साहबके साथ इस तरहका बर्ताव करता था । बात असलमें यह है कि नये आये हुए अंग्रेजोंके कानोंमें यहांके ऐङ्गलो इण्डियन लोग इसी तरहकी बाहियाद बातें भर देते हैं । एक राजकुमार-कालेजके प्रिंसीपल साहबने अपने कालेजमें यह नियम बना रक्खा है कि राजकुमार उनके कमरेमें जूते उतार कर जावें । प्रिंसीपल साहबको इस बातकी कुछभी पर्वाह नहीं है कि इससे राजकुमारोंके हृदयपर कैसा प्रभाव पड़ता है । जब तक अंग्रेजोंके दिमागमें ऐङ्गलो इण्डियनपनकी बू भरी हुई है तब तक उनके साथ सहयोग करना हमारे लिये अपमान जनक ही होगा । ईश्वरको धन्यवाद है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज इस ‘ऐङ्गलो इण्डियनपन’

से बिलकुल मुक्त हैं। उनके साथ रहते हुए कभी किसी हिन्दुस्तानीको सङ्कोच नहीं हो सकता क्योंकि वे सदा सबके साथ पूर्ण समानता का बर्ताव करते हैं। अपनेको किसीसे उच्च जातिका समझना उनके लिये नितान्त असम्भव है। पर सवाल तो यह है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज की तरहके नम्र स्वभाववाले कितने अंग्रेज हिन्दुस्तानमें हैं ?

मिस्टर ऐण्ड्रयूजके जीवनपर श्रीयुत सुशील कुमार रुद्रका प्रभाव:—

शिमलेसे वापस आकर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ मिस्टर् रुद्रके साथ रहने लगे। आप उन्हींके यहां भोजन करते थे। आपके जीवनपर मिस्टर रुद्रका जो प्रभाव पड़ा वह उल्लेख योग्य है। हिन्दुस्तानमें ऐसे अंग्रेज़ों की संख्या अत्यल्प है जो हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नको उन्हींकी दृष्टिसे देख सकें। इस विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को जो सफलता प्राप्त हुई है वह सचमुच आश्चर्यजनक है। इस सफलताका मुख्य कारण मिस्टर रुद्रका सत्सङ्ग ही है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं। "श्रीयुत रुद्र महाशयकी मित्रताके बिना मैं इतनी जल्दी यह बात कदापि न समझ सकता कि पराधीन जातिके होनेके कारण हिन्दुस्तानियोंको अपने जीवनमें कितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। बाल्यावस्थामें मेरे पिताजीने मुझे यही बतलाया था कि इङ्गलैण्डने भारतके साथ महान उपकार किये हैं। मुझे यही शिक्षा दीगई थी कि हिन्दुस्तान इङ्गलैण्डका अत्यन्त ऋणी है, लेकिन मिस्टर रुद्रके साथ रहनेपर मुझे पता लगा कि मैंने इतिहासका अध्ययन बिल्कुल असत्य मार्गसे किया है। अब मैं समझने लगा कि इङ्गलैण्डने घोर स्वार्थके साथ हिन्दुस्तानका धन चूसा है और पराधीन भारतको हर तरहके असंख्य अपमान और अन्याय सहनेके लिये मजबुर किया है। जब मैं विलायतसे आया

ही था मैंने कालेजकी डिबेटिङ्ग सुसाइटीमें अत्यन्त उत्साहपूर्वक उन उपकारोंका वर्णन किया था जो इङ्गलैण्डने हिन्दुस्तानपर किये हैं। एक बार इस डिबेटिङ्ग सुसाइटीमें 'भारतीय-निर्धनता' के विषयपर बहस हुई थी। लड़के कहते थे कि अंग्रेज़ोंके राज्यमें हिन्दुस्तान बराबर निर्धन होता जाता है। मैंने बड़े जोरदार शब्दोंमें उन लड़कोंके इस सिद्धान्तका विरोध किया था। आज सन् १९२१ में मैं स्वप्नमें भी इस प्रकारकी भूल कदापि नहीं कर सकता, लेकिन उस वक्त मेरे ख्यालातही दूसरे थे। उस समय मैं समझता था कि मेरे विचार बिल्कुल ठीक हैं। मालूम नहीं कि उस समय श्रोताओंपर मेरी इन बातोंका क्या प्रभाव पड़ा होगा। अवश्यही उन्होंने मुझे बड़ा अहंकारी समझा होगा। ईश्वर कृपासे मिस्टर रुद्र मुझे सर्वोत्तम मित्र मिलगये थे। जब वे समझ जाते कि मैंने कोई भूल की है तो वे फ़ौरन ही मेरी भूल मुझे बतला देते थे, वे मेरे साथ घंटो तक बहस किया करते थे और जबतक वे मेरे भ्रमात्मक विचारोंको दूर नहीं कर देते थे, तब तक उन्हें चैन नहीं पड़ता था। मेरे विचार उन दिनों बिल्कुल साम्राज्य वादियोंकी तरहके थे। आज जब मैं उन पुरानी बातोंको याद करता हूं तो मुझे मिस्टर रुद्रकी अमूल्य मित्रताका पता लगता है। उनादिनों मेरे साम्राज्यवादी होनेपर भी भारतीयोंने मुझपर सन्देह नहीं किया इसका मुख्य कारण मिस्टर रुद्रकी मित्रता ही थी। मिस्टर रुद्र हर तरहसे मेरी अपेक्षा अधिक योग्य थे। वे मेरे मित्रही नहीं बल्कि मेरे शिक्षक भी थे। उनके चरणोंमें बैठकर मैंने उनसे बहुतसी बातें सीखी थीं। यदि मिस्टर रुद्र मेरे शिक्षक न होते तो मेरे अहंकार पूर्ण भाव शायद ही छूटते। संसारमें सुशील कुमार रुद्रकी तरह मित्र दुर्लभ ही हैं। १७ वर्षसे मेरी उनकी मित्रता है और यह मित्रता नित्य प्रति गाढतरही होती जाती है। हमारी मित्रतामें कभी अन्तर नहीं पड़ा।"

कानकी बिमारी और विलायत यात्रा

जाड़ेके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के बायें कानमें कुछ ख़राबी होगई। यह ख़राबी बढ़ने लगी और कान इतना ख़राब हो गया था कि उसमें हमेशा भारी आवाज़ें सुनाई पड़ती थीं। आख़िरकार अप्रैल सन् १९०५ में आपने डाक्टरकी सलाह ली। डाक्टरने कहा "आपको फ़ौरन ही इङ्गलैण्डको वापस चला जाना चाहिये नहीं तो आप बहरे होजावेंगे" आख़िरकार आप एक छोटेसे स्टीमरपर विलायतको वापस गये। जिस प्रकार आप मज़दूरोंके कष्टों जाननेके लिये वालवर्थमें रहे थे उसी प्रकार आप छोटे स्टीमरमें जाकर उनके यात्रियोंके कष्टोंको जानना चाहते थे, स्टीमरपर कुल छः यात्री थे। कप्तान एक यात्रीके साथ शराब पीकर दिनभर ताश खेला करता था। गन्दगी भी स्टीमरमें हद्से ज्याद: थी। हिन्दुस्तानसे यह चमडा लेजारहाथा और चमड़ेकी सड़ी हुई बदबूके मारे यात्रियोंके नाकमें दम था। एक दिन सार्डीनियाके किनारे बड़ा भारी तूफ़ान आया। स्टीमरके ऐंजिन उस समय ठीक तरहसे काम नहीं कर रहे थे फिर अकस्मात् ये ऐंजिन टूट भी गये इसलिये जानका भी ख़तरा था। भयंकर लहरें समुद्रमें उठ रही थीं और उनसे जहाज़के ऊपरी डैकका कुछ हिस्सा भी टूट गया था। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "रात बड़ी मुश्किलसे कटी सवेरेके वक्त जानमें जान आई। रास्तेमें जो जहाज़ हमें मिले वे झंडियोंसे हमारे जहाज़के कप्तानको कहते हुए गये "मार्सेल्स पहुंचकर कह देना कि हम सुरक्षित हैं"। जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ घर पहुंचकर एक बड़े भारी डाक्टरकी सलाह ली तो उसने कह दिया "अब आप हिन्दुस्तानको हर्गिज़ वापस न जाइये" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ को यह सुनकर बड़ा खेद हुआ। डाक्टरने फिर कहा "आप तीन महीने बाद मुझे अपना कान फिर दिखलाइये; तीन महीने बाद आप

फिर डाक्टरके पास पहुंचे उसने कान देखकर कहा "कान ज्यों का त्यों खराब है, अभी इसमें कुछभी बहतरी नहीं हुई। आपको हिन्दुस्तान नहीं जाना चाहिये" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उस डाक्टरसे पूछा "क्या जाड़ेके दिनोंमें भी हिन्दुस्तानमें रहनेसे कुछ खराबी होगी?" डाक्टरने कहा "अगर आपका एक कान एक साथ बहुत खराब होगया तो फिर आपको दूसरे कानसे भी कुछ नहीं सुनाई पड़ेगा और आप बिल्कुल बहरे होजावेंगे।" जाड़ेके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ हिन्दुस्तानको वापस चले आये। सौभाग्यसे उनका कान ज़्यादः खराब नहीं हुआ।

एक शिक्षाप्रद घटना.

जाड़ेके दिनोंमें कान ठीक रहा, गर्मी जब आई तो विशप साहबने कहा आपको शिमलाके निकट सनावरको जाना चाहिये। वहां आप लारेंस मिलिटरी ऐसा इलमके प्रिंसीपलका काम कुछ दिनों तक कीजिये" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ शिमला चले गये और वहांपर सनावरमें आप इस फौजी विद्यालयके प्रिंसीपलका काम कुछ दिनों तक करते रहे। वहां एक बड़ी शिक्षाप्रद घटना हुई। इसका वृत्तान्त मिस्टर ऐण्ड्र्यूजके ही शब्दोंमें सुनलीजिये। "जिन दिनों मैं सनावरमें उस फौजी विद्यालयके प्रिंसीपलका काम करता था उन्हीं दिनों वहांके एक गर्लस्कूलमें एक लेडी सुप्रिंटेण्डैण्ट नियुक्त हुई थी। जिस घरमें मैं रहता था उसी घरमें रहनेके लिये उसे भी जगह दी गई थी, लेकिन जब तक मैं प्रिंसीपल था वह घर वास्तवमें मेरा ही था। मैंने मिस्टर रुद्रको, जो उस समय दिल्लीमें थे, लिखदिया था 'आप गर्मीके दिनोंमें यहां आकर मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिये" मुझे इस बातका स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था कि वह लेडी इस बातपर आपत्ति करेगी। जब उस लेडीने सुना कि मेरे एक हिन्दुस्तानी मित्र आनेवाले हैं तो उसने

मुझसे कहा ' मैं किसी हिन्दुस्तानीके साथ एक मेज़पर बैठकर खाना हर्गिज़ नहीं खासकती मैंने उससे कहा ' आपकी यह बात क्रिश्चियन धर्मके बिल्कुल प्रतिकूल है। आपको इतना अनुदार नहीं होना चाहिये' जैसे तैसे समझा बुझाकर मैंने उसे राजी किया लेकिन जब यह लेडी सनावरसे शिमला गई तो वहांके ऐङ्गलो इंडियन लोगोंने उसे बहका दिया। इन लोगोंने उस लेडीसे कह दिया था " इस मालेमें हर्गिज़ मत दबना।" मैं बड़ी आफ़तमें था। वह लेडी मेरी आतिथि थी और सुप्रिन्टेन्डेन्ट होनेकी वजहसे उस घरमें रहनेका उसका कुछ अधिकार भी था। मैं दिलमें सोचता था जब मिस्टर रुद्र इस लेडीकी इस बातको सुनेंगे तो वे क्या ख्याल करेंगे ? मैंने फिर भी उस लेडीको समझाया लेकिन वह भला क्यों मानने लगी ? बड़ी मुश्किलमें जान थी। इधर मैं अपनी नौकरीसे इस्तीफा नहीं देसकता था क्योंकि मैं बिशप साहबसे काम करनेके लिये प्रतिज्ञा कर चुका था और उधर मैं अपने प्रिय मित्र मिस्टर रुद्रके साथ यह विश्वास घात भी नहीं कर सकता था। आखिर कार मैंन यह सब मामला मिस्टर रुद्रको लिख भेजा और साथ ही यह भी निवेदन कर दिया अगर आप उचित समझें तो मैं अपनी जगहसे इस्तीफा देनेके लिये तय्यार हूं" मिस्टर रुद्रने बड़ी उदारता पूर्वक मुझे लिखा " आप हर्गिज़ ऐसा न कीजिये। मैं कदापि किसी लेडीको कष्ट नहीं देना चाहता।" परिणाम यह हुआ कि मिस्टर रुद्र गर्मियोंके दिनोंमें सनावरको नहीं आये। इस घटनासे मुझे अत्यन्त खेद हुआ। सबसे ज्यादः दुःख मुझे इस बात का था कि इस मामलेमें मुझे दब जाना पड़ा यद्यपि यह कार्य मैंने मिस्टर रुद्रकी पूर्ण अनुमतिसे किया था। लेकिन इस घटनाने मेरी आखें खोलदीं। इस घटनाने मुझे सिखला दिया कि पराधीनताके कारण हिन्दुस्तानियोंको कितने अपमान सहने पड़ते हैं। भारतवर्षकी पराधीनताकी बात मेरी आत्मामें

जमकर बैठगई और मैं अच्छी तरह समझ गया कि हिन्दुस्तानियों और अँग्रेजोंमें इस प्रकारका भेद करना ईसाई धर्मके बिल्कुल प्रतिकूल है। मेरी आत्मा मुझे अपराधी ठहराती थी लेकिन उस अवसरपर मैं कुछ कर नहीं सकता था। यदि महात्मा गान्धीजी जैसी प्रबल आत्मा मुझमें होती तो मैं अन्ततक लड़ता झगड़ता, लेकिन आखिर कार दिनरात सोचनेके बाद और मिस्टर रुद्रकी अनुमतिसे मैंने दब जानाही ठीक समझा।"

राष्ट्रीय आन्दोलनकी ओर झुकाव

सन १९०६ में जिन दिनों मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ सनावरमें थे लाहौरके सिविल ऐण्ड मिलिटरी गज़टने शिक्षित भारतवासियोंके विरुद्ध लेख लिखने शुरू किये। इन लेखोंमें पढ़े लिखे हिन्दुस्तानियोंका अच्छी तरह अपमान किया गया था और एक लेखकने तो यहां तक लिख मारा था कि शिक्षित हिन्दुस्तानियोंकी अकल ठिकाने लानेके लिये उनके कोड़े लगाने चाहिये। इन लेखोंको पढ़कर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को अत्यन्त क्रोध आया और आपने बड़े जोर-दार शब्दोंमें इन लेखोंका खण्डन करना शुरू किया। अपने लेखोंके नीचे नाम देकर आपने अपना पता 'लारैन्स मिलिटरी ऐसाइलम भी उसके साथ ही लिख दिया था; मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "इन लेखोंके द्वारा भारतीय जनतासे मेरा प्रथम परिचय हुआ। लोगोंको इस बातका आश्चर्य था कि सरकारके फौजी विद्यालयसे लिखने वाला यह अँग्रेज़ कौन हैं?"

सन् १९०६ की शरद् ऋतुमें भारतवर्षमें और ख़ासकर बंगालमें बड़ा भारी आन्दोलन हो रहा था। उस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने एक लेख 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में भारतकी राष्ट्रीयताके विषयपर लिखा था। इस लेखको भारतीय जनताने बहुत पसन्द किया था और यह पुस्तकाकार

छपाकर वितरण भी किया गया था। तबसे अब मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के विचारोंमें बड़ा भारी अन्तर हो गया है लेकिन उस लेखको भी भारतीय विद्वानोंने असाधारण समझा था क्योंकि वह एक अँग्रेज़का लिखा हुआ था। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ स्वयं कहते हैं "अब इस समय मुझे यह देखकर अचम्भा होता है कि मैंने वह लेख कितना झिझक झिझक कर लिखा था, फिर भी मेरे अँग्रेज़ होनेकी वजहसे जनताने उसे महत्व पूर्ण समझा। इसके पहले मैं एक लेख विलायतके एक मासिकपत्रमें भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनके विषयमें लिख चुका था। इस लेखमें मैंने भारतीय धर्मोंके प्रति अन्याय किया था और ख़ासकर आर्य्य समाजको मैंने क्षुद्र दृष्टिसे देखा था।" इस बातसे पाठक मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की स्पष्ट वादिताका अनुमान कर सकते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के सम्पूर्ण जीवनमें यह बड़ी भारी खूबी रही है कि उन्होंने कभी किसी बातको छिपाया नहीं। सन् १९०५ व सन् १९०६ के बीचमें मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के भारत सम्बन्धी विचारोंमें बड़ा परिवर्तन हो रहा था। इसी अवसरपर सिविल एण्ड मिलिटरी गज़टके दुष्टता पूर्ण लेखोंने, जो उसने शिक्षित भारतीयोंके विरुद्ध लिखे थे, मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को और भी अधिक भारतप्रेमी बना दिया।

कलकत्ता कांग्रेसके अनुभव

नवम्बर सन् १९०६ में मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने केम्ब्रिज मिशनके प्रधानके पास जाकर कहा "मैं कलकत्तेकी कांग्रेस देखनेके लिये जाना चाहता हूं" प्रधान साहबने इस बातको पसन्द नहीं किया लेकिन उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़को कलकत्ते जानेसे रोका भी नहीं। उन्होंने समझ लिया कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कांग्रेस देखनेका दृढ़ निश्चय कर चुके हैं अत एव इनको रोकनकी चेष्टा करना व्यर्थ है। दिल्लीसे आप कलकत्तेके लिये रवाना

हुए। रास्तेमें आप इलाहाबाद उतरे और वहां भारतीय राष्ट्रीयताके विषयपर आपने दो व्याख्यान भी दिये। इन व्याख्यानोंमें आपने राष्ट्रीय आन्दोलनसे अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रगट की थी। इन व्याख्यानोंको भारतीय नेताओंने और भारतीय जनताने बहुत पसन्द किया था। उसी समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कांग्रेसके कई नेताओंसे इलाहाबादमें ही मिले थे। वहांसे आप कलकत्ते पहुंचे और आक्सफोर्ड मिशनमें जाकर ठहरे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के अनुभव उन्हींके शब्दोंमें सुनिये "मेरे जीवनमें यह समय बड़े उत्साह और जोशका था। श्रीमान् दादाभाई नौरोजी कांग्रेसके प्रेसीडेण्ट थे। कांग्रेसकी सभी बैठकोंमें मैं उपस्थित रहा। उस समय अपना नाम न देकर मैंने एक लेख 'बंगाली' पत्रमें लिखा था। उसका नाम था "एक अँग्रेज़के कांग्रेस सम्बन्धी अनुभव।" महात्मा गोखलेसे मेरी भेंट पहले ही पहल इसी कांग्रेसमें हुई थी। उनकी असाधारण नम्रताको देखकर मुझे आश्चर्य्य हुआ था। जहां तक हो सकता था महात्मा गोखले अपनेको पीछे ही रखते थे, अगुआ बननेकी कोशिश वे नहीं करते थे। कांग्रेसकी अन्य बातें मुझे इस समय याद नहीं पड़तीं लेकिन एक दुर्घटनाकी याद मुझे अभी तक है। बंगालके सुप्रसिद्ध नेता श्रीयुत कालीचरण बनर्जी प्लेटफार्मपर मेरे नज़दीक ही बैठे हुए थे। कांग्रेसका समारम्भ होनेके पहले मेरी उनकी कुछ बात चीत भी हुई थी। उन्होंने मुझसे कहा था "मेरी तबियत खराब है लेकिन मैं यहां कांग्रेस देखनेके लिये चला आया हूं" जब स्वागतकारिणी सभाके अध्यक्षका भाषण हो रहा था मैंने कई बार श्रीयुत कालिचरण बनर्जीके मुख की ओर देखा। थोड़ी देर बाद देखता क्या हूं कि वे तो बेहोश होगये। श्रीयुत कालीचरणजी डील डौलके छोटे थे इस लिये मैं अपने आप अकेले ही उन्हें कांग्रेस प्लेटफार्मसे अपनी भुजाओंमें उठाकर बाहर लेगया। बाहर ले जानेपर कुछ देर बाद

उन्हें होश आगया। उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया और मुझे अपने घरपर बुलाया। जब वे बीमार थे मैं तीन चार बार उनके घरपर गया। उन्होंने मेरे साथ अत्यन्तही प्रेमपूर्ण बर्ताव किया था और उनकी कृपाको मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। वे बड़े विद्वान और पवित्र चरित्रके थे। कांग्रेससे लौटनेके कुछ सप्ताह बाद दिल्लीमें जब मैंने समाचार पत्रोंमें उनकी मृत्युका वृत्तान्त पढ़ा तो मुझे हार्दिक दुःख हुआ था। कांग्रेसके जितने नेताओंसे मैं मिला था उनमें कालीचरण बनर्जीका मुझपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था। उनके मुखपर एक प्रकारकी साधुता और पवित्रता थी जो अत्यन्त चित्ताकर्षक थी। कांग्रेसका यह अधिवेशन भारतके इतिहासमें एक महत्वपूर्ण घटना थी। भिखमंगेपनकी नीतिका परित्याग इसी कांग्रेसमें किया गया था। श्रीयुत दादाभाई नौरोजीने 'स्वराज्य' शब्दका प्रयोग सबसे प्रथम इसी अधिवेशनमें किया था। कलकत्तेकी कांग्रेसकी अन्य बातें मैं भूल गया हूं लेकिन श्रीयुत कालीचरण बनर्जीके साधुता तथा पवित्रतापूर्ण चहरेकी याद मुझे अभी भी नहीं भूली। जितनी देर उनके साथ रहते और बात चीत करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ उतने समयको मैं अपने जीवनका बहुमूल्य समय समझता हूं। यहां पर बात मैं साफ़ साफ़ कहदेना चाहता हूं कि मैं उस समय पक्का Imperialist (साम्राज्यवादी) था और ब्रिटिश साम्राज्यमें मेरा बड़ा भारी विश्वास था। राष्ट्रीयताके विषयमें मेरे जो विचार थे वे भी माडरेटोंमें माडरेटकी तरहके थे। उन दिनों मैं ख्याल करता था कि महात्मा तिलक और श्रीयुत विपिनचन्द्रपाल हदसे ज्यादः गर्म हैं और श्रीमान गोखलेही नेतृत्वके उपयुक्त हैं। मुझे स्मरण है कि समाचार-पत्रोंमें भी मैंने मिस्टर गोखलेकी प्रशंसामें इसी प्रकारके विचार प्रगट किये थे। मेरे विचारोंको पढ़नेके बाद एक बार मिस्टर गोखलेने एकान्तमें लेजाकर मुझसे कहा था:

" I would rather that you did not speak of me as a leader at all. I am much too young and I would prefer that you spoke of such older men as Sir Phiroz Shah Mehta or Dadabhai Nauroji or Mr. D. E. Wacha they have earned their leadership, I have not." अर्थात् " मैं इस बातको अधिक पसन्द करूंगा कि आप मेरे लिये 'लीडर' (नेता) शब्दका प्रयोग बिल्कुल न किया करे। नेता बननेके लिये मेरी उम्र अभी बहुत कम है। आप सर फिरोज़शाह मेहता, दादाभाई नौरोजी तथा मिस्टर डी. ई. वाचा इत्यादिके लिये ही 'नेता' शब्द का प्रयोग किया करें। उन्होंने मातृभूमिकी सेवा करके नेतृत्व प्राप्त कर लिया है मैंने अभी नहीं किया।" मिस्टर ऐंड्रूयूज़ कहते हैं इससे मिस्टर गोखले की असाधारण नम्रता प्रगट होती है। मैंने अपने जीवन में इतने योग्य पुरुषसे ऐसी नम्रतायुक्त बातें बहुत कम सुनी हैं"

भारतकी राष्ट्रीयताके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के विचारोंका विकाश बड़ी मनोरंजक रीतिसे हुआ है। एक समय था जब आपके विचार कट्टर साम्राज्यवादियोंकी तरहके थे और आज आप भारतकी " पूर्ण स्वाधीनताके कट्टर पक्षपाती हैं! आप अब " साम्राज्यमें स्वराज्य " के सिद्धान्तपर बिल्कुल विश्वास नहीं करते। महात्मा गान्धीजीने अपनी नागपुरवाली स्पीचमें, जो उन्होंने कांग्रेसकी नवीन क्रीडके बारेमें दी थी, कहा था

" There is room in this resolution for both—those who believe that by retaining British connection we can purify ourselves and purify British people and those who have no bilief. As for instance take the extreme case of mr Andrews. He says all hope for India is gone for keeping the British connection. He says there must be complete severance, complete independence. there is

room enough in this creed for a man like mr Andrews also." अर्थात् "इस प्रस्तावमें दोनों प्रकारके आदमियोंके लिये स्थान है। कांग्रेसके इस नवीन विधानके अनुसार कांग्रेसमें वे लोग भी सम्मिलित होसकते हैं जिनका यह विश्वास है कि ब्रिटिश साम्राज्यके साथ भारतका सम्बन्ध रखनेसे हम अपने आपको तथा ब्रिटिश जनताको पवित्र कर सकते हैं और इनके सिवाय वे भी, जिनका ब्रिटिश साम्राज्यमें बिल्कुल विश्वास नहीं रहा, इस क्रीडके मुताबिक कांग्रेसमें शामिल हो सकते हैं। उदाहरणके लिये मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की बातको लीजिये। वे कहते हैं हिन्दुस्तानको ब्रिटिश साम्राज्यसे सम्बन्ध क़ायम रखनेमें भलाईकी कुछ भी आशा नहीं हो सकती। उनका कथन है कि भारतको ब्रिटिश साम्राज्यसे बिल्कुल अलग हो जाना चाहिये, भारत वर्षको "पूर्ण स्वाधींनता" मिलनी चाहिये कांग्रेसकी इस नवींन क्रीडमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की तरहके आदमीके लिये भी स्थान है।"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के ब्रिटिश साम्राज्य सम्बन्धी विचारोंका वर्णन तो हम आगे चलकर करेंगे, यहांपर हम केवल इतनाही कहना चाहते हैं कि complete Independence (पूर्ण स्वाधीनता) इन शब्दोंको भारतीय जर्नेलिज़ममें पुनर्जीवित करनेका सौभाग्य कुछ अंशोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को भी प्राप्त है। कहा जाता है सन् १९०७ की भारतीय जागृति के समयमें श्रीमान् अरविन्द घोषका लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य ही था। पीछेसे यह विचार दब गया और भारतके राजनैतिक साहित्यमें 'होमरूल' सैल्फगवर्मेण्ट 'ब्रिटिश साम्राज्यमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन' इत्यादि शब्द प्रयोगमें आने लगे। अब "स्वाधीनता" का शब्द फिर सर्व साधारणके सामने आने लगा है मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने भी अपने एक सन्देशमें बड़ी दृढ़तापूर्वक स्वाधीनता (Independence) शब्दका फिर प्रयोग किया, उनके इस प्रकारके विचारसे राष्ट्रीय दलका एक प्रसिद्ध

अँग्रेज़ी पत्र इतना डर गया था कि उसने उस सन्देशको, जो मिस्टर ऐण्ड्रूज़ने स्वाधीनताके विषयमें पत्रोंको भेजा था, छापनेसे पहले इंकार कर दिया था। इन बातोंसे पाठकोंको पता लग सकता है कि मिस्टर ऐण्ड्रूज़ हठधर्मी आदमी नहीं हैं। उन्होंने अपने मस्तिष्कको बिल्कुल निष्पक्ष रखनेकी चेष्टा की है। ज्ञानवृद्धि और अनुभव प्राप्तिके साथ साथ उनके विचारोंमें परिवर्तन होता रहा है। इसमें वे कदापि कोई बुराई नहीं समझते। सच पूंछो तो उनकी आश्चर्यजनक विचार-शक्तिका मुख्य कारण भी यही है। मानसिक दास वे किसी प्रकारके सिद्धान्तोंके नहीं बनना चाहते, चाहें ये सिद्धान्त धर्मपुस्तक बाइबिलके हों या वर्तमान राजनीतिके।

केम्ब्रिज मिशनकी आपत्ति

जब मिस्टर ऐण्ड्रूज़ कांग्रेससे वापस आये तो केम्ब्रिज मिशन वालोंको बड़ा अन्देशा हो गया। मिशनवाले इस बातको बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे कि कोई मिशनरी अँग्रेज़ इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलनमें सम्मिलित हो। यद्यपि केम्ब्रिज मिशन अन्य मिशनरी संस्थाओंकी अपेक्षा अधिक उदार थी तथापि राष्ट्रीय आन्दोलनसे पूर्ण सहानुभूति रखनेवाले किसी सज्जनको वह अपने यहां बड़ी कठिनतासे रख सकती थी मिशनके अधिकारी लोग मिस्टर ऐण्ड्रूज़के बार बार यही कहा करते थे कि आप राष्ट्रीय आन्दोलनमें शामिल न हों। मिस्टर ऐण्ड्रूज़ने भी यह समझ लिया था कि जब तक हो सकेगा मिशनमें रहेंगे, पीछे इससे त्यागपत्र तो देनाही पड़ेगा। सौभाग्यसे मिशनके प्रधान मिस्टर ऐण्ड्रूज़के साथ सहानुभूति रखते थे, इस कारण आप वहां सन् १९१४ तक रह सके। मिस्टर ऐण्ड्रूज़ कहते हैं "इस बीच में मुझे अपने आपको बड़े संयममें रखना पड़ता था, और मैं समझता हूं कि इससे मुझे हानिही हुई। दो बातें मेरे दिलको

ज्यादः अखरती थी (१) कालेजका गवर्मेण्टसे सम्बन्ध (२) कालेजमें बाइबिलकी अनिवार्य्य पढ़ाई।

कालेजका गवर्मेन्टसे सम्बन्ध

मेरे हृदयमें यह बात बराबर खटकती रहती थी कि कालेजका सम्बन्ध गवर्मेन्टसे होनेकी वजहसे स्वतंत्रतामें बड़ी बाधा पड़ती है। यह सम्बन्ध मेरे लिये असह्य हो चला था। मेरे राष्ट्रीय आन्दोलनमें भाग लेनेके दो परिणाम होते थे एक तो यह कि मेरा सम्बन्ध अन्य मिशनरियोंसे बहुत कम होता जाता था और दूसरा परिणाम यह होता था कि मेरी वजहसे कालेजपर गवर्मेण्ट की क्रूर दृष्टि हो गई थी। राष्ट्रीय आन्दोलनके विषयमें मेरे विचारोंको जानकर पंजाबके लाट साहब कालेजको सन्देह दृष्टिसे देखते थे। मैंने उन दिनों विलायतके 'स्पैकटेटर' नामक पत्रको एक लेख भेजा था। इस लेखमें मैंने न्याय विभाग और शासन विभागको अलग अलग करनेका पक्ष लिया था। इस लेखमें मैंन एक उदाहरण दिया था। उन दिनों एक अभियोग बड़े मार्केका हुआ था। इस अभियोगका नाम था 'कमिल्ला—केस'। शासन विभागके एक अफ़सरने न्याय करते समय एक आदमीको फांसीका दण्ड दिया था। जब यह मामला जजके यहां पहुंचा तो जजने उस आदमीको बरी कर दिया और साथही साथ उस अफ़सरकी अत्यन्त निन्दा की। मैंने अपने लेखमें इस उदाहरणको उद्धृत करते हुए यह दिखलायाथा कि शासन विभाग और न्याय विभागको अलग अलग न करनेके ये दुष्परिणाम होते हैं। जब मेरा लेख स्पैक्टेटरमें छपकर भारतमें आया तो पंजाबके अधिकारियोंमें इससे बड़ी हलचल मचगई। मुझे इस बातकी सूचना दी गई कि भविष्यमें मैं इस प्रकारके लेख न लिखूं। पंजाबके तत्कालीन लाट साहब Sir Denril Ibbetson (सर डैंज़िल इबटसन) ने अपने हाथसे एक चिट्ठी

लाहौरके लार्ड बिशपको इस विषयमें भेजी। बिशप साहबने मुझे बुलाया और चिट्ठी दिखलाई। बिशप साहबने मुझे फिर कहा "देखो इस तरहके काम मत करो। यह ठीक नहीं है" लाट साहबके पत्रका एक वाक्य मुझे अभी तक याद है। "Has he got no humility? "क्या उसमें (मिस्टर ऐण्ड्रयूजमें) बिल्कुल नम्रता नहीं है?" पंजाबके एक दूसरे लाट Sir lonis dane (सर लुई डेन) ने तो खुल्लमखुल्ला कितनेही युरोपियनोंके सामने यहां तक कह दिया था" "ऐण्ड्रयूज़को तो देश निकालेका दण्ड देना चाहिए।" कई युरोपियन लोगोंने मुझसे लाट साहबकी यह बात कही थी। जहां तक हो सका महरबान लाट साहबने मेरे विषयमें इसी नीतिसे काम लिया। उस समय पंजाब विश्वविद्यालयके कितने ही संचालकों की यह इच्छा थी कि मैं विश्वविद्यालयकी कार्यकारिणी सभाका सदस्य बना लिया जाऊं। यूनीवर्सिटीके वायस चान्सलर साहबने कई बार इस बात पर ज़ोर भी दिया था। पंजाब विश्वविद्यालयके संचालक उन दिनों बी. ए. में आनरकी परीक्षा प्रारम्भ करनेवाले थे। मुझे केम्ब्रिज विश्वविद्यालयका अनुभव था इस लिये वे मुझे भी यूनीवर्सिटीकी कार्य कारिणी सभामें लेना चाहते थे। नियम यह था कि सिंडीकेटमें केवल वे लोग ही लिये जाते थे जो युनीवर्सिटीके 'फैलो' हों। लाट साहब सर लुई डेन मेरे राष्ट्रीय आन्दोलनमें भाग लेनेसे इतने नाराज़ थे के वे जान बूझ कर मेरे नामकी उपेक्षा करते थे। वाइस चान्सलर डाक्टर ईविंग साहब मेरी नियुक्तिके पक्षमें थे, और उन्होंने मेरा नाम पेश भी किया था। दिल्लीके लाला सुल्तान सिंहजी, जो मेरे शिष्य हैं, और जो मुझसे अंग्रेज़ी पढ़ा करते थे, फैलोशिपके नामज़द होगये थे, लेकिन मेरा नाम उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा गया था। इस घटनाका अन्त बड़े मज़ेका हुआ; जब विलायतके लेबर दलके

नेता मि. रैमसे मैकडोनैल्डने भारत यात्रा की थी वे कई दिन दिल्लीमें मेरे आतिथि होकर रहे थे। दैवयोगसे मैंने यह घटना उन्हें सुना दी और लाट साहबकी कृपाका भी वर्णन कर दिया। मैकडोनैल्ड साहबने विलायत पहुंचकर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था "The awakening of india" भारतमें जागृति" इस पुस्तकमें उन्होंने मेरी इस घटनाका भी ज़िक्र कर दिया। (मेकडानैल्ड साहबने एक ग़लती मेरे कालेजके बारेमें इस पुस्तकमें करदी थी। बजाय सैण्ट स्टीफन्स कालेजके, आपने उसका नाम सैण्ट ऐण्ड्र्यूज़ कालेज लिख दिया था। लोगोंने मुझसे कहा था कि नौकर शाहीकी यह करतूत उस पुस्तकमें लार्ड मारलेने पढ़ी थीं और उन्होंने फ़ौरनही उस विषयमें भारत सरकारको लिखा। मैं यह नहीं कह सकता कि यह बात कहां तक सच है लेकिन नतीज़ा यह हुआ कि सर लुई डेन साहबने अकस्मात् ही मुझे पंजाब युनीवर्सिटीका फैलो बना दिया और फ़ौरनही मैं सिंडीकेट (प्रबन्ध कारिणी–सभा) में भी सम्मिलित कर लिया गया! मुझे अचम्भा तो इस बातसे होता था कि हमारे लार्ड बिशप भी पंजबकी नौकरशाहीकी करतूतको अनुचित नहीं समझते थे। वे कहते थे "अगर लाट साहबने शासककी हैसियतसे आपको 'फैलो' होनेसे रोका तो इसमें उन्होंने अनुचित या अन्याययुक्त बात क्या की?" मैंने बिशप साहबसे कहा था "अगर केम्ब्रिजमें इस तरहकी घटना होती तो अवश्यही वहां यह अत्यन्त निन्दनीय समझी जाती। विद्याके पवित्र मन्दिरमें स्वतंत्रता होनी चाहिये। अगर केम्ब्रिजमें किसी पद पर जिसका सम्बन्ध पूर्णतया विद्या सम्बन्धी योग्यतासे हो, राजनैतिक और धार्मिक कारणोंसे नियुक्ति की जावे, तो केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें इस पर बड़ा आन्दोलन मच जावे। वहां शिक्षासंबंधी कार्योंमें इस बातपर ख्याल नहीं किया जाता कि किसीके राजनैतिक

या धार्मिक विचार क्या हैं, वहां उसकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यताही देखी जाती है ”

इन बातोंसे पता लग सकता है कि कालेजका गवर्मेण्टसे सम्बन्ध होनेकी वजहसे मेरे हाथ पांव किस तरह बंध गये थे। ” इन दृष्टान्तोंसे पाठक समझ सकते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को राष्ट्रीय आन्दोलनसे सहानुभूति रखनेके कारण किन किन आपत्तियोंका सामना करना पड़ा था। पार्लमेण्टके मेम्बर मिस्टर रेमसे मैकडोनैल्डने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विषयमें यह वाक्य अपनी पुस्तक The awakening of India के १४३ वें पृष्ठ पर लिखा है “...... But we did not meet a dozen Indians who said that the social releations of Indians and Europeans were satisfactory. On the other hand we found that the educated and self-respecting Indian was ceasing to call on Europeans and was cutting off all connections, except purely business once, with them. Even In educational work cooperation is grudgingly recognised. St Andrews College in Delhi has an Indian principal and s European staff working under him, but the most worthy of that staff, the Rev. C. F. Andrews, Fellow of pembroke College, Cambridge, was struck off a list of nominees for Fellowships of the Punjab university by the Lientenant Governor's own hand, and a man of no educational attainments put in his place, for no other reson that Mr. Andrews has the confidence of Indians, the list of these persoanal affronts is exceedingly long.”

अर्थात् लेकिन हमें ऐसे हिन्दुस्तानी एक दर्जन भी नहीं मिले जिन्होंने हिन्दुस्तानीयों और यूरोपियनोंके पारस्परिक सम्बन्धको सन्तोष जनक

बतलाया। इसके विरुद्ध हमें यह भी पता लगा कि शिक्षित और आत्मसम्मान युक्त हिन्दुस्तानी अब यूरोपियनोंके पास जाना बन्द कर रहे हैं, और काम काजके मामलोंको छोड़कर वे यूरोपियनोंसे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। शिक्षा सम्बन्धी कामोंमें भी जब यूरोपियन और हिन्दुस्तानी सहयोग करते हैं तो उनके सहयोगकी लोगकी मत नहीं समझते। दिल्लीमें सैण्ट ऐण्ड्र्यूज़ (सैण्ट स्टीफन्स) कॉलेज़ है। उसके प्रिंसीपल एक हिन्दुस्तानी हैं और उनके नीचे कई यूरोपियन काम करते हैं। अध्यापकोंमें सबसे अधिक योग्य रैवरेण्ड सी. ऐफ. ऐण्ड्र्यूज़ हैं जो पैम्ब्रोक कालेजके फैलो रह चुके हैं। पंजाब यूनिवर्सिटीके 'फैलो' बनानेके लिये जो लोग नामज़द किये गये थे, उनमें रैवरेण्ड ऐण्ड्र्यूज़का भी नाम था, लेकिन लाट साहबने अपने हाथसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का नाम उस सूचीमेंसे काट दिया और उनकी जगहपर एक ऐसा आदमी नामजद कर दिया जिसमें शिक्षा सम्बन्धी योग्यता कुछ भी नहीं थी! इसका कारण यह था कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ हिन्दुस्तानियोंके विश्वास-पात्र हैं। इस प्रकारके व्यक्तिगत अपमानोंकी संख्या अत्यधिक है।"

लाला लाजपतराय-जीका देश निकाला

जब लाला लजपतरायजीको सन् १८१८ की कानूनके मुताबिक देश निकालेका दण्ड दिया गया था, उस समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इसका घोर विरोध किया था। आपने गवर्मेण्टके इस कार्यको सर्वसाधारणकी स्वतंत्रताके अपहरण करनेवाला बतलाया था। पबलिकमें भी आपने इस विषयपर व्याख्यान दिया था। आपने अपने कालेजकी डिबेटिङ्ग सुसायटीकी एक मीटिङ्ग की थी। मिटिंङ्गमें गवर्मेण्टके कार्यका विरोध किया गया था। मीटिंङ्गके सभापति आप ही थे। और यह प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे पास हुआ था। सैण्ट स्टीफन्स कालेजकी

इस मीटींगकी खबर सब समाचारपत्रोंमें छप गई थी। इसका नतीज़ा यह हुआ कि सरकारकी ओरसे और मिशनवालोंकी ओरसे आपको डाट बतलाई गई। सन् १९०७ में मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कितनी बार पंजाब सरकारके अत्याचार पूर्ण कार्यौंका विरोध किया था और इस सम्बन्धमें आपके विचार सर्वसाधारणको अच्छी तरह मालूम हो गये थे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं " सन् १९०७ की सालमेंही मुझे पंजाबके सिविल और मिलिटरी यूरोपियनोंने ' भयंकर आन्दोलनकारी ' की उपाधिसे विभूषित किया था"

लालाजीका छुटकारा

९ नवम्बर सन् १९०७ को लालाजीका छुटकारा हुआ। सैण्ट स्टीफन्स कालेजके विद्यार्थी प्रिंसीपल साहबकी अनुपस्थितिमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के पास पहुंचे, और उनसे कहा " हमारे पूज्य नेता लाला लजपतरायजी छूट गये हैं, इसलिये हम अपने कालेजमें रोशनी करना चाहते हैं। आपकी क्या सम्मति है ? " मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उत्तर दिया " Most Certainly make it a regular Diwali " ' अवश्यमेव आप लोग पूरी पूरी दिवाली मनाइये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने इसके लिये अपने पाससे दाम भी दिये। आप कहते हैं " हमारे कालेजके विद्यार्थियोंने खूब ही डाट कर रोशनी की। सम्पूर्ण कॉलेज तथा बोर्डिङ्ग हाऊसकी छतों पर सहस्रों छोटे छोटे दीपक रखदिये गये। रात्रि उस समय शान्तिमय थी, हवा मन्दमन्द चल रही थी, और हमारे कालेजकी दीपावलीको देखनेके लिये शहरकी भीड़ खूबही इकट्ठी हुई थी। लेकिन दिल्लीके यूरोपियन लोग जल कर खाक़ही हो गये। बस उस दिनसे उन्होंने यह बात अपने दिलमें रखली और जहां कहीं मैं जाता था वे उस दिवालीकी याद करके कहते थे " लालाके छूटनेपर इन्होंने अपने कालेजमें उत्सव

मनाया था" दिल्लीके यूरोपियन समाजमें मेरे अन्य किसी कामसे इतनी सनसनी नहीं फैली थी जितनी इस दीपावलीसे फैली। समाचारपत्रोंमें भी इस की खबर छपी थी और ऐङ्गलो इण्डियन लोगोंने इस पर बड़े कटाक्ष किये थे"

उन्हीं दिनों सरकारने एक आज्ञापत्र निकाला था जो अब रिज़ले सर्कूलरके नामसे प्रसिद्ध है। इस आज्ञापत्रका

रिजले सर्कूलर

अभिप्राय यह था कि सरकारी तथा सरकारसे सहायता पानेवाले कालेजोंके प्रोफेसर अपने विद्यार्थियोंके साथ राजनैतिक विषयोंपर वाद विवाद न करें। इस आज्ञापत्रके विरुद्ध मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने एक बड़ी डाटका लेख समाचारपत्रोंमें लिखा था। इस लेखमें आपने कहा था "मुझे कालेजमें इतिहास पढ़ाना पड़ता है, और इतिहासका वर्तमान राजनीतिसे घनिष्ट सम्बन्ध है। यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि वर्तमान राजनीतिका ज़िक्र बिना किये इतिहास कैसे पढ़ाया जा सकता है ?"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "अपने लेखमें मैंने सबसे अधिक आक्षेप इस बात पर किया था कि सरकारके इस आज्ञापत्रसे शिक्षाकी स्वतंत्रतापर आघात होता है। यह सर्कूलर क्या है शिक्षा सम्बन्धी स्वाधीनताको नष्ट करने वाला पूरा पूरा बन्धन है। यह बात आश्चर्य जनक है कि इस मामलेमें भारत सरकारके विचार अब तक बिल्कुल गड़बड़ रहे हैं। इस 'रिज़ले सर्कूलर' के दो वर्ष बाद सरकारने दूसरा सर्कूलर और भी निकाला था। उसमें इतिहास और अर्थशास्त्रके प्रोफेसरोंको यह आज्ञा दी गई थी कि वे अपने विद्यार्थियोंको वर्तमान राजनीतिके विषयमें ठीक ठीक बातें बतलावें। प्रान्तोंके गवर्नरों तथा लैफ्टीनैण्ट गवर्नरोंके विचार भी इस विषयमें गड़बड़ रहे हैं। कोई रिज़ले सर्कूलरका पक्षपाती रहा है तो कोई दूसरे सर्कूलरका। पिछली दस वर्षोंमें

आज तक कभी भी भारत सरकारने यह बात स्पष्टतया नहीं कही कि शिक्षा सम्बन्धी मामलोंमें सब स्वतंत्र है, विद्यार्थी और प्रोफेसर इन विषयोंपर इच्छानुसार वादविवाद कर सकते हैं। इंगलैण्ड और अमेरीकामें यह एक बिल्कुल मामूली बात है लेकिन भारत सरकारको इसकी कल्पना भी असम्मत दीख पड़ती है! सरकारसे सहायता पानेवाले कॉलेजोंके विषयमें मेरा अनुभव यही है कि इन कॉलेजों पर हमेशा गवर्मेण्टका दबाव रहता है। जब कोई राष्ट्रीय सवाल उठखड़ा होती है तो गवर्मेण्ट फौरनही कॉलेजके अधिकारियोंको दबाना शुरू करती है और सरकारी मदद बन्द करनेकी धमकी दी जाती है। शिक्षामें इस प्रकार गुलामी घुस जाती है। क्योंकि जिन कालेजोंकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती उन्हें मजबूरन गवर्मेण्टकी आज्ञा माननी पड़ती है क्योंकि सरकारी आज्ञा माननेसे ही सरकारी इमदाद कायम रहसकती या बढ़ सकती है। इस प्रकार सन् १९०७ में ही मुझे यह अनुभव हो गया था कि मेरी स्वतंत्रताका अपहरण हो रहा है और तभी मैंने कालेजसे सम्बन्ध त्याग करनेका विचार कर लिया था।"

कालेजमें बाइबिलकी अनिवार्य्य पढ़ाई

दूसरी बात जो मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के दिलमें खटकती थी वह यह थी सैण्ट स्टीफन्स कालेजमें लड़कोंको बाइबिल अवश्यमेव पढ़नी पड़ती थी। कुछ दिन तक तो आप इस मामलेको ठीक तरह नहीं समझसके, इसके बाद मिस्टर औलनट ने, जो, कालेजमें पहले प्रिंसीपल रह चुके थे, आपको यह मामला उल्टे ढङ्गसे समझा दिया। मिस्टर औलनटने आपसे कहा "अगर हम लोग बाइबिलका पढ़ना लड़कोंकी इच्छापर छोड़देंगे तो जो लड़के बाइबिल पढ़नेके विरुद्ध होंगे वे बाइबिल पढ़नेवाले लड़कोंका बायकाट कर देंगे। हिन्दुस्तानमें सामाजिक बहिष्कारकी प्रभाव इतना अधिक पड़ता है कि बाइबिल

पढ़नेकी इच्छा रखनेवाले विद्यार्थी बहिष्कारके डरकी वजहसे बाइबिल क्लासमें नहीं आवेंगे। आप अभी विलायतसे नये ही आये हैं इस लिये आप हिन्दुस्तानके सोशल बाय काटका प्रभाव नहीं जानते हैं। इसके शिवाय एक बात और भी है। यदि किसी नगरमें एकसे अधिक कालेज हैं तो मिशन कालेजमें बाइबिलकी शिक्षा अनिवार्य कर देनेसे कुछ भी हानि नहीं हो सकती। जो लडके बाइबिल न पढ़ना चाहें वे नगरके दूसरे कालेजमें जरूर पढ़ सकते हैं। और जो लड़के मिशन कालेजमें आवेंगे वे यह समझकरही आवेंगे कि मिशन कालेजमें तो बाइबिलकी शिक्षा ग्रहण करनी ही होगी। " मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं " कुछ दिनों तक तो मैं इस भ्रममें रहा कि शायद कुछ अंशोंमें बाइ. बिलके अनिवार्य रूपसे पढ़ानेकी नीति न्याययुक्त है लेकिन पीछेसे मुझे यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि एक भी लड़केको ज़बरदस्ती बाइबिल पढ़ाना मानों ईसाई धर्मका अपमान करना है। एक विशेष धर्मकी शिक्षा को अनिवार्य कर देनेका अर्थ यही है कि हम उसके मूल्यको घटा रहे हैं। जो लोग सत्यको जानना चाहते हैं उन्होंकी हमें शिक्षा देनी चाहिये। जो लोग बाइबिल पढ़ना नहीं चाहते उन्हें पढ़नेके लिये बाध्य करना अत्यन्त अनुचित है। एक बार मैंने एक लड़केसे सवाल किया " तुम मिशन कालेजमें पढ़ने क्यों आये हो, ' हिन्दु कालेज ' में क्यों नहीं गये ? " उस लड़केने उत्तर दिया " मेरे पिताजीने यह समझ कर मुझे इस मिशन कालेजमें भर्ती कराया है कि यहांके अँग्रेज़ प्रोफेसर सिफारीश करके मुझे अच्छी सरकारी नौकरी दिलवा देंगे, लेकिन हिन्दु कालेजके हिन्दुस्तानी प्रोफेसर ऐसा नहीं कर सकते " फिर मैंने उस लड़केसे पूंछा " क्या तुम्हारे पिताजी यहां की बाइबिल शिक्षाके विरुद्ध हैं ? " लड़केने कहा " हां मेरे पिताजी इसके खिलाफ है लेकिन उन्होंने मुझे कह दिया है कि तुम बाइबिलकी शिक्षापर ध्यानही मत

दिया करो, इस कारण बाइबिलकी बातोंकी और मैंने बिल्कुल ध्यानही नहीं दिया!"

धर्मसम्बन्धी कठिनाइयां

उन्हीं दिनों मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अनेक धर्म सम्बन्धी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। हम लोगोंके लिये जो ईसाई नहीं हैं; इन कठिनाइयोंका समझना अत्यन्त कठिन है। ईसाई लोगोंमें भी अनेक सम्प्रदाय हैं। पाठक यह बात पढ़चुके हैं कि जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अर्विङ्गाइट सम्प्रदायको छोड दिया था तो वे Holy communion "पवित्र संगति" में अपने मातापिताके साथ सम्मिलित नहीं हो सकते थे। प्रोटेस्टैण्ट ईसाई रोमन कैथोलिक ईसाई-योंकी पवित्र पूजामें शामिल नहीं हो सकते। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ Church of England (इङ्गलैण्डकी चर्च) के अनुयायी थे। इस चर्चके तीन विभाग हैं हाई चर्च, लो चर्च और ब्रौड चर्च। हाई चर्च-वाले किसी दूसरे सम्प्रदायको, जो चर्च ऑफ इङ्गलैण्डसे सम्बन्ध न रखता हो, अपनी 'संगति' में शामिल नहीं करते। एक बार गर्मीके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को मलेरिया ज्वरसे बहुत कुछ पीड़ित होना पड़ा। आराम होनेपर भी आपको रातके वक्त ठीक तरहसे नींद नहीं आती थी। आपके मित्र मिस्टर सी. बी. यंगने, जो बप्टिस्ट मिशनके मिश-नरी थे, आपसे अपने बंगलेपर सोनेके लिये कहा। मिस्टर यंगका बंगला शहरके बाहर था। एक बार सनीचरकी रातको मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उनके बंगलेपर जाकर सोये। इतवारके दिन सबेरेके वक्त आप वहांसे चले आये। लेकिन रातके वक्त मिस्टर यंगको मलेरियाज्वर हो गया और यह बुखार १०४ डिग्री तक बढ़गया। मिस्टर यंगको उस दिन अपने चर्चमें प्रार्थना करनी थी और धर्मसम्बन्धी व्याख्यान भी देना था। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उनसे कहा" "आप चिन्ता न की

जिये, मैं आपकी जगह बप्टिस्ट चर्चमें जाकर काम कर आऊंगा"। मिस्टर यंगने कहा "आपसे आपकी मिशनवाले वैसेही नाराज़ हैं, अगर आप नियम तोड़कर हमारे गिरजा घरमें प्रार्थना करेंगे तो आपको और भी आफ़तमें फसना होगा। इस लिये आपको हमारे गिरजा घरमें प्रार्थना न करनाही अच्छा है। इसके सिवाय मेरी तबियत भी अब कुछ ठीक है इसलिये मैं ही प्रार्थना करूंगा" अन्तमें मिस्टर यंगने ही प्रार्थना की। यद्यपि आपने प्रार्थना नहीं की थी लेकिन आप मनमें तो उसका निश्चय करही चुके थे। आपने अपना यह निश्चय मिशन-वालोंसे कह दिया। इसके कारण केम्ब्रिज मिशनके अध्यक्षने आपसे नाराज़ हो कर कहा "अगर आप ऐसा करेंगे तो हमारी मिशन टूट जावेगी। जब लाहौरके बिशप साहबने यह बात सुनी तो उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से कहा "If you do this on any occasion I shall have to take away your license" अर्थात् "यदि आपने कभी ऐसा काम किया तो मुझे आपका धर्म प्रचार करनेका लैसन्स छीन लेना पड़ेगा' मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इसके उत्तरमें बिशप साहबसे कहा. "This is not a matter of obedience to you but of a higher obedience. I shall certainly do if such an occasion happens"

अर्थात् "यह मामला आपकी आज्ञा पर निर्भर नहीं है बल्कि यह किसी उच्च तर आज्ञा पर निर्भर है। अगर इसी तरहका मौका फिर आया तो मैं ज़रूर ही वही काम फिर करूंगा।" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का अभिप्राय यह था कि बिशप साहबकी शिक्षा माननेकी अपेक्षा क्राइ-स्टकी शिक्षाका मानना कहीं अधिक आवश्यक है। यदि क्राइस्ट इस परिस्थितिमें होते तो वे अवश्यमेव दूसरे गिरजाघरमें जाते।

इस प्रकार मिशनवालोंके साथ मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का झगड़ा बराबर बढ़ रहा था। आपके राष्ट्रीय आन्दोलनमें शामिल होनेसे

मिशनवाले पहलेही चिन्तित थे अब इन कारणोंसे वे और भी चिन्तित हो गये।

धार्मिक विश्वासोंमें परिवर्तन

पाठकोंको यह बात मालूम ही है कि भारत आनेके पहले ही मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने बाइबिल को निर्भ्रान्त मानना छोड़ दिया था लेकिन वे बाइबिलमें लिखे हुए miracles (अद्भुत कर्मों) पर विश्वास करते थे। भारतको आनेसे समय आपका यह दृढ विश्वास था कि क्राइस्टका जन्म कुमारी मरियमसे बिल्कुल अलौकिक रीतिसे हुआ था और क्राइस्ट अपने शरीर सहित स्वर्गको गये थे। आप कहते हैं "उन दिनों मैं इन आश्चर्य कर्मों पर पूरापूरा विश्वास करता था। काइस्टको मैं ईश्वरका अवतार मानता था इस लिये मैं ख्याल किया करता था कि परमात्माके लिये सब बातें सम्भव और स्वाभाविक हैं। यद्यपि मैं वाल्टेयर, स्ट्रास और रैना इत्यादिके ग्रन्थ देख चुका था और इन ग्रन्थोंमें बाइबिलके आश्चर्य कर्मोंका जो खण्डन किया गया है वह भी पढ़ चुका था, लेकिन इन ग्रन्थोंका मेरे ऊपर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा था।

उस समय मैं क्राइस्टकी उपासना परमात्मा मान कर ही किया करता था और इसीसे मेरे हृदयको अत्यन्त आनन्द मिलता था। भारतको आनेके प्रथम इन बातोंमें मुझे बिल्कुल भी सन्देह नहीं था। भारतमें आनेपर मुझे इन आश्चर्य कर्मोंमें सन्देह होने लगा। मैं सोचने लगा कि कुमारी कन्याके अलौकिक रीतिसे पुत्रोत्पन्न होना बिल्कुल अस्वाभाविक और असम्भव है। इसके सिवाय मैंने गौतमबुद्धके जन्मके विषयमें ऐसे ही किस्से सुनेथे मैंने अपने दिलमें कहा "यह किस तरह हो सकता है कि मैं क्राइस्टके अद्भुत कर्मोंको तो साइंसके मुताबिक ठीक मानूं और बुद्ध सम्बन्धी कथाओंको कोरमकोर गप समझूं? क्या

इन अद्भुत कर्मोंमें पारस्परिक समानता नहीं है ? क्या इन अद्भुत कर्मोंसे हम यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जनताने इन महापुरुषोंके असाधारण चरित्र देखकर भक्ति और श्रद्धाके आवेशमें उनके विषयमें ये सब कथाऐं रच डाली हैं " कुछ दिनों तक तो मैं अपने दिलमें यह समझता रहा था कि इंजीलकी घटनाएँ अभी इतनी पुरानी नहीं हैं कि लोग उनके बारेमें इस प्रकारके किस्से कहानी गढ़ सकते लेकिन फिर भी मेरी अन्तरात्मामें संशय बनाही रहता था। आखिरकारं मैं इसी परिणाम पर पहुंचा कि महापुरुषोंके पीछे उनके अनुयायी भक्तिके कारण इसी तरहकी कथायें बना देते हैं जो विज्ञानकी दृष्टिसे ठीक नहीं, लेकिन कविताकी दृष्टिसे ठीकही होती हैं।

इससे भी अधिक संशय मुझे 'पिता पुत्र पवित्रात्मा' के सिद्धान्तमें होने लगा। विशिष्ट अद्वैतके सिद्धान्तकी खूबी तो मेरी समझमें आसकती थी लेकिन इस Trinity के सिद्धान्तको मैं भद्दा समझने लगा था। बहुत कुछ सोच विचार करने पर मैंने यही निश्चित किया कि Trinity का यह सिद्धान्त कोरी कल्पना ही है। इस प्रकार अद्भुतकर्मोंमें और ट्रिनिटीके सिद्धान्तमें मेरा विश्वास ढीला हो गया था, लेकिन अभी एक तीसरी बात और बाकी थी और उसने मेरे अंतःकरणको सबसे अधिक विचलित कर रक्खा था। चर्च आफ़ इङ्गलैण्डकी प्रार्थनाकी पुस्तकमें एक वाक्य है। उसका अर्थ यह है कि जो लोग क्रिश्चियन धर्मपर विश्वास नहीं करेंगे उनकी आत्मा अनन्त कालके लिये मुक्तिसे वंचित हो जावेगी। दूसरे धर्मोंकी इस निन्दाको सहन करना मेरे लिये अत्यन्त कठिन हो गया था। इङ्गलैण्डके विद्वान ईसाई लोग इस वाक्यकी खींचातानी करके इसका दूसराही अर्थ लगाते थे लेकिन उस अर्थसे मुझे सन्तोष नहीं हुआ। यह वाक्य हमारे विधान (creed) में था और हम लोगोंको गिरजाघरमें इसे बार बार

कहना पड़ता था। बहुत दिनों तक तो किसी तरह मैं इन शब्दोंको कहता रहा क्योंकि मैं अपने मनमें उनका दूसरा अर्थ जो इङ्गलैण्डके उदार आदमी किया करते थे, समझता रहा लेकिन अन्तमें मैंने इन शब्दोंको कहना बन्द कर दिया। इङ्गलैण्डमें ही मुझे इन शब्दोंका कहना अनुचित प्रतीत होता था लेकिन हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी ईसाईयों द्वारा इन शब्दोंका उच्चारण कराना तो बड़ी भयंकर बात थी। एक बार बड़े दिनको प्रातःकालके समय मैं अत्यन्त प्रसन्नताके साथ गिरजाघरमें गया। उस समय मेरा हृदय बड़ा प्रफुल्लित था। लेकिन गिरजाघरमें जाकर मैंने हिन्दुस्तानी ईसाइयोंके छोटे छोटे बालकोंको वे ही भयंकर शब्द गाते हुए सुना। वे गारहे थे कि जो लोग क्रिश्चियन मतपर विश्वास नहीं करेंगे उनकी आत्मा अनन्त काल तक मुक्तिसे वंचित हो जावेंगी ! भारत भूमिमें और भारतीय बालकोंके मुखसे ये शब्द सुनकर मेरे हृदयको बड़ा भारी धक्का पहुंचा मुझे अपना जीवन अत्यन्तही कष्टप्रद मालूम होने लगा और मैंने अपने दिलमें कहा कि अब इस चर्चसे सम्बन्ध तोड़नाही पड़ेगा। लेकिन उस समय मेरी आत्मा उतनी बलवान नहीं थी इस लिये कुछ दिनों तक मुझे यह असह्य वेदना और भी सहनी पड़ी।"

इन उपर्युक्त बातोंसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के उदार हृदयका पता लग सकता है। अगर हमारे अंग्रेज़ मिशनरियोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ की उदारताका चतुर्थांश भी हो तब भी वे हमारे लिये पूज्य हो सकते हैं लेकिन खेद तो इस बातका है कि इन मिशनरियोंके स्वभावमें 'एङ्गलोइण्डियन पन' और 'प्रैस्टीज़' की गन्ध इतनी अधिक भरी होती है कि उनकी यत्किंचित उदारता भी व्यर्थही जाती है। हम इस बातको मानते हैं कि अब मिशनरी लोग पहले की अपेक्षा अधिक उदार होते हैं लेकिन तुलना करनेपर हमें यह दीख पड़ता है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के

आदर्श तक पहुंचनेके लिये अभी इन मिशनरी लोगोंको बड़ा लम्बा मार्ग तय करना पड़ेगा।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के धर्म सम्बन्धी विचारोंके परिवर्तनको पढ़ते समय पाठकोंको एक बात अच्छी तरह ध्यानमें रखनी चाहिये कि यद्यपि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ईसाई मतकी कई बातोंमें विश्वास नहीं करते तथापि वे ईसाई ही हैं। वे सच्चे ईसाई हैं, ईसाके अनुयायी हैं। अपने सच्चे तत्कालीन विचारोंको ज़िक्र करते हुए मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "Though I had doubts about miracles and about Trinity, I had not and still I have not any doubt whatever about the supreme moral greatness of christ. I worshipped him and still worship Him as my saviour" अर्थात् "यद्यपि मुझे अद्भुतकर्मोंमें, तथा ट्रिनिटीके सिद्धान्तमें, सन्देह था लेकिन तथापि मुझे क्राइस्टकी महान नैतिक उच्चतामें कभी भी कुछ भी सन्देह नहीं था, मैं उन्हें अपना रक्षक समझकर उनकी पूजा करता था, अब भी मैं उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम समझता हूँ और उसी भावसे उनकी पूजा करता हूं।"

छठा अध्याय

महात्मा मुंशीरामजीसे परिचय।

जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ सैण्ट स्टीफन्स कालेजमें ही थे आप गुरुकुल देखनेके लिये काँगडी गयेथे। वहां पर आपसे और महात्मा मुंशीरामजीसे मित्रता होगई। इसकेबाद आप फिरभी कई बार गुरुकुल देखनेके लिये गयेथे और महात्माजीके साथ ही ठहरेथे। गुरुकुलके अँग्रेज़ी विभागके निरीक्षकभी आप नियुक्त किये गयेथे और बड़ी प्रसन्नतापूर्वक आपने इस पदको स्वीकार किया था। महात्मा मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्द) की मित्रतासे आपको भारतीय जीवनके विषयमें बहुत कुछ अनुभव हुए। अब भी स्वामीजीके साथ आपका पत्रव्यवहार बराबर हुआ करता है। गुरुकुलके बारेमें आप अफ्रिका तथा अन्य स्थानोंमें कितनी ही बार बोल चुके हैं। अकसर आप गुरुकुलकी याद किया करते हैं। और वहांकी स्मृति आपके लिये आनन्ददायिनी है।

हकीम अजमलखां साहबसे जान-पहचान

मौलवी नज़ीर अहमद और मौलवी ज़काउल्लाकी मौतके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूजकी जान पहचान हकीम साहबसे होगई। आप चान्दनी चौकके निकट हकीम साहबके मकानपर अक्सर जाया करते थे। हकीम साहबकी दोस्तीको मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ बड़ी भारी चीज़ समझते हैं और जब कभी आप दिल्ली जाते हैं आप हकीम साहबके यहां ज़रूर हो आते

हैं। इसी मित्रताके कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने अलीगढ़की नेशनल मुसलिम यूनीवर्सिटीको, जिसके कि हकीम साहब ख़ास मददगार हैं, यथाशक्ति सहायता देनेका वचन देदिया था।

राष्ट्रीयताकी ओर विशेष झुकाव

ज्यों ज्यों मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के धर्म सम्बन्धी विचार अधिक उदार होते जाते थे आपकी प्रवृत्ति राष्ट्रीय आन्दोलनकी ओर प्रबलतर होती जातीथी और भारतभूमिकी सेवा करनेकी इच्छा आपके हृदयमें और भी उत्कट होती जाती थी। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "मेरे दिलमें यह भावना नित्य प्रति ज़ोरदार होती जाती थी कि मुझे मिशनका काम छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलनमें पूर्ण शक्तिके साथ सम्मिलित हो जाना चाहिये। मैं प्रतिदिन अपने दिलमें सोचा करता था कि यदि मैं स्वतंत्रताका प्रेमी हूं तो मुझे दूसरे लोगोंकी भी स्वतंत्रताके लिये प्रयत्न करना चाहिये। यद्यपि उस समय तक मेरा यही ख्याल था कि अतीत कालमें ब्रिटिश शासनसे भारतका बहुत उपकार हुआ है लेकिन फिर भी मैं यही कहा करता था कि 'स्वतंत्रता' 'सुशासन' से जो विदेशी जातिद्वारा किया गया हो, हज़ार दर्जे अच्छी है। उस वक्त मैंने उन भयंकर हानियोंका अनुभव नहीं किया था जो ब्रिटिश शासनके कारण भारतवासियोंको उठानी पड़ी हैं। सन् १९०७ की एक घटना मुझे अभीतक याद है। दिल्लीके एक डिप्टी कमिश्नर साहबने, जो अब इस संसारमें नहीं हैं, एक दिन मेरे हाथमें एक पुस्तक दी। इस पुस्तकका नाम था "India in 1857" "सन् १८५७ में भारतवर्ष"। यह पुस्तक बड़ी कटाक्ष पूर्ण थी और इसमें भारतवासियोंका बड़ा मज़ाक उड़ाया गया था। इस पुस्तकमें यह कल्पना करके कि भारतको स्वराज्य मिलगया है भारतवासियोंके बुरे शासनका चित्र खींचा गया था। इस किताबको पढ़ कर

मुझे अत्यन्त क्रोध आया। मैंने डिप्टी कमिश्नरसे कहा " If British rule after 200 years can pruduce no thing better than that then the sooner it is over it is better Every day that it remains, India. acconding to this book, must get more and more helplers ". अर्थात् " अगर हिन्दुस्तानमें २०० वर्ष तक ब्रिटिश गवर्मेण्टका राज्य होनेपर भी उसका परिणाम यह हों तो मेरी समझमें यहां ब्रिटिश राज्यका जितनी जल्दी अन्त हो जावे उतनीही अच्छी बात होगी। इस पुस्तकसे तो यही शिक्षा मिल सकती है कि जितने दिन अधिक यहां ब्रिटिश राज्य रहेगा हिन्दुस्तान उतनाही अधिक निस्सहाय होता जावेगा " मेरे इन क्रोधपूर्ण शब्दोंको सुनकर डिप्टी कमिश्नरको बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैं यह ठीक ठीक नहीं कह सकता कि मेरे हृदयमें भारतकी स्वतंत्रताके लिये उद्योग करनेकी इच्छा किन किन कारणोंसे उत्पन्न हुई। शायद इसका मुख्य कारण यह था कि मैंने यूरोपियन लोगोंको हिन्दुस्तानियोंके साथ बहुत बुरा बर्ताव करते हुए देखा था। इस बुरे बर्तावको देखकर कभी कभी तो मेरा खून खौलने लगता था और मैं अपने दिलमें कहने लगता था " **मेरी जातिके ये अँग्रेज़ मेरे शत्रु हैं और हिन्दुस्तानी मेरे मित्र** हैं " कितनीही बार तो मैं अपने क्रोधको नहीं संभाल सकता था और मैं जो कुछ मनमें आता कह डालता था। एकबार मै बिशप साहबके साथ एक टेबिलपर भोजन कर रहाथा। एक नवयुवक आई सी. ऐस अँग्रेज़ मेरे सम्मुख बैठा हुआ था। सब लोगोंके सामने उसने मज़ाकके साथ कहना शुरू किया कि हिन्दुस्तानकी सरकारने बड़ी चालाकीके साथ मिस्टर केयर हार्डीके संग खुफ़िया पुलिसका एक आदमी रख दिया था जो नौकर होकर उनके साथ सम्पूर्ण भारतमें घूमा था। वह सिविलियन बड़ी प्रसन्नतापूर्वक

यह बात कह रहा था। मुझे इसमें हँसी मज़ाककी कोई बात नहीं दीख पड़ी क्योंकि केयर हार्डीकी तरहके सीधे सादे भोले और उदार हृदय आदमीको इस तरह धोखा देना गवर्मेण्टके लिये अत्यन्त निन्दनीय था। मुझसे नहीं रहागया और उस सिविलियनके मुंहपर ही मैंने उससे कह दिया "आप बड़े असभ्य आदमी हैं।

आपको इसमें हँसी मज़ाककी क्या बात दीख पड़ती है ? पीछे विशप साहबने मुझसे क्रुद्ध होनेका कारण पूंछा। मैंने सब किस्सा सुना दिया। बिशप साहबने कहा "सिविलियनकी बात वास्तवमें असभ्यतापूर्ण थी अगर मैं सुन पाता तो मुझेभी उसे डाट बतानी पड़ती।" इस प्रकार अपने साथी अँग्रेज़ोंके सामने सत्य बात कह देनेसे मुझसे कितनीही बार झगड़ा होजाता था। प्रतिवर्ष भारतीय स्वतंत्रताके लिये उद्योग करनेकी मेरी इच्छा प्रबलतर होती जाती थी। अब मैं धीरे धीरे यह भी समझने लगा था कि ब्रिटिश राज्यकी वजहसे भारतकी भयंकर हानियां हुई हैं, भारतकी घोर दरिद्रताका भी मैं अनुभव करने लगा था और यह बातभी मेरी समझमें आने लगी थी कि भारतीय किसानोंकी हालत सुधरनेके बजाय दिन ब दिन खराब होती जाती है। लेकिन ब्रिटिश राज्यकी सबसे बड़ी हानि मुझे इस बातमें दीख पड़ती थी कि हरएक अँग्रेज़ अपनेको उच्च जातीय और हिन्दुस्तानियोंको नीच जातीय समझता है। श्वेताङ्ग आदमियोंका यह उच्चताका सिद्धान्त मेरी सम्मतिमें अत्यन्तही निन्दनीय था और इसीकी वजहसे मुझे बहुत क्रुद्ध होना पड़ता था। सन १९१० ई. में ही मैंने अपने दिलमें यह सिद्धान्त निश्चय करलिया था कि यदि भारतवर्ष सचमुच अपनी भारतीयता रखना चाहता है तो वह ब्रिटिश साम्राज्यका पुछल्ला बनकर नहीं रह सकता। भारत 'भारतीयता' से युक्त है 'ब्रिटिशपन' से नहीं इसलिये वह ब्रिटिश साम्राज्यमें सदा एक

विदेशीकी भांति ही रहेगा। जबतक भारतको ब्रिटिश साम्राज्यमें रहना पड़ेगा तब तक भारतमें ब्रिटिश आदर्श तथा ब्रिटिश सम्बन्धकी प्रधानता जरूर रहेगी। लेकिन हिन्दुस्तानके ३० करोड़ आदमियोंके लिये यह सम्भव नहीं है कि वे अपनेको विदेशी आदेशोंके अनुरूप बनालें इसलिये हिन्दुस्तान सदा सर्वदाके लिये ब्रिटिश साम्राज्यका भाग नहीं रह सकता। यद्यपि सिद्धान्त रूपसे यह बात मेरी समझमें सन १९१० में ही आगई थी लेकिन व्यावहारिक रूपसे इस परिणामपर पहुंचनेमें मुझे १० वर्ष लगे। सन १९२० में मैं पूर्ण निश्चयके साथ इस नतीजेपर पहुंचा कि भारतका ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग होना ही अच्छा है। इस परिणामपर पहुंचनेका मुख्य कारण मेरा वह अनुभव है जो मुझे फिजी और अफ्रिका इत्यादि उपनिवेशोंमें हिन्दुस्तानियोंकी दुर्दशा देखकर प्राप्त हुआ है।"

इस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने दृढ निश्चयपूर्वक ब्रिटिश साम्राज्यसे सम्बन्ध तोड़नेकी बात कह दी है। कांग्रेसके विधानमें केवल 'स्वराज्य' शब्द रक्खा गया है और उसके दोनोंही अर्थ लगाये गये हैं:— ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर "स्वराज्य" अथवा ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग होकर "स्वराज्य"। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की सम्मति है कि भारतके लिये यही उत्तमतर होगा कि वह ब्रिटिश साम्राज्यसे सम्बन्ध तोड़ दे। किन किन कारणोंसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने यह परिणाम निश्चित किया है यह हम किसी अगले अध्यायमें दिखलावेंगे।

मिशनके काममें अरुचि

उपर्युक्त बातोंसे प्रगट है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की प्रवृत्ति भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनकी ओर अधिकाधिक बढ़ रही थी और उनके राजनैतिक विचार भी बहुत कुछ उदार हो गये थे। पाठक यह भी जानतेही हैं कि सरकारसे सहायता पानेवाले

कालेज़में अध्यापक होनेके कारण मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की स्वतंत्रतामें कितनी बाधा पड़ती थी। मिशनरी सुसाइंटीमें होनेकी वजहसे भी आपको बड़ा भारी बन्धन था। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "मिशनसे मुझे वेतन मिलता था लेकिन जब जब मैं वेतन लेता था मुझे ऐसा मालूम होता था कि मानों मैं अपनी स्वतंत्रता बेचकर ये रुपये लेरहाहूं। ये रुपये मुझे अपनी आत्मापर एक भारी बोझेके समान प्रतीत होते थे। गवर्मेण्टसे मुझे एक पैसा भी नहीं मिलता था, मिशनरी सुसाइटीही मुझे वेतन देती थी। विलायतके मिशनवाले मुझसे यह आशा करते थे कि मैं इस प्रकारसे ईसाई धर्मका प्रचार करूं जिससे बहुतसे हिन्दुस्तानी ईसाई हो जावें। यह ईसाई बनानेका काम मुझे बहुतही नापसन्द था। जहांतक मुझे स्मरण है मैंने अपने व्याख्यानोंसे एकभी हिन्दुस्तानीको बप्तिस्मा देकर ईसाई नहीं बनाया। मेरा यह विश्वास पहले भी था और अब भी है कि क्रिश्चियन मतके जिन विचारोंको मैं सत्य समझता हूं उन्हें सर्वसाधारणको बतलाना मेरा कर्तव्य है, लेकिन किसीपर व्यक्तिगत दबाव डालकर उसे ईसाई बनानेके कामसे मैं घृणा करता हूं। किसीको ईसाई बननेके लिये बाध्य करना मेरी प्रवृत्तिके प्रतिकूल है। लोगोंके साथ क्रिश्चियन मतके खंडनमंडनकी बातें करना मुझे बुरा मालूम होने लगा था। मैं अपने दिलमें कहता था कि मेरा धर्म इतना पवित्र और सुन्दर है कि सर्वसाधारणके साथ वादविवाद करके उसकी छीछा लेदर करना पाप है। रातरातभर मैं यही सोचा करता था कि विलायतके मिशनवाले जो मुझे वेतन देते हैं वह इसी आशासे देते हैं कि मैं यहां हिन्दुस्तानियोंको ईसाई बनाऊं, और मैं इस तरह ईसाई बनानेमें विश्वासही नहीं करता इसलिये मिशनवालोंसे रुपये लेना अनुचित है। जब मैं मिस्टर रुद्रसे इस विषयमें सलाह लेता तो वे बराबर यही कहते थे कि इस बातकी कुछ चिन्ता न करो अपना काम करते रहो।"

इन बातोंसे प्रगट होता है कि उस समय भी जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ मिशनरी थे आप वप्तिस्मा देकर लोगोंको ईसाई बनानेके विरुद्ध थे। हमने बहुतसे ऐसे ईसाइयोंके साथ बातचीत की है जिनका मुख्य उद्देश्य लोगोंको किसी न किसी तरह ईसाई बनाना ही है। कुछ साल हुए संयुक्तप्रांतके पत्रोंमें आगरेके सैण्टजान्स कालेजके एक मिशनरीकी करतूत छपी थी। इन मिशनरी महोदयने एक हिन्दुस्तानी लड़केको ईसाई बना लिया था और उसे छिपाकर किसी जगहमें रक्खा था जब उस लड़केका पिता उसे तलाश करनेके लिये वहां पहुंचा तो उन्होंने उस जगहसे इस लड़केको गुप्त रीतिसे दूसरी जगह भेज दिया था! इस प्रकार मातापितासे छिपाकर लोभ देकर और फुसलाकर नवयुवकोंको ईसाई बनानेवाले मिशनरी हिन्दुस्तानमें कम नहीं हैं।

मिस्टर स्टोक्ससे मुलाक़ात

सन १९०७ और सन १९११ के बीचमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ प्रायः मलेरिया ज्वरसे पीड़ित होते रहे, इस कारण आपका स्वास्थ्य बहुत ख़राब होगया और आपका शरीरभी निर्बल होगया। कानकी बीमारी भी बनी हुई थी लेकिन वह अधिक नहीं बढ़ी थी। डाक्टरोंने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को सलाह दी कि आप विलायतको वापस चले जाइये लेकिन आपने यह सलाह नहीं मानी। कमलवायु और पेचिशभी आपको बहुत तंग किया था। जब कालेजमें छुट्टियां हुआ करती थीं आप शिमला पर्वतके निकट कोटगढ़ जाया करते थे। वहांपर आपकी मुलाक़ात मिस्टर स्टोक्ससे हुई। अमरीकन ईसाई मिस्टर स्टोक्स हैं। और भारतके बड़े शुभचिन्तक हैं। उन दिनों आप साधूकी पोशाकमें रहा करते थे, ज़मीनपर सोया करते थे और अपना खाना अपने आप बनाया करते थे। सबाथू नामक स्थानमें आप बहुत दिनों तक कोढ़ियोंके साथ भी रहेथे और इसी तरहका जीवन व्यतीत करते समय

एकबार आप टाइफाइड ज्वरसे भी पीड़ित हो चुके थे। स्वास्थ्य भी उस समय उनका अच्छा नहीं था। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं:—
"जिस बार मैं पहले ही पहल कोट गढ़ गयाथा मुझे उसी घरमें रहना पड़ाथा जिसमें मिस्टर स्टोक्स रहते थे। साथ रहनेसे हम लोगोंमें बड़ी मित्रता होगई। ईसाई धर्म प्रचारक साधू सुन्दरसिंहभी, जो अब इङ्गलैण्ड और अमेरीकामें कुछ कुछ प्रसिद्ध होगये हैं, उन दिनों हमारे साथही रहते थे। हम लोग आपसमें बहुतसे विचार किया करते थे। हरसाल मैं गर्मियोंमें वहां जाता था और मिस्टर स्टोक्ससे बातचीत होती थी। बहुत दिनों तक परामर्श करनेके बाद मिस्टर स्टोक्सने एक ईसाई 'भ्रातृसमाज' स्थापित करनेका विचार किया। इसका नाम रक्खा गया 'The brother hood of the imitation of jesus' अर्थात् 'ईसाका अनुकरण करनेवाला भ्रातृसमाज़'। इस भ्रातृसमाजका उद्देश्य यह था कि जिस प्रकारका सादा जीवन प्रभु क्राइस्टने व्यतीत किया था उसी प्रकारका जीवन व्यतीत किया जाय, गांववालोंके साथ रहकर उन्हींकी तरहका भोजन किया जाय और रुपया पैसा कुछभी अपनेपास न रक्खा जाय। मैंभी उन दिनों इसी आदर्शके अनुसार जीवन व्यतीत करनेके लिये अत्यन्त उत्सुक था और मैं मिस्टर स्टोक्सके साथ सम्मिलितभी होना चाहता था, लेकिन उस ससय मेरे मार्गमें एक बड़ी भारी बाधा थी वह यह कि मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब था और मैं प्रायः मलेरिया ज्वरसे पीड़ित रहता था। जब इस विषयमें मैंने मिस्टर रुद्रसे तथा अपने अन्य मित्रोंसे सलाह ली तो उन्होंने यही कहा "तुम्हारे लिये इस हालतमें इस भ्रातृसमाजमें सम्मिलित होकर काम करना असम्भव होगा क्योंकि तुम्हारी तन्दुरुस्ती बहुत खराब है। तुम साधू जीवनके कष्टोंको सहन नहीं कर सकोगे" मिस्टर स्टोक्सनेभी यही सलाह दी। इन कारणोंसे मैं इस भ्रातृसमाजमें पूर्णतया

सम्मिलित नहीं होसका लेकिन मैं उसका सहायक सभासद बनगया। मिस्टर वैस्टन, जो इस समय केम्ब्रिज मिशनके प्रधान हैं, कुछ दिनों तक इस भ्रातृसमाजके सभासद रह चुके हैं। आप साधूलोगोंकैसी पोशाक पहना करते थे और दिल्लीमेंही रहते हुए शिक्षा सम्बन्धी काम किया करते थे। इन्हीं दिनोंमें मैंने मांसाहारको छोड़ने और शाकाहारी बननेके लिये बहुत प्रयत्न किया था। खर्चभी मैंने अपना बहुत कम करदिया था लेकिन जबजब मुझे यूरोपियनोंके साथ रहना पड़ता था तो खर्च अधिक हो जाता था। उन्हीं दिनों मैंने अपने मिशनके अधिकारियोंसे कहा था कि मैं चमारोंके मुहल्लेमें रहना चाहता हूं। कुछ चमार ईसाई होगये थे, मैं इन्हीं चमारोंके साथ रहना चाहता था। मेरी इच्छा थी कि जिस तरह मैंने लन्दनके Slums गन्दे मुहल्लोंमें निर्धन मनुष्योंके साथ रह कर लगभग चार वर्ष व्यतीत की थीं उसी प्रकार मैं चमारोंके साथ रहकर उनकी कुछ सेवा या सहायता करूं। मैंने मिशनवालोंसे कहा कि मैं एक साइकिल मोल लेलूंगा और कालेजको चमारोंके मुहल्लेसे साइकिलपर चला आया करूंगा। यह कोई मुश्किल बातभी नहीं थी। मिस्टर स्टोक्सके जीवनसे यह जीवन बहुत कम कष्टदायक था क्योंकि उन्हें तो जगह जगह घूमना पड़ता था लेकिन मुझे तो एक निश्चित स्थानमें रहना था। दुर्भाग्यवश मेरा यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ। मिशनके अधिकारियोंने, बिशप साहबने और मिस्टर रुद्रने सभीने मेरी बातको अस्वीकार किया। इस समय जब मैं ख्याल करता हूं तो मुझे यही प्रतीत होता है कि इन लोगोंने मुझे रोककर बड़ी भूल की थी। मैं चमारोंके मुहल्लेमें रह सकता था, उससे मेरे स्वास्थ्यको विशेष हानि नहीं पहुंचती। जब सभीने मेरी बातका विरोध किया तो मैंने निर्बलतापूर्वक यही कहा "अच्छा भाई, न सही, चमारोंके मुहल्लेमें नहीं रहूंगा।"

ज्यों ज्यों मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के धार्मिक और राजनैतिक विचार उदार होते जाते थे उन्हें अपनी पराधीनता और भी खटकती थी। अन्तमें आप इसी परिणाम-पर पहुंचे कि जब तक इस कालेजमें रहकर मिशनका काम करना है तब तक मुझे शान्ति कदापि नहीं मिल सकती। उन दिनों मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ बहुत चिन्तित रहते थे, एकान्त जीवन आपको ज्याद: पसन्द था और मिस्टर रुद्रके सिवाय और किसीसे अधिक बातचीत नहीं करते थे। आप कहते हैं "मिस्टर रुद्रसे अधिक सच्चा मित्र मुझे जीवन भरमें दूसरा नहीं मिला, और न मिल सकता है। वे मेरी सब बातोंको बड़े धैर्यपूर्वक सुनते थे और मैं भी उनके सामने अपने दिलकी बातें साफ़ साफ़ कह देता था। शरीरसे अस्वस्थ होनेके कारण मेरा दिमाग़ भी आरोग्यदशामें नहीं था, लेकिन मिस्टर रुद्रने मेरी बातोंसे कभी अधैर्य्य प्रगट नहीं किया। धीरे धीरे मिस्टर रुद्रकी कृपासे मैं यह अच्छी तरह समझगया कि एक विदेशी जातिकी अधीनताका क्या अर्थ है? पराधीनताके भयंकर परि-णाम मिस्टर रुद्रनेही मुझे समझाये थे। मिस्टर रुद्र अर्थशास्त्र तथा इतिहासके बड़े अच्छे ज्ञाता हैं, उनकी विचार शैली बड़ी स्पष्ट है और वे कभी अत्युक्ति नहीं करते। सबसे अधिक आवश्यक बात उन्होंने मुझे यह बतलाई कि ज़मीनपर लगान बहुतही ज्याद: लगाता है और इसीकी वजहसे किसान दिनपर दिन निर्धन होते चले जाते हैं। मिस्टर रुद्रके कहनेसे मैंने भारतीय निर्धनताके प्रश्नको नये सिरेसे फिर अध्य-यन करना शुरू किया। मैं गांवोंको जाया करता था और वहां गांव-वालोंके साथ रहकर उनकी दशा देखा करता था। इन सब बातोंसे मेरे विचारोंमें महान परिवर्तन होगया। ब्रिटिश शासनके विषयमें मेरे जो ख्यालात पहले थे वे अब बिल्कुल बदलगये। मैं अब अच्छी तरह

अशान्तिमय जीवन

समझने लगा कि नौकरशाही अज्ञानतापूर्वक लेकिन लगातार बराबर किसानोंकी निर्धनताको बढ़ा रही है क्योंकि जितना अधिक लगान बढ़ता है उतनीही वृद्धि किसानोंकी निर्धनतामें होती है। मैं सोचने लगा कि इस प्रश्नका सम्बन्ध भारतकी ५० फ़ीसदी जनसंख्यासे है और नौकर-शाही इन ८० फ़ीसदी आदमियोंकी विशेष चिन्ता नहीं करती इस-लिये ब्रिटिश शासनको भारतके लिये उपकारी कहना बड़ी भारी भूल है। पहले मेरे विचार साम्राज्यवादियोंकैसे थे, मैं ब्रिटिश साम्राज्यका कट्टर पक्षपाती था लेकिन गांवके रहनेवाले किसानोंकी दुर्दशा देखकर मेरे ये विचार जड़ मूलसे नष्ट होगये। मैंने रोमन साम्राज्यके इतिहासका अच्छी तरह अध्ययन किया और फिर ब्रिटिश साम्राज्यसे उसकी तुलना की। रोमन साम्राज्यने राष्ट्रीय जीवनका सत्यानाश कर दिया था और ग्राम्य जीवनको भी नष्ट कर दिया था ' और अन्तमें इसका परि-णाम यह हुआ था कि रोमन साम्राज्यने गुलामोंके एक बड़े राज्यका रूप धारण कर लिया। इन बातोंपर विचार करते करते मुझे साम्राज्य वादियोंकी करतूतोंसे घृणा हो गई। उन दिनों मैं बराबर यही सोचा करता था कि स्वाधीनतापूर्ण राष्ट्रका स्वतंत्र जीवन विदेशी साम्राज्यके अधीन परतंत्र जीवनसे लाख दर्जे अच्छा है। इन बातोंसे प्रगट हो सकता है कि मेरे विचारोंमें कितना परिवर्तन होगया था। पहले मैं ब्रिटिश साम्राज्यके गुण गाया करता था। वह ब्रिटिश साम्राज्य जिसमें कि सूर्य्य कभी अस्त नहीं होता, वह ब्रिटिश साम्राज्य जहां सब मनुष्य स्वतंत्र हैं, वह ब्रिटिश साम्राज्य जहां सब सुखी हैं इत्यादि बातें मुझे अब कोरम कोर गप मालूम होने लगी थीं। अब मैं प्रायः मिस्टर रुद्रके पास रहा करता था और उन्हींके यहां भोजन किया करता था। उन्हींके घरमें मुझे भी एक छोटासा कमरा मिलगया था और उसीमें मैं अपना काम किया करता था। केम्ब्रिज मिशनके मकानकी अपेक्षा

मुझे यह स्थान उत्तम मालूम होता था । दो बातें मेरे मनमें हमेशा खटकती रहती थीं एक तो यह कि मैं मिशनसे वेतन पाता था और दूसरी यह कि मुझे धर्म सम्बन्धी कुछ ऐसी बातें गिरजाघरमें कहनी पड़ती थीं जिनपरसे मेरा विश्वास जाता रहा था । ”

टाल्सरायके ग्रन्थोंका प्रभाव

उन्हीं दिनों मिस्टर ऐण्ड्रूज़ने टाल्सरायके ग्रन्थोंको अध्ययन किया था । इन ग्रन्थोंका आपपर बड़ा प्रभाव पड़ा । आपके धार्मिक विचार टाल्सरायके सिद्धान्तोंकी ओर झुक रहे थे । आपका अब यह विश्वास हो चला था कि क्राइस्टके बाद चौथी या पांचवी शताब्दी में बहुतसी बातें उनके अनुयायियोंने ऊपरसे शामिल करदी थीं । ये बाह्य नियम और सम्प्रदाय सब पीछे जोड़ दिये गये हैं । महापुरुष क्राइस्टका व्यक्तित्व और जीवनही अब आपको सबसे अधिक आकर्षित करता था । क्राइस्टने अपना जीवन Sermon of the mount के अनुसारही व्यतीत किया था । मिस्टर ऐण्ड्रूज़ अब इस बातको ही आधिक महत्वपूर्ण समझने लगे थे कि क्राइस्ट कैसा जीवन व्यतीत करनेके लिये प्रयत्न किया जावे और बाइबिलके नियमों और विधानोंको आप उतना आवश्यक नहीं समझते थे । आप सोचा करते थे “ इन ऊपरी बातोंमें क्या रक्खा है ? यदि हम लोग सम्प्रदायों और विधानोंके व्यर्थ झगड़ोंमें न पड़कर क्राइस्टकी तरह निर्धनतापूर्ण पवित्र जीवन व्यतीत करें तो इससे हमारा और सर्वसाधारणका भी अधिक कल्याण हो सकता है ” यही कारण था कि आपको विशप साहबभी इस धमकीसे कि ‘ अगर तुम किसी दूसरे ईसाई सम्प्रदायके गिरजमें धर्मव्याख्या करोगे तो मैं तुमसे इस इलाकेमें व्याख्यान देनेके लैसंसको छीन लूंगा ’ अत्यन्त आश्चर्य हुआ था । आप कहते थे कि अगर आज

क्राइस्ट जीवित होते तो वे अवश्यमेव इस प्रकारके वाहियात वन्धनोंको न मानते। गरीवोंके वीचमें निर्धनतापूर्ण जीवन व्यतीत करनेका आदर्श आपके हृदयको अब बहुत आकर्षित करने लगा था और स्वास्थ्यकी चिन्ता न करते हुए आपने चमारोंकी वस्तीमें रहनेका जो विचार किया था, वह भी इसी वातका फल था कि आप क्राइस्टके आदर्शोंके अनुयायी बनना चाहते थे न कि वाइविलके, अथवा ईसाई धर्मके सम्प्रदायोंके। टाल्सरायके ग्रन्थोंका भी अभिप्राय यही है। इन ग्रन्थोंको पढ़नेसे आपको एक वड़ा भारी लाभ हुआ, वह यह कि आपको दक्षिण अफ्रिकामें महात्मा गान्धीजीके आन्दोलनको समझने तथा उससे सहानुभूति रखनेमें वहुत कुछ सुभीता हो गया। यह वात ध्यान देने योग्य है कि मिशनके वन्धनसे मुक्त होनेके थोड़े दिनों वाद ही मिस्टर ऐण्ड्रयूजको दक्षिण अफ्रिका जाना पड़ा था।

भारतीय जागृति”

उन्हीं दिनों मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम है "The Renaissance in India,, (भारतीय जागृति)। यह पुस्तक एक ईसाई धर्म प्रचारककी दृष्टिसे लिखी गई थी इस लिये इसमें कहीं कहीं ऐसे विचार भी पाये जाते हैं जो भ्रमात्मक कहे जासकते हैं। लेकिन सबसे वड़ा गुण इस पुस्तकमें यह है कि यह प्रारम्भसे लेकर अन्त तक सहानुभूतिसे परिपूर्ण है। आप इस पुस्तकका कोई पृष्ठ खोलिये आपको उसमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की उदारताका परिचय मिल जावेगा। यह पुस्तक सन् १९११ में लिखी गई थी और यह अनेक अंशोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के तत्कालीन विचारोंका प्रतिविम्ब है, लेकिन उस समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विचारोंमें इतनी शीघ्रताके साथ परिवर्तन हो रहा था कि पुस्तक छपते छपते आपके विचार पुस्तकमें प्रगट किये हुए विचारोंसे वहुत आगे वढ़ गये थे। इस पुस्तकके पढ़ते समय यह वात

ध्यानमें रखनी चाहिये कि यह पुस्तक एक विशेष ढङ्गपर लिखी गई थी और यह ढङ्ग मिशनरी सुसाइटीका निश्चित किया हुआ था, इसके शिवाय एक कमेटीने इस पुस्तकका संशोधन भी किया था और कहीं कहीं उसमें परिवर्तन भी कर दिये थे। पुस्तककी बड़ी भारी विक्री हुई थी और उसका अनुवाद भी यूरोपकी कई भाषाओंमें होगया था। पुस्तकका सर्वोत्तम परिणाम यह हुआ कि हजारों आदमी, जिन्होंने उस पुस्तकको पढ़ा था, भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनको, सहानुभूति पूर्ण दृष्टिसे देखने लगे। जो लोग विलायतसे धर्म प्रचारार्थ हिन्दुस्तानको आते थे उन्हें प्रायः यह पुस्तक पढ़नेके लिये दी जाती थी जिससे कि वे भारतवासियोंके साथ हमदर्दी करने लगें। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ अपनी इस पुस्तकके विषयमें कहते हैं "मैं यह बात स्वीकार करता हूं कि इस पुस्तकको लिखकर मुझे सन्तोष नहीं हुआ। मेरे दिलमें यह बात खटकती रहती थी कि निर्बलता पूर्वक मैंने मिशनकी कमेटीवालोंको यह आज्ञा क्यों देदी कि वे उसमें कुछ वाक्य अपनी ओरसे जोड़ सकते हैं और यथा स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। सबसे अधिक दुःख मुझे इस बातका था कि मैं इस पुस्तकमें अपने हार्दिक भावोंको पूरी तरहसे प्रगट नहीं कर सका। भारतीय धर्मोंके प्रति विशेषतः हिन्दू धर्मके प्रति मैं पूर्ण न्याय इस पुस्तकमें नहीं कर सका था। इस पुस्तकमें दो चार जगह पर मैंने ऐसे विचार प्रगट किये थे जो क्षुद्र थे, और दुर्भाग्यवश कमैटीवालोंने संशोधन करते समय इन विचारोंको और भी क्षुद्र तर बना दिया था। सच बात तो यह है कि पुस्तक छपने पर मेरे हृदयमें प्रसन्नताके भाव कम थे लज्जाके अधिक। खैर इन सब त्रुटियोंके होते हुए भी इस पुस्तकने कुछ काम किया। कितने ही आदमी मैंने ऐसे देखे हैं जिनके हृदयमें पहले पहल भारतके प्रति प्रेम उसी पुस्तकको पढ़कर उत्पन्न हुआ था। भारतीय स्त्रियोंके विषयमें जो अध्याय मैंने लिखा था उसे पढ़कर बहुतसे पाठकोंके हृदयमें उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न

होगई, लेकिन सबसे बड़ी बात यह हुई कि जिन्होंने उसे पढ़ा वे भारतके राष्ट्रिय आन्दोलनसे सहानुभूति करने लगे ।" इस पुस्तकके विषयमें अन्य बातें किसी अगले अध्यायमें लिखी जावेंगी ।

एक मनोरंजक घटना

इन दिनोंमें एक बड़ी मनोरंजक घटना हुई। सन् १९१०-११ में मिस्टर स्टोक्स ने श्रीयुत ऐण्ड्रयूज साहब से अपने विषय में एक सलाह ली। मिस्टर स्टोक्स की उमर उस समय २५।२६ वर्ष थी। वे कितने ही दिनों एक साधूलोगों की तरह रह चुके थे और बड़े संयम के साथ अब तक उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया था। अब उनके जीवन में परिवर्तन हो रहा था और वे विवाह करना चाहतेथे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज से उन्होंने पूँछा "मैं गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना चाहता हूं, आपकी क्या सम्मति है?" पहाड़ोंके रहनेवाले मिस्टर स्टोक्सका बड़ा सम्मान करते थे और उन्हें सन्यासियोंकेसे कपड़े पहने देखकर यह समझते थे कि उनमें कोई असाधारण और अस्वाभाविक शक्तियाँ हैं। सीधे सादे गाँववाले मिस्टर स्टोक्सको बड़ा भारी महात्मा मानते थे और उनसे कहा करतेथे "हम सबलोग तो अपवित्र हैं, हम गृहस्थ हैं आप पवित्र हैं क्योंकि आप सन्यासी हैं।" मिस्टर स्टोक्स इस बातको पसंद नहीं करते थे। उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्रयूजसे कहा "मैं इस बातको बहुत बुरा समझता हूँ कि कोई मुझे असाधारण शक्तिवाला महात्मा समझे। मैं एक मामूली आदमी हूँ लेकिन गाँववाले मुझे कुछ और ही समझने लगे हैं। यह बात मेरे लिये अच्छी नहीं है।" मिस्टर ऐण्ड्रयूजने मिस्टर स्टोक्सको विवाह करनेकी सम्मति देदी। मिस्टर स्टोक्सनेने एक हिन्दुस्तानी लड़कीके साथ विवाह कर लिया। आपके इस समय छःबच्चे हैं और आपने उन्हें अब तक अँग्रेजी नहीं पढ़ाई। मिस्टर स्टोक्सकी पत्नीके वंशका मनोरंजक इतिहास भी सुन लीजिये।

एक चीनी महाशय, जो उच्च कोटिके ईसाई थे और कृषिविद्याके विशेषज्ञ थे, पहाड़ोंकी ओर जाकर रहे थे। उन्होंने अपना विवाह एक राजपूतनीसे किया था। मिस्टर स्टोक्सकी पत्नी इन्हीं चीनी महाशयकी नतनी हैं। इस प्रकार मिस्टर स्टोक्सकी सन्तानमें तीन रक्तोंका सम्मेलन है, भारतीय, चीनी और अमेरीकन। बड़े होनेपर अपने लड़कोंको मिस्टर स्टोक्स शान्तिनिकेतनमें पढ़नेके लिये भेजना चाहते हैं। शिमला पर्वतके ग्रामोंकी ओर मिस्टर स्टोक्सका बड़ा प्रभाव है। आप भारतको मातृभूमिकी तरह प्रेम करते हैं। बेगार प्रथाको उठा देनेके लिये आपने वहाँ प्रशंसनीय उद्योग किया है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "मिस्टर पियर्सनको छोड़कर और मुझे कोई दूसरा आदमी नहीं मिला जिसने अपनेको मिस्टर स्टोक्सकी तरह बिल्कुल हिन्दुस्तानी बना लिया हो। जब मैंने मिस्टर स्टोक्सको विवाह करनेकी सम्मति दी तो मिशनरी लोगोंने मुझे बहुत कुछ भला बुरा कहा और मिस्टर स्टोक्सके यूरोपियन मित्रोंने भी उनके इस कार्यको बहुत नापसंद किया। मिशनरी लोग उन दिनों यह ख्याल करते थे कि अगर ईसाई धर्मप्रचारक साधुओं कैसा वेशधारण करके उसी आदर्शके अनुसार अपना काम करेंगे तो बहुतसे हिन्दुस्तानी ईसाई होजावेंगे। ये मिशनरी लोग मिस्टर स्टोक्सको एक नवीन प्रकारके क्रिश्चियन धर्मप्रचारक, समाजका संस्थापक समझते थे और समाचारपत्रोंमें उनके विषयमें बहुतसे लेख भी निकलचुके थे। उन्हें सब '**क्रिश्चियन साधु**' कहते थे। जब मिस्टर स्टोक्सने इस '**क्रिश्चियन साधुपन**' को छोड़कर ग्रहस्थ जीवन, प्रवेश किया तो मिशनरीयोंके हृदयको बड़ा धक्का लगा। हिन्दुस्तानियोंको इस प्रकारसे ईसाई बनाने की उन्हें जो आशा थी वह निष्फल हो गई।

मैंने मिस्टर स्टोक्सको विवाह करनेकी जो सम्मति दी थी वह अत्यन्त उचित थी। मैं समझता हूँ कि गृहस्थ जीवन पूर्णतया स्वाभा-

विक और स्वास्थ्य जनक है। मिस्टर स्टोक्सके धर्मसम्बन्धी जो विचार थे उनके अनुसार भी गृहस्थ जीवन उनके लिये उचित ही था। लेकिन मिस्टर स्टोक्सके विवाहसे एक हानि हुई, वह यह कि मिस्टर स्टोक्सने क्राइस्टके आदर्शको अनुकरण करनेवाला जो भ्रातृ-समाज स्थापित किया था उसका अन्त हो गया। अब उसमें अकेले वैस्टन ही रह गये और फिर उन्होंने भी इसे छोड़ दिया।"

एक लेख और उसका परिणाम

इसी सम्बन्धमें यहाँ एक घटनाका वर्णन करना अनुचित न होगा जो मिस्टर स्टोक्सके विवाहके २½ या ३ वर्ष पहलेकी है। सन् १९०८ में मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने एक लेख लिखा था जिसका विषय था 'यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियोंमें अन्तर्जातीय विवाह।' इस लेखका यूरोपियनोंने बड़ा भारी विरोध किया। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इस लेखमें लिखा था "यह बात वास्तवमें बड़ी हास्यास्पद है कि यूरोपियन मिशनरी हिन्दुस्तानी ईसाइयोंसे तो यह कहते हैं कि तुम अपनी जाति पाँतिके बन्धन तोड़ दो और अपनी जातिके बाहिर विवाह करो लेकिन खुद ये यूरोपियन मिशनरी अपनी '**श्वेत जाति**' की रक्षा करनेके लिये सर्वदा उद्यत रहते हैं।" इस बातसे यूरोपियन मिशनरी बहुत चिढ़ गये थे। विलायतके पत्रोंमें भी इस लेख पर बहुत वादविवाद चला था और कई बिशप लोगोंने भी इसके खिलाफ़ लेख लिखे थे; लेकिन एक अत्यन्त प्रसिद्ध बिशपने, जिनका नाम था बिशप गोरे (Bishop Gore of Oxford), मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के लेखका पक्ष लेते हुए लिखा था:—"अपने लेखमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने जो दलीलें पेशकी हैं वे अकाट्य हैं।" इस लेखकी वजहसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की जितनी निन्दा यूरोपियन मिशनरी लोगोंने की उतनी उनके राजनैतिक विचारोंके कारण भी नहीं हुई थी। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते

हैं "इस एक लेखमें प्रगट किये हुए विचार गोरे लोगोंको जितने नापसंद आये उतने मेरे अन्य किसी लेखके विचार कदापि नहीं आये थे। कुछ यूरोपियन लोगोंने तो असभ्यतापूर्वक यहाँ तक लिख दिया था कि मैं किसी हिंदुस्तानी लड़कीके प्रेममें फँस गया हूँ और उससे बिवाह करना चाहता हूँ! इससे प्रगट हो सकता है कि उस समय कालेगोरेके भेदभाव कितनी सहराई तक पहुँचे हुए थे।"

इस लेखके छपनेके बहुत दिनों बाद जब मिस्टर स्टोक्सने एक हिन्दुस्तानी लड़कीसे शादी करनेके विचार किया था और मिस्टर ऐन्ड्र्यूज़से सम्मति पूंछी थी तो उन्होंने मिस्टर स्टोक्सके विचारका समर्थन किया था।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने विवाह क्यों नहीं किया?

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की उम्र इस समय ५१ वर्ष है। आपने अभी तक बिवाह नहीं किया और न अब करना ही चाहते हैं। इस विषयमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विचार ध्यान देने योग्य हैं। इन विचारोंको महत्वपूर्ण समझते हुए हम उन्हींके शब्दोंको यहां अंग्रेजीमें उद्धृत करेंगे।

" I am and have been altogether a believer in a married life as the one natural and normal life for man and woman. I believe it is the very highest life that can possibly be led because it is so clearly in accordance with the divine ideal for man and so obviously the completion of man's nature. I am sure that I have mutilated my life on certain very important sides by remaining unmarried. I shall never be able to understand fully one whole aspect of life namely that of parenthood. I con-

sider that a mutilation. I therefore have no sympathy whatever with any ideas that any extra purity is reached by man or woman through remaining unmarried. I detest such ideas. They seem to be quite unnatural and to lead to fearful abuses through encouraging abnormal condition in people who ought to be perfectly normal. If I could have done so I would certainly have married, but there have always been in my own case extreme practical difficulties in the way. For many years I was living in India in an extremely bad state of health and again the question of an income immediately raises when marriage is contemplated and in India I had not a sufficient income. The brotherhood to which I belonged was a brotherhood of unmarried people and when I more and more felt that I could not follow my conscience in taking money from missionary societies I knew that my income would be most precarious. Then there come the purely practical question of how to devote all my time to National work. This did not give time for procuring a sufficiently large income to keep a family. Mr. Stokes had a private income of his own, I had not. Thus it was purely a simple practical and economic question which settled the matter for me and now I have reached the age of 50 the matter may be regarded as quite settled; but I still feel that I have lost one of that greatest of the gifts of human life and my only hope is that in certain other ways there have been compensations."

"विवाहित जीवनको मैं सदा ही स्त्रीपुरुषोंके लिये प्राकृतिक और स्वाभाविक जीवन समझता रहा हूं। मेरा विश्वास है कि गृहस्थ जीवन ही सर्वोत्कृष्ट जीवन है क्योंकि यह मनुष्यके लिये स्पष्टतया दैवी आदर्शके अनुकूल है और वस्तुतः मनुष्यकी प्रकृतिको अधूरीसे पूरी करनेवाला है। मैं इस बातको निश्चय पूर्वक मानता हूं कि विवाह न करके मैंने अपने जीवनके और प्रकृतिको पूर्णतया विकसित नहीं होने दिया। अविवाहित रहनेसे मेरे जीवनकी स्वाभाविक बाढ़ कई अंशोंमें रुक गई है और जीवन एक अंगही नहीं रहगया है। पुरुष जीवनका एक महत्वपूर्ण अङ्ग 'पितृत्व' है और मैं जीवन भर इस "पितृत्व" के पवित्र गौरवको नहीं समझ सकूंगा। मेरी सम्मतिमें यह जीवनके एक महत्वपूर्ण भागसे वंचित होना हैं। उन लोगोंके साथ मैं जरा भी सहमत नहीं हूं जो यह ख्याल करते हैं कि अविवाहित रहनेसे स्त्री पुरुष अधिक पवित्र रहते हैं। मेरी समझमें गृहस्थ जीवन भी उतना ही पवित्र है जितना अविवाहितोंका जीवन। मैं इस प्रकारके विचारोंसे, कि विवाहित जीवन कम पवित्र है और अविवाहित अधिक, घृणा करता हूं। इस तरहके विचार बिल्कुल ही अस्वाभाविक हैं, इनके परिणाम अत्यन्त भयंकर होते हैं और इससे लोगोंको पूर्णतया स्वाभाविक और सामान्य जीवन व्यतीत करनेके बजाय अस्वाभाविक और असामान्य जीवन व्यतीत करनेकी उत्तेजना होती है। यदि मैं विवाह करसकता तो अवश्यमेव करता लेकिन मेरे मार्गमें बराबर बड़ी भारी बाधायें रही हैं। अनेक वर्षोंतक तो भारतमें मेरा स्वास्थ्य अत्यन्त खराब रहा और फिर आर्थिक कठिनाइयाँभी बाधक हुई क्योंकि विवाह करनेपर खर्चका सवाल उठता और यहाँ भारतमें मेरी आमदनी इसके लिये काफी न थी। इसके सिवाय जिस "भ्रातृसमाज" का मैं मिशनरी था वह अविवाहित मनुष्योंका ही भ्रातृसमाज था। यह भी मैं जानता था कि मिशनके वेतनपर भरोसा करना खतर नाक है क्योंकि मेरी आत्मा नित्यप्रति यह अनुभव

कर रही थी कि मिशनसे रुपये लेनेके कारण मैं अपने अन्तःकरणके अनुकूल काम नहीं कर सकता। और फिर मेरे सामने यह सवाल भी था कि मैं किसप्रकार अपना सम्पूर्ण समय राष्ट्रीय कार्य्यमें व्यतीत करूँ। यह प्रश्नभी पूर्णतया व्यावहारिक था। अपने समयका आधिकांश राष्ट्रीय कामोंमें व्यतीत करनेपर इतना रुपया मैं नहीं कमा सकता था जिससे कुटुम्बका पालन कर लेता; मिस्टर स्टोक्सका तो प्राइवेट आमदनी थी, मेरे पास कुछ नहीं था। इसप्रकार मेरे विवाह न करनेके कारण व्यावहारिक और आर्थिक थे। इन्हींकी वजहसे मैंने यह निश्चय किया कि विवाह न करूँ। अब मैं ५० वर्षका होचुका इसलिये विवाहका प्रश्नही खतम समझिये, लेकिन अबभी मैं यह अनुभव करता हूँ कि जीवनकी एक सर्वोत्तम वस्तु 'गृहस्थ-जीवन' से मैं वंचित रहा। अब मुझे सन्तोष है तो यही है कि इसप्रकार मुझे जो हानि हुई है उसकी कभी अन्य दिशाओंमें लाभ होनेसे पूरी होगई है।"

प्रेम पूर्ण स्वभाव

जो लोग अविवाहित रहते हैं वे प्रायः उम्र बढनेपर बिल्कुल प्रेम रहित हो जाते हैं लेकिन मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के जीवनमें खूबी यह है कि उनका स्वभाव प्रेमपूर्ण है। यह प्रेमपूर्ण स्वभाव उन्हें अपनी मातासे मिला है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की माताका उनके ऊपर जो प्रभाव पड़ा है वह उनके सब कार्योंमें, जो उन्होंने दीन दुखियोंके कष्ट दूर करनेके लिये किये हैं, दीख पड़ता है। स्त्रियोंके दुःखोंको देखकर उसे सहन करना आपके लिये असम्भव है। फिजीको आपने दो बार जो यात्रा की थी, और अनेक कष्ट सहे थे, उसका मुख्य कारण यही था कि आप भारतीय स्त्रियोंको अपनी माताके समान ही समझते हैं; और उनके कष्ट देख नहीं सकते। फिजीके शर्त बँधे पुरुषोंके दुःखोंने आपके हृदयको उतना द्रवित नहीं किया जितना शर्त बँधी स्त्रियोंके दुःखोंने। फिजी प्रवासी

भारतीय स्त्रियाँ भी आपको पिता तुल्य समझती हैं। जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ फिजी गये थे सैकड़ों भारतीय स्त्रियाँ आपके पास आकर आपके चरण छूती थीं और अपने सब दुःख सुनाती थीं।

अभी कुछ दिनकी बात है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ हैदराबाद कराची इत्यादि स्थानोंको गये थे। वहां भी सैकड़ों स्त्रियोंने आपका सम्मान किया था। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "जब ये स्त्रियां मेरे निकट आकर बैठतीं और बड़े प्रेमके साथ बातचीत करतीं तो मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि ये सब मेरी माताकी अवतार हैं, और उस समय मुझे अपनी माकी याद आजाती थी।"

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के हृदयका प्रेम कृत्रिम नहीं है स्वाभाविक है और उसमें दिखावटका नाम निशान नहीं। यही कारण है कि उनका प्रेम हृदयके लिये आकर्षक है। प्रेमके ये भाव उनके चेहरे पर स्पष्ट दीख पड़ते हैं। अपने किसी मित्रसे मिलते समय—और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के मित्रोंकी संख्या सैकडों ही है—उनके ये भाव फौरनही उनकी आखोंमें झलकने लगते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के इस स्वभावका जो प्रभाव पड़ता है उसका भी एक दृष्टान्त सुन लीजिये।

फिजी सरकारने श्रीयुत हरपाल महाराज और मौलवी फज़ल अहमदखाँको फिजीसे देश निकाला देदिया था। विचारोंको बड़ा कष्ट सहना पड़ा। आस्ट्रेलियामें पीनाङ्गमें तथा जहाज़ पर भी इन्हें बड़ी तकलीफ़ दी गई। फिजीमें भी गोरे लोग इनकी जान लेनेकी फिक्रमें थे। छः महीने ठोकर खाकर ये लोग भारतमें आये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने इन लोगोंको फिजीमें देखा था। ये लोग जोरा संकोमें जहाँ कवि सम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुरका घर है, मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से मिलने गये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने इन्हें देखते ही अपने हृदयसे लगा लिया और दो घंटे तक बैठकर इनकी दुःख कहानी सुनी। उस समय मैं भी इन लोगोंके

साथ था । जब मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़से मिलनेके बाद हम लोग ट्राममें बैठे हुए ' भारतमित्र ' कार्य्यालयकी ओर आरहे थे इन दोनों आदमियोंने कहा " आज ऐण्ड्रूयूज़ साहबसे गले मिलकर हम अपने सात महीनेके तमाम दुःख भूल गये । " इन लोगोंके मुखपर उस समय कृतज्ञताके भाव थे और वास्तवमें मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के प्रेम पूर्ण स्वभावने अनेक हृदयकी कटुताको बिल्कुल दूर कर दिया था । ये लोग कहते थे " अरे भाई सभी अँग्रेज फिजीके गोरोंकी तरहके नहीं होते । " इससे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़का प्रेमपूर्ण स्वभाव जातीय विद्वेषके भावोंको दूर करनेमें कितनी अधिक सहायता देता है ।

यह बात सब जानते ही हैं कि छोटे छोटे बच्चे हृदयको अच्छी तरह पहचानते हैं । जिनके हृदयमें प्रेम कम होता है उनके पास बच्चे नहीं जाते । अभी कुछ दिन हुए हमारे यहाँ शान्ति निकेतनमें पोर्चुगीज ईस्ट आफ्रिकाके एक सज्जन सकुटुम्ब पधारे थे । दो दिनके भीतर ही उनका चार वर्षका बच्चा मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़से इतना अधिक प्रेम करने लगा कि वह बराबर उनके साथ घूमता था । इस बच्चेने अपना रेलगाड़ी का खिलौना अपने माँ बापसे आग्रह करके मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़को दिलवादिया । माँ बापने उससे कहाभी " तुम इसके लिये फिर रोओगे तो नहीं ? " चार वर्षके लड़केने कहा " नहीं, रोऊँगा । " मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ने प्रेम पूर्वक उस बच्चेका यह उपहार स्वीकार कर लिया । इसी प्रकार शान्ति निकेतनके छोटे २ बच्चे आपको पिताके समान प्रेम करते हैं ।

एक बार एफ़. ए क्लासके एक विद्यार्थी, जो मद्रास प्रान्तके थे, और कलकत्तेमें ब्राह्मसमाजकी शिक्षा पानेके लिये आये हुए थे, शान्ति निकेतन में मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के दर्शन करने आये इस विद्यार्थीने " बाम्बे क्रानीकल " तथा " हिन्दू " इत्यादि पत्रोंमें आपके लेख कई वर्षसे पढ़े थे ।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने इस विद्यार्थीको अपने सामने ही एक कुर्सी पर बिठलादिया। दस मिनट तक बात चीत होती रही। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ की प्रेमयुक्त और सहानुभूति पूर्ण बातोंने उस विद्यार्थीके हृदयपर इतना प्रभाव डाला कि उसने तुरन्त हीं उनके चरण पकडलिये और बड़ी देर तक उसकी आखोंसे आँसू निकलते रहे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उसे अपने हृदयसे लगा लिया और स्वयं भी आप गद्गद होगये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ इस विद्यार्थीसे पहले ही मिले थे लेकिन फिरभी उनकी आँखोंमें प्रेमके आँसू देखकर यही प्रतीत होताथा कि मानो वह उनका कोई पुराना मित्र हो। इस प्रकारकी बीसियों घटनाऐं दी जासकती हैं। इन छोटे छोटे दृष्टान्तोंको हमने इसी लिये देना उचित समझा है कि ये छोटी छोटी बातेंही मनुष्यके असली स्वभावको प्रगट करती हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ गृहस्थाश्रमको अत्यंन्त पवित्र समझते हैं और आपका विश्वास है कि गृहस्थ जीवनमें प्रवेश न करनेकी वजहसे आपको वड़ी हानि हुई है क्योंकि विवाहित जीवन ही स्वाभाविक जीवन है। लेकिन इसपर कृपासे आपको प्रिंसीपल रुद्र, कविसम्राट् रवींद्रनाथ और महात्मा गान्धी जैसे मित्र मिलगये हैं। ये तीनोंही मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से उम्रमें वड़े हैं ओर आपको अपने छोटे भाई के समान ही प्रेम करते हैं। मिस्टर एण्ड्रयूज़ कहते हैं:—

"The faculty of love which marriage gives and to most men has come to me through other channels and I trust and hope that those channels will not dry up as my old age becomes as it must become more and more solitory."

अर्थात् विवाह करनेसे अधिकांश आदमियोंको जो प्रेम प्रवृत्ति प्राप्त होती है वह प्रवृत्ति मुझे दूसरेही स्रोतोंसे प्राप्त हुई है और मुझे

विश्वास और आशा है कि वृद्धावस्थामें, जब कि मेरा जीवन अवश्यमेव सङ्गहीन एकाकी हो जावेगा, प्रेमके ये स्रोत सूख नहीं जावेंगे । ”

हम कह चुके हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रेमका स्रोत उनकी पूज्य माताका हृदय ही है । इसी लिये उनके प्रेममें मातृप्रेम कीसी शुद्धता और कोमलता है । यद्यपि उनकी माता अब इस संसारमें नहीं है लेकिन भारत भूमिको ही वे माता मानते हैं । और २० मार्चकी तारीखको जिस दिन वे भारतमें आये थे, अपना द्वितीय जन्म दिवस समझते हैं भारतीय स्त्रियों को भी वे इसीलिये वे अपनी माताका स्वरूप समझते हैं । सांसारिक और व्यावहारिक आदमियोंकी बुद्धि भले ही इस प्रकारके विचारोंको कोरमकोर भावुकता समझे लेकिन जो लोग स्वयं आदर्शवादी और भावुक हैं वे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के हृदयको तुरन्तही पहचान लेंगे ।

विलायतके पत्रोंमें लेख

इन्हीं दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने विलायतके लेख पत्रोंमें भारतके विषयमें बहुतसे लेख लिखे थे । एक लेखमाला उस समय आपने बड़ी महत्वपूर्ण लिखी थी, जिसका नाम था “ Race within the Church ” अर्थात् “ ईसाई मतमें जातिपाँतिका विचार ” लेख मालामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने यह दिखलाया था कि श्वेताङ्ग क्रिश्चियन लोग हिंदुस्तानी ईसाइयोंके साथ कैसा बुरा वर्ताव करते हैं । आपने लिखा था “ जब एक नवीन प्रकारकी वर्णव्यवस्था सम्पूर्ण संसारमें स्थापित की जा रही है जब गौर वर्ण यूरोपियन लोग अपनेको उच्च जातीय और कृष्णवर्ण जातियोंको नीच समझते हैं तो फिर ईसाई मिशनरी लोग किस प्रकार जातिपाँतिकी प्रथाका विरोध कर सकते हैं ? ” मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इस विषय पर विलायतके अनेक पत्रोंमें लेख लिखे थे और यूरोपियन लोग जिस तरह हिन्दुस्तानियोंका अपमान करते हैं,

बहुतसे दृष्टान्त आपने इन लेखोंमें दिये थे। इनमेंसे कुछ लेख भारतीय पत्रोंमें भी उद्धृत हुए थे लेकिन इनका प्रभाव मुख्यतया विलायतमें ही पड़ा था। इन लेखोंकी वजहसे वहां आपका नाम बहुत प्रसिद्ध हो गया, और इस विषय पर आपकी बात प्रमाण मानी जाने लगी। इन लेखोंकी ही वजहसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूजकी पुस्तक "The Renaissance in India" की बहुत बिक्री हुई। विलायतके अनेक प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुष आपके नामको जान गये और वहाँके आदमी यह ख्याल करने लगे कि आप भारतीयोंके पक्षपाती और यूरोपियनोंके बुरे वर्तावके विरोधी हैं। आपके इन लेखोंपर बहुत कुछ वाद विवाद चला और कितनेही लेखकोंने आपके विचारोंका खंडनभी किया, लेकिन मुख्य मुख्य नेताओंने इन लेखोंको पसंद किया था। भारतीय पत्रोंमें उनदिनों आपने जो लेख लिखेथे वे प्रायः राष्ट्रीय आन्दोलनके विषय पर ही थे। इनमें दो लेख १९०५-१९०६ के माडर्न रिव्यूमें लिखे गये थे और इनका प्राचारभी बहुत काफी हुआ था। एक लेखतो राष्ट्रीय साहित्य और कला कौशल पर था और दूसरा भारतीय इतिहासपर। इन लेखोंको पढ़कर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के पास बहुतसे पत्र आये थे, विशेषतः भारतीय नवयुवकोंको ये लेख बहुतही पसन्द आये थे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के इन लेखोंने राष्ट्रीयताकी ओर प्रवृत्त किया उनकी संख्या कम नहीं है। इस प्रकार मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उस समय इङ्गलेण्ड तथा भारत दोनों देशोंके पत्रोंमें भारत वासियोंका पक्ष समर्थन किया था।

यूरोपियन लोग मिस्टर ऐण्ड्र्यूजसे वार वार कहते थे "देखिये आप ठीक काम नहीं कर रहे। आप बहुत आगे बढ़े चले जारहे हैं।" क्रिश्चियन मिशनरी भी आपको वार वार कहा करते थे "आप बड़े खतर नाक रास्ते पर जारहे हैं।" लेकिन नवयुवक मिशनरियोंमें बहुतसे आपके अनुयायी भी थे। इन लोगोंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूजको अपना

ता मान लिया था पर जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज मिशनका काम छोड़कर शान्तिनिकेतनको चले आये तब इन नवयुवक मिशनरियोंने सोचलिया कि अब तो मिस्टर ऐण्ड्रयूज बहुत ज्याद: बढ़ गये अब इनका अनुकरण करना संभव नहीं।

सरकार और पुलिसकी दृष्टि

लार्ड मिण्टोके शासन कालमें कई बार भारत सरकारने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नोंके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी सम्मति पूछी थी। इनमें दो अवसर उल्लेख योग्य हैं। एक बार दक्षिण आफ्रिकाके प्रवासी भाईयोंके प्रश्नके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी सम्मति पूंछी गई थी। उस समय अपने यही लिखा था कि भारत सरकारको दक्षिण आफ्रिका प्रवासी भाइयोंका समर्थन पूरी तौरसे करना चाहिये और औपनिवेशक विभागकी सम्मति न माननी चाहिये। दूसरी बार देशी भाषाओंके प्रचारके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी रायली गई थी। मिस्टर ऐण्ड्रयूजने देशी भाषाओंके प्रचारका और मुख्यतया स्कूल और कालेजोंमें हिन्दीके प्रचारका समर्थन किया था। आपने अपने पत्रमें यह भी बतलाया था कि अँग्रेजीके अनुचित प्रचारसे लाभ होनेके बजाय हानि ही होगी। भारत सरकारने आपके उत्तरोंको पाकर आपको लिखा था कि इन उत्तरों पर अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक ध्यान दिया जावेगा। इस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी स्थिति बड़ी विचित्र थी एक ओर तो भारत सरकार महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर आपकी सम्मति लेती थी और दूसरी ओर पंजाब सरकार आपसे अत्यन्त क्रुद्ध थी और खुफिया पुलिसके आदमी हमेशा आपके पीछे पीछे फिरते थे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं:—

ये खुफिया पुलिसवाले मुझे किस तरह तंग करतेथे इसमें दो उदाहरण मैं यहाँ दूँगा। सन् १८०७ में मैंने खुद एक आदमीको, जो खुफिया

पुलिसका था, अपनी मेज़के खानेमें हाथ डालते हुए पकड़ लिया था। जब मैंने उसे धमकाया तो डरकर उसने स्वीकार करलिया कि "मैं सी, आई, डीका आदमी हूँ और मुझे पुलीस अफसरने आपके पीछे लगाया है।" मैंने एक बड़ा क्रोध पूर्णपत्र डिप्टी कमिश्नर मिस्टर हमफ्रे साहबकी पास भेजा हमफ्रे साहबने जवाब दिया "My dear Andrews, it was not my police at all. It was d...d C. I. D." "प्रिय ऐण्ड्रयूज़ वह आदमी मेरी पुलिसका नहीं था। डैम खुफिया पुलिसका था"। दूसरा उदाहरण भी सुनिये। एक नवयुवक अंग्रेज़ पुलिसमें नौकर था। शामके वक्त एक दिन वह मुझसे मिला। बातचीत हुई। मेरी बातें उसे अच्छी लगीं। मैंने उसे यही उपदेश दिया कि भारत वासियोंके साथ सहानुभूति रक्खो। रातके बारह बजेके बाद जब वह अपने घर जाने लगा उसने मुझसे कहा "कल रातको आप मेरे यहाँ ही भोजन कीजिये" मैं इस बात पर राज़ी हो गया और दूसरे दिन उसके यहाँ भोजन करने गया। उस दिनभी मैंने उसे बहुतसी शिक्षाऐं दीं। इसके बाद मुझे एक अत्यन्त विश्वसनीय सूत्रसे पता लगा कि उस नवयुवक अंग्रेज़को उसके आफिसके प्रधानने अपने पास बुलाकर कहा था "यह फायल लो और खुफिया पुलीसकी ओरसे काम करो।" उस फायलके ऊपर मेरा नाम लिखा हुआ था। यह देखते ही उस नवयुवक अंग्रेज़ने कहा "I absolutely refuse. Mr. Andrews was my guest last night and you are asking me to spy on my own guest." "मैं हर्गिज़ ऐसा नहीं कर सकता। कल रातको मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ मेरे अतिथि थे। आप चाहते हैं कि मैं अपने अतिथिके ही पीछे खुफिया पुलिसका काम करूँ!" मैं इस बातको भी अच्छी तरह जानता था कि कालेजमें भी खुफिया पुलिस मेरा पीछा नहीं छोड़ती थी, मेरे दो विद्यार्थी, जिनसे

मेरी अच्छी तरह जान पहचान थी, पीछे खुफिया पुलिसके जासूस निकले ! मेरे एक तीसरे विद्यार्थीने खुली अदालतमें सबके सामने इज़हार देते हुए कहा था "मैं पुलिसके प्रधान अफसरके पास नौकरीके लिये प्रार्थना करने गया था । अफसरने मुझसे कहा कि अगर तुम अपने कालेजमें जासूसीका काम करो तो तुम्हें नौकरी मिल जावेगी" यह बात ध्यान देने योग्य है कि पुलिस भी इस विद्यार्थीके उपर्युक्त इज़हारका खण्डन नहीं कर सकी थी । मैंने इन्हीं सब बातोंको समाचारपत्रोंमें लिखा था। इन्हें पढ़कर मद्रास मेलने लिखा था कि गवर्मेण्टको मेरी इन भयंकर बातोंका खण्डन करना चाहिये क्योंकि इसमें सरकार पर बड़े संगीन अपराध लगाये गये हैं । मैं बराबर प्रतीक्षा करता रहा कि देखें अब सरकार मेरी इन सच्ची बातोंका कैसे खण्डन करती है, लेकिन सरकारने चुप्पी साधली। सत्य घटनाओंका खण्डन कैसे होसकता था, इसी प्रकारके पचासों दृष्टान्त मैं अपने अनुभवसे दे सकता हूँ । यह खुफिया पुलिसका रोग इतना बढ़गया है कि वह शान्ति निकेतनके पवित्र स्थानमें भी मेरा पीछा नहीं छोड़ता । जब कभी मैं रेलमें यात्रा करता हूँ प्रायः एक न एक जासूस मेरे पीछे चलता है । मेरे जानेका तार भी पुलिस प्रायः दे देती है । कभी कभी खुफिया पुलिसके ये आदमी मेरे पास आकर ऐसी बातें कहते हैं जिससे मैं उत्तेजित होकर कोई ऊट पटांग बातें बक दूं। अत्यन्त विश्वसनीय हिन्दुस्तानियोंने मुझसे कहा है कि इसी प्रकारकी घटनाऐं उनके साथ भी हुआ करती हैं। इस भयंकर जासूसी प्रथाका एक उदाहरण और सुनिये । जब मैं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरके साथ जापानको गया था तो एक आदमी हमारे साथ हो लिया और हमसे मित्रताका बर्ताव करने लगा । जब हम लोग जापान पहुँचे तो वहांके हिन्दुस्तानियोंने कविवर रवीन्द्रनाथसे कहा "देखिये आपके साथ जो आदमी है, वह जासूसीका काम करता

है।" श्रीरवीन्द्रनाथने इस बात पर विश्वास नहीं किया। एक बार यह आदमी अपने किसी मित्रको साथ ले आया और श्री रवीन्द्रनाथके सामने हिन्दुस्तानियों पर किये हुए अत्याचारोंके किस्से सुनाने लगा जिससे कि वे उत्तेजित होकर कोई बात कह बैठें। ये किस्से इतने भयंकर थे कि उन्हें सुनकर वे चुप रह गये और सोचने लगे। उन्हें उस समय इस बातकी बिल्कुल आशङ्का नहीं थी कि यह आदमी जासूस है। पीछे पता लगाने पर खुद पुलिसके अफसरोंने मुझसे कहा था कि यह आदमी खुफिया पुलिसका है। किसी भी गवर्मेण्टके लिये इससे अधिक शैतान पनकी बात और क्या होसकती है कि वह भले आदमियों की प्राइवेट और आपसकी बातोंको इस तरह विश्वासघातके साथ जाननेकी कोशिश करे?"

दूसरी बार विलायत यात्रा

सन १८१२ में मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ का स्वास्थ्या बहुत खराब होगया इस लिये डाक्टरोंने आपको कुछ दिनोंके लिये विलायत जानेको कहा। हर महीने में आप चार पाँच रोज़ बीमार रहते थे इस कारण आपकी इच्छा भी घर जानेकी थी। प्रिंसीपल रुद्र और दिल्ली के लाला सुल्तान सिंह जी भी इस बार आपके साथ विलायत गये थे। इसी यात्रामें आपने पहले पहल कविशिरोमणि श्रीरवीन्द्रनाथ के दर्शन किये थे। श्रीरवीन्द्रनाथ से आपका परिचय किस प्रकार हुआ इसका वृत्तान्त मि. ऐण्ड्र्यूज़ के ही शब्दोंमें सुनलीजिये। आप कहते हैं "रवीन्द्र लन्दनमें हैं" यह समाचार मुझे केम्ब्रिजके हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों की एक सभामें मालूम हुआ। पहले तो मैं इसपर विश्वास नहीं कर सका क्योंकि मैं सुन चुका था कि वे अपनी विलायत यात्राको स्थगित कर चुके थे। अब मुझे चिन्ता यह हुई कि मैं श्रीरवीन्द्रनाथ के दर्शन कहां और किस

प्रकार करूँ। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, हाँ उनकी कविताओं के अँग्रेज़ी में अनुवाद मैं पत्रों में पढ़ चुका था और उनकी प्रशंसा सैकड़ों आदमियों से सुन चुका था। शीघ्रही मैं मिस्टर पियर्सन के पास यह जानने के लिये, कि उन्होंने रवीन्द्रनाथ के बारे में कुछ सुना है या नहीं, गया। ज्योंही मैं उनके कमरेमें घुसा त्योंही उन्होंने कहा "रवीन्द्र बाबू लन्दनमें हैं और वे वेल आव हैल्थ हैम्पस्टेडमें ठहरे हुए हैं" मिस्टर पियर्सन उनसे मिलने के लिये जानेवाले थे। मैंने कहा "मैं भी उनसे मिलना चाहता हूँ आप इसका प्रबन्ध कर दीजिये।" दूसरे दिन मुझे पियर्सन की चिट्ठी मिली कि शनिवार को दोपहरके बाद आप रवीन्द्र बाबू से मिल सकते हैं।

शनिवार के दिन मैं वेल आव हैल्थ की ओर गया लेकिन वहाँ जानेपर मालूम हुआ कि वे कहीं बाहिर गये हैं। कितनी ही देर तक मैं वहाँ ठहरा रहा लेकिन वे लौटकर नहीं आये।

रविवारको आर्टिस्ट राथेनस्टीनके यहां सुप्रसिद्ध आयरिश कवि यीट्स रवीन्द्रनाथकी कुछ कविताओंके अनुवाद सुनानेवाले थे। दूसरे दिन भोजन करनेके बाद मैं राथेनस्टीनके घर पर गया। ज्यों ही मैं पहुँचा मैंने रवीन्द्रनाथको अपनी ओर ही आते देखा। मैं नम्रतापूर्वक उन्हें नमस्कार करने ही वाला था कि उन्होंने शीघ्र ही मेरे हाथ अपने हाथोंमें लेलिये और कहा "ओह मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़, मैं बहुत दिनोंसे आपसे मिलना चाहता था। मैं आपको बतला नहीं सकता कि मैं आपसे मिलनेके लिये कितना इच्छुक था। कल मुझे जब मालूम हुआ कि आप आये थे, और बड़ी देर तक बैठकर चले गये तो मुझे बड़ा खेद हुआ। उस समय मेरी समझमें नहीं आया कि मैं क्या करूँ। ऐसा मनमें आया कि मैं आपके घर तक भागता हुआ जाऊँ और आपसे क्षमा प्रार्थना करूँ। अपने एक अंग्रेज़ मित्रको मैं कुछ बंगाली गान

ना रहा था। सुनाते सुनाते यह मालूम ही नहीं हुआ कि समय हां निकल गया"

मैंने कहा "आप उसकी कुछ चिन्ता न कीजिये, मुझे कुछ भी सुविधा नहीं हुई" फिर हम लोग बंगालके विषयमें बातचीत करने गे। बड़ी देर तक बातचीत होती रही। जब सन्ध्या हुई तो हुतसे साहित्यसेवी और कवि उनसे मिलनेके लिये आये। विवर यीट्स तो वहां मौजूद ही थे। यीट्सने जब गीताञ्जलिके । सुनाने शुरु किये उस समय श्रोताओंको अपूर्व आनन्द आया। सी पद्यमें बंगालके घनमण्डलका वर्णन था तो किसीमें समुद्रकी तर-ंका, किसीमें हिममण्डित पर्वतकी महिमा गाई गई थी तो कहीं मनो- पुष्पोंका गुणगान किया गया था। कहीं सरोवरके कमलोंकी शोभा लाई गई थी तो कहीं ग्रामोंके छोटे छोटे बच्चोंका ज़िक्र किया गया था। ों ज्यों कविता पढ़ी जारही थी हृदयमें भावोंकी तरङ्ग उठ रही थीं। ी आंखोंमें उस समय हर्षके आंसू थे। यह सोचकर मुझे अत्यन्त न्नता थी कि आखिर अब मेरा देश भारतके कविसम्राटका सम्मान रहा है। उस समय श्रोता ने मुझसे कहा था "मैं इस बातकी ल्पना भी नहीं कर सकता कि मूल बंगाली कविता भी इस अनुवादसे द्धतर और उत्तमतर हो सकती है" जिस रातको मैंने मिस्टर यीट्-के मुखसे गीताञ्जलिकी ये कविताऐं सुनी थीं वह मुझे कभी नहीं भूल कती। हम लोग एक ऊंचे कमरेमें बैठे हुए थे। नीचे लन्दनमें हजारों पक दृष्टि आरहे थे। सड़कों पर आदमी इधरसे उधर तेज़ीके साथ ले जारहे थे। लन्दन बिल्कुल अशान्तिमय दीख पड़ता था लेकिन लोग उस कमेरमें शान्तिका सन्देश सुन रहे थे। करीब आधीरात क हम लोग वहां रहे। जब मैं वहांसे अपने मित्र मिस्टर नैविनसनके थ वापिस आ रहा था, मैं इतना विचारमग्न था कि मैंने उनसे बहुत

कम बात चीत की । जब मिस्टर रौबिनसन अपने घर पहुँच गये, तब मैं अकेले में इधर से उधर टहलता रहा और रवींद्रनाथ की कविता के सौन्दर्य्य पर विचार करता रहा । इसके कुछ दिनों बाद मैं फिर लन्दन को गया । मुझे आशङ्का थी कि लन्दनके प्रशान्तिमय जीवन के कारण रवीन्द्रनाथ के स्वास्थ्य को हानि पहुँचेगी । लन्दन पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि मेरा अनुमान गलत नहीं था । श्रीयुत रवीन्द्रनाथ की तबियत ठीक नहीं थी । बड़े करुणाजनक स्वरमें उन्होंने मुझसे कहा "मैं यहाँ से दूर जाना चाहता हूँ । मुझे शान्ति चाहिये, मुझे शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेका इतना अधिक अभ्यास है कि मेरे लिये यहाँ अधिक दिन रहना कठिन है । यहीं के अदमियों की मुझपर बड़ी कृपा है लेकिन इस प्रसिद्धिके कारण मेरे हार्दिक भाव शुष्क हुए जाते हैं । मैं यहांसे दूर जाकर शान्तिके साथ रहना चाहता हूं" मैंनें कविवरसे कहा "मेरे एक मित्र यहांसे दूर एक ग्राममें रहते हैं । रेलवे स्टेशनसे भी वह जगह दूर है । आप मेरे साथ चलकर वहाँ रहिये । मेरे मित्रके कई छोटे छोटे बच्चे हैं । वे आपका खूब स्वागत करेंगे ।" यहभी सुनकर रवीन्द्रनाथ बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने मुझसे कहा "अगस्तके महीनेभर मैं वहीं रहूंगा" कुछ दिनों बाद हम लोग वहां गये । श्रीरवींद्रनाथकी पुत्रवधू उनके साथ थीं प्रिंसीपल रुद्र और उनकी पुत्री भी उसी ग्राममें थे । उन्होंने कविवरका ठीक बङ्गाली रीतिसे स्वागत किया । जिन सज्जनके यहां रवीन्द्रनाथजी अतिथि थे वे भी अत्यन्त प्रसन्न थे । उनके बच्चे तो श्रीरवीन्द्रनाथके बड़े भारी दोस्त हो गये थे । उनके एक छोटेसे बच्चेको वे बहुत प्यार करते थे । वह बच्चा बड़ी आश्चर्य मय दृष्टिसे उनके चेहरेकी ओर देखताथा और उनकी डाढ़ी खींचकर हंसताथा । दोनों एक दूसरेके साथ बड़ी देरतक खेलते थे । यह दृश्य देखने लायक था । ग्रामके निवासियोंसे भी उनका काफी परि-

चय होगया था। पहले तो गांववालोंने उन्हें बंगाली पोशाक पहनेहुए देखकर कुछ आश्चर्य कियाथा लेकिन फिर वे बड़ी स्वतंत्रता पूर्वक रवीन्द्रनाथसे बातचीत करतेथे। रवीन्द्र भी उन लोगोंके घर पर गिरजाघरमें और स्कूलमें जातेथे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वे उसी गांवके निवासी हों।

यह समय मेरे लिये अमूल्य था। इन्ही दिनों मेरे हृदयमें भारतके प्रति बहुत कुछ श्रद्धा बढ़गई। भारत भूमिके हृदयको मैंने इन्ही दिनोंमें समझा। रातके वक्त जब लड़के सो जाते तो भोजनकर चुकनेके बाद रवीन्द्र अपने बंगला गीत गाकर हमें सुनाया करतेथे। इसके पहले वे हम लोगोंको उन गीतोंका अभिप्राय समझा देते थे। हम लोग अकसर भारतके ही विषयमें बात चीत करतेथे। श्रीयुत रवीन्द्रनाथ प्रायःअपने आश्रम शान्ति निकेतन अथवा उसके विद्यार्थियोंका ज़िक्र किया करतेथे। कुछ दिनों बाद जब उस ग्राममें सर्दी बहुत पड़ने लगी तो डाक्टर की सलाहसे रवीन्द्रनाथको वह ग्राम छोड़देना पड़ा। वे इंग्लैण्डके दक्षिणा के ओर एक ग्राममें जाकर रहे। गीताञ्जलि उन्हीं दिनों छपरहीथी। उसके प्रूफ आरहेथे। दो बार मैंने कविवर रवीन्द्रनाथके साथ यह प्रूफ पढ़ेथे।

कुछ दिनों बाद भी रवीन्द्रनाथने अमेरीका जानेका निश्चय किया। मुझे भी भारतको वापिस आनाथा। चित्रकार राथेनस्टीनके यहां हम लोग चाय पीनेके लिये गये। चित्रकारके बच्चे दौड़ते हुए आये और खूब खुशी मनाने लगे। जब हम लोग चाय पी चुके तो कविवर रवीन्द्रने मुझे अपनी मित्रताका विश्वास दिलाया। उस दिन मैं अत्यन्त थका हुआ था लेकिन यह जान कर कि रवींद्रनाथ जैसे महापुरुषने मेरे जैसे मामूली आदमीको अपनी मित्रताके योग्य समझा, मेरी सारी थकावट दूर होगई।

इस बार मिशनरी सुसाइटी वालोंसे मेरा बड़ा झगड़ा हुआ। मि. रुद्र और मैं उनके कई नियमों पर विश्वास नहीं करते थे। इसीका

मिशनवालोंने विरोध किया था। हम दोनोंने अन्तमें उनसे यही कह दिया अगर आपकी यही इच्छा है तो हमारा दोनोंका त्याग पत्र स्वीकार कीजिये। त्याग पत्र की इस धमकी से मिशनवालों की अक्ल ठिकाने आगई। इस झगड़ेमें मेरे समय का बहुत सा भाग नष्ट होगया। मैं विलायत स्वास्थ्य के लिये विश्राम करने गया था लेकिन विश्राम करना तो दूर रहा इस आफ़त में जाके फँस गया। लेकिन मेरे हृदय को बड़ा भारी सन्तोष इस बातसे था कि मुझे कविवर रवीन्द्रनाथ से परिचय होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे जीवन में इससे अधिक महत्वपूर्ण घटना दूसरी कोई नहीं हुई। विलायतसे लौटने के पहले मैंने श्रीरवीन्द्रनाथकी सेवा में निवेदन किया "क्या यह सम्भव है कि मुझे शान्ति निकेतन में रहने के लिये स्थान मिल जावे?" उन्होंने मुझे उत्तर दिया "इस विषयमें आप जो कुछ निश्चय करें, बहुत सोच समझकर करें, और जब तक आपका निश्चय दृढ न होजावे तब तक ऐसा न करें।" यह बात तो मैं पहले ही तय कर चुका था कि अगर मैं शान्ति निकेतन जाऊँगा तो वहाँ अवैतनिक रूप से ही काम करूँगा; आश्रमसे अपने लिये कुछ न लूँगा। उस समय मुझे दिल्लीमें कुछ दिनों तक के लिये मि. रुद्र के साथ रहना था क्योंकि उनके कालेज सम्बन्धी कार्यमें कुछ कठिनाइयाँ थी इस लिये उनके साथ रहकर उनकी सहायता करना मेरा कर्तव्य था। विलायत से लौटने पर मुझे दिल्लीमें रहना पड़ा लेकिन गर्मियोंकी छुटियों में लगभग डेढ़ महीनेके लिये शान्तिनिकेतन में आकर रहा था। मिस्टर पियर्सन भी उसी वर्ष शान्तिनिकेतन में आकर रहे थे।

लार्ड हार्डिंजसे परिचय

दिसम्बर सन् १९१२ में दिल्लीमें बड़ी भारी दुर्घटना हुई। लार्ड हार्डिञ्ज पर बम फैंकागया। लाट साहबसे मेरा बहुत कम परिचय था। जिस समय लार्ड हार्डिञ्ज बमकी चोटके कारण अत्यन्त बीमार थे और उनके प्राण संकट में थे मैंने लेडी हार्डिञ्जके नाम एक पत्र लिखा। इस पत्रको पढ़कर लेडी हार्डिञ्जको

इतना सन्तोष हुआ कि उन्होंने मुझसे मिलनेकी इच्छा प्रगट की। आज्ञानुसार मैं उनकी सेवामें उपस्थित हुआ। लार्ड हार्डिञ्जकी जान उससमय भी खतरेमें थी। सी. आई. डी. विभागके प्रधान सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड तथा अन्य कितनेही आदमियोंका विचार था कि जिस घरसे लार्ड हार्डिञ्जपर बम फैंका गया था वह घर तोपसे उड़ा-दिया जावे और इस प्रकार दिल्ली निवासियोंके दिलमें दहशत पैदा कर दी जावे। मैं यह जानता था कि लार्ड हार्डिज इस तरहकी कार्रवाईको बहुत ना पसंद करेंगे। इस तरहके भयंकर कार्यों से वे घृणा करते थे। उनकी बीमारीकी ही हालतमें मैंने उन्हें अफसरोंके विचार सुना दिये, उन्होंने फौरने ही कहा "इस तरहकी कोई भयंकर कारवाई हर्गिज न होनी चाहिये।" लार्ड हार्डिजकी प्रवृत्ति बदला लेनेकी नहीं थी और अत्याचार करके प्रजाके हृदयमें धकधका बैठादेनेको वे घोर पाप समझते थे। बम फूटनेके बाद उन्होंने जो शब्द कहेथे वे उनके उदार हृदयका परिचय देते हैं। उन्होंने कहाथा "भारतवासियों की प्रेमपूर्ण प्रवृत्तिमें मेरा विश्वास पहलेकी तरह ही दृढ़ है।" जिस समय लार्ड हार्डिञ्ज अत्यन्त कमजोर थे और बड़ी कठिनता से बोल सकते थे उस समय भी उन्होंने पूर्ण सच्चाई और प्रेमके साथ मुझसे बार बार यही कहा था "भारतीय जनताके प्रेम में मेरा विश्वास बिल्कुल कम नहीं हुआ।" लार्ड हार्डिञ्जके कोमल स्वभावके विषय में एक अफसर ने, जिनका नाम मिस्टर मौण्ट मोरेंने था, मुझे एक मनोहर घटना सुनाई थी। जब लार्ड हार्डिञ्ज बम से घायल होगये थे तो उनको मोटरमें बिठलाकर फौरनही घटना स्थलसे लेजानेका काम मिस्टर मोरेंने के ही सुपुर्द हुआ था। मिस्टर मोरेंने मुझसे कहा था "बम लगनेसे लाट साहब बेहोश होगये थे। जब उन्हें होश आया तो सबसे पहले उन्होंने यही कहा "Set things go on just as before" उसी तरह

काम चलने दो। मैंने उनसे कहा कि सन्ध्या समय के उत्सव और आतिश बाजी तो बन्द कर देना चाहिये। इस पर लाट साहबने बड़े धीरे से कहा " No, the children will be disappointed " "नहीं ऐसा मत करो इससे बच्चोंको बड़ी निराशा होगी।" उससमय अत्यन्त निर्बलताकी दशामें वे इतनेही शब्द कह सके थे।" इस घटनासे लार्ड हार्डिञ्जके हृदयकी कोमलता और उदारता प्रगट होती है। उनकी बीमारीमें मैं कभी कभी उनके पास जाता था और बातचीत करता था। उनकी बातचीतमें कटुताका नामो निशान नहीं था वही सरलता थी और वही उदारता थी। भारतीय जनताके प्रेममें उनका अत्यन्त विश्वास था और उनका यह विश्वास एक मिनट भरके लिए भी कम नहीं हुआ, इस घटनासे उनके स्वभाव में ज़रा भी अनुदारता नहीं आई थी बल्कि उनके प्रेम में और भी कोमलता आगई थी। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस दुर्घटनाकी वजहसे लेडी हार्डिञ्ज के स्वभावमें कुछ भी कटुता नहीं आई थी। वे लाट साहबसे भी अधिक उदार स्वभाववाली थीं। उससमय लार्ड हार्डिञ्ज और लेडी हार्डिञ्ज से मेरा गाढ़ परिचय होनेका कारण यही था कि मैंने उन्हें अपने हृदयसे यह विश्वास दिला दिया था कि भारतीय जनता भी लाटसाहब से पूर्ण प्रेम करती है और उनकी उदारता में दृढ़ विश्वास रखती है।

सन् १९१३ में. मैं महीने सवा महीने के लिये शिमला में रहाथा। एक दिन लेडी हार्डिञ्जने अपने यहाँ बुलाकर मुझसे कहा " मेरे पतिके आरोग्य होनेकी खुशी में भारतीय स्त्रियोंने कृपाकर मेरे पास जो भेंट भेजी है उसका सर्वोत्तम उपयोग मैं किस प्रकार करूँ!" मैंने नम्रता पूर्वक लेडी हार्डिञ्जसे कहा "मेरी सम्मतिमें इसका सर्वोत्तम उपयोग यही होगा कि २० जूनको, जो वायस रायका जन्म दिन है, अस्प-

तालोंके बच्चोंको दीन अनाथोंको, लँगड़े लूले और अन्धोंको प्रेमोत्सव मनानेका अवसर दिया जावे । आप यही कीजिये । ” लेडी हार्डिञ्जको मेरा प्रस्ताव बहुत पसंद आया और उन्होंने भारतीय स्त्रियों द्वारा दी हुई भेंट इसी कार्य्यको अर्पित करदी । इस विचारको भारतीय जनताने बहुतही पसंद किया । जब २० जून आई भारतके गाँव गाँवमें उत्सव किये गये बच्चोंको मिठाई बाँटी गई और कितनीही जगह आतिश बाजी भी छोड़ी गई । एक उच्च पदाधिकारीनें हिसाब लगाकर बतलाया था कि २० जूनके दिन लगभग करोड़ बच्चोंने इन उत्सवोंमें भाग लिया था । बात असलमें यह थी कि भारतीय जनता सच्चे हृदयसे लार्ड हार्ड़िञ्जको प्रेम करती थी और जनताने बिना किसी दबावके स्वयं अपने आपही ये उत्सव मनाये थे और बच्चोंको मिठाई बाँटीथी । अगर अफसरोंका दबाव होता तो ये उत्सव कदापि सफल न होते । आश्चर्य्यकी बात तो यह थी कि कितनेही उच्च पदस्थ अँग्रेज़ अफसरोंने लेडी हार्डिञ्जके इस विचारको बहुत नापसन्द कियाथा । उन्होंने कहाथा कि यह प्रस्ताव bad taste यानी कुरूचि से पूर्ण है लेकिन हिन्दुस्तानी जनताने इसे बिल्कुल सुरुचिपूर्ण समझा । बहुतसे अँग्रेज़ अफसरोंको इन उत्सवोंकी सफलतासे अत्यन्त आश्चार्य्य हुआ था । स्वयं सर जेम्स मैस्टन साहबने मुझसे कहाथा “ अन्त तक मुझे यह बिल्कुल ख्याल नहीं था कि भारतीय जनता इतने उत्साहके साथ इस कार्य्यमें भाग लेगी । यह काम जनताने स्वयंही किया । हमारे संयुक्त प्रान्तमें शायद ही कोई ऐसा गाँव हो जहाँ खुशीमें बच्चोंको मिठाई न बाँटी गई हो । ”

लाट साहबकी इस मित्रतासे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को आगे चलकर अपने प्रवासी भारतीयोंके कार्य्यमें बड़ी सहायता मिलीथी लाट साहब आप पर कृपा रखते थे और आप चाहे जब उनके पास जा सकते थे । शर्तबन्दीकी प्रथा बन्द करानेमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को सबसे अधिक मदद

लार्ड हार्डिञ्जनेही दी थी । मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के चरित्रमें खूबीकी बात यह है कि उनमें अभिमान या घृणाका लेशमात्र नहीं है। वे लार्ड हार्डिञ्ज की मित्रतासे अपनेको उतनाही सम्मानित समझते हैं जितना फिजीके शर्तबँधे कुलियोंकी मित्रतासे।

शान्तिनिकेतनमें डेढ़ मास

हम पहले लिख चुके हैं कि विलायतसे लौटनेके बाद गर्मियोंकी छुट्टियोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ शान्ति निकेतनमें आकर रहे थे। शान्ति निकेतनने आपके हृदयको आकर्षित कर लिया और आप उसके सौंदर्य्यपर मुग्ध हो गये । यहां रहकर आपने बहुतसे पत्र श्रीरवींद्रनाथको जो उस समय अमेरीकामें थे, लिखेथे। यहांके अध्यापकोंसे उन्हें कविसम्राटकी प्रतिभाके विषयमें बहुतसी बातें ज्ञात हुई जो पुस्तकोंसे कभी ज्ञात नहीं हो सकती थीं। इसी समय आपकी मित्रता माडर्न रिव्यूके सयोग्य सम्पादक श्रीयुत रामानन्द चटर्जीसे हुई। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि सम्पूर्ण भारत वर्षमें श्रीयुत रामानन्दजी चटर्जीकी योग्यताका दूसरा सम्पादक नहीं है । अपने आचरणकी शुद्धता भी सच्चाई और निर्भयताके लिये वे बंगालभर में प्रसिद्ध हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ आपके मासिकपत्र माडर्न रिव्यूमें लेख तो कई वर्ष पहलेसेही लिख रहे थे अब परिचय हो जानेके बाद आपने नियमानुसार और भी अधिक लेख भेजना आरम्भकर दिया ।

दिल्लीमें महात्मा गोखलेके साथ

आगस्त १९१३ में जब कि ऐण्ड्रयूज़ साहब शान्ति निकेतन में थे आपके पास दिल्लीसे तार आया कि मिस्टर रुद्र बहुत बीमार हैं आप फौरनही दिल्लीको रवानः हो गये। वहाँ जाकर देखा तो मिस्टर रुद्रको लगभग मरणासन्न पाया। यह देखकर उन्हें हार्दिक दुःख हुआ। उस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने बड़े परिश्रमके साथ उनकी सेवा सुश्रूषा की और इस चिन्ता

तथा परिश्रमकी वजहसे स्वयं मि. ऐण्ड्रयूज़ भी बीमार पड़ गये। जब रुद्र महोदयकी तबियत कुछ सुधरी तो उनको साथ लेकर आप शिमला गये और वहाँ कुछ दिनों तक रहे। नवम्बरके आरम्भमें आप दिल्लीसे वापीस आगये। महात्मा गोखले उनदिनों दक्षिण अफ्रिकाके मामलेमें सरकारसे बातचीत कहनेके लिये दिल्ली आये हुएथे। इसके सिवाय उन्हें दक्षिण अफ्रिकाके लिये सम्पूर्ण भारत वर्षसे चन्दा भी करना था यथा वकाश मि. ऐण्ड्रयूज़ महात्मा गोखलेके साथ रहते थे। आप कहते हैं "दक्षिण आफ्रिकाके समाचारोंसे महात्मा गोखले अत्यन्त चिन्तित थे।" कालेजके कामसे फुर्सत मिलनेपर मैं अपना सम्पूर्ण समय उनके पास ही व्यतीत करता था। उन्हीं दिनों कविवर रवींद्रनाथ अमेरीकासे लौटे थे। एक दिन हम लोंगोने यह शुभ समाचार अखबारोंमें पढ़ा कि उन्हें "नोबल प्राइज़" नामक पुरस्कर मिला है। मेरी यह हार्दिक इच्छा थी कि मैं स्वयं बोलपुर जाकर उन्हें बधाई दूं लेकिन मैं महात्मा गोखले की सेवामें था और दक्षिणा आफ्रिकामें भारतीयोंकी स्थिति और भी भयंकर होती जाती थीं। एक दिन महात्मा गोखलेने मुझसे कहा "In thise matter the whole of India must be united. There must be no difference between Indians and the Europeans. I want some prominent European names to head the agitation for justice to the South African Indians. Can you suggest any?" अर्थात् "इस मामलेमें सम्पूर्ण भारतको एक होजाना चाहिये। इस विषयपर भारतवासियों और युरोपियनोंके विचारोंमें किसी प्रकारका भेद नहीं होना चाहिये। सभीको इस आन्दोलनमें भाग लेना उचित है। मैं चाहता हूँ कि दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंको न्याय दिलानेके लिये हम लोग जो आन्दोलन कर रहे हैं, उसमें कुछ यूरोपियन भी अगुआ बनें। क्या आप कुछ-

ऐसे यूरोपियनोंके नाम बतला सकते हैं ? ” मैंने उत्तर दिया “ मैं आज रातको ही कलकत्ते जानेको तय्यार हूं और वहां जाकर लार्ड बिशपसे इस विषयमें सम्मति लूँगा ” मैं उसी रातको कलकत्तेके लिये रवानः होगया। वहाँ पहुँचकर मुझे पता लगा कि बिशप साहब अस्पतालमें हैं। आपरेशन हो चुका था और वे बहुत बीमार थे । मैंने सोचा कि इस समय इन्हें तंग करना उचित नहीं तबियत ठीक होनेपर जाना चाहिये, लेकिन जब बिशप साहबने मेरे आनेकी खबर सुनी तो उन्होंने फौरन ही मुझे बुलालिया । उस समय वे बहुत चिन्तित थे। मैंने उन्हें महात्मा गोखलेका सन्देश सुनाया । उन्होंने फौरन ही अपनी चैक बुक मंगाई और प्रवासी भारतीयोंकी सहायताके लिये एक हजार रुपयेकी चैक मेरे नाम लिख दी । इसके बाद उन्होंने खाटसे पड़े पड़े ही एक पत्र समाचारपत्रोंमें प्रकाशित करानेके लिये लिखवाया। बिशप साहबकी इस उदारतासे मुझे हार्दिक हर्ष हुआ ।

शान्तिनिकेतन आनेका दृढ़ निश्चय

कलकत्तेसे लौटते समय मैंने एकदिन शान्ति निकेतनमें व्यतीत किया । अकस्मात् उसी दिन कलकत्तेसे एक डेपूटेशन कविवर रवीन्द्रनाथको नोबल प्राइज की प्राप्तिपर बधाई देनेके लिये शान्ति-निकेतनमें आया हुआ था। श्रीरवीन्द्रनाथको यह बात पसन्द न थी इसलिये उन्होंने कुछ स्पष्ट बातें भी डेपूटेशनवालों को सुना दीं । ऐसा करनेमें उन्होंने बड़ी निर्भयतासे काम लिया था क्योंकि डेपूटेशनके सज्जन उनके अतिथि थे और फिर “ अप्रियस्य च सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ” । लोगोंको यह बातें बुरी भी लगीं और स्वयं रवीन्द्रनाथको इन बातोंके कहते हुए बहुत खेद हुआ था । जब सब कार्रवाई समाप्त होगई तो मैंने श्रीरवीन्द्रनाथको एक जगह एकान्त में खड़े हुए देखा। मैंने उनके पास जाकर उनके चरण छुए। उस

समय वे बड़े उदास थे और उसी दिन शामको वे कलकत्ते चलेगये। रातभर मैं शान्तिनिकेतन में जागता रहा। प्रातःकाल होनेपर मैंने दो बातें निश्चित कीं एक तो यह कि यदि महात्मा गोखलेकी इच्छा होगी तो मैं दक्षिणा अफ्रिका जाकर महात्मा गान्धीजीकी सहायता करूँगा और दूसरी यह कि मिशनके कामको अब अन्तिम नमस्कार करूँगा। कविवर रवींद्रनाथने मुझसे कई बार कहा था कि इस मामलेमें मुझे धैर्य्यसे काम लेना चाहिये और कोई बात बिना सोचे विचारे निश्चित न करनी चाहिये। अब मेरे मनमें यह दृढ़ निश्चय होगया था कि दिल्ली छोड़नेका समय आपहुँचा है। उसी समय मैंने एक पत्र रवीन्द्रनाथके नाम लिखा। इस पत्रमें मैंने लिखाथा "अब मैंने आपकी सेवामें उपस्थित होनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है। यदि आप आश्रममें मुझे स्थान देसकें तो अत्यन्त कृतज्ञ होऊँगा। साथही साथ मैं यह भी लिख देना चाहता हूं कि यदि महात्मा गोखलेकी इच्छा हुई तो मुझे दक्षिण आफ्रिका भी जाना पड़ेगा।" उसी समय मैंने एकतार महात्मा गोखलेको दिया कि यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं फौरनही दक्षिण अफ्रिका जानेके लिये तय्यार हूँ।

दक्षिण अफ्रिका-यात्रा

दिल्ली पहुँचने पर मैं सीधा महात्मा गोखलेके पास गया। देखते ही उन्होंने मुझे अपने हृदयसे लगा लिया और कहा "Your telegram was like a gift to me. I know that providence is working for us. Your message came just at the time that a cable had arrived from South Africa saying that things were at their very worst. When do you start?" अर्थात् "तुम्हारा तार मेरे लिये बड़ा नियामत था। मैं जानता हूँ कि परमात्मा हमलोगोंको सहायता कररहा है। तुम्हारा तार बहुत ही ठीक वक्तपर

पहुंचा उसी समय दक्षिण अफ्रिकासे भी तार आया था कि वहाँ की स्थिति अत्यन्त खराब है। दक्षिण अफ्रिकाके लिये कब प्रस्थान करोगे?" मैंने कहा मैं आज रातकोही जानेके लिये तय्यार हूँ। मिस्टर पियर्सन भी उस समय दिल्लीमें थे। मैंने उन्हें अपना दक्षिण अफ्रिका जानेका समाचार सुना दिया। उस समय तो उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा लेकिन शामके वक्त वे बड़े प्रसन्न चित्त मेरे पास आये। मेरे दो एक दिल्ली निवासी मित्रोंने दक्षिण अफ्रिका प्रस्थान के समय मुझे कुछ वस्तु भेंट करनेका निश्चय किया था। मिस्टर पियर्सन ने मुस्कराकर मुझसे कहा "I have got a present for you. I want to give you to take with you to Africa" "मैं आपको कुछ भेंट करना चाहता हूँ आप मेरी भेंट अफ्रिका को लेते जाइये" मैंने कहा "लाइये, क्या भेंट है?" मिस्टर पियर्सन ने हँसकर कहा मैं ही आपके भेंट हूँ। मुझे अफ्रिका लेते चलिये, मैं आपके साथ चलूँगा।" यह बात सुनकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य और हर्ष हुआ। मिस्टर पियर्सन से बढ़कर दूसरा मित्र और साथी मिलना अत्यन्त कठिन था। पीछे मुझे पता लगा कि मिस्टर पियर्सन ने इस विषयमें पहले मिस्टर रुद्र की सम्मति ले लीथी और उनकी सलाह से ही यह शुभ समाचार उन्होंने मुझे इस आश्चर्य्य जनक ढङ्गसे सुनाया था। मिस्टर रुद्र मेरे स्वास्थ्यके लिये बड़े चिन्तित थे क्योंकि कुछ दिन पहले मैं मलेरिया ज्वरसे पीड़ित हो चुका था और उसके कारण निर्बलता अब भी बाक़ी थी। मिस्टर पियर्सन के साथ मैं कलकत्ते आया। मार्गमें माननीय पं० मदन मोहन जी मालवीय हम लोगोंको इलाहाबाद के स्टेशनपर मिले और उन्होंने हार्दिक प्रेमके साथ हमे विदा किया,,

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "I have always felt during all these years that Pandit Malviya's heart was the most

deeply touched of all the leaders with regard to the sorrows of indians abrood, and his friendship has always been one of the greatest inspiration to me in this work among the indian emigrants." अर्थात् पिछली वर्षोंमें मुझे बराबर इस बातका अनुभव हुआ है कि देशके नेताओंमें प्रवासी भारतीयों के दुःखोंसे यदि किसी का हृदय सबसे अधिक पीड़ित हुआ था तो वे पंडित मालवीय जी ही हैं। श्रीमान् मालवीय जी की मित्रतासे मुझे अपने प्रवासी भारतीयों के कार्य्यमें सबसे अधिक प्रोत्साहन मिला है"। मालवीय जी से विदाग्रहण करनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कलकत्ते आये और वहां कविवर रवीन्द्रनाथ से दक्षिण अफ्रिका जाने की आज्ञा प्राप्त की।

सातवाँ अध्याय।

जहाज़का सफ़र

जहाज़की यात्रामें बड़ा कष्ट रहा। हमारे चलनेके पहले एक तूफ़ान समुद्रमें आचुका था और उस तूफ़ानकी वजहसे बहुतसे वृक्ष उखड़ कर समुद्रमें गिर पड़े थे। ये वृक्ष अब हमें बहते हुए दीख पड़ते थे। रास्ते भर पानी बरसता रहा सर्दी इतनी ज्यादः थी कि जिसका ठिकाना नहीं। जहाज़में यात्रा करते समय मैं प्रायः बीमार हो जाता हूं और इस बार तो यह यात्रा और भी खराब हुई। जहाज़के यात्रियों और अफ़सरोंकी बातचीतने हमें तंग कर ड़ाला। ये लोग बार बार इसे कहते थे " Smuts will soon have you both into jail." जनरल स्मट्स तुम दोनोंको जेलमें भेज देंगे" एक बार नहीं दो बार नहीं सैकड़ों बार ही हमने यह बात

सुनी। ज़हाज़ पर हिन्दुस्तानी कुलियोंकी दुर्दशा देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। इन कुलियोंमेंसे, जो जहाज़ पर नौकर थे, कितने ही ऐसे थे, जिन्होंने समुद्र यात्रा कभी नहीं की थी। कोलम्बो पहुंचनेके दो दिन बाद एक कुली ने तो समुद्रमें कूद कर अपनी जीवन लीला समाप्त करदी और इस प्रकार वह इस दुःख सागरसे पार हो गया। इसके बाद एक कुली और भी गायब होगया। जहाज़के गोरे अफ़सरने जो इन लोगोंके ऊपर था मुझसे इनके बारेमें कहा "The damn suars the kinder you are to them the more trouble they give." ये कुली लोग बिल्कुल डैम सुअर हैं। जितनी ही इनपर महरबानी करो उतनी ही ये अधिक तक़लीफ देते हैं।" यह अफसर इन ग़रीब बिचारे कुलियों की दुर्दशा का अनुमान ही नहीं कर सकता था। ये गोरे अफसर इन हिन्दुस्तानी कुलियोंको मनुष्य ही नहीं समझते। उस गोरे अफसरके मुखसे हिन्दुस्तानी कुलियोंको "डैम सुअर" की उपाधिसे विभूषित करते हुए देखकर मेरे हृदयको बड़ा धक्का लगा, लेकिन इसमें हम लोगोंका—भारतवासियोंका भी बड़ा दोष था, आरकाटी बहका बहका कर इन्हें जहाज़ पर भेज देते थे और हम लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते थे!

दक्षिण अफ्रिकामें कार्य्य

जब हमारा जहाज़ भूमिके किनारे पहुंचा तो हमें समुद्र तट पर कितने ही हिन्दुस्तानी दीख पड़े। ये सब हम दोनोंको लेनेके लिये आये हुए थे। मिस्टर पोलकको मैं पहचान गया क्योंकि मैं उनसे दिल्लीमें मिल चुका था। उन्हें वहां उपस्थित देखकर मुझे आश्चर्य्य हुआ क्योंकि मेरा ख्याल था कि वे अब तक जेलमें ही होंगे। मिस्टर पोलकने मुझसे कहा "सब नेता छूट गये हैं। मैंने उनसे फौरनही पूँछा "where is mr. Gandhi." मिस्टर गान्धी

कहां है ? ” महात्माजीने जो निकट ही खड़े हुए थे, मुस्करा कर कहा “ I am mr. Gandhi ” “ मैं ही गान्धी हूँ ”

उनके दर्शन करते ही मेरे अन्तःकरणमें यही प्रेरणा हुई कि उनकी चरण रज अपने माथेसे लगालूँ। तुरन्त ही मैंने उनके चरण छुए महात्माजीने मन्द स्वरसे कहा “ pray do not do that, it is a humiliation to me ” कृपया ऐसा न कीजिहे, ऐसा करना मुझे लज्जित करना है ” गान्धीजी उस समय सफेद धोती और कुर्ता पहने हुए थे और उनका सिर मुड़ा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे शोक सूचक चिन्ह धारण किये हुए हैं। मैंने उनसे कहा “ जहाज़में रास्ते भर मैं आपके दर्शन करनेके लिये उत्कंठित रहा हूं ” गान्धीजीके शब्दोंको सुनकर और उनकी आंखोंको देखकर थोड़ी देरमें ही मुझे उनकी उज्ज्वल सच्चाई और निर्भय आत्माका पता लग गया। जितने ही दिन अधिक मैं उनके साथ रहा मेरी यह धारणा और भी प्रबल होती गई।

हम लोग जहाज़से उतरे ही थे कि इतनेमें अखबारोंके रिपोर्टरोंने मुझे घेर लिया। मैंने दिलमें समझ लिया था कि अगर इनसे बातचीतकी तो ये नाकमें दम कर देंगे। इसी लिये मैंने जान बूझकर बिल्कुल चुप्पी साधली। पहली बार तो इन संवाद दाताओंसे जैसे तैसे बच गया। लेकिन यह बात चारों ओर फैल गई कि मैंने सचमुच एक एशियावासीके चरण छूलिये, बस फिर क्या था यूरोपियन लोगोंने इसी बातको लेकर मुझे कोसना शुरु किया। इन यूरोपियनोंकी दृष्टिमें मैंने कोई बड़ा भारी पाप किया था ! इस बातकी इन्हें कुछ भी पर्वाह नहीं थी कि मैंने जिस पुरुषके चरण छुए वे महात्मा हैं। एक सम्पादक महोदयने मुझे टेलिफोन पर बुलाया और कहा “ मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ कृपया इंटरव्यू दीजिये

मैंने साफ इंकार कर दिया। इसपर ऐडीटर साहब बोले " Very well, I am going to publish the follwing—" The revered gentleman stooped down to the ground and smeared his fingers with the dust taken from the soles (!) of the Indians feet and then rubbed his fingers across his forehead." "बहुत अच्छा कुछ वात नहीं, मैं आपका यह वृत्तान्त अपने पत्रमें छापता हूँ—" रैवरैण्ड महोदयने झुककर अपनी उँगलियोंमें हिंदुस्थानीके पेरके तले (!) की धूल मली और फिर ये उँगलियाँ उन्होंने अपने माथेपर रगड़ीं" इसके बाद जो कुछ वृत्तान्त सम्पादक जीने टैलिफोन द्वारा सुनाया वह इतना हास्यास्पद था कि मुझे आखिर उस सम्पादकके आफिस पर जाना ही पड़ा। सम्पादकने मुझे अपना व्याख्यान सुनाना शुरू किया। इस समय भी मैं उन एडीटरसाहबकी आकृतिकी कल्पना कर सकता हूँ। बड़े आश्चर्य्यसे अपने दोनों हाथ उठाकर वे मुझसे कह रहे थे " Really. you know, mr. Andrews, really you know, we, we don't do that sort of thing in Natal we don't Do it, Mr. Andrews, I consider the action most unfortunate, Most unfortunate" सचमुच मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ आप विश्वास कीजिये, मैं आपसे कहता हूं, सचमुच मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ हम लोग नैटालमें यह काम कभी नहीं करते हम लोग ऐसा हर्गिज़ नहीं करते, मिस्टर ऐण्ड्रयूज़। मैं आपके इस कामको अत्यन्त बुरा समझता हूं, सचमुच आपने बहुतही बुरा काम किया।" थोड़ी देर तक तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मानों मैं किसी स्कूलका छोटा लड़का हूँ और ऐडीटर साहब स्कूलके हैडमास्टर और बस अब मेरे हाथों पर बेंत पड़नेही वाले हैं। फिर कुछ देर बाद यह सारा मज़ाक मेरी समझमें आगया। ऐडीटरने इस विषयमें जो सवाल किये उनका

ज़बाब मुझे देनाही पड़ा। दूसरे दिन मैंने क्या देखा कि सम्पादक महोदयने ये सब प्रश्नोत्तर छाप दिये हैं और उसके साथ ही साथ वह सब वृत्तान्त भी छाप दिया है कि रैवरैण्ड महोदयने झुककर अपनी उगंलियोंमें हिन्दुस्तानीके पैरके तलेकी धूल मली और फिर ये उंगलियाँ उन्होंने अपने माथे पर रगड़ीं !

डरबनके आर्चडिकन (पादरी) ग्रैगसन साहबने मुझसे कहा " आप हमारे अतिथि बनकर रहिये " मैंने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। हिन्दुस्तानियोंने मेरे लिये वहां के फर्स्ट क्लास होटलमें जगह निश्चित कर रक्खीथी। ईश्वर कृपासे मैं उस होटलके अत्याचारसे बचगया क्योंकि नैटालके होटलोंमें यह नियम है कि वहाँ कोई हिन्दुस्तानी नहीं ठहरसकता। आर्चडिकन साहब, जिनके यहां मैं ठहरा था, भारतीयोंके सच्चे शुभचिन्तक थे। उनके घर पर ठहरनेसे मुझे एक फायदा और भी हुआ वह यह कि उनके यहाँ मैं कितनेही अँग्रेजोंसे मिलसका और इस प्रकार औपनिवेशक गोरोंके दृष्टिकोणसे भी परिचित होगया। लेकिन मेरे हृदयमें सबसे प्रबल इच्छा महात्मा गान्धीजीके साथ रहनेकी थी और यहां आर्चडिकन साहबके साथ रहकर मुझे महात्मा गान्धीजीके संग बातचीत करनेका पूरा पूरा अवकाश मिलना असम्भव था। इसलिये मैंने महात्माजीसे कहा " कृपा कर आप एक सप्ताहके लिये अपने आश्रमको चलिये, वहाँ हम लोग शान्तिपूर्वक बातचीत कर सकेंगें। " महात्मा गान्धीजीने मेरे इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया और हम वहाँसे फीनिक्स आश्रमके लिये रवानः हो गये।

फीनिक्स आश्रममें

दक्षिण अफ्रिकामें मैं जितने समय तक रहा उनमें फीनिक्स आश्रममें व्यतीत किये हुए दिन सर्वोत्तम थे। आश्रममें पहुँचते ही मैंने अँग्रेज़ी पोशाक उतार कर भारतीय वेश धारण कर लिया। फीनिक्सके लड़कोंके साथ रहते हुए मुझे वही शान्ति वहाँ अफ्रिका में प्राप्त हुई जो

शान्तिनिकेतनमें अपने विद्यार्थियोंके साथ प्राप्त होती है। फीनिक्स आश्रम की वायु भारतीयतासे परिपूर्ण थी। वहाँ भारतीय भोजन था, भारतीय भेष था और भारतीय भाव थे। मैं अपनी आंखें बंद करके वहां कल्पना कर रहा था कि मानों मैं मातृभूमि भारतमें ही बैठा हुआ हूँ। यद्यपि वहांका आकाश भिन्न था, पहाड़ दूसरें ही थे, मकान भी अन्य प्रकारके थे, वृक्षोंमें भी भेद था, लेकिन वहांकी स्प्रिट हिन्दुस्तानकी थी। आश्रमकी दो बातोंने विशेषतः मेरे हृदयको आकर्षित किया एकतो **सादगी** और दूसरी **सब मनुष्योंकी समानता**। वहांके सब लड़के नंगे पांव और नंगेसिर घूमते थे और बराबर खुली हवामें रहते थे। रात्रिके समय वे बरंडेमें जमीनपर सोते थे। अफ्रिकाकी सर्दी और गर्मी सहन करनेका उन्हें अच्छी तरह अभ्यास पड़गया था। भोजन इनका बिल्कुल सादा था और ये सभी शाकाहारी थे। खेती करना इन सबको सिख-लाया जाता था। इन सबका उद्देश्य यही था कि यथासम्भव प्राकृतिक नियमोंके अनुसार जीवन व्यतीत किया जावे।

फीनिक्समें ही मैंने पहले पहल महात्मा गान्धीजीकी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरी बाईजीके दर्शन किये थे। जिन भारतीयोंने सत्याग्रहके संग्राममें कष्ट सहन किये थे उनमें श्रीमती कस्तुरी बाईजीका नाम सबसे प्रथम उल्लेख योग्य है। उन्हें जेलमें जाना पड़ा था, और वहां बहुत तकलीफ उठानी पड़ी थी। उनके साथ और भी कितनी ही स्त्रियां जेलमें गई थीं। जब ये स्त्रियां जेलसे आई थीं तो मैंने इनमेंसे प्रत्येकके दर्शन करके अपने नेत्रोंको सफल किया था। श्रीमती कस्तूरी बाईजीका स्वास्थ्य बहुत ही खराब था और वे जेलके भोजन को नहीं खा सकती थीं लेकिन फिर भी जेलमें डाक्टरने उन्हें दूसरा भोजन नहीं दिया था। इसालिये जेलमें वे बहुत दुर्बल होगईथीं। जब मैंने उन्हें जेलसे आते हुए देखा था वे बिल्कुक वृद्ध शिथिल और थकी हुई मालूम होती थीं।

आश्रमकी दूसरी खूबी, जैसा कि मैं कह चुका हूँ, सब मनुष्योंकी समानता थी। वहां वर्ण और जातिका कोई भेद नहीं था। दुःखपीड़ित हिन्दुस्तानी कुलियोंके लिये मानों यह शान्ति और शरणका स्थान था। यही नहीं वहां जूलू और काफिर लोगोंके साथ भी वैसाही प्रेम पूर्ण व्यवहार किया जाता था। गान्धीजीके आश्रम में कोई नौकर नहीं था अथवा यों कहना उचित होगा कि सब ही एक दूसरेके सेवक थे। इस आश्रमके निकट ही कुछ यूरोपियन लोग भी रहते थे और उनके बच्चे भी हिन्दुस्तानी बच्चोंकी तरह ही सादा जीवन व्यतीत करते थे। आश्रमको देखकर यही भाव हृदयमें आता था कि हम सब एक ही पिताकी सन्तति हैं और भाई २ हैं। धार्मिक विभिन्नता होनेपर भी आश्रम की शान्ति में कोई बाधा नहीं पड़ती थी। इस आश्रममें एक छोटासा मुसलमान लड़का था जो सब को बहुत प्यारा था। इस लड़केका नाम मुहम्मद था और यह महात्मा गान्धीजीको बहुत प्रेम करता था। यह महात्माजी के पीछे पीछे फिरा करता था। यह बच्चा कभी उनके पांव से लिपट जाता था उनकी मुँह की ओर देख देखकर खुश होता था और उन्हें आश्रमकी दिनभर की खबर सुनाया करता था और बापूभी (महात्मा गान्धीजी को सब बच्चे बापू कहते थे) उस बच्चेकी बातको इतने ध्यान के साथ सुनते थे कि मानों वह कोई बड़ी महत्वपुर्ण बात कह रहा हो और सारे संसार का भविष्य उसी की बात पर निर्भर हो।

जब रातका वक्त होता महात्मा गान्धीजी अपने आश्रमके सब विद्यार्थियों को एकत्रित करते और उनके सम्मुख गीता अथवा बाइबिल या गुजराती कवियोंकी कुछ कविता पाठ करते। गुजराती के कुछ भजन गाये जाते और फिर सब शान्ति पूर्वक अपने अपने स्थान पर जाकर सोजाते। ऐसे अवसरोंपर जब मैं वहां फीनिक्स आश्रममें होता, मैं

अपने दिलमें यही सोचता कि देखो भारतमाता समुद्रपार अपने बच्चोंकी किस प्रकार रक्षा कर रही है। यद्यपि ये प्रवासी भारतीय अपने घरसे सहस्रों मीलोंकी दूरी पर पड़े हुए हैं तथापि इनका हृदय भारतमाताके हृदयसे सम्बद्ध है। एक रातको जब हम लोग फीनिक्स आश्रममें प्रार्थना इत्यादि समाप्त करके सोनेके लिये जाने लगे तो एक नवयुवक हिन्दू लड़के ने, जो भारतमें कभी नहीं आया था, कहा "ऐण्ड्रयूज साहब, हमारा भारत कैसा है ?" मैंने उत्तर दिया "India is just like this We have all of us been in India to night" "भारत बस बिल्कुल ऐसा ही है। अभी आज रातको हम सब लोग भारतमें ही थे।"

महात्मा गान्धीजीके साथ प्रिटोरिया गमन

जिस समय मैं अफ्रिका पहुंचा था सत्याग्रहके संग्रामके फिर प्रारम्भ होनेकी बातचीत हो रही थी। अगर सत्याग्रह फिर प्रारम्भ होता तो हिन्दुस्तानियोंको फिर बड़े कष्ट सहन करने पड़ते। मुझे यह भी आशङ्का थी कि सत्याग्रही भारतीयों पर यूरोपियन लोग गोली चलावेंगे। मैं अपने दिलमें सोचता था कि अगर जनरल स्मट्स दब जावें और तीन पौण्डके टैक्स को रद करदें, भारतीय विवाहोंको कानूनके अनुसार ठीक मानें और अन्य बातों पर समझौता करनेके लिये तय्यार हों तो यह सत्याग्रहका संग्राम रुक सकता है अन्यथा नहीं। मैंने महात्माजीसे निवेदन किया कि अगर सत्याग्रह फिर शुरू हो तो मैं भी आपके साथ सत्याग्रहमें शामिल होनेके लिये तय्यार हूँ। मैं जेल जानेके लिये उस समय बिल्कुल उद्यत था। फिर मुझे ख्याल आया कि मैं अपनी माँसे प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भाइयोंके कामसे अवकाश पातेही शीघ्र ही विलायत जाकर उनकी सेवा करूँगा क्योंकि वे बहुत बीमार थीं। जब मैं हिन्दुस्तान में

ही था उसी समय विलायतसे मेरी माँ का पत्र आया था कि मैं बहुत बीमार हूँ तुम चले आओ। मैंने उस समय अपनी माँ को लिखा था " दक्षिण अफ्रिकाके प्रवासी भाइयों पर बड़ी आफत आई है, और मेरा जाना वहाँ आवश्यक है। जैसी आप की आज्ञा होगी करूँगा " माँ ने उत्तर भेजा था " अच्छा यहाँ मत आओ, दक्षिण अफ्रिका जाकर प्रवासी भारतीयोंकी सहायता करो और जब तक वहाँ काम समाप्त न कर लो तब तक मेरी सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। " मैं अपनी माँ से प्रतिज्ञा कर चुकाथा कि अवश्य उनकी बीमारीमें उपस्थित होकर उनकी सेवा करूँगा। उस समय मैं बड़ी उलझनमें था। मेरे लिये यह बड़ी कायरताकी बात होती कि मैं भारतीयोंको सत्याग्रह करनेके लिये उपदेश देता और स्वयं विलायतके लिये चल देता। इधर माँसे की हुई पवित्र प्रतिज्ञा का भी मुझे ख्याल था। यदि मैं सत्याग्रहमें सम्मिलित होकर स्वयं जेलमें जाता तो फिर माँ की बीमारीमें पहुँचना सम्भव नहीं था। मैंने यह बात महात्माजीसे कही उन्होंने फौरन ही मुझसे कहा " माँ की प्रतिज्ञा को सबसे प्रथम स्थान देना चाहिये। हम सब भारतीय इस बात का अनुभव करते हैं कि अपनी माँ की वृद्धावस्था और बीमारीमें आपको वहीं उनके पास जाना चाहिये। हमारी भारतीय प्रकृति हमें यही आदेश देती है कि हम आपको अपनी माँ के पास जाने की आज्ञा दें। आपको पहले माँ का काम करना चाहिए और निश्चित समय पर वहाँ अवश्य जाना चाहिये। हमारा सब का श्रद्धापूर्ण प्रणाम अपनी माता के पास लेते जाइये। आपकी माँ हम सब की माँ है। हमारे शास्त्रोंकी आज्ञा यही है कि माता पिता से की हुई प्रतिज्ञा किसी प्रकार भी नहीं टूट सकती " इस उत्तर से मेरे सब सन्देह दूर होगये। मैं अपने दिलमें समझगया कि अगर मुझे विलायत जाना भी पड़ा तो भारतीय मुझे बुरा न कहेंगे क्योंकि वे

माँ की प्रतिज्ञा को ही प्रथम स्थान देते हैं और मैं भी माँ की बीमारी में अवश्य जाना चाहता था। जिस समय मैं महात्मा गांधीजीसे ये बातें कर रहा था उस समय मुझे क्या मालूम था कि मेरी मां इस समय विलायतमें बिल्कुल मरणासन्न है! आज जब मैं इन पुरानी बातोंका स्मरण करता हूँ तो मुझे हृदयमें यही सन्तोष होता है कि महात्मा गान्धी की कृपासे मैंने अपनी माँसे की हुई प्रतिज्ञाके भङ्गका विचार मनमें भी नहीं किया। ईश्वर कृपासे सत्याग्रहके संग्रामको उस समय पुनः प्रारम्भ करनेका भी अवसर नहीं आया क्योंकि दो चार दिन बादही जनरल स्मट्सने महात्मा गान्धीजीको बुलानेके लिये तार भेजा। यह तार हम लोगोंको फीनिक्स आश्रममें ही मिला था। फौरनहीं हम दोनोंने प्रिटोरियाके लिये प्रस्थान किया। हम लोग डरबन स्टेशन-पर चार बजे शामको पहुँचे। यूरोपियन मेल ट्रेन ५ बजे शामको वहाँसे प्रिटोरियाके लिये जाती थी और थर्ड क्लास काफिर ऐक्स प्रैस रातके ८ बजे जाती थी। हम लोगोंने सोचा था कि ८ बजेकी गाड़ीसे प्रिटो-रिया जावेंगे तब तक चार घंटेमें डरबनमें आवश्यक कार्योंसे निश्चिन्त हो लेंगे। हम लोगोंने काफिर ऐक्स प्रैससे जानाही तय किया था। ज्योंही हम स्टेशनसे नगरको जाने लगे त्योंही स्टेशन मास्टरने महात्मा गान्धीजीके पास आकर कहा "Hallo Gandhi how things goi-ng with you?" "कहो गान्धी क्या हाल चाल है?" गान्धीजीने कहा "I am just going by the kaffir express to see Gene-ral Smuts" "मैं इसी काफिर मेलसे जनरल स्मट्ससे मिलनेको प्रिटो-रिया जाऊँगा" स्टेशन मास्टरने कहा "बहतर होगा कि आप काफिर ऐक्स प्रैस ट्रेनसे न जावें, आपको यूरोपियन मेलसे जाना चाहिये, क्योंकि आज रातको १२ बजेसे रेलवालोंकी हड़ताल शुरू होने वाली है। अगर आप काफिर ऐक्स प्रैससे जावेंगे तो कहीं बीचमें ही पड़े

रहेंगे, प्रिटोरिया तक पहुँचना असम्भव हो जावेगा" हम लोग नगरसे दूर फीनिक्स आश्रम में थे इसालिये हमें इस हड़ताल की बिल्कुल खबर नथी। मैंने महात्माजी से कहा "इस समय चार बजे हैं और यूरोपियन मेल पाँच बजे जावेगी अगर हम काफिर ऐक्स प्रैसके लिये, जो आठ बजे जाती है, चार घंटे ठहरे तो सारा मामला पर पट हो जावेगा। अब डरबन शहरमें जाने की कोई आवश्यकता नहीं यूरोपियन मेलसेही चले" इस प्रकार हम यूरोपियन मेलसे ही रवानः हुए। अगर कहीं उस स्टेशन मास्टरसे बातचीत न होती तो १५ दिन तक हमें कहीं बीचमें ही अटक जाना पड़ता क्योंकि काफिर ऐक्सप्रैस तो कहीं बीचमें ही पड़ी रहगई थी और १५ दिन तक रेलमें बिल्कुल हड़ताल रही थी कोल रेल चली ही नहीं। इस प्रकार दैव योगसे हम लोग प्रिटोरिया पहुँच गये।

एक उल्लेख योग्य घटना

प्रिटोरिया पहुँचनेके बाद हम लोग सीधे 'प्रिटोरिया न्यूज़' नामक पत्रके सम्पादकसे मिलनेके लिये गये। सम्पादक महोदय हिन्दुस्तानियोंके शुभचिन्तक थे। उन्होंने महात्मा गान्धीजीसे पूंछा "Are the Indians going to join the general strike अर्थात् "हिन्दुस्तानी यूरोपियनों की इस हड़तालमें सम्मिलित होंगे!" महात्मा गान्धीजीने कहा "No, certainly not, we are not going to take any unfair advantage of the government. We are out for a clean fight and we shall not start passive Resistance till the general strike is over." "नहीं हर्गिज नहीं। हम लोग गवर्मेण्टकी परिस्थितिसे अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहते। हम लोग न्याय युक्त युद्ध करनेके लिये उद्यत हुए हैं, जब तक यह हड़ताल जारी रहेगी तब तक हम अपना सत्याग्रह

संग्राम प्रारंभ नहीं करेंगे।" ऐडीटरने गान्धीजीसे कहा "क्या मैं आपकी इस बातको अपने पत्रमें छाप दूँ!" गान्धीजीने कहा "नहीं आप इसे न छापिये।" फिर ऐडीटरने हम लोगोंको यह समाचार सुनाया कि बारह घंटेके भीतरही भीतर मार्शलला जारी हो जावेगी क्योंकि रेलवालोंकी हड़ताल बड़ी भयंकर है। यह समाचार सुनकर मुझे बड़ी चिन्ता हुई। मैंने दिलमें सोचा "अगर मार्शलला जारी हो जानेके बाद हिन्दुस्तानी यह कहेंगे कि हम हडतालमें भाग नहीं लेंगे तो गवर्मेण्ट इस बातसे उनकी उदारता नहीं समझेगी। गवर्मेण्ट यही ख्याल करेगी कि मार्शललाके डरकी वजहसे हिन्दुस्तानियोंने ऐसा किया है। गवर्मेन्टकी दृष्टिमें उस समय यह बात हर्गिज़ नहीं आवेगी कि हिन्दुस्तानी न्याय बुद्धिसे प्रेरित होकर ऐसा कर रहे हैं।" मैंनें यही बात महात्मा गान्धीजीके सामने पेशकी और उनसे प्रार्थनाकी "आप इस बात पर फिर विचार कीजिये। मेरी समझमें आप बड़ी भूल कर रहे हैं। मार्शलला जारी होनेके पहले आप अपने विचारोंको, जो आपने प्रिटोरिया न्यूज़के सम्पादकसे कहे हैं, सर्व साधारणके सामने प्रकाशित हो जाने दीजिये ऐसा होनेसे हमारे इस झगड़ेके तय होने में बड़ी मदद मिलेगी बड़ी देर तक गान्धीजीसे वाद विवाद होता रहा। महात्माजी अपनी बातपर डटे हुए थे, यद्यपि इसमें नियम था, अन्तःकरणका कोई मामला नहीं था। लेकिन जब मैंने अपनी बातपर बहुत ज्यादः जोर दिया तो महात्माजीने कहा "Well, if you think as strongly, I will give way to what you say" खैर अगर आप इस मामलेपर इतना ज़ोर देते हैं तो मैं अपनी बातको छोड़कर आप जो कहते हैं वही करूंगा!" हम लोगोंने एडीटरसे यह बात कही। ऐडीटरने महात्माजीके साथ 'इंटरव्यू' ली और इस बातचीतमें उसने भारतीयोंकी स्थितिको स्पष्टतया लिखलिया। यह ऐडीटर रायटरका एजेण्ट भी था इसलिये रायटर

कम्पनी द्वारा उसने यह समाचार सम्पूर्ण संसारमें भेज दिया। अपने पत्रमें भी उसने यह "इंटरव्यू" छाप दी। दक्षिण अफ्रिका भरमेंभी यह वात फैलगई कि भारतवासी इस हड़तालके समय अपना सत्याग्रह जारी नहीं करेंगे। इस वृत्तान्तके छपनेके दस वारह घंटे वाद ही **मार्शल ला** जारी हो गई तार भी कई जगह कट गये और रेल चलना विल्कुल बंद हो गया। यदि महात्मा गान्धीजी अपने निश्चयको उस समय प्रकाशित न होने देते तो अवश्यमेव वड़ा भारी मौका हाथसे निकल गया होता। सरकार यही कहती "लो, हिन्दुस्तानी डर गये, नहीं तो वे जरूर इस अवसर पर सत्याग्रह प्रारम्भ कर देते"

जनरल स्मट्सके साथ समझौता

प्रिटोरियामें नित्यप्रति हम दोनों जनरल स्मट्ससे मुलाकात करनेके लिये यूनियन सरकारके भवनपर जाया करते थे। कभी कभी तो उनसे मिलनेके लिये हमको पाँच पाँच घंटे ठहरना पड़ता था। उन दिनों रेलकी हड़तालकी वजहसे देशभरमें वड़ी अशान्ति छाई हुई थी। जनरल स्मट्स शान्ति स्थापित करनेके लिये चारों ओर मोटर कारमें घूम रहे थे। उन्होंने ४० हजार आदमियोंकी सेना भी तय्यार कर रक्खी थी। हड़ताल करनेवाले खानोंसे वहुत सी डिनेमाइट नामक वारूद चुराले गये थे और उसके जरियेसे वे वड़ा उत्पात मचा रहे थे। वे कभी रेलकी लेनको उड़ा देते तो कभी कुछ दूसरी ही उपद्रव करते। जनरल स्मट्स पर उन दिनों वड़ी भारी आफत थी इधर उधर भागते हुए और काम करते हुए ही उनका सम्पूर्ण समय व्यतीत होता था। इस लिये महात्मा गान्धीजीसे वातचीत करनेके लिये उन्हें वहुत कम अवकाश मिलता था। हमलोगोंको नित्य प्रति गवर्मेण्ट हाउस पर जाना पड़ता था। धीरे धीरे रोज कुछ समय निकाल कर वातचीत करते करते आखिरकार जनरल स्मट्सके साथ समझौता होने लगा। प्रत्येक

बात पर अच्छी तरह विचार किया गया । जब हम लोग इस प्रकार झगड़े सुलझानेमें लगे हुए थे महात्मा गान्धीजीके पास तार आया कि आपकी धर्म पत्नी अत्यन्त बीमार हैं । इस लिये आप बड़े चिन्तित थे। फिर मिस्टर पोलकने खबर भेजी "आपकी स्त्री अन्त समयमें आपके दर्शन करना चाहती हैं।" महात्मा गान्धीजीने उस समय कहा था "मुझे यहाँपर यह आवश्यक काम है, मैं नहीं जासकता" जब मैंने यह तार पढ़ा तो मैं, महात्मा गान्धीजीसे बिना कहे ही, सीधा जनरल स्मट्सके पास चला गया और उन्हें यह खबर सुना दी।

यह समाचार सुनकर जनरल स्मट्सका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने सब काम छोड़कर पहले गान्धीजीके साथ समझौता करनेका काम हाथमें लेलिया। अन्तमें अन्य सब बातें तो निश्चित हो गई थीं लेकिन एक कठिनाई रह गई थी जनरल स्मट्स इस समझौतेमें एक वाक्य रखना चाहते थे और महात्मा गान्धीजी उस वाक्यके विरुद्ध थे। इसी बात पर मामला अटक गया था। महात्माजी कहते थे कि अगर यह वाक्य रहा तो समझौता नहीं हो सकता और सत्याग्रहका संग्राम फिर प्रारम्भ करना पड़ेगा। मेरी समझमें यह बात नहीं आई थी कि इस एक वाक्य पर इतना झगड़ा क्यों होना चाहिये । महात्माजीने मुझसे कहा "तुम हमारी दृष्टिसे इस प्रश्न पर विचार करो" लेकिन फिर भी मैं उनकी बात नहीं समझ सका। हम लोग रातके एक बजे तक बातचीत करते रहे। फिर मैंने महात्माजीसे कहा "अगर जनरल स्मट्सके उपर्युक्त वाक्यके स्थानमें मेरा यह वाक्य रख दिया जावे तो क्या आप उसे स्वीकार करलेंगे?" तब मैंने अपना वाक्य उन्हें सुनाया। सोनेके पहले सोच विचार कर गान्धीजीने कहा "अगर जनरल स्मट्स अपने वाक्यके स्थानमें तुम्हारे इस वाक्यको रखदें तो मुझे कोई इंकार न होगा। उनके यह स्वीकार कर लेनेसे सारा मामला ही तय हो जावेगा"

सवेरेके समय गान्धीजीसे बिना कहे ही मैं सीधा जनरल स्मट्सके पास गया। आठ बजेके समय उनसे मुलाकात हुई। उस समय वे बिल्कुल अकेले ही थे। मैंने उनसे निवेदन किया कि अब इस मामलेका तय हो जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि गान्धीजीकी स्त्री मरणासन्न हैं। जनरल स्मट्सने कहा "मैं भी यही चाहता हूं कि यह झगड़ा समाप्त हो जावे" फिर मैंने समझौतेका कागज पढ़ा और कहा "अगर आपके उस वाक्यके स्थानमें ये वाक्य लिख दिया जावे तो क्या आप उसे स्वीकार करेंगे?" जनरल स्मट्सने उस वाक्यको दो तीन बार पढ़ा और फिर कई मिनट तक उस पर विचार किया। तत्पश्चात् उन्होंने कहा "मुझे अपने वाक्यको बदल कर इस वाक्यके रखनेमें कोई इंकार नहीं हैं। मेरे निकट इन दोनों वाक्योंमें कोई अन्तर नहीं है" फिर मैंने कहा "तो आप कृपा कर अपने वाक्यको काट कर यह वाक्य लिख दीजिये और उसके नीचे अपने हस्ताक्षर कर दीजिये।" जनरल स्मट्सने तुरन्त ही अपने वाक्यको काट कर मेरा वाक्य लिख दिया और उसके नीचे हस्ताक्षर कर दिये। अत्यन्त प्रफुल्लित चित्त होकर मैं उस कागजको महात्मा गान्धीजीके पास ले आया। महात्माजीको इससे बड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि अब झगड़ा तय हो गया और सत्याग्रह संग्रामके चलानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। महात्माजीने उस समझौते पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और मैं उसे लेकर जनरल स्मट्सको दे आया। वह दिन और वह प्रातःकालका समय मुझे जीवनभर नहीं भूल सकता। यद्यपि महात्माजीको बड़ी भारी विजय प्राप्त हुई थी लेकिन वे बिल्कुल शान्त थे और उनका आत्मसंयम आश्चर्य जनक था। इस प्रकार सारा झगड़ा तय हो गया। हम लोग सवेरेके ११ बजेकी ही गाड़ीसे प्रिटोरियासे चलनेवाले थे। चलनेके कुछ ही देर पहले हमें एक तार मिला जिसमें लिखा था कि महात्माजीकी धर्मपत्नी अब बहुत अच्छी

तरह हैं। उस समय हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि परमात्मा हर तरहसे हमारी मदद कर रहा है।

प्रिटोरियाके हिन्दुस्तानी धोवियोंसे मित्रता

प्रिटोरियाका वर्णन समाप्त करनेके पहले मैं दो चार बातें और कह देना उचित समझता हूँ। मैं कह चुका हूँ कि उन दिनों हड़तालकी वजहसे जनरल स्मट्सको वहुत ज्यादः काम करना पड़ता था और हम लोगोंसे वे वहुत कम समयके लिये मिल सकते थे। हम लोग गवर्मेण्ट हाउसमें जाकर बैठते और उनका इन्तजार करते थे। कई वार ऐसा हुआ कि जनरल स्मट्सने आकर गान्धीजीसे कहा "I cannot tell you how sorry I am, Gandhi, but I can't see you to-day" "गान्धी मैं आपको बतला नहीं सकता कि मुझे इस वातका कितना खेद है कि मैं आज आपसे बात चीत नहीं कर सकूँगा" गान्धीजी बराबर यही जवाब देते "I assure you I understand the difficulty of the situation" "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी कठिन परिस्थितिको समझता हूँ" मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि गान्धीजीके इस धैर्य्य तथा उदारता की वजहसे समझौता होनेमें वड़ी भारी मदद मिली थी।

प्रिटोरियामें अधिक दिन रहनेसे मुझे एक बड़ा लाभ हुआ वह यह कि वहाँ रहनेवाले हिन्दुस्तानी धोवियोंसे मेरी मित्रता होगई। इनमें अधिकांश मुसलमान थे और इनका एक मुखिया था जो बहुत बुद्धिमान था। ये लोग बार बार मुझे अपने यहाँ खाना खानेके लिये लेजाया करते थे, और मेरे लिये अत्यन्त महनत करके सब चीजें बनाते थे। यह मैंने उनसे पहलेही कह दिया था कि मैं मांस नहीं खाऊँगा, इस लिये वे मेरे लिये फलोंकी भरमार कर देते थे। धोती, कुड़ते और चद्द-

रोंकी तो उनके यहां कुछ कमी नहीं थी, बस मेरे पहननेके लिये उन्होंने कितने ही कपड़े बना रक्खे थे । मेरे कपड़े नित्यप्रति धोनेके लिये वे तय्यार थे ! उन्होंने जूते और स्लीपर भी पहननेके लिये मुझे दे दिये थे। किस्से कहानियोंमें जादूभरी अंगूठियोंका अक्सर ज़िक्र आया करता है और इन अंगूठियोंके पहननेवालेको मनचाही चीज़ मिल जाया करती है । प्रिटोरियामें इन धोबियोंकी मित्रता क्या थी, मानों मुझे कोई जादूभरी अंगूठि मिल गई थी ! कहने भरकी देर थी कि मेरे धोबी मित्र हर चीज़ उपस्थित कर देते थे।

इन लोगोंकी संख्या अधिक नहीं थी लेकिन थे ये बड़े उदार हृदय। एक दिन रविवारको ये लोग मेरे पास आये और इन्होंने मेरे सामने ४७७) रु. लाकर रख दिये। यह सत्याग्रही भाइयोंकी मददके लिये थे। चांदी सोनेकी चीजें घड़ी इत्यादि कितनी ही वस्तुऐं उन्होंने सत्याग्रहियोंकी मददके लिये दीं, उनके हृदयकी प्रसन्नता उस समय देखने योग्य थी। जब हम जनरल स्मट्ससे समझौता करनेके बाद प्रिटोरियासे रवानः होनेवाले थे तो ये सब धोबी स्टेशन पर हमें पहुंचानेके लिये आये थे और उसी दिन प्रातःकाल १४५) रु. और चन्दा करके लाये थे। मैं उस समय बहुत थका हुआ था और मुझे कुछ बुखार भी आगया था लेकिन इन दयालु हृदय धोबियोंकी कृपासे मेरी सारी थकावट दूर हो गई और बुखारकी याद भी मुझे भूलगई। अब भी रेलवे यात्रा करते समय अथवा समुद्रके किनारे खड़े हुए दूर तक अपनी दृष्टि डालते हुए, मुझे कभी कभी प्रिटोरियाके इन धोबी मित्रोंकी याद आ जाती है और उनके चहरे मेरी आंखोंके सामने उपस्थित हो जाते हैं। दक्षिण आफ्रिकासे लौटनेके बाद मैंने इन धोबियोंको कितनी ही चिट्ठियाँ भेजी थीं और उन्होंने गुजराती भाषामें इन चिट्ठियोंके उत्तर भी दिये थे जिनका अनुवाद कराते कराते मेरी अक्ल हैरान हो गई थी। हर

चिट्ठीमें ये लोग लिखते थे " हम मातृभूमिके दर्शन करना चाहते हैं। इसके लिये हम रुपये जोड़ रहे हैं। हम लोग बोलपुरमें आपके पास आश्रममें ठहरेंगे।" छः वर्ष बाद जब मैं सन् १९१९ में दूसरी बार दक्षिण अफ्रिका गया तो ये धोबी लोग मुझे फिर मिले थे और उन्होंने मुझ फिर खाना खिलाया था।

जिन दिनों हम लोग प्रिटोरियामें थे वहाँ मार्शल ला जारी था। रातके ८ बजेके बाद घरसे बाहर निकलनेकी आज्ञा नहीं थी बिना सरकारी हुक्म लिये कोई निकलता तो उसके मारे जानेकी आशङ्का थी। एक बार गलतीसे मैं आफतमें फँस गया होता। आठ बजेके बाद मैं घरकी ओर आरहा था लेकिन ईश्वर कृपासे किसी फौजी आदमीने मुझे टोका नहीं।

हमारी तीर्थयात्रा।

प्रिटोरिया चलनेके बाद गान्धीजीने कहा " मुझे तीर्थयात्रा करनेके लिये एक जगह जाना है तुम भी मेरे साथ चलो " मैंने कहा " वह तीर्थस्थान कहाँ है ?" गान्धीजीने कहा " जोहान्सबर्गमें मिस्टर डोककी स्त्रीके घरपर " जिस समय हम लोग जोहान्सबर्ग पहुँचे वहाँ बड़ी सर्दी थी और बुखारकी वजहसे मैं काँप रहा था। हड़तालके कारण मार्शल ला जारी होनेकी वजहसे स्टेशनपर फौजका पहरा था। हमारे हिन्दुस्तानी मित्र जो हमें लेनेके लिये आये थे स्टेशनके बाहर खड़े हुए थे। मार्शल लाकी वजहसे कोई मीटिङ्ग तो हो नहीं सकती थी, इसलिये दूसरे दिन प्रातःकाल भर हम समाचारपत्रोंके संवाद दाताओंसे बात चीत करते रहे। जब हमने जोहान्सबर्गके हिन्दुस्तानियोंको जनरल स्मट्सके साथ किये हुए समझौते की शर्तें बतलाईं तो उन्हें अत्यंत प्रसन्नत हुई। तत्पश्चात् हम शामके वक्त मिसेज़ डोकके घर पर गये। रास्तेम गान्धीजी बिल्कुल चुप चाप थे और मैंने भी कोई बात नहीं की। ऐर

प्रतीत होता था कि हम लोग एक अत्यन्त पवित्र स्थानमें हैं । महात्मा गान्धीजी मिसेज़ डोकको अपनी माताके समान मानते हैं। ऐसा वे क्यों मानते हैं यह समझानेके लिये मुझे एक घटना बतलानी पड़ेगी। जिस समय सत्याग्रहके संग्राममें महात्मा गान्धीजीने स्वेच्छापूर्वक उँगलियोंकी छाप देना स्वीकार करलिया था कुछ पठान लोग महात्माजीसे बहुत नाराज़ होगये थे। उन्होंने गान्धीजीसे कहा था "अगर आप उँगलियोंकी छाप देंगे तो हम आपको जानसे मार डालेंगे।" गान्धीजीने इन लोगोंको अपनी बात समझानेकी बहुत कोशिश की कि हम गवर्मेण्टके दबावसे नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छासे उँगलियोंकी छाप दे रहे हैं। लेकिन उनकी मोटी अक्लमें गान्धीजीकी बात न आई। आखिरकार गान्धीजीने कहा "मैंने स्वेच्छापूर्वक उंगलियोंकी छाप देनीकी प्रतिज्ञा गवर्मेण्टसे करली है, मैं उसे हर्गिज़ नहीं तोड़ सकता, आप मुझे भले ही मार डालें।" एक बड़े भारी हॉलमें जहां यह छाप ली जा रही थी क़रीब चार हज़ार आदमी इकट्ठे थे। गान्धीजीने सबके सामने जाकर अपनी दसों उंगलियोंकी छाप दी और अपना नाम रजिस्टर कराया। जब गान्धीजी हॉलसे बाहर निकले तो पठान लोग बाहर खड़े हुए थे। एक पठानने गान्धीजीको लाठियोंसे इतना पीटा कि वे अधमरे होकर ज़मीनपर गिरपड़े और पठान उन्हें मरा हुआ समझ छोडकर भाग गये। जिस दिन यह घटना हुई थी उस दिन प्रातःकालसे मिस्टर डोकको, जो महात्माजीके बड़े भारी मित्र थे, बड़ी चिन्ता थी और उनका किसी काममें मन नहीं लगता था, लेकिन इसका कारण उन्हें कुछ भी मालूम नहीं था। प्रातःकाल व्यतीत होजानेपर भी उनकी चिन्ता नहीं घटी थी, आखिर कार उन्होंने सोचा कि चलो कहीं घूम आवें। वे घरसे बाहर निकलेही थे कि उन्हें लोगोंने समाचार सुनाया कि गान्धीजीको किसीने मार डाला। यह सुनते ही

मिस्टर डोक फ़ौरन ही उस स्थानपर पहुंचे जहां गान्धीजी पड़े हुए थे। थोड़ी देरबाद गान्धीजीको कुछ होश आया । पुलिसके कई आदमी वहां पहुंच गये थे, उन्होंने गान्धीजीसे दो चार बातें पूछी फिर मिस्टर डोक अपनी भुजाओंमें उठाकर उन्हें एक गाड़ी तक ले आये और वहांसे उन्हें अपने घरपर लेगये। वहांपर दिनरात मिस्टर डोककी स्त्री तथा उनकी लड़की उनकी सेवा सुश्रूषा करती थीं। सैकड़ों भारतीय महात्मा गान्धीजीको देखनेके लिये वहां आते थे। मिसेज़ डोकने अपने सब कमरे हिन्दुस्तानियोंके लिये खाली कर दिये थे। गान्धीजी कहते हैं "जब मैं मूर्च्छाके बाद अथवा बहुत पीड़ा होनेके पीछे अपनी आंखें खोलता तो मुझे अपने सामने मिसेज़ डोकका मुख दीख पड़ता। माताकी तरहसे मेरी सेवा कर रही थीं। मिसेज़ डोकके मातृप्रेमके ही कारण मेरे प्राण बचे" तबसे महात्माजी मिसेज़ डोकको माताके समान पूज्य मानते हैं।

इस घटनाके कुछ वर्षों बाद गान्धीजीके मित्र मिस्टर डोक, जो बैप्टिस्ट मिशनरी थे, रोडैसियाके पश्चिम भागकी ओर वहांके जंगली आदमियोंमें धर्म प्रचार करनेके लिये चले गये। वहांपर जलवायु खराब होनेके कारण उन्हें कितने ही बार ज्वरसे पीड़ित होना पड़ा। फिर उन्होंने घर लौटनेका विचार किया। दुर्भाग्य वश मार्गमें उनकी मृत्यु होगई। तार द्वारा यह समाचार मिसेज़ डोकको मिला। इस प्रकार वे विधवा होगईं" और उनके दोनों बच्चे, एक लड़का और एक लड़की, अनाथ होगये।

जब हम लोग मिसेज़ डोकके घरपर पहुंचे तो महात्माजीने भारतीय रीतिसे माताको नमस्कार किया। विधवा माता गान्धीजीकी प्रतीक्षा कर रही थी। गान्धीजीको देखते ही उसके मुखपर प्रसन्नताके भाव झलकने लगे। मैंने उस समय देखा कि उसके नेत्रोंमें प्रेमके आंसू भर

आये थे ! हम लोग उसी कमरेमें बैठे हुए थे जहां कुछ वर्ष पहले सैकड़ों हिन्दुस्तानी महात्मा गान्धीजीके देखनेके लिये आते थे, और महात्माजी अत्यन्त निर्बलावस्थामें पड़े हुए थे, और मिसेज़ डोक दिन-रात उनकी सेवा कर रही थीं। अब जिस समय महात्मा गान्धी एक स्टूलपर बैठे हुए मिसेज़ डोकसे बात चीतकर रहे थे विधवामाता मिसेज़ डोकके मुखसे मातृप्रेमके भाव झलक रहे थे। गान्धीजीसे उसने बहुतसे सवाल किये। वह बार बार कहती थी "देखो, तुम अब बहुत कमज़ोर होगये हो, तुम्हारा शरीर बहुत दुर्बल होगया है, अपनी तन्दुरुस्तीका ख्याल रक्खा करो" जब उसने गान्धीजीकी स्त्रीकी बीमारीका हाल सुना तो उससे बड़ी चिन्ता होगई। मिसेज़ डोककी निस्स्वार्थता देखकर आश्चर्य होता था। अपने कष्टोंके बारेमें उसने एक भी शब्द गान्धीजीसे नहीं कहाथा। मिसेज़ डोककी लड़की भी वहीं एक कोनेमें चुपचाप बैठी हुई थी, उसके चहरेपर अपनी मांकीसी कोमलता थी। हम लोग मिसेज़ डोकके घर पर बहुत देरतक नहीं ठहर सके, क्योंकि जोहन्स बर्गमें भी मार्शल ला जारी था और आठ बजेके बाद घरसे निकलनेवालोंके मारे जानेकी आशङ्का रहती थी। हम लोग घरसे बाहर सड़कपर आये। हड़तालके कारण भयंकर सन्नाटा था। हां बीच बीचमें कभी कोई हथियार बन्द सिपाही घोड़ेपर चढ़ा इधरसे उधर निकल जाता था, कभी कोई फौज मार्च करती हुई दीख पड़ती थी, गलियाँ बिल्कुल गन्दी पड़ी हुई थी और हमारे चारों ओर अशान्तिका साम्राज्य था; लेकिन हमारे हृदयमें आनन्दमय शान्ति थी क्योंकि हम अपने पवित्र तीर्थस्थानकी यात्रा कर आये थे, अपनी आराध्य माता देवीके दर्शन कर आये थे, और उसके सामने अपनी श्रद्धारूपी भेंट अर्पित कर आये थे।

विलायतमें माताका स्वर्गवास ।

जोहान्सवर्गसे हम लोग डरवनके लिये रवानः हुए। उस समय भी मुझे बुख़ार था। डरवन तक पहुंचते मैं बिल्कुल थक गया था। डरवन स्टेशनके प्लेटफार्मपर मुझे मिस्टर पियर्सनने एक चिट्ठी दी। इस चिट्ठीमें लिखा हुआ था "तुम्हारी माँ अत्यन्त बीमार हैं उनकी हालत रोज़ ब रोज़ खराब होती जाती है" इस पत्रको पढ़कर मेरे हृदयमें यही आशङ्का हुई कि अब मेरी माँ इस संसारमें नहीं हैं। मैंने फ़ौरन ही एक तार विलायतके लिये दिया। उस समय मैं अत्यन्त चिन्तित था। माँसे अधिक प्रिय संसारमें और कौन हो सकता है? बहुतसे हिन्दुस्तानी जनरल स्मट्सके साथ किये हुए समझौते की शर्तोंको जानना चाहते थे। इस लिये कई सहस्र आदमियोंकी भीड़ इकट्ठी हुई थी। उन अदमियोंके सामने मुझे भी कुछ बोलना था। ऐसे अवसरपर, जब कि मैं अपनी माँके लिये अत्यन्त ही चिन्तित था, सभामें बोलना मेरे लिये आसान बात नहीं थी, लेकिन कर्तव्यवश मुझे बोलना पड़ा। दोपहरके बाद मेरे तारका जवाब आया "९ जनवरीको तुम्हारी माँका देहान्त होगया" मैंने यह तार गान्धीजीके पास भेज दिया। थोड़ी देर बाद महात्माजी की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरीबाई तथा अन्य कितनी ही भारतीय स्त्रियाँ, जो जेलसे छूटकर आई थीं, सहानुभूति प्रगट करनेके लिये मेरे निकट आईं। उन सबके दर्शन कर मेरे शोक-पीड़ित हृदयको बहुत कुछ सान्त्वना हुई। उस समय मेरे मनमें यही भावना हुई कि ये भारतीय स्त्रियांही अब़से भविष्यमें मेरी माता हैं। मुझे अपने जीवनमें अनेकबार यह बात अक्षरशः सत्य प्रतीत हुई है। मेरी माताने अपनी अन्तिम बीमारीमें अपनी कुछ चिन्ता न करके मुझे भारत माताकी सेवा करनेके लिये दक्षिण अफ्रिका भेज दिया था। मेरी मां भारतभूमिको हृदयसे

प्रेम करती थी। इसका बदला मुझे पूर्णतया मिलगया है, क्योंकि जहां कहीं मैं गया हूं भारतीय स्त्रियोंने मुझे अपने पुत्रके समान ही समझा है। मुझे विश्वास है कि यह जानकर मेरी मांकी स्वर्गीय आत्माको स्वर्गमें अवश्य सुख होता होगा। अपनी मांकी मृत्युके अनन्तर एक सप्ताहतक मैं एकान्तमें महात्मा गान्धीजीके फीनिक्स आश्रममें रहा। यह समय मैंने शान्तिपूर्वक परमात्माके भजन और माताके स्मरणमें व्यतीत किया।

लार्ड ग्लैडस्टनके सभापतित्वमें व्याख्यान।

तत्पश्चात् मैं केपटाउनको चला आया और कुछ दिनों बाद महात्मा गान्धीजी भी वहीं आगये। वहाँ पर भी हम लोग कितने ही दिनों तक साथ साथ रहे। वहाँके विश्वविद्यालयमें मैंने कविवर रवीन्द्रनाथके जीवन तथा काव्यपर व्याख्यान दिया। तदनन्तर मैंने पार्लमेण्टके मेम्बरोंके सामने भी रवीन्द्रनाथके विषयमें फिर स्पीच दी। उस मीटिङ्गके सभापति दक्षिण आफ्रिकाके गवर्नर जनरल लार्ड ग्लैडस्टन थे। लोग कहते हैं कि इस व्याख्यानका बड़ा प्रभाव पड़ा। जब यूनियन गवर्मेण्टकी पार्लामेण्टके मेम्बरोंने कविवर रवीन्द्रनाथकी सर्वोच्च प्रतिभाके विषयमें सुना तो उन्हें मालूम होगया कि भारत कुलियोंकी ही मातृभूमि नहीं है। उनके विचार भारतके विषयमें बदलगये और उनके इस विचार परिवर्तनसे इंडियन रिलीफ ऐक्टके पास होनेमें बड़ी सहायता मिली। मेरे व्याख्यानके अन्तमें लार्ड ग्लैडस्टनने कहा था "लन्दनकी पाठशालामें भारतका प्राचीन इतिहास पढ़कर मैं मुग्ध होगया था। यहाँके यूरोपियनोंको यह न समझना चाहिये कि भारत नेटालके लिये मजदूर भेजनेवाला एक देश है; भारत एक ऐसा देश है जिसने कविवर रवीन्द्रनाथके समान पुत्ररत्न पैदाकर संसारके अधिवासियोंको चकित कर दिया है।"

दक्षिण अफ्रिकामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूजका काम।

दक्षिण अफ्रिकामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने जो कार्य्य किया था उसका संक्षिप्त वर्णन पाठक उन्हींके शब्दोंमे सुन चुके हैं, फिर भी कुछ बातें अभी शेष रह गई हैं और उनको मैं यहाँ लिखदेना उचित समझता हूँ। जो लोग मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के संसर्गमें आये थे उन सबपर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रेममय मधुर स्वभावका प्रभाव पड़ा था। ता. २ जनवरी सन् १९१४ को डरबनमें व्याख्यान देते हुए आपने कहा था:—"हम भारतसे एक सन्देश लाये हैं। यह सन्देश 'प्रेम' का है। इस भूमिपर पैर रखते ही हमें असंख्य भारतीयोंके मुख देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिससे हमारा मन आनन्दसे उमड़ रहा है। भारत वर्षको मैं बड़े प्रेम की दृष्टिसे देखता हूं, वैसाही दूसरा भारत मुझे यहाँ दीख पड़ता है। मैं और मिस्टर पियर्सन दोनों देखते हैं कि हम लोग किसी अजान देशमें नहीं आये हैं वरन् प्रेम और मित्रतासे युक्त देशमें आपहुँचे हैं। भारत आपकी ओरसे बे पर्वाह नहीं है। ऐसा एक भी दिन भारतके लिये न बीता होगा, जिस दिन आपको स्मरण न किया गया हो, और आपके कल्याणके लिये ईश्वरसे प्रार्थना न की गई हो। दक्षिण अफ्रिका सम्बन्धी प्रश्नमें हिन्दू मुसलमान पारसी क्रिश्चियन आदि सब जाति और धर्मके मनुष्य एक मत हैं। मुसलमान जातिमें हमारे कितने ही मित्र हैं, उसी प्रकार हिन्दुओंसे भी हमारी गाढ़ी मित्रता है। हमारे परम मित्र कविशिरोमणि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरने आपके लिये एक सन्देश भेजा है वह यह है।

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। आनन्दरूपममृतं यद्विभाति।
शान्तं शिममद्वैतम्।

अर्थात् जो परब्रह्म सत्य स्वरूप, ज्ञानस्वरूप और अनन्त स्वरूप है और जो आनन्दमय अमृतरूपसे प्रकाशित है जो सुखदायक है, जो

एकही है और जिसके समान कोई दूसरा नहीं है, उसका मैं ध्यान धरता हूं।"

प्रिटोरिया नगरमें व्याख्यान देते हुए मि. ऐण्ड्र्यूजने कहा था "भारतमें दो वृद्ध मुसलमान मेरे मित्र थे। उन्हें मैं पिताके तुल्य समझता था और वे भी दोनों मुझे पुत्रके समान मानते थे। उनके नाम मौलवी नज़ीर अहमद और मौलवीज़का उल्ला थे। ये दोनों दिल्लीके प्रख्यात नागरिक थे। इनके शुद्ध आदेशसे मैंने हिन्दू और मुसलमानोंसे एकसा प्रेम करना सीखा और सैण्ट स्टीफन्स कालेजके प्रिंसीपल रुद्रसे मैंने भारतकी विद्वत्ताका मान करना सीखा। मिस्टर रुद्र ईसाई हो गये हैं पर भारतसे उनका अगाध प्रेम है। मैंने गुरुकुल कांगड़ीके महात्मा मुंशीराम और शान्तिनिकेतन बोलपुरके गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ ठाकुरसे प्राचीन ऋषियोंके जीवनकी पवित्रताके विषयमें शिक्षा प्राप्त की, इससे भारतके प्रति मेरा प्रेम और भी बढ़ गया।"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ दक्षिण अफ्रिकाके बड़े बड़े राजनीतिज्ञोंसे मिले थे। और उनको अपने मधुर स्वभावसे इतना मुग्ध कर लिया था कि वे भारतीय प्रश्नोंकी और साम्राज्यके हितकी दृष्टिसे देखने लगे थे। जोहान्सबर्गमें व्याख्यान देतेहुए महात्मा गान्धीजीने कहा था:—

"And here I have been told in Capetown, and I believe it implicitly, the spirit of Mr. Andrews had pervaded all those statesmen and leading men whom he saw. He came and went away after a brief period, but he certanily fired those whom he saw with a sense of their duty to the Empire of which they are members."

अर्थात् "मुझसे केपटाउनमें लोगोंने कहा, और मुझे निस्सन्देह इस बातपर विश्वास है, कि जिन जिन राजनीतिज्ञों और प्रधान मनुष्योंसे

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ मिले उन सबके हृदय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विचारोंसे प्रभावित हो गये थे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ यहां थोड़े दिन रह कर चले गये, लेकिन दर हक़ीकत जिन लोगोंसे उनका मिलना हुआ उन लोगोंके दिल, साम्राज्यके प्रति उनके जो कर्तव्य है, उसके भावोंसे प्रज्वलित हो गये।"

दक्षिण अफ्रिका यात्राका मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़पर प्रभाव

दक्षिण अफ्रिकाकी यात्राका मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के जीवन पर बड़ा प्रभाव पडा। दक्षिण अफ्रिका जानेके पूर्व मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के नामको भारतके शिक्षित आदमी ही जानते थे लेकिन दक्षिण अफ्रिका जानेसे आपका नाम साम्राज्यभरमें फैलगया। दाक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंका प्रश्न केवल राष्ट्रीय दृष्टिसे ही नहीं वल्कि ब्रिटिश साम्राज्यके हितकी दृष्टिसे भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था। सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्यमें सत्याग्रह सम्बन्धी समाचार छप रहे थे। और लन्दनमें पार्लामेण्ट भी बड़ी चिन्तित थी। बहुत दिनोंसे किसी भारतीय प्रश्नपर पार्लामेण्टको इतना चिन्तित नहीं होना पड़ा था। जिन दिनों दाक्षिण आफ्रिकामें रेलवालोंकी बड़ी भयंकर हड़ताल थी, और लोग राज्यक्रान्तिकी भी आशङ्का कर रहे थे, उस समय भी वहां की सरकार भारतीयोंके प्रश्नको अत्यन्त महत्वपूर्ण समझती थी। नित्यप्रति आश्चर्य्यमय घटनाऐं हो रही थीं और परिस्थिति बड़ी उत्तेजनापूर्ण थी। "भारतका साम्राज्यमें क्या स्थान है?" और 'भविष्यमें भारतका ब्रिटिश साम्राज्यसे क्या सम्बन्ध होगा? इन प्रश्नोंपर आज मिस्टर ऐंड्र्यूज़की बात प्रमाण मानी जाती है। लेकिन यह महत्वपूर्ण पद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को योंही आसानीसे नहीं मिल गया। संन् १९१४ से अवतक ७ वर्षोंमें आपको ब्रिटिश साम्राज्य सम्बन्धी प्रश्नोंके हल करनेमें दिनरात परिश्रम करना पड़ा है, तब कहीं

उन्हें यह गौरव प्राप्त हुआ है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का नाम अब साम्राज्य भरमें प्रसिद्ध होगया है और उनकी इस प्रसिद्धिका प्रारम्भ सन् १९१४ में दक्षिण अफ्रिका सम्बन्धी यात्रासे ही हुआ है। भारतका शिक्षित जन समुदाय तो आपको वहुत पहले ही जान चुका था। दक्षिण अफ्रिका यात्राने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनमें एक महत्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया। कालेजके प्रोफेसरके पदमें, और ब्रिटिश साम्राज्यके एक प्रसिद्ध पुरुषके पदमें वड़ा भारी अन्तर है। लेकिन इस उत्तेजनापूर्ण समयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ विल्कुल शान्त और गम्भिर रहे। इसके कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के ही शब्दोंमें सुनाना ठीक होगा। इन कारणोंको पढ़कर पाठक उनकी प्रवृत्तिको अच्छी तरह समझ सकेंगे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं। "दक्षिण अफ्रिकामें मेरे जो दिन व्यतीत हुए वे मेरे जीवनमें अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण थे, लेकिन तीन कारणोंसे मैं इन दिनोंको विल्कुल शान्तिपूर्वक व्यतीत करसका। पहला कारण तो यह था कि शान्तिनिकेतन आश्रमकी शान्तिका चित्र मेरे हृदयमें वरावर उपस्थित था। शान्तिनिकेतनकी शान्तिका स्मरण करनेपर मेरी सारी उत्तेजना दूर हो जाती थी। इसके व्यतिरिक्त कविशिरोमणि श्रीरवींद्रनाथने मेरी सहायताके लिये और प्रवासी भारतीयोंके लिये दो संस्कृत मंत्र मुझे वतला दिये थे। वे मंत्र ये हैं।

ॐ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म आनन्दरूपममृतं यद्विभाति।
शान्तं शिवमद्वैतम्

असतोमा सद्गमय। तमसोमा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय। आवीराविर्म्म एधि रुद्र यत्ते
दक्षिणां मुखं तेन मां पाहि नित्यम्।

इन मंत्रोंका अर्थ भी मैंने उच्छी तरह समझ लिया था और इन्हें मैं ईश्वर भजन करते समय वरावर पढ़ा करता था। जिससे मेरे हृदयको

अपूर्व शान्ति मिलती थी। **दूसरा कारण** महात्मा गान्धीजीका सत्सङ्ग था। उस महान संग्राममें महात्मा गान्धीजी बिल्कुल शान्त थे। वे कभी भी उत्तेजित नहीं होते थे। जब कभी मैं महात्मा गान्धीजीके कार्यपर विचार करता था तो मुझे श्रीमद्भगवद्गीताके "निष्कामकर्म" की याद आजाती थी। जिस तरह श्रीकृष्णने महाभारतके युद्धमें अर्जुनके चंचल हृदयको स्थिर कर दिया था उसी प्रकार महात्माजी प्रवासी भारतीयोंकी महान शक्तिका बड़ी स्थिरताके साथ संचालन कर रहे थे। उस महान युद्धके बीचमें, जो उनके चारों ओर हो रहा था, वे बराबर प्रसन्न चित्त रहते थे। उनको अस्थिर चित्त हमने कभी नहीं देखा। इस विषयपर मैं मिस्टर पियर्सनके साथ प्रायः बातचीत किया करता था। हम लोग आपसमें कहा करते थे कि सचमुच महात्मा गान्धीजी गीताके 'निष्काम कर्म' का उदाहरण संसारके सामने उपस्थित कर रहे हैं। डरबनका एक दृश्य मुझे अबतक स्मरण है। लगभग १ हजार तैमिल स्त्रियां गान्धीजीके चारों ओर एकत्रित थीं। वे अपने बच्चोंको गान्धीजीसे आशीर्वाद देनेके लिये लाई थीं। जब महात्मा गान्धीजी इन बच्चोंको अपनी गोदमें लेकर मुस्कराते हुए आशीर्वाद देते थे तो उस समय मुझे उनकी कोमल मुख कान्तिको देकर स्वयं प्रभु क्राइस्टका स्मरण हो आता था। **तीसरा कारण** मेरे शान्त रहनेका यह था कि यद्यपि मैं उस राजनैतिक झगड़ेमें फँसा हुआ था तथापि मेरा मन धार्मिक प्रश्नोंके हल करनेमें लगा हुआ था। ईसाई मतके विषयमें मेरे विचारोंमें परिवर्तन हो रहा था। दिन रातमें जब कभी मुझे अवकाश मिलता मैं बराबर इन्हीं धार्मिक प्रश्नोंको सोचा करता था। राजनैतिक कार्य्योंमें लगे रहने पर भी मैं उनमें पूर्णतया लिप्त कभी नहीं हुआ। संसारमें धर्मकी महान शक्तियाँ क्या क्या काम कर रहीं हैं यही विचार मेरे मस्तिष्कमें बराबर घूमा करता था। जब मैं गान्धीजीके

हिन्दू और मुसलमान अनुयायियोंको आनन्दपूर्वक अत्याचार सहन करते हुए देखता था तो मुझे ईसाई मतके प्रारम्भिक इतिहासका स्मरण हो आता था। जब मैं इन लोगोंके बीचमें निवास कर रहा था उस समय मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मैं प्राचीन कालके ईसाइयोंके एक छोटेसे समूहके बीचमें रहता हूँ। पुराने जमानेमें जिस तरह इन ईसाइयों पर अत्याचार किये गये थे और जिस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक इन्होंने उन अत्याचारोंको सहन करते हुए भी अपने अत्याचारियोंसे प्रेम ही किया था उसी तरह गान्धीजी तथा उनके अनुयायी दक्षिण अफ्रिकामें कष्टोंको सहन कर रहे थे। यह देखकर मेरे मनमें नानाप्रकारके विचार उठते थे। जब मैं भारत वर्षसे दक्षिण अफ्रिकाके लिये रवानः हुआ था उस समय महात्मा गोखले ने मुझसे कहा था 'I am afraid this experience in South Africa will be a great shock to your Christianity." "मुझे इस बातकी आशङ्का है कि दक्षिण अफ्रिकामें आपको जो अनुभव होंगे उनसे आपके ईसाई मत सम्बन्धी विचारोंको बड़ा भारी धक्का पहुंचेगा।" महात्मा गोखलेकी बात अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई लेकिन बड़ी असाधारण और विचित्र बात यह हुई कि मुझे अपने ईसाई मतके सच्चे आदर्शोंकी शक्तिका जीताजागता उदाहरण महात्मा गान्धीजी तथा उनके अनुयायियोंमें जो हिन्दूमतके अहिंसा धर्मका पालन कर रहेथे, प्रत्यक्ष दीख पड़ा अब यह बात अच्छी तरह मेरी समझमें आगई कि बौद्ध धर्मकी शिक्षाएँ तथा बाइबिलके Sermon on the mount की शिक्षाएँ बिल्कुल एकसी ही हैं। बहुत वर्षोंसे मैंने इस प्रश्नको विद्यार्थीकी भांति पुस्तकों द्वारा अध्ययन किया था लेकिन दक्षिण अफ्रिकामें मेरे सामने यह प्रश्न सजीव अवस्थामें उपस्थित हो गया था। मेरे धार्मिक विश्वासोंमें अनेक परिवर्तन हो चुके हैं लेकिन इतना बड़ा परिवर्तन कभी नहीं हुआ जितना

मेरी दक्षिण अफ्रिका यात्रामें हुआ था और विचित्रताकी बात तो यह थी कि जब मेरे चारों ओर राजनैतिक झगड़े हो रहे थे, और मुझे भी स्वयं उनमें भाग लेना पड़ता था, उस समय मेरे आन्तरिक जीवनमें यह परिवर्त्तन हो रहा था। अपने आध्यात्मिक जीवनके इस परिवर्तनके कारणसे ही मैं उस उत्तेजना पूर्ण राजनैतिक परिस्थितिमें शान्त रह सका। उस समय मैंने कविवर रवीन्द्रनाथको दो पत्र दक्षिण अफ्रिकासे लिखे थे, ये पत्र बड़े लम्बे लम्बे थे लेकिन स्वयं मेरे लिये अब आश्चर्यकी बात तो यह है कि इन दोनों पत्रोंमें मैंने धर्म सम्बन्धी बातें ही लिखी थीं और राजनैतिक मामलोंके बारेमें दो चार पंक्तिसे अधिक कुछ नहीं लिखा था। दक्षिण अफ्रिकासे विलायत पहुँचकर भी मैंने महात्मा गोखलेको अपने आध्यात्मिक अनुभव ही अधिक सुनाये थे और राजनैतिक संग्रामका वृत्तान्त बहुत ही संक्षेपमें सुनाया था। उस समय महात्मा गोखले अत्यन्त ही बीमार थे और उन्हें स्वयं अपनी मृत्युकी आशङ्का थी लेकिन उस समय मरणासन्न होने पर भी उन्हें आध्यात्मिक बातें ही विशेष मनोरंजक प्रतीत हुईं। राजनैतिक बातोंकी ओर उन्होंने इतना ध्यान नहीं दिया जितना मेरी धार्मिक बातोंकी ओर। यह बात ध्यान देने योग्य है कि सत्याग्रहके संग्रामसे महात्मा गोखलेका घनिष्ठ सम्बन्ध था और उन्होंने कई लाख रुपये उसके लिये इकट्ठे किये थे। सच बात तो यह है कि महात्मा गोखलेकी प्रवृत्ति जितनी धार्मिक थी उतनी राजनैतिक नहीं थी। लोग इस बातको प्रायः भूल जाया करते हैं। कितने ही आदमियोंको मैंने यह कहते हुए सुना है कि महात्मा गोखले "पालिटिकल सन्यासी" थे। जहाँ तक मुझे उनके साथ रह कर उनकी प्रवृत्तिका अनुभव हुआ है इन दोनों शब्दोंमें मैं "सन्यासी" शब्द पर ज्यादः ज़ोर देता हूँ "पालिटिकल" शब्द पर कम। मैं तो यही समझता हूँ कि उनमें सन्यासीपन की ही प्रधानता थी। मेरा विश्वास है कि वे अत्यन्त धार्मिक मनुष्य थे।

दक्षिण आफ्रिका यात्रासे मुझे अपनी वृत्तिका भी पता लग गया। मैं प्रायः प्रश्नोंपर धार्मिक दृष्टिसे देखा करता हूँ और राजनैतिक प्रश्नोंपर भी मैं धार्मिक दृष्टिसे देखे विना नहीं रह सकता डरबनके आर्च डिकन (पादरी) ने मुझे वहाँ गिरजा घरमें व्याख्यान देनेके लिये कहा था। मैंने उनकी आज्ञाका पालन किया।

सच्चा ईसाई धर्म कहाँ था ?

व्याख्यानके लिये मैंने वाइविलका यह मुख्य वाक्य चुनलिया " There came wise men from the East. " अर्थात् " पूर्वसे बुद्धिमान मनुष्य आये " इस वाक्यका अनर्थ करते हुए " नेटाल एडवर्टाइज़र " नामक पत्रने मेरा मज़ाक उड़ाया था इस पत्रने लिखा था " रेवरेण्ड ऐण्ड्रयूज़ और पियर्सनको इतना अभिमान न करना चाहिये, हम जानते हैं कि वे पूर्वसे यानी भारतसे आरहे हैं, लेकिन दुनियाँमें वे ही अकेले बुद्धिमान नहीं हैं। संसारमें और भी बहुत से बुद्धिमान पड़े हुए हैं।" जब मैं व्याख्यान देकर गिरजाघरसे वाहिर निकला तो मुझे यह सुनकर हार्दिक दुःख हुआ कि महात्मा गान्धीजी मेरा व्याख्यान सुननेके लिये गिरजा घरमें आना चाहते थे लेकिन उन्हें गोरोंने घुसने नहीं दिया ! इस समय मेरी आखोंके सामने दो चित्र थे एकतो ईसाई मतके पवित्र स्थान-गिरजा घरका और दूसरा फीनिक्स आश्रमका। एक दिन शामके वक्त हम लोग फीनिक्स आश्रममें बैठे हुए थे। रात्रि होनेपर महात्माजीने हम लोगोंके सामने प्रेमके विषयमें कुछ भाषण किया। टीनसे पटे हुए घरमें हम हिन्दुस्तानी अफ्रिकन और यूरोपियन सब भाई एक दूसरेसे प्रेम पूर्वक बात चीत कर रहे थे। हम सभी एकसी ही कठिनाइयाँ सह रहे थे और आपसमें एक दूसरेको समान समझते थे। जातीय द्वेषका वहाँ नामोनिशान नहीं था। इस प्रकार एक ओर तो मेरी दृष्टिके सामने गिरजा घरका वह विशाल भवन था जहाँसे महात्मा गान्धीजी निकाल

दिये गये थे और दूसरी ओर टीनसे पटा हुआ फीनिक्स आश्रम था जहाँ सबके साथ भ्रातृभावसे वर्ताव किया गया था । उस समय मैंने दिलमें सोचा " सच्चा ईसाई धर्म कहाँ है ?" उस गिरजा घरमें या इस आश्रममें ? कहनेकी आवश्यकता नहीं कि सच्चा ईसाई धर्म गान्धीजीके आश्रममें ही था । दक्षिण अफ्रिका यात्रासे मेरी समझमें यह बात आगई कि हिन्दु धर्म और ईसाई धर्म असली तत्वोंमें कुछ अन्तर नहीं ।

केपटाउनमें धर्मसम्बन्धी व्याख्यान

केपटाउनके गिरजा घरमें जब व्याख्यान देनेके लिये मुझसे कहा गया तो मैंने यही बात अपने श्रोताओंके सामने कही थी । मैंने कहा था " मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि क्रिश्चियनिटीका आन्तरिक भाव पाश्चात्य देशोंसे दूर होता जाता है, क्योंकि पाश्चात्य देशोंके निवासी दो देवताओंकी पूजा करने लगे हैं एक तो धन और दूसरा गौर वर्ण की उच्चतामें विश्वास । पूर्वके अत्याचार पीड़ित निर्धन मानव-समाजमें मुझे असली ईसाई मतके जितने भाव दीख पड़ते हैं उतने पश्चिमकी धनवान जातियोंमें नहीं." इस व्याख्यानके अन्तमें मैंने कहा था ।

I have found Christ far more intimately present in the Indian and Kaffir locations placed outside the cities of the Rand, than in those cities themselves built of gold with all its fatal curse upon it. And the question has come upon me with a sad, a terrible insistence, as I have travelled across many seas, fast many shores, whether the modern, aggressive, wealthy nations of the world, armed to the teeth against each other, trafficking in souls of men for gain, can be for long the dwelling place of the meek and lowly Christ; whether the hour may not be near, when He will say to them " Woe

unto you" and will turn instead to the poor and down-trodden peoples of the earth and say unto them "Come unto me." अर्थात् "यहां दक्षिण आफ्रिकामें सोनेकी खानोंके निकट अनेक नगर बसे हुए हैं। हिन्दुस्तानी और काफ़िर लोग इन नगरोंसे बाहर अलग मुहल्लोंमें बसा दिये गये हैं। लेकिन मुझे इन हिन्दुस्तानियों और काफ़िरोंके मुहल्लोंमें क्राइस्ट जितने विद्यमान दीख पड़ते हैं उतने इन विशाल शहरोंके भीतर नहीं दीख पड़ते। ये शहर सुवर्णके कारण ही इतने धनवान हुए हैं और इस बुरी कमाईका पाप इनके सिरपर है। अनेक सागरोंमें और समुद्रतटोंके निकट यात्रा करते वार वार मेरे सामने यही दुःखदायक और भयंकर प्रश्न आया है। "क्या यह सम्भव है कि संसारके ये आधुनिक वैभवशाली राष्ट्र, जो झगड़ालू और सिरसे पैर तक हथियार बन्द हैं। तथा जो अपने स्वार्थके लिये मनुष्योंकी आत्माओंका व्यापार कर रहे हैं, वहुत दिनों तक नम्र और निरहंकारी क्राइस्टके निवासस्थान बने रहें? क्या अब वह समय निकट नहीं है जब वह इन राष्ट्रोंसे कहेगा "तुम्हारा सत्यानाश हो" और संसारकी निर्धन अत्याचार पीड़ित जातियोंसे कहेगा "आओ तुम मेरे निकट आओ?

ये शब्द मैंने अप्रैल सन् १९१४ में कहे थे और महायुद्ध अगस्त सन् १९१४ में प्रारम्भ हुआ। उस समय जब मैंने उपर्युक्त व्याख्यान दिया था मुझे इस बातका विल्कुल अनुमान नहीं था कि इन राष्ट्रोंका संकट इतना निकट है फिर भी ये शब्द भविष्यद्वाणीकी तरहके सिद्ध हुए। मैंने अपना यह व्याख्यान महात्मा गोखलेको भी दिखलाया था और वे चिट्ठियां भी जो मैंने कविशिरोमणि रवीन्द्रनाथको लिखी थीं, उन्हें पढ़कर सुनाई थीं।

दक्षिण अफ्रिकासे विलायतके लिये प्रस्थान

मैं आर ऐम ऐस ब्रिटन नामक जहाज़ द्वारा केपटाउनसे विलायतके लिये रवाना: हुआ था। जहाज़ पर मैं प्राय: तीन बजे रात्रिके समय उठा करता था और उठकर तारागण पूरित आकाशके नीचे बैठकर सोच विचार किया करता था। उस समय मेरे हृदयमें आश्चर्यजनक प्रसन्नता होती थी। यद्यपि मैं अपनी माताके स्वर्गवाससे अत्यन्त दुःखित था तथापि उनकी आज्ञानुसार प्रवासी भारतीयोंके प्रति अपना कर्तव्य पालन करनेके कारण मुझे हार्दिक हर्ष था। समुद्र यात्रामें मैं प्राय: बीमार हो जाता हूँ। इस बार भी बीमारीने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। दक्षिण अफ्रिकासे प्रस्थान करते समयका एक दृश्य अब भी मेरी आखोंके सामने है। महात्मा गान्धीजी तथा उनकी पत्नी श्रीमती कस्तुरी बाई दोनोंही पहुँचानेके लिये मुझे जहाज़ तक आये थे। श्रीमतीका स्वास्थ्य अब ठीक हो गया था और उन्होंने मुझे जहाज़ तक पहुँचानेके लिये आनेका आग्रह किया था। जब मैं जहाज़में बैठा तो महात्मा गान्धीजिकी धर्मपत्नीने टूटी फूटी अंग्रेजीमें मुझसे कहा "We are all very sorry, you are going, we give you our love; we love you very much." अर्थात् "हम सबको बड़ा रंज है, तुम जारहे हो, हम तुम्हें अपना स्नेह देती हैं, हम तुमको बड़ा स्नेह करती हैं" मैंने अपने हृदयमें कहा "स्नेहमयी हिन्दू माता, सती साध्वी पूज्य मां, आज इस परदेशमें तुमने जो स्नेह मुझे प्रदान किया है उसके कारण मेरा भारत मातासे और भी अधिक घनिष्ट सम्बन्ध हो गया है। अपनी मांके स्वर्गवाससे मैं अत्यन्त दुःखित हूँ, इस समय तुम्हारे इस स्नेहने मुझे भारतमाताका और भी अधिक भक्त बना दिया है। परमात्मा करे कि मैं तुम्हारे इस प्रेमका बदला भारतमाताकी सेवा करके चुकाऊं। तुह्मारा कोमल सहानुभूतिपूर्ण सुन्दर मातृ-

प्रेम मैं जीवन पर्य्यन्त नहीं भूल सकता। तुम्हारे इस स्नेहके कारण मेरा जीवन अधिक उदार और पवित्र हो जावेगा" जब मेरा जहाज़ बन्दरगाहसे चल दिया तो मैंने देखा कि एक चट्टानके कोने पर महात्मा गान्धीजी तथा उनकी धर्मपत्नी अपने दोनों हाथ जोड़कर आकाशकी ओर किये हुए थे और मेरी सकुशल यात्राके लिये परमात्मासे प्रार्थना कर रहे थे। यह सुन्दर दृश्य मुझे जीवन भर नहीं भूल सकता। चारों ओर अथाह समुद्र था, एक चट्टान पानीमें बहुत दूर तक चली आई थी, और इस चट्टानके अन्तिम कोने पर महात्मा गान्धीजी सपत्नीक ऊपरकी ओर हाथ किये हुए खड़े थे। इङ्गलैण्डके निकट पहुँचते पहुँचते मौसम और भी ज्याद: खराब हो गया। हवा बड़े जोरोंसे चल रही थी और सर्दीका तो कुछ ठिकाना नहीं था।

विलायतमें महात्मा गोखलेके साथ

मार्चके प्रथम सप्ताहमें मैं विलायत पहुंचा। मैं सोचता था कि मेरे भाईको छोड़कर और कोई मेरे विलायत पहुँचनेका समाचार न जानता होगा लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा तो वाटरलू स्टेशन पर मुझे लेनेके लिये बहुतसे भारतीय उपस्थित थे। भयंकर सर्दीमें ये लोग अपने घरसे स्टेशन तक आये थे। श्रीमती सरोजनी नायडू फूलोंका हार लिये हुए खड़ी थीं। लन्दन प्रवासी भारतीयोंकी इस कृपाको देखकर मेरा हृदय भर आया। दक्षिण अफ्रिकाके मिस्टर सोराबजी मुझे अपने घर पर ले गये। समाचार पत्रोंके संवाददाता मुझसे बहुतसी बातें पूँछनेके लिये आये। 'टाइम्स' तथा अन्य प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रोंके सम्पादकोंने मुझे आज्ञा दी कि मैं दक्षिण आफ्रिका सम्बधी समझौते पर कुछ लिखूँ। मुझे शीघ्र ही महात्मा गोखलेकी सेवामें उपस्थित होना था। उस समय वे अत्यन्त बीमार थे। बहुत थोड़ेसे समयमें ही मैंने दक्षिण आफ्रिका का मामला उनके सामने उपस्थित कर

दिया और समझौतेकी सब बातें उन्हें बतलादीं। महात्मा गोखलेके प्रत्येक शब्दसे, जो उन्होंने महात्मा गान्धीजीके विषयमें कहे, प्रेम टपकता था। फिर महात्मा गोखलेने हँस कर मुझसे कहा "you too are determined to kill yourself, You must take it more easily." मालूम होता है कि बहुत परिश्रम करते करते तुम भी अपनेको मारे डालते हो। तुम्हें अधिक आरामके साथ काम करना चाहिये" यह सुनकर मुझे हँसी आगई और मैंने कहा "And what about you?" आप अपनी बात कहिये" जिस समय मैं दिल्लीसे दक्षिण अफ्रिकाके लिये रवानः हुआ था उस समय महात्मा गोखले दिल्लीमें ही थे और असाधारण परिश्रम कर रहे थे। उस वक्त मैंने उनसे यही कहा था कि आप इतना अधिक परिश्रम न कीजिये क्योंकि इससे आपके स्वास्थ्यको भयंकर हानि पहुँचेगी। यही बात लन्दनमें महात्मा गोखलेने अब मुझसे कह दी। डाक्टरने उन्हें राजनैतिक मामलों पर बातचीत करनेसे मना कर दिया था क्योंकि उससे उत्तेजना उत्पन्न होती थी, इस लिये मैंने राजनैतिक विषयों पर उनसे बहुत ही कम बातचीत की। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि महात्मा गोखलेको मेरे धार्मिक अनुभव बहुत मनोरंजक प्रतीत हुए। महात्मा गोखलेको सत्याग्रहके संग्रामकी विजयसे हार्दिक हर्ष हुआ। इस संग्रामकी एक घटना यहाँ उल्लेख योग्य है।

जिस समय दक्षिण अफ्रिकामें यूनियन सरकारने कमीशन मुकर्रर किया था। महात्मा गान्धीजीने उसके सामने गवाही देनेसे इंकार कर दिया था। महात्मा गोखलेने उस समय गान्धीजीको तार दिया था "आपको भारतीयोंके साथ कमीशनके सामने गवाही देनी चाहिये" गान्धीजी इस बातके घोर विरोधी थी वे कहते थे "जो कमीशन हमारी सम्मति लिये विना नियुक्त कर दिया गया है उसके सामने गवाही देना हमारे लिये अपमान जनक है" मैं भी गान्धीजीसे इस बातमें

सहमत था। इसके बाद महात्मा गोखलेने उन्हें फिर एक तार भेजा था कि आप कमीशनके सामन गवाही दीजिये। उस समय गान्धीजीको बड़ा कष्ट हुआ था। वे कहते थे "गोखले मेरे राजनैतिक गुरु हैं और उनकी आज्ञाका उल्लंघन करना मेरे लिये अत्यन्त कष्टदायक है लेकिन फिर भी मुझे इस आज्ञाका उल्लंघन करनाही पड़ेगा" मैंने महात्मा गोखलेको सारा किस्सा सुनाया। उसे सुनकर उनका हृदय द्रवित होगया लेकिन फिर भी वे हम लोगोंसे सहमत नहीं हुए। उनकी सम्मति फिरभी यही थी कि कमीशनके सामने गवाही देनाही बहतर होता। अस्तु जो कुछ होगया सो होगया। महात्मा गोखले को गान्धी-जीकी विजय से अत्यंत हर्ष हुआ था।

पिताजीकी सेवामें

महात्मा गोखलेसे मिलनेके बाद मेरे हृदयमें अपने पिताजीके दर्शन करने की बड़ी भारी इच्छा थी। इसके सिवाय मैं अपनी स्वर्गीय माताकी मृत्युके समयकी सब बातें सुनना चाहता था। यह भी मैं जानता था कि मेरे पहुंचनेसे वृद्ध पिताजी तथा बहनोंको बहुत कुछ तसल्ली होगी। जब मैं घरपर पहुँचा तो मुझे मेरी बहनोंने कहा "अपने अन्तिम दिनोंमें माताने तुम्हारी बहुत याद की थी और उन्होंने बड़ी खुशीके साथ कई बार कहा था कि बड़े आनन्दकी बात है कि मेरा बेटा चार्ली अपना कर्तव्य पालन कर रहा है। वे बहुत बीमार रही थीं।" मेरी माताकी मृत्युसे पिता-जीको बड़ा दुःख हुआ था, और वे बहुत निर्बल होगये थे। मेरी बहनें उनकी सेवा सुश्रूषा करती थीं। बड़ी शान्तिपूर्वक मेरे पिताजीने दक्षिण अफ्रिकासम्बन्धी झगड़ेके विषयमें सब बातें सुनीं। वे इन बातोंको जाननेके लिये अत्यन्त उत्कण्ठित थे, और उन्होंने छोटी छोटी बातें भी पूंछी। उन्हीं दिनों मुझे एक पत्र कविशिरोमणि श्रीरवीन्द्र-

नाथ ठाकुरका मिला था, जिससे मुझे हार्दिक हर्ष हुआ था। लन्दनमें जबतक मैं रहा बराबर महात्मा गोखलेके पास जाता रहा । भारतके उपसचिव चार्लस राबर्ट्सके पास हाउस ऑफ कामन्समें भी मुझे नित्यप्रति जाना पड़ता था । दक्षिण अफ्रिकाके मामलेके विषयमें इंडिया—आफ़िस तथा कालोनिमल आफिसमें भी मुझे जाना पड़ा था । मुझे सुप्रसिद्ध चित्रकार राथेनस्टीनसे भी मिलना था। एक दिन जब मैं उनके घर जानेके लिये ट्रेनमें चढ़ने लगा मेरे घोंटूमें बड़ी चोट लग गई । बहुत दिनतक यह चोट रही। काम की इतनी भीड़ थी कि मुझे लंगड़ाते इधर उधर घूमना पड़ता था इस लिये इस चोटके अच्छे होनेमें और भी देर लग गई । इन दिनोंमें मैं यथा सम्भव पिताजीकी सेवामें रहा था। महात्मा गोखलेसे जब कभी फिर मैं लन्दनमें मिला मैंने राजनीति सम्बन्धी बातें उनसे कभी नहीं कीं । पूर्वके संसर्गसे मेरे धार्मिक विचारोंमें भी परिवर्तन हुए थे, उन्हें महात्मा गोखलेने बड़े ध्यानपूर्वक सुनाथा । अन्तमें मेरे भारत लौटनेके दिन निकट आगये । इस बार मैं इङ्गलैण्डमें १५ दिनसे अधिक नहीं रह सका था, और इन दिनोंमें मुझे बड़ी दौड़धूप करनी पड़ी थी । अप्रैल सन् १९१४ में मैं भारतको वापस चला आया।"

इस अध्यायके समाप्त करनेके पहले यह कह देना अत्यन्त आवश्यक है कि मि. ऐण्ड्रयूजके साथी मिस्टर पियर्सनने दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयों की जो सेवाकी थी वह सचमुच अमूल्य थी । वे नैटालमें बराबर इधरसे उधर घूमते रहे और उन्होंने कुली लेनोंकी दुर्दशा अपनी आँखोंसे देखी थी, और उन्होंने अपनी दक्षिण अफ्रिका सम्बन्धी यात्राकी बड़ी योग्यता पूर्ण रिपोर्ट 'माडर्न रिव्यू' में प्रकाशित की थी। मिस्टर पियर्सनकी यात्राकी एक मजेदार घटना यहाँ लिखना अनुचित न होगा। एक बार मिस्टर पियर्सन दक्षिण अफ्रिकाके किसी

गाँवमें खेतोंके निकट घूम रहे थे। रात होनेपर आपने वहीं ठहर जानेका निश्चय किया। वहीं किसी गोरेकी एक कोठी थी। मिस्टर पियर्सनने उस घरकी मालिक बुड्ढी लेडीसे कहा "अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं यहीं ठहरना चाहता हूँ" उस बुढ़ियाने बड़ी खुशीसे मिस्टर पियर्सनको ठहरनेंकी आज्ञा देदी। जिस समय मिस्टर खाना खा रहे थे उन्होंने उस लेडीसे कहा "मैं हिन्दुस्तानसे आया हूँ" यह सुनते ही वह बुढ़िया बोली "I wonder if you know anything of that man named Andrews. I would like to give him a bit of my mind. Fancy his touching the feet of an asiatic! Did you ever hear of such a thing?" "क्या तुम उस आदमीके बारेमें कुछ जानते हो जिसका नाम ऐण्ड्रयूज़ है? मैं दिल खोल कर उसे दो बातें सुनाना चाहती हूँ। इस बात पर ज़रा ध्यान तो दो, कि उसने एक एशियावासीके पैर छूलिये! क्या तुमने कभी ऐसी बात पहले भी सुनी थी?" यह सुनकर मिस्टर पियर्सन खूब खिलखिलाकर हँसे और फिर बोले "Andrews is my best friend. We came out together and I would like to do just the same as he did." अर्थात् "ऐण्ड्रयूज़ तो मेरे सर्वोत्तम मित्र हैं। हम लोग साथ ही साथ आये थे, जो काम उन्होंने किया वह मैं भी खुशीके साथ करनेके लिये तय्यार हूँ।"

यह सुनकर उस बुढ़ियाको अचम्भा हुआ, लेकिन वह मिस्टर पियर्सनके मधुर स्वभावसे बड़ी प्रसन्न हुई। दूसरे दिन प्रातः कालमें मिस्टर पियर्सन वहाँसे चले आये। दक्षिण अफ्रिकामें जिन जिन लोगोंके साथ मिस्टर पियर्सन रहे वे मिस्टर पियर्सनके प्रेम मय स्वभाव पर मुग्ध हो गये। उनके स्वभावके कारण वे यूरोपियन भी, जिनके साथ मिस्टर पियर्सन ठहरे थे, दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंके शुभ-चिन्तक बन गये।

आठवाँ अध्याय

शान्ति निकेतनमें आगमन

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ विलायतसे अप्रैलमें लौट आये थे। कुछ दिनों तक दिल्लीमें रहकर और मिशनरी सुसाइटीको अन्तिम नमस्कार करके मई मासमें आप नैनीतालके निकट कविशिरोमणि श्रीरवीन्द्रनाथके निकट पहुंच गये। जून सन् १९१४ में आप शान्ति-निकेतनमें आगये, और स्थायीरूपसे यहीं रहने लगे। आपके स्वागतके लिये उस समय कविशिरोमणि श्रीरवीन्द्रनाथने निम्न लिखित कविता बनाई थी।

प्रतीचीर तीर्थ हते प्राणरस धार
हे बन्धु, एनेछे तुमि, करि नमस्कार।
प्राचीदिल कण्ठे तव वरमाल्य तार
हे बन्धु, ग्रहन कर, करि नमस्कार।
खुलेछे तोमार प्रेमे आमोदर द्वार
हे बन्धु प्रवेशकर, करि नमस्कार।
तो मारे पेयेछि मोरा दान रूपे जाँर
हे बन्धु, चरणो तांर करि नमस्कार।

महात्मा गान्धीजीने अपने लड़के मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के सुपुर्द कर दिये थे और वे भी नवम्बर सन् १९१४ से शान्तिनिकेतनमें ही रहते थे। कवि-वर रवीन्द्रनाथने बड़ी प्रसन्नताके साथ उन्हें अपने आश्रममें भर्ती कर लिया था और मिस्टर पियर्सन अच्छी तरह उनकी देख भाल करते थे। महायुद्ध अगस्तमें सन् १९१४ में प्रारम्भ हुआ। महात्मा गान्धीजी उस समय विलायतमें घायलोंकी सेवाके लिये ऐम्बूलेन्स कोर तय्यार कर रहे थे।

आश्रममें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ बराबर काम करने लगे आप उस समय मिस्टर पियर्सनके साथ एकही कमरेमें रहते थे

भयंकर बीमारी

कुछ दिनों बाद आप गुरुदेव श्रीरवीन्द्रनाथकी वर्ष गांठके अवसर पर कलकत्ते गये। कलकत्तेसे आप रेलके थर्ड क्लासमें बैठ कर शान्ति निकेतनको वापस आये। तीसरे दर्जे जितने गन्दे रहते हैं उसका तो पूँछना क्या है। कई घंटे तक उस गन्दे डिब्बेमें बैठे रहनेसे आपकी तबियत ख़राब होगई और आश्रममें आने पर आपको हैज़ा हो गया। उस समय आश्रममें कोई नहीं था। मिस्टर ऐण्ड्रयूजने गाड़ीमें बैठकर स्टेशन जानेके लिये प्रयत्न किया। बोलपुरमें हैज़ेका इलाज करनेवाला कोई डाक्टर नहीं था इस कारण आपने कलकत्ते जानेका विचार किया था; लेकिन कमाज़ोरी इतनी ज्याद: हो गई थी कि आप स्टेशन जानेकी तय्यारीमें ही बेहोश हो गये। होश आने पर आखिरकार आपने सोचा कि अब तो कलकत्ते पहुँचना सम्भव नहीं, इस लिये आपको शान्ति-निकेतनमें ही रहना पड़ा। रातभर सम्पूर्ण शरीरमें दर्द होता रहा। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं—" मेरे बीमार होनेके १७–१८ घंटे बाद वर्दवानसे डाक्टर आया। उस समय बीमारी इतनी अधिक बढ़ गई थी कि मैं करीब करीब मरणासन्न था। डाक्टरने आकर दो बार इंजक्शन दिया। ईश्वर कृपासे इन इंजक्शनोंसे बड़ा लाभ हुआ। इन्हींके कारण मेरी जान बची नहीं तो मरनेमें तो कोई कसर बाकी नहीं रही थी। गुरुदेवको तार दिया गया और वे कलकत्तेसे रातको ११ बजे आपहुँचे। मैं कुछ भी बोल नहीं सकता था, उस समय मैं उनका केवल मुख ही देख सकता था। दिन भर इतनी अधिक पीड़ा रही थी कि मुझे अपना जीवन भारी पड़ गया था। मैं दिलमें बार बार यही सोचता था कि इस भयंकर दर्द सहनेकी अपेक्षा तो मौत ही अच्छी है; लेकिन जब मैंने

गुरुदेव श्रीरवींद्रनाथके दर्शन किये तो मेरे हृदयमें जीवित रहनेकी इच्छा फिर जागृत हो गई। उस समय आश्रमके तीन चार लड़कोंने मेरी बड़ी सेवा की, और मेरे नौकर जौहरीने तो मुझे अपने लड़केकी तरह समझ कर, दिनरात मेरी खि़दमत की। कई दिन तक बहुत दर्द रहा, कमरेमें पंखा भी नहीं था। न दिनमें चैन पड़ता था और न रातको नींद आती थी। गुरुदेव हर रोज़ मेरे पास आकर बहुत देर तक बैठे रहते थे; उस समम मुझे इस बातकी बड़ी आशङ्का थी कि मेरे-पास बैठनेके कारण वे भी बीमार न हो जावें। जब मेरी तबियत कुछ सुधरी तो मैं कलकते भेज दिया गया। वहांके अस्पतालमें कुछ रोज़ रहनेके बाद मैं शिमला भेज दिया गया क्योंकि कलकत्तेमें गर्मी बहुत ज्याद: थी।"

शिमलामें निवास और कुली-प्रथा बन्द करनेके लिये प्रयत्न

यद्यपि शिमलामें आपकी निर्बलता दूर नहीं हुई थी तथापि आपको उन दिनों वहां अत्यन्त परिश्रम करना पड़ा। उन दिनों इस विषयपर आपने बीसियों लेख शर्त बन्दी की कुलीप्रथाके विरुद्ध लिखे थे। लार्ड हार्डिञ्जके पास भी आपको इसी सम्बन्धमें कितनी ही बार जाना पड़ा था। इस समयकी एक घटना बड़ी मनोरंजक है उसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़केही शब्दोंमें सुन लीजिये।

"शिमलामें कमज़ोरीके कारण एक दिन मैं आराम कुर्सी पर लेटा हुआ था। न तो सो ही रहा था और न जग ही रहा था। उस समय मेरी आंखोंके सामने एक दृश्य आगया। उसे मैं जागृत—स्वप्न कह सकता हूं। मैंने देखा कि मेरी आंखोंके सामने एक हिन्दुस्तानी कुली खड़ा हुआ है। जिसकी पीठपर कोड़ोंकी चोट है। जब मैं दाक्षिण अफ्रिका गया था तब मैंने महात्मा गान्धीजीके यहां एक ऐसाही कुली

देखा था। सम्भवतः उसी कुलीकी स्मृति मेरे मनमें अब जागृत हो गई थी। थोड़ी देरमें मैं क्या देखता हूं कि उस कुलीका चेहरा बदल कर प्रभू ईसा मसीहकैसा चेहरा होगया। प्रभु ईसा मसीहका यह चेहरा अत्यन्त दुःखपूर्ण मालूम होता था। बस, मैं फौरन उठ बैठा और मैंने अपने मनमें कहा कि यह शर्त बंधा गरीब हिन्दुस्तानी कुली ही मेरे लिये "प्रभु ईसा मसीह" है और मैं इसीकी सेवा करूंगा। इसी समय मैंनें यह कविता बनाई थी।

The indentured coolie.
There he crouched
Back and arms scarred, like a hunted thing
Terror stricken
All within me surged towards him
While the tears rushed.
Then, a change.
Through his eyes I saw thy glorious face
Ah the wonder!
Calm, unveiled, in deathless beauty
Lord of sorrow.

इस दृश्यपर मैं प्रायः विचार किया करता था और सोचा करता था कि इसका अभिप्राय क्या है। यही सोचते सोचते मैंने यह निश्चय किया कि मुझे फिजी जाकर शर्त बँधे प्रवासी भारतीयोंकी हालत अपनी आंखोंसे देखनी चाहिये। उन दिनों निर्बलावस्थामें भी मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ता था। लार्ड हार्डिञ्जने मुझसे कहा था "कमर्स डिपार्टमेण्ट द्वारा एक खरीता इस विषयमें विलायतको भारत सचिवके नाम भेजा जावेगा। उसके बनानेमें आप इस विभागको पूरी पूरी सहायता दीजिये।" आज्ञानुसार मैंने इस डिस्पैच के बनानेमें यथाशक्ति

सहायता दी थी। यही १५ अक्टूबर सन् १९१५ का सुप्रसिद्ध खरीता कहलाता है। भारत सरकारने इस विषयमें प्रान्तीय सरकारोंकी सम्मति भी पूँछी थी। जिन जिन प्रान्तीय गवर्नरोंसे मेरी कुछ भी जान पहचान थी उन सबको मैंने प्राइवेट तौर पर अपनी ओरसे पत्र लिखे थे। यह सब काम मुझे अकेले ही करना पड़ा। उन्हीं दिनोंमें मैंने उपर्युक्त स्वप्न देखा था। लकडी टेकते टेकते मैं लार्ड हार्डिञ्जके पास गया और मैंने उनसे कहा "मैं तो अब फिजी जाता हूँ और वहाँके हिन्दुस्तानी कुलियोंकी दशा अपनी आँखोंसे देखूँगा" लाट साहबने कहा "मिस्टर ऐण्ड्र्यूज मुझे खेद है कि मैं अब शर्त बन्दीकी प्रथा बन्द करनेकी प्रतिज्ञा आपसे नहीं कर सकता। मैंने दो आदमी उपनिवेशोंकी दशा देखनेके लिये भेजे थे। मुझे आशा थी कि वे शर्त बन्दीकी प्रथाके बन्द कर देनेकी सिफारिश करेंगे, लेकिन मि. मैकनील और लाला चिम्मनलालने इस प्रथाके जारी करनेकी सिफारिश की है! अब बताइए मैं क्या कर सकता हूँ? मेरे हाथ तो अब बिल्कुल बँध गये। ऐसी स्थितिमें मैं आपसे वादा करनेमें असमर्थ हूँ"

मैंने कहा "मैं तो फिजी अवश्य जाऊँगा और वहाँसे लौटकर सब हाल सुनाऊँगा।"

प्रथमवार फिजीयात्रा

तत्पश्चात् मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने गुरुदेव श्रीरवींद्रनाथसे फिजी जानेकी आज्ञा माँगी और उनसे निवेदन किया "आप मुझे आशीर्वाद दीजिये जिससे मेरा कार्य्य सफल हो।" गुरुदेवने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक यह आशीर्वाद दे दिया। यह बात मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने पियर्सन साहबसे कही। पियर्सन साहब भी फिजी जानेके लिये तय्यार हो गये। यह बात ध्यान देने योग्य है कि मिस्टर पियर्सन गर्मीके दिनोंमें पेचिशकी बीमारीसे बहुत पीड़ित रहचुके थे और उनका स्वास्थ्य

भी अच्छा नहीं था। श्रीरवीन्द्रनाथको उस समय बड़ी भारी चिन्ता यही थी कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज और मिस्टर पियर्सन दोनोंकी ही तन्दुरुस्ती ठीक नहीं है, कहीं अधिक परिश्रम करनेसे इनका स्वास्थ्य और भी खराब न हो जावे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं " लार्ड हार्डिञ्जसे कोई सिफारिशकी चिठ्ठी लेना मैंने उचित नहीं समझा क्योंकि मैं सरकारी प्रतिनिधिके रूपमें नहीं? बिल्कुल स्वतंत्ररूपसे ही फिजी जाना चाहता था मिस्टर पियर्सन भी मुझसे इस बातमें सहमत थे। लार्ड कारमाइकेल थोड़े दिन पहले ही आस्ट्रेलियासे आये थे और वे हम लोगोंकी सफलताके लिये अत्यन्त चिन्तित थे। उन्होंने हमें आस्ट्रेलियाके कुछ प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुषोंके नाम परिचय पत्र लिख दिये। इन पत्रोंमें लार्ड कारमाइकेलने यही लिखा था कि " ये दोनों सज्जन मानवजातिकी सेवाके भावोंसे प्रेरित होकर फिजी जारहे हैं, और ये बिल्कुल स्वतंत्ररूपसे जाँच करेंगे। "

इन पत्रोंसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज तथा मिस्टर पियर्सनको आस्ट्रेलियामें बड़ी सहायता मिली थी।

फिजीमें कार्य्य

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज तथा मिस्टर पियर्सन फिजी पहुँचे उस समय वहाँ माननीय सी. आयर हटसन साहब (Hon'ble C. Eyre Hutson) थोड़े दिनोंके लिये गवर्नरीका काम कर रहे थे। सर बिकहम स्वीट ऐस्कौट साहब, जो फिजीके असली गवर्नर थे, उस समय विलायत गये हुए थे। तत्कालीन गवर्नर हटसन साहब बड़े भले आदमी थे और उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्रयूज तथा मिस्टर पियर्सनको पूरी पूरी स्वतंत्रता देदी थी। मिस्टर ऐण्ड्रयूज कहते हैं " माननीय हटसन साहबने हमारे साथ अत्यन्त उदारताका वर्ताव किया, पर उनकी इस उदारताका परिणाम हमारे लिये हानिकारक ही हुआ। यदि हम उनकी उदारतासे बचे रहते

तो हमें अपनी पहली यात्रामें फिजी प्रवासी भारतीयोंकी दुर्दशाका और भी अधिक पता लग जाता। प्रवासी भारतीयोंकी हालत इतनी खराब थी कि जिसका ठिकाना नहीं। वह किसीसे छिप नहीं सकती थी। पालीनीशियाके विशप साहबने हम लोगोंको अपना अतिथि बनानेकी कृपा की थी। विशप साहब भी बड़े न्याय-प्रिय थे। हिन्दुस्तानी कुली बड़ी स्वतंत्रता पूर्वक उनके बंगले पर आकर हमसे बातचीत कर सकते थे। विशप साहबको इसमें बिल्कुल आपत्ति नहीं थी।"

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ और मिस्टर पियर्सन फिजी पहुंचे थे फिजी प्रवासी भारतीयोंके हृदयमें विचित्र भयका संचार हो रहा था। इन दोनों सज्जनोंसे प्रवासी हिन्दुस्तानी प्रायः यह सवाल पूंछते थे क्यों साहब क्या आप कुली—ऐजेण्ट साहब हैं ? जब इस प्रश्नका संतोष जनक उत्तर उन्हें मिल जाता था, तब वे आज़ादीके साथ बातचीत करते थे। दक्षिण अफ्रिकामें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ तथा मिस्टर पियर्सन प्रवासी भाइयोंकी सहायताके लिये जो कार्य्य किया था, उसकी वजहसे फिजीके भी कितने ही आदमी आपको जान गये थे। जब आपका नाम फिजीमें चारों ओर प्रगट हो गया तो वे लोग आपको "कलकत्तेवाले साहब" के नामसे पुकारने लगे और वे बहुत दूर दूर किस्से सुनानेके लिये आने लगे।

फिजीके भारतीयोंका नैतिक पतन देखकर आपको हार्दिक दुःख हुआ था। आपने अपनी प्रथम रिपोर्टमें लिखा है "फिजीकी हिन्दू स्त्रियोंका समाज एक ऐसी किश्तीके समान है जिसमें पतवार नहीं, जिसका मस्तूल टूट गया है और जो चट्टानोंकी ओर बही चली जा रही है। अथवा वह एक ऐसी डोङ्गीके समान है जो एक बड़ी भारी नदीकी तेज़ धाराके प्रवाहमें चक्कर खाती हुई नीचे चली जाती है, और जिसका कोई खेवैया नहीं है। फिजीकी हिन्दू स्त्रियां एक पुरु-

षको छोड़ कर दूसरे पुरुषके पास चली जाती हैं और इस पतिपरिवर्तनसे उनको बिल्कुल लज्जा नहीं आती। हिन्दू पुरुषोंका भी समाज छिन्न भिन्न हो गया है और मुख्यतः सबसे बड़ी बात तो यह है कि ग्राम्य जीवनका संगठन बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हो गया है। ये इस प्रकारसे रहते–सहते, चलते–फिरते और जीवन व्यतीत करते हैं, मानों ये कोई भिन्न भिन्न निस्सहाय अकेले आदमी हों। सामाजिक संगठन तो बिल्कुल नामो निशान नहीं रहा। जाति पांति बिल्कुल नष्ट हो गई है और उसके खाली स्थानको भरनेके लिये कोई संस्था स्थापित नहीं हुई। जाति पांतिके बिल्कुल सत्यानाश होनेके साथही साथ हिन्दू धर्मानुसार किये हुए विवाहोंमें श्रद्धाका चिन्ह तक नहीं रहा। पत्नी विझांतगीरी और क्रय विक्रय–ख़रीद फरोख्त की एक वस्तु बनगई है और उसके लिये लोग आपसमें लड़ते हैं, आत्मघात करते हैं, पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष करते हैं और एक दूसरेकी हत्या तक कर बैठते हैं! हत्या आत्मघात और घोर अपराधोंकी जो पति–पत्नीकी लड़ाईके कारण होते हैं; संख्या अत्यन्त भयंकर है। इस संख्याके अङ्क इस भयोत्पादक बातको स्पष्टतया सिद्ध कर देते हैं कि प्राचीन हिन्दू पद्धतिकी आज्ञायें, निग्रह और नियम बिल्कुल टूट गये हैं, और उस पुरातन पद्धतिकी केवल टूटी फूटी स्मृति ही शेष रह गई है। फिजीके हिन्दू लोग अपनी इस अवनति और दुर्दशाको जानते हैं और अनुभव भी करते हैं।"

कुली लेनोंके दुराचारोंका वर्णन करते हुए आप लिखते हैं "और तोंकी कमीके सवाल पर ख्याल करते करते हमारा ध्यान एक अन्य मुख्य प्रश्नकी ओर जाता है, जिससे यह बात और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है कि सारी कुली प्रथाका असली कारो बार किस चीज़ पर निर्भर है। अब तक जो तरीक़ा कुटुम्बोंके बजाय अलग अलग

स्त्री पुरुषोंके भर्ती करनेका लगातार काममें लाया जारहा है, उसके कारण भारतवर्षमें १०० पुरुष पीछे ४० स्त्रियोंको भर्ती करना अत्यन्त कठिन हो जाता है, और जब तक बहुतसी रंडियाँ भर्ती नहीं की जातीं, तब तक औरतोंकी यह कमी पूरी होकर चालीस फीसदी तक नहीं पहुँचती। हमने उपनिवेशोंमें कोठियों पर सुना था कि शर्तबन्दी की प्रथाको चलानेके लिये दर असल रंडियोंकी ही बड़ी भारी आवश्यकता है। इस विषयका वर्णन करना बड़ा घृणोत्पादक है लेकिन मजबूर होकर हमें यह वर्णन करना पड़ता है यह बात आसानीसे समझमें आसकती है कि जब किसी कोठीपर बलवान आदमी एक औरत अपने कबज़ेमें कर लेते हैं, तो बाकी जो जवान औरतें रह जाती हैं उनकी संख्यामें और शेष पुरुषोंकी संख्यामें और भी ज्याद: फ़र्क हो जाता है। कभी कभी तो इन स्त्री पुरुषोंकी संख्याका औसत "एक औरत पीछे चार या पाँच मर्द" तक पहुँच जाता है। एक कोठीके स्वामीसे हमने कहा "अब बदमाश औरतोंको भर्ती नहीं करना चाहिये" यह सुनकर वह कुछ गड़बड़ाया और बोला "क्यों? बिना बदमाश औरतोंके तो प्रतिज्ञाबद्ध कुली-प्रथा चल ही नहीं सकती। हमने सुना कि एक कोठीपर ओवरसियरने यह नियम ही बना लिया था कि प्रत्येक स्त्री पीछे कुछ पुरुष नियुक्त कर दिये जाते थे, जिससे कि कुली लेनमें लड़ाई झगड़ा न हो। दूसरे शब्दोंमें इसके माने नियमबद्ध व्यभिचारके हुए। हमने पहले ही पहल कुली लेनोंका जो दृश्य देखा उसे हम भूल नहीं सकते। स्त्री और पुरुष दोनोंके ही चेहरोंसे यथार्थमें समान रूपसे टपकती थी। इस स्थितिमें छोटे छोटे बच्चोंका देखना हमें असह्य हो जाता था, और फिर ज्यों ज्यों हम एक कोठीसे दूसरी कोठीको गये, त्यों त्यों हमें वही असंदिग्ध दृश्य दीख पड़े। इससे हमें ज्ञात हो गया कि दुराचारका रोग इन

लोगोंके हृदय और जीवनको खोखला करता जाता है । ऐसा मालूम होता था कि कोई नवीन और अवर्णनीय बात इस हालतको और भी बिगाड़ रही है—कोई पापका महारोग फैला हुआ है, जिसका कारण नहीं बतलाया जा सकता । हमको यह अनुभव हुआ कि फिजी प्रवासी भारतीयोंमें दुराचार आँधीकी तरह एक साथ ज़ोरसे फैल रहा है और हमें इस बातकी आशङ्का होने लगी कि कहीं ये पाप कर्म फिजीद्वीपके आदिम निवासियों तकमें न फैल जावें । ”

फिजीमें बीमारी

फिजीका दक्षिणी भाग स्वास्थ्यकी दृष्टिसे अच्छा नहीं है, और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को दक्षिणी भागमें ही रहकर काम करना पड़ा था । कलकत्तेसे फिजीको रवानः होनेके पूर्व ही उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। हैज़ेके बादकी कमज़ोरी बहुत कुछ बाकी थी, फिर जहाज़की समुद्री बीमारीसे वे पीड़ित रहे । फिजी पहुंचने पर आपको इसी दशामें परिश्रम अधिक करना पड़ा । इन कारणोंसे आपका बीमार पड़ जाना स्वाभाविक ही था । परिणाम यह हुआ कि आपकी मानसिक निर्बलता बहुत बढ़ गई । फिर भी यथाशक्ति परिश्रम आप करते ही रहे, और जाँचका काम समाप्त करके ही छोड़ा ।

फिजीसे वापसी

फिजीसे वापस आते समय जहाज़में आपने मिस्टर पियर्सनकी मददसे अपनी रिपोर्ट लिखनी शुरू की । वायसरायकी कौंसिलमें यह मामला शीघ्र ही पेश होनेवाला था, इस लिये रिपोर्टका छप जाना अत्यन्त आवश्यक था । जब आपका जहाज़ आस्ट्रेलियाके सिडनी बन्दरगाह पर पहुँचा तो वहाँ आपको एक तार मिला “ तुम्हारे पिता बहुत बीमार हैं, उनके बचनेकी आशा नहीं ” इस तारसे आपकी चिन्ता और भी बढ़गई । मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं “ इस तारको

पाकर मेरे मनमें दक्षिण अफ्रिकाकी वह घटना फिर जागृत होगई जब कि मुझे अपनी माताकी मृत्युका समाचार मिला था। मैंने फौरन ही विलायतको तार दिया और अपना पता मैलबोर्नका देदिया। सिडनीमें मुझे कई दिन और ठहरना पड़ा क्योंकि वहाँ मुझे सी. ऐस. आर. कम्पनीके प्रधानसे बातचीत करनी थी। कम्पनीके प्रधान मिस्टर नौक्ससे बातचीतमें मुझसे झगड़ा हो गया। मैंने उन्हें खरी खरी सत्य बातें सुनादीं जो उन्हें बहुत बुरी लगीं लेकिन वे उसका खंडन नहीं कर सके। मैलबोर्न पहुँचने पर मुझे बड़ी चिन्ता थी और मेरे मनमें यही आशङ्का थी कि कहीं मैलबोर्न पहुँचनेपर मुझे अपने पिताकी मृत्युका तार न मिले। वहाँ जब मुझे तार मिला कि पिताजीकी तबियत अब अच्छी है तो मुझे बड़ी तसल्ली हुई।"

इस प्रकार फिजीमें अपना कार्य्य समाप्त करके मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ और मिस्टर पियर्सन भारतको वापस लौट आये।

कुली प्रथाके अन्तका निश्चय

गुरुदेव श्रीरवीन्द्रनाथके दर्शन करनेके लिये मि. ऐण्ड्रयूज् केवल एक दिनके लिये कलकत्ते ठहर कर सीधे दिल्लीको चले गये और लार्ड हार्डिञ्जको अपनी रिपोर्ट दिखलाई। लार्ड हार्डिञ्जने रिपोर्ट देखकर आपसे कहा "I will cable to the India office on the strength of your report for permission to announuce the abolition of indenture, but I tell you that the case is so tremendously strong that you must be very careful to understate it rather than to overstate it." अर्थात् "मैं आपकी इस रिपोर्टके बलपर विलायतके इंडिया आफिसको तार भेजूँगा और उनसे शर्तबन्दीकी प्रथाको बन्द करनेकी आज्ञा मागूँगा, लेकिन मैं एक बात आपसे कहना चाहता हूँ कि आपका पक्ष इतना

प्रबल है कि आपको बड़ी सावधानीके साथ अपनी बातें कुछ घटाकर ही लिखनी चाहिये बढ़ाकर नहीं।" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने लार्ड हार्डिञ्जकी यह सलाह मानकर बड़ी सावधानीसे अपनी रिपोर्ट लिखी। परिणाम यह हुआ कि आजतक उस रिपोर्टकी एक भी बातका खण्डन कोई नहीं कर सका। और तो क्या, फिजी सरकारके अनेक अफसरों तकको उस रिपोर्टकी सच्चाई स्वीकार करनी पड़ी थी। जब रिपोर्ट छप गई तो लार्ड हार्डिञ्जने उसका अच्छी तरह उपयोग किया। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "यह रिपोर्ट हमने स्वर्गीय महात्मा गोखलेके स्मरणार्थ अर्पित की थी क्योंकि हम जानते थे कि महात्मा गोखले ही एक ऐसे भारतीय राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने अपना जीवन ही प्रवासी भारतीयोंके लिये अर्पित कर दिया था। जब २१ मार्च सन् १९१६ को वायसरायने कौंसिलमें कुली-प्रथाको बन्द करनेका निश्चय प्रगट किया तो मुझे असीम आनन्द हुआ। लार्ड हार्डिञ्जने अपनी स्पीचमें एक बात ऐसी कह दीथी जिसपर हम लोगोंने अपने आनन्दके कारण विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कह दिया था कि अभी कुली प्रथाके बन्द होनेमें कुछ देर लगेगी लेकिन उसका अन्त होना निश्चित है। हम लोगोंने समझा कि बस दो चार महीनेकी देर होगी, लेकिन पीछे इसके कारण मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा, दूसरी बार फिजी जाना पड़ा और फिर आन्दोलन करना पड़ा।"

"मैं अपने हृदयमें अत्यन्त प्रसन्न था और सोचता था कि चलो अब शर्तबन्दीकी गुलामीका तो अन्त हुआ।

कवि सम्राटके साथ जापान यात्रा

बड़ी खुशीके साथ मैं गुरुदेव तथा मिस्टर पियर्सनके साथ जापानको चल दिया। कवि-वर रवीन्द्रनाथका वहाँ बड़ा भारी स्वागत किया गया। हजारों ही जापानी उनके दर्शन करनेके लिये उत्सुक थे। उनके इस आश्चर्य्यजनक

स्वागतके दिनोंमें ही मुझे फिजीका एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था " कालोनियल आफिस और भारत सचिवके इंडिया आफ़िसमें यह समझौता हो गया है कि अभी पाँच वर्षतक भर्ती और जारी रहेगी तब इन पाँच वर्षोंके बाद शर्तबन्दीकी प्रथाका अन्त होगा । उस समय मेरे हृदयके जो भाव थे उन्हें मैं ही जानता हूँ। मैंने यह पत्र श्रीरवीन्द्रनाथ और मिस्टर पियर्सनको दिखलाया। दोनोंने ही कहा " अब होही क्या सकता है ? हमारी समझमें नहीं आता कि अब तुम क्या कर सकोगे "— लेकिन मेरे मनमें बार बार यही बात आती थी कि कुछ ज़रूर होना चाहिये । इस तरह कार्य्यको छोड़ देना ठीक नहीं है । दुर्भाग्यवश जापानमें भी मैं बीमार पड़ गया और मुझे अस्पतालमें जाना पड़ा। तबियत ठीक होनेपर मैं भारतको लौट आया, गुरुदेव और मिस्टर पियर्सन अमेरिकाको चले गये। "

भारतमें कुली प्रथाके विरुद्ध घोर आन्दोलन

जापानसे आतेही मिस्टर ऐण्ड्रयूजने सबसे पहला काम यह किया कि आपने एक पत्र श्रीमान लार्ड चेम्स फोर्डके नाम भेजा और उसमें आपने इंडिया आफिस और कालो नियल आफिसके इस गुप्त प्रबन्धका ज़िक्र किया, जिसके द्वारा कुलियोंकी भर्ती सन् १९२१ तक जारी रहनेका विचार किया गया था। वायसराय साहबका जबाब आया " इस मामले पर विचार किया जावेगा। " तीन महीने तक मिस्टर ऐण्ड्रयूज यह प्रतीक्षा करते रहे कि सरकार इस सम्बन्धमें कुछ न कुछ काम अवश्य करेगी। फिर आपने एक पत्र पायोनियरमें छपाया। इस पत्रमें आपने सरकारी खरीतेके वाक्य उद्धृतकर सरकारको चेलेञ्ज दिया था। इस पत्रके दो चार दिन बाद ही भारत सरकारने एक विज्ञप्ति निकाली। इस विज्ञप्तिमें लिखा हुआ था " भारत वासियोंको धैर्य्य धारण करना चाहिये। लार्ड हार्डिञ्जने कुली प्रथाका

अन्त निश्चित करते समय यह बात कही थी कि कुली प्रथाको पूर्णतया बन्द करनेमें अभी कुछ देर लगेगी।" मिस्टर ऐण्ड्रयूजने इस विज्ञप्तिका तात्पर्य्य समझ लिया कि कुछ दालमें काला है, गवर्मेण्ट इस तरह कुली प्रथाको कितने ही दिन तक और जीवित रखना चाहती है। आपने उसी समय सम्पूर्ण भारतमें इस विषय पर ज़ोरदार आन्दोलन करनेका निश्चय कर लिया।

शान्ति निकेतन आश्रमके शिक्षकोंसे फिर आपने कहा "गवर्मेण्ट पाँच वर्ष तक शर्त बन्दीकी गुलामीको और ज़ारी रखना चाहती है। मैं इस बातको सहन नहीं कर सकता। आप लोग मुझे आज्ञा और आशीर्वाद दीजिये कि मैं इस विषय पर लोकमत जागृत करके अपना कर्तव्य पालन करूँ"। शिक्षकोंने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक आपकी इस बातको स्वीकार कर लिया ; यद्यपि गुरूदेव मिस्टर पियर्सनके साथ अमेरिकामें थे और आश्रममें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की बड़ी आवश्यकता थी तथापि शिक्षकोंने आपको जानेकी आज्ञा देदी।

प्रयागमें आन्दोलन-का सूत्र पात और मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी भयंकर बीमारीः—

प्रयागसे आपने अपने आन्दोलनका प्रारम्भ किया, लेकिन दुर्भाग्य वश आप वहाँ पहुँचते ही अकस्मात् बीमार पड़ गये। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो फिर वही हैज़ा होगया। आप डाक्टर तेज बहादुर सप्रूके घरपर ठहरेहुए थे। एक वृद्ध हिन्दुस्तानी डाक्टर जिनका नाम मिस्टर बनर्जी था, आपका इलाज़ करते थे। रातमें, ये डाक्टर साहब कितनी ही बार मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को देखनेके लिये आये थे। जब उन्होंने समझ लिया कि बस अब जानका कोई खतरा नहीं है तब वे सोये। मिस्टर पोलक भी उस समय वहीं उसी घरपर ठहरे हुए थे और वे भी मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ की सेवा कर रहे थे। रात

अधिक हो जाने पर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की तवियत कुछ कुछ सुधरने लगी । सवेरे निर्बलता अत्यन्त अधिक थी मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं:—"यद्यपि मैं बहुत निर्बल था तथापि मेरी यह हार्दिक अभिलाषा थी कि आन्दोलनके समारम्भ होते समय मैं वहाँ अवश्य उपस्थित होऊँ। लेकिन जब मैंने डाक्टरसे अपनी इच्छा प्रगट की तो उन्होंने बिल्कुल मना कर दिया । ईश्वर कृपासे एक अत्युत्तम सुयोग प्राप्त हुआ। श्रीमती सरोजिनी नायडू उसी दिन प्रयागमें पधारीं । मैंने उन्हें तुरन्त ही सन्देश भेजा कि आप भारतीय स्त्रियोंकी ओरसे इस विषय पर आज की सभामें भाषण कीजिये। श्रीमती सरोजिनी देवीने जो व्याख्यान दिया वह अत्यन्त महत्वपूर्ण था उसका प्रत्येक शब्द मानों हृदयाग्निसे प्रज्वलित था । मैं उस मीटिङ्गमें नहीं जा सका लेकिन खाट पर पड़े पड़े मैंने फिजीकी शर्तबँधी स्त्रियोंकी मुक्तिके लिये एक प्रार्थना भारतीय स्त्रियोंके वास्ते बनाई । कई देशी भाषाओंमें यह छापी गई और इसकी ५० हजार प्रतियाँ अकेले प्रयागमें ही सर्व साधारणमें बाँटी गईं। उस समय माघ मेलेका अवसर था और वहाँ बहुतसे स्वयंसेवक उपस्थित थे। इन स्वयं सेवकोंने इस प्रार्थनाको बाँटने में बड़ी भारी सहायता दी । जितना असर इन देशी भाषाओंकी प्रार्थनाओंका हुआ उतना किसी दूसरी चीज़का नहीं हुआ। थोड़े दिनोंमें ही सम्पूर्ण संयुक्त प्रान्तमें कुली प्रथाके विरुद्ध आन्दोलन उठ खड़ा हुआ । शर्तबन्दीकी प्रथाको बन्द करानेके लिये प्रयागमें एक "**ऐण्टी इंडेञ्चर लीग**" कायम की गई। प्रान्तके अन्य नगरोंमें भी इस प्रकारकी सभाएँ स्थापित हुईं। हमारी फिजी सम्बन्धी रिपोर्टकी सहस्रों प्रतियाँ छपीं और उनके प्रचारसे आन्दोलनमें अच्छी सहायता मिली कलकत्तेके भारत मित्रने तथा उसके सम्पादक श्रीयुत अम्बिका-प्रसाद वाजपेयीने उस कार्यमें सबसे अधिक मदद दी यहाँ पर यह बात मुझे न्यायपूर्वक स्वीकार करनी

पड़ती है कि इस कार्य्यमें प्रयागके " लीडर " पत्रने जितनी सहायता दी उतनी किसी दूसरे अंग्रेज़ी पत्रने नहीं दी। प्रारम्भसे लेकर अन्त तक 'लीडर' ने फिजीके लिये अंग्रेजी पत्रोंमें सबसे अधिक काम किया है।"

यद्यपि मिस्टर ऐण्ड्रयूज प्रयागकी इस सभामें बीमारीके कारण नहीं जाने पाये थे तथापि आपने अपना व्याख्यान वहाँ पढ़े जानेके लिये भिजवा दिया था। इस व्याख्यानमें आपने एक बड़ी मर्मस्पर्शी घटना सुनाई थी। आपने लिखा था " मैं आप लोगोंको एक सच्ची घटना सुनाता हूँ। एक उच्च जाति और भले घरकी हिन्दुस्तानी स्त्रीको एक दिन संध्याके समय तार मिला कि तुम्हारा पति बहुत बीमार हो गया है। वह एकदम स्टेशनकी ओर चल पड़ी। रास्तेमें आरकाटियोंने उसे बहका कर कलकत्तेके डिपोमें भेज दिया। वह बेचारी ऐसी डरी हुई थी कि वह उन सवालोंका जो उससे पूँछे गये जवाब न दे सकी। परिणाम यह हुआ कि वह जहाज़ पर चढ़ा दी गई। इस जहाज़ पर कुलियोंकी भीड़में उसके चरित्र बिगडानेका यत्न किया गया। वह अनाथ स्त्री एक बंगाली महाशयकी शरणमें गई जो फिजीको क्लर्क बन कर जारहे थे। उसने उन बाबू साहबको अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन बंगाली महाशयने उस स्त्रीको एक भलेमानस विवाहित कुलीको भलीभाँति सौंप दिया। इसके बाद वह रास्ते भर आपत्तियोंसे बची रही, परन्तु ज्यों ही उसकी समुद्रयात्रा समाप्त हुई त्यों ही उसे अपने रक्षकोंसे अलग होना पड़ा। उस बंगाली युवकको टापूके उत्तरकी ओर अपनी नौकरी पर जाना था और वह स्थान इतना दूर था कि वहाँ जानेके लिये समुद्रयात्रा भी करनी पड़ती थी। इस बीचमें वह स्त्री कुली लेनोंमें रक्खी गई और यहाँ भी बारम्बार उसके चरित्र बिगाड़नेकी चेष्टा की गई। कितने ही दिन उस अनाथ स्त्रीको यह दारुण दुःख सहते बीते। दैव योगसे एक दिन वह बंगाली युवक बंदरमें यह देखने गया कि सूवासे

जहाज़ आया या नहीं। वह समुद्रके किनारे टहल रहा था कि एका एक कोई स्त्री उसके पैरोंपर गिर पड़ी। यह वही हिन्दुस्तानी युवती थी। वह अपने चरित्रकी रक्षा करनेके लिये भाग निकली थी। उस बंगाली युवकने उसको अपने साथ लेलिया और उसके संग विवाह कर लिया, क्योंकि उसके बचानेका एक यही उपाय था। उस स्त्रीकी शर्त बन्दी कटानेके लिये जितने रुपयेकी आवश्यकता थी, उस बंगालीने अपने पाससे देदिये। यही एक निकाल उसके चरित्रकी रक्षा करनेका था। उस बंगाली युवकका यह कार्य्य उदारता पूर्ण था लेकिन उस स्त्रीके फूटे भाग्यकी ओर तो तनिक ध्यान दीजिये। अब तक वह बेचारी रातदिन अपने दुर्भाग्य पर रोती है और उसको अपना देश, जिसे देखनेकी आशा उसे अब कुछ भी बाकी नहीं रह गई, भुलाये नहीं भूलता।"

मदरासमें कार्य्य

कुलियोंकी भर्ती प्रायः दो ही प्रान्तोंसे होती थी एक तो संयुक्त प्रान्त और दूसरी मदरास प्रान्त। इसलिये संयुक्त प्रान्तमें कार्य्य प्रारम्भ करके आपने मदरास प्रान्तको जाना निश्चित किया। यद्यपि आप बीमारीकी वजहसे बहुत कमज़ोर होगये थे लेकिन फिरभी आप उसी हालतमें मदरासके लिये रवानः होगये। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "मदरासमें मुझे श्रीमती ऐनी बेसेण्टसे बड़ी भारी सहायता मिली। उनके साहस और शक्तिको देखकर आश्चर्य्य होता था। मदरासमें उस दिनका प्रातःकाल मुझे अभीतक याद है। मेरी तबियत बहुत ख़राब थी और बातचीत भी मैं बड़ी कठिनाईसे कर सकता था। फिजीमें हिन्दुस्तानी औरतोंके साथ जो व्यवहार किया जाता है उसकी कुछ बातें मैंने श्रीमती ऐनीबेसेण्टको सुनाईं। उन्हें सुनकर क्रोध और दुःखके कारण श्रीमती ऐनीबेसेण्टका चेहरा कांपने लगा, लेकिन उन्होंने आत्मसंयम

द्वारा अपने आँसुओंको रोकना चाहा । उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानों कोई पत्थरकी मूर्ति बैठी हो । जब मैंने अपना कथन समाप्त किया तो श्रीमती ऐनी बेसेण्टने बड़ी दृढ़तापूर्वक कहा "If what Mr. Andrews has said is true then we must all go to prison rather than allow this to go on any longer." अर्थात् "यदि जो कुछ मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने कहा है सत्य है तो बहतर है कि हम सब जेलमें चले जाँय, लेकिन इस शर्तबन्दीकी प्रथाको अब हर्गिज़ जारी न रहने देना चाहिये।" श्रीमती ऐनीबेसेण्टने फौरनही श्री कस्तूरङ्ग ऐयरकी सहायतासे एक ऐण्टी इण्डैञ्चर लीग" (शर्तबन्दीके विरुद्ध सभा) स्थापित करदी । मेरी तथा मिस्टर पियर्सन की रिपोर्ट की भी तैमिल, तैलगू और अँग्रेज़ीमें प्रतियाँ छापी गई । थोड़े समयमें ही मदरास प्रान्तमें कुली प्रथाके विरुद्ध खूब आन्दोलन होने लगा ।

पूनामें महात्मा तिलकसे बातचीत

"तत्पश्चात् मैं पूना गया । वहाँ पर मैंने सर आर. जी. भंडारकरको सब बातें सुनाईं । इन बातोंको सुनकर उनका हृदय द्रवित होगया । महात्मा तिलकके भी दर्शन करनेके लिये मैं गया और मिस्टर केलकर से भी मिला । महात्मा तिलकके अद्भुत प्रभाको देखकर मुझे मालूम हुआ कि 'लोकमान्य' शब्दका क्या अर्थ है । उन्होंने मेरी बातोंको बड़े ध्यान से सुना और इस कार्य्यमें पूरी पूरी सहायता देनेका वचन दिया । पूनामें सभा हुई जिसके प्रधान श्रीयुत भंडारकर और मुख्य वक्ता महात्मा तिलक थे । जनता सहस्रोंकी संख्यामें उपस्थित थी । गली भी ठसाठस भरी हुई थी । बड़े ज़ोरदार व्याख्यान हुए । पूनामें भी शर्तबन्दी बन्द करानेके लिये एक सभा कायम हुई । 'महात्मा तिलक इस सभाके मुख्य संचालकोंमेंसे थे ।

अहमदाबादमें महात्मा गान्धीजीके साथ।

पूनासे मिस्टर ऐण्ड्रयूज सीधे अहमदाबादको गये और वहाँ महात्मा गाँधीजीको सब हाल सुनाया । महात्मा गान्धीजीने आपसे कहा " मैं सब काम छोड़-कर अब तुम्हारे इस आन्दोलनको हाथमें ले-लूंगा " प्रेमभाई हौलमें महात्माजीके सभा-पतित्वमें एक सभा हुई । मिस्टर पोलक भी उस समय वहीं उपस्थित थे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उस समय निम्नलिखित जोशपूर्ण व्याख्यान दिया था।

" आज सन्ध्या समय आपको मैं केवल एक सन्देश सुनाने आया हूँ, और इस सन्देशको मैं पूर्ण विश्वास और दृढ़ताके साथ आपके सम्मुख निवेदन करूंगा। मुझे जो कुछ प्रार्थना करनी है उसे सुनलीजिये।

फिजीमें मैंने अपनी आँखोंसे भले घरकी सम्माननीय हिन्दुस्तानी स्त्रियोंको शर्तबन्दीकी प्रथाकी वजहसे असह्य निर्लज्जतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए देखा है, फिजीमें मैंने अपनी आंखोंसे अपवित्र और पापपूर्ण स्थानोंमें भोलेभाले छोटे छोटे हिन्दुस्तानी बच्चोंको रहते हुए देखा है, और मैंने अपनी इन्हीं आंखोंसे फिजीके हिन्दुस्तानी पुरुषोंको देखा है जो वहां पशुओंसे भी बुरा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इस लिये आज मैं आप लोगोंसे—अहमदाबादके भाइयोंसे और माताओंसे मनुष्यताके नाम पर अपील करता हूं कि आप अपनी आवाज़ इस शर्तबन्दीके विरुद्ध इतने ज़ोरसे उठावें कि भारत सरकारको फ़ौरनही यह गुलामी बन्द करनी पड़े। कुलीप्रथाका यह सवाल केवल व्यापारिक स्वार्थका ही सवाल नहीं है यह आर्थिक लाभ या हानिका ही प्रश्न नहीं है, बल्कि यह प्रश्न स्त्रियोंके सतीत्वका है, औरतोंकी इज्ज़तका है, भोलेभाले नन्हें बच्चोकी रक्षाका है और मनुष्योंकी स्वतंत्रताका है अगर इस दुराचारपूर्ण कुलीप्रथाकी सब बातोंको जानकर भी हम भारतवासी अपने फिजी प्रवासी भाइयों और बहनोंकी आवा-

ज़्को न सुनें तथा उनकी सहायता न करें तो हम अवश्यमेव उपर्युक्त पापोंके भागी होंगे। यही नहीं मैं एक बात और भी कहूंगा। अगर भारत सरकार फिजीके हिन्दुस्तानी कुलियोंकी दुर्दशाको जानकर भी भारतीय जनताकी बातको न सुने और कुलीप्रथाको बन्द न करे तो स्वयं भारत सरकार भी अपराधी होगी अवश्यमेव नैतिकरूपसे अपराधी होगी। यही बात मैंने मदरासमें कही थी और फिर इसी बातको आज मैं यहां दुहराता हूं। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे यह शब्द सरकारके कानों तक पहुंचेगे और मैं चाहता भी यही हूं कि यह शब्द सरकार तक पहुंचे, और मैं फिर भी यही कहता हूं कि अगर सरकारने कुलीप्रथा फ़ौरनही बन्द नहीं की तो वह इस दुराचार और पापकी भागी होगी।

गुजरातकी माताओ और अहमदाबादके सज्जनो! आज मैं आपके इस नगरमें यह बात स्पष्टतया कह देना चाहता हूं। जो कुछ निवेदन मैं कर रहा हूं, प्रमाण और विश्वासके साथ कर रहा हूं, इन दुराचारोंको स्वयं प्रत्यक्ष देखकर कर रहा हूं और मेरी आत्माको कुली प्रथाके इन पापोंकी वजहसे बड़ी भारी चोट पहुंच चुकी है। माताओ और सज्जनो। अगर इन दुराचारोंकी बातें जान लेनेके बाद एक भी भारतीय स्त्री फिजीको व्यभिचारपूर्ण जीवन व्यतीत करनेके लिये भेजी जावे तो इसकी जिम्मेवारी भारत सरकार और भारतीय जनताकी होगी, इसकी निर्लज्जता उनके माथे होगी इसका अपराध उनके सिर होगा। एक समय ऐसा आता है जब कि राजनैतिक पालिसी और समझौते की बात दूर ताकमें रख दी जाती है और परमात्माके सत्यके अनुसार कार्य करना पड़ता है और उसीकी आज्ञा माननी पड़ती है। अब वही समय आगया है, वही अवसर उपस्थित हुआ है।

भारत सरकारको भी यह बात स्वीकार करनी पड़ी है।

सुनिये सरकारने अपने १५ अक्टूबर सन् १९१५ के खरीतेमें क्या लिखा है।

" It is firmly believed and it would appear not without grave reason, that the women emigrants are too often living a life of immorality in which their persons are, by reason of pecuniary temptation or official pressure, at the free disposition of their fellow recruits and even of the subordinate managing staff."

" भारतवासियोंका यह दृढ़ विश्वास है, और ऐसा प्रतीत होता है कि उनका यह विश्वास गम्भीर कारणोंसे रहित नहीं है, कि प्रवासी स्त्रियाँ बहुत ज्याद: करके दुराचारपूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं और उनके शरीर, आर्थिक प्रलोभनोंकी वजहसे या अफसरोंके दबावके कारण, साथी मजदूरोंके अथवा छोटे छोटे अधिकारियोंके पूर्णतया अधीन रहते हैं "

अहमदाबादके सज्जनो और नगरकी माताओ ! ये हिन्दुस्तानी स्त्रियाँ, जिनके बारेमें भारत सरकारने ये भयंकर शब्द लिखे हैं, कौन हैं? ये आपकी ही बहनें हैं। क्या आप इन शब्दों को समझते हैं? क्या आप इनका अर्थ समझते हैं? सुनिये इनका मतलब यह है कि आपकी प्रवासी बहनोंके शरीर कोठियोंके निम्न पदस्थ अधिकारियोंके पूर्णतया अधीन होंगे! इन शब्दोंका अर्थ यह है कि कुछ चाँदी के टुकड़ों के लिये तुम्हारी बहनोंके सतीत्वके खतरे में पड़नेकी आशङ्का है। क्या आप इस बातको सहन कर सकते हैं? मैं आपको एक सच्चा किस्सा सुनाऊँगा। मेरे फिजी पहुँचनेके कुछ दिनों पहले वहाँ एक दुर्घटना हो चुकी थी। कोठीके एक ओवरसियरने एक हिंदुस्तानी स्त्री पर बलात्कार किया था। सरकारी खरीतेमें जिस प्रकारकी घटनाओंका जिक्र किया गया है यह भी इसी प्रकार की दुर्घटना थी। यह ओव-

रसियर इसी प्रकारके कितने ही दुष्कर्म कर चुका था, और उसे कुछ भी दण्ड नहीं मिला था। जब हिन्दुस्तानी आदमियोंने यह बात, सुनी तो उन्होंने कानून अपने हाथ में लेकर स्वयं ही उस ओवरसियर को दण्ड देनेका निश्चय कर लिया। १९ हिन्दुस्तानी आदमी उस ओवरसियरको पकड़कर एक झाड़ीमें ले गये और वहाँ गन्ने काटनेकी छुरियों से उसके शरीरके टुकड़े टुकड़े कर डाले। और फिर ये १९ आदमी मिलकर अपने आप थानेमें चले गये। सरकार की ओरसे मुक़द्दमा चलाया गया। सरकारी वकीलोंने यह बात जाननेका भरपूर प्रयत्न किया कि ओवरसियरकी मृत्यु किस आदमीके आघातसे हुई लेकिन उन १९ आदमियोंमेंसे हरेक कहता था "मैंने उस ओवरसियरको मारडाला" और हरेकको इस बातका अभिमान था।

अपने अनुभवका एक दूसरा किस्सा मैं आपको और भी सुनाता हूँ। फिजीसे जिस दिन मैं चलनेवाला था उसी दिन मैं मिस्टर पियर्सनके साथ एक राजपूतको देखने गया। यह राजपूत एक अच्छे वंशका था और इसे एक धोखे बाज़ आरकाटीने यह लालच दिलाकर कि तुम्हें फिजीमें एक रजीमेण्टमें सिपाहीकी नौकरी मिल जावेगी, फिजीको भेज दिया था। जब हमने उसे देखा तो वह जेलखानेकी एक कोठरीमें था, और उसे फाँसीका हुक्म हो गया था क्योंकि उसने एक स्त्रीको क़तल किया था। यद्यपि उसने हत्याका अपराध किया था और उसके हाथ खूनसे भरे हुए थे, लेकिन मैं कह सकता हूँ कि मैंने शायद ही कोई ऐसा आदमी देखा हो जिसका चेहरा इस राजपूतके चेहरेसे अधिक धैर्य्ययुक्त और पौरुष पूर्ण हो। इस आदमीने मुझे सारा किस्सा सुनाया और बतलाया मैंने पहले हिन्दुस्तानी फौजमें नौकरी की थी लेकिन कुछ दिनोंके लिये मैंने अपने भाईको जो खेतीका काम करता था—मदद देनेके लिये सिपाहीगीरी छोड़दी थी। इसके बाद एक कपटी आरकाटी

मेरे पास आया और उसने मुझसे वायदा किया कि मैं तुम्हें फिजीकी एक रजीमेण्टमें एक अच्छी नौकरी दिलवादूँगा। मैं फिरसे सिपाहीगीरीका काम करना चाहता था, इस लिये मैंने उस आरकाटीकी यह बात मंजूर करली। लेकिन जब मैं फिजी आया तो मुझसे कहा गया कि तुम्हें कुली लेनोंमें रहना पड़ेगा और कोठियोंमें साधारण गुलामोंकी तरह पाँच वर्ष तक काम करना पड़ेगा ।

मैंने इसका घोर विरोध किया, लेकिन बलात् मुझे उनकी आज्ञा मानने और कुलीगीरीका काम करनेके लिये बाध्य किया गया। मेरी बहुत बेइज्जती की गई। वह लोग मेरी मूँछोंको खींचते थे और मेरी दाढ़ीको नोंचते थे" उस राजपूतकी आंखें चमक रही थीं और उसने हाव भाव द्वारा अपने हाथोंसे मूँछ और दाढ़ी खींचकर बतलाया कि मेरा किस किस भाँति अपमान किया गया था। यदि इस अवर्णनीय दुःखप्रद और अपमानपूर्ण स्थितिमें उस राजपूतकी भी नैतिक अवस्था वैसी ही पतित हो गई, जैसी कि अन्य शर्तबँधे गुलामोंकी होती है, और वह भी दूसरे आचार भ्रष्ट कुलियोंकी तरह एक स्त्रीको अपनी घरेलू पत्नी बनानेके लिये लड़ाई कर बैठा तो इसमें आश्चर्य्यांकी बात ही क्या है ? जिस स्त्रीके लिये इस राजपूतने झगड़ा किया था, उसने इसको छोड़ दिया और दूसरे आदमीके घर बैठ गई। इस आदमीसे और उस राजपूतसे झगड़ा होगया और दोनोंमें मारापीटी होने लगी, इतनेमें उस औरत ने बीचमें आकर उस राजपूतके मुंह पर एक तमाचा मारा। इस अन्तिम अपमानसे उस राजपूतका खून खौलने लगा। उसने गन्ने काटनेकी छुरीसे उस औरतका सिर धड़से अलग कर दिया। यही सारा किस्सा था, और इसी कारण वह हत्यारोंकी कोठरीमें बन्द कर दिया गया था, इस कोठरीमें सीखचोंकी खिड़की थी और इस खिड़कीके बाहर खड़ा हुआ मैं उसे देख रहा था। यद्यपि यह आदमी सचमुच हत्यारा था, तथापि

उसके लिये मेरे हृदयमें बड़ी करुणा तथा आदरका भाव आया, और उस समय मेरे दिमाग़में सबसे पहले यही ख्याल आया कि इस विचारे राजपूतको किस भयंकर स्थितिमें रहना पड़ा है। उस राजपूतका चेहरा अब भी वीरतायुक्त और उदारता पूर्ण था। दर असल यह सारा दोष उस कुली प्रथाका था, आदमीका नहीं। जिस समय मैं उस आदमीको जेलखानेकी कोठरीमें देख रहा था मैंने अपने हृदय-तलसे इस घृणोत्पादक कुली प्रथाको अच्छी तरह कोसा और मैंने अपने मनमें यही निश्चय कर लिया कि जब तक यह कुली प्रथा नष्ट न होगी तब तक मैं विश्राम न लूंगा। इसके बाद उस राजपूतने अपने गांवके बारेमें, जो राजपूतानेमें था, बातचीत की। अब तक तो वह राजपूत कुछ हक्का बक्का सा दीख पड़ता था, उसके चेहरेपर कुछ पीलापन भी था, परन्तु उसके मुख पर कमज़ोरीका कोई चिन्ह नहीं था। लेकिन जब मैंने उससे उसके गांवके विषयमें बातचीत की और कहा क्या मैं भारत पहुंचकर तुम्हारे घरवालोंसे मिलूं? उस समय उस राजपूतका हृदय भर आया और वह फूट फूट कर रोने लगा। जब उसकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे वह उनके रोकनेकी चेष्टा करता हुआ मुझसे कहता था "साहब उनसे आप क्या कहोगे? क्या उनसे आप मेरी इस हालतके बारेमें कहोगे?" उस समय मेरी आंखोंसे भी आंसू निकल आये। सीखचोंमें हाथ डालकर मैंने उससे हाथ मिलाये और नमस्कार करके बिना एक मिनट भर की देरीके मैं फौरन वहांसे चल दिया और सीधा न्याय विभागके मंत्री तथा गवर्नरके पास पहुंचा। जो कुछ मैंने इस राजपूतके बारेमें कहा, उसे इन लोगोंने बड़े ध्यान-पूर्वक सुना। इसके पहले न्याय विभागके मंत्री तथा गवर्नर साहब उस राजपूतके मामलेको अच्छी तरह नहीं समझ सके थे। जब मैं फिजीसे रवानः हो गया तो अगले बन्दरगाहपर मुझे गवर्नरका तार मिला

जिसमें लिखा था "मैंने उस आदमीके फांसीका हुक्म रद्द कर दिया है।" इस तरहको पढ़कर मुझे हार्दिक हर्ष हुआ लेकिन फिर भी मैं यही सोचता था कि देखो पांच वर्ष तक शर्तबन्दीमें रहनेके कारण इसके चरित्र पर कैसा बुरा प्रभाव पड़ा, इसकी आत्मा कैसी कलंकित बन-गई और इस शर्तबन्दीकी प्रथाने—झूठ और धोखेवाज़ीसे परिपूर्ण इस गुलामीने—उसके भले जीवनका कैसा सत्यानाश कर दिया। यद्यपि अब ईश्वर कृपासे उसे जीवन दान मिल गया था लेकिन उसके चरित्रकी जो हानि पहले हो चुकी थी वह क्या इससे दूर होसकती थी?

फिजीमें जो बच्चे पैदा होते हैं उनकी हालत सबसे ज्यादः ख़राब होती है। मैंने उनकी दुर्दशाको अपनी आँखोंसे देखा है ये बच्चे ऐसी स्थिति में पाले जाते हैं और ऐसे दृश्य इनकी आँखोंके सामने आते हैं जो बच्चोंके लिये अत्यन्त ही हानिकारक हैं। ये भोले भाले बच्चे ऐसे अपवित्र शब्द नित्य सुनते हैं जो हर्गिज़ उनके सुनने योग्य नहीं हैं। वे बाल्यावस्था से ही पाप की बातें सीखते हैं। न उन्हें कोई शिक्षा मिलती है न उनके घर ही पवित्र होते हैं और न उनसे कोई धर्मकी बात कहता है। कितनी ही बार तो ऐसा होता है कि वे यह भी नहीं जानते कि उनका बाप कौन है! प्रायः उनकी माताऐं उन्हें एक प्रकारकी बाधा समझकर छोड़ देती हैं और कभी एक पुरुषके साथ तो कभी दूसरे पुरुषके साथ व्यभिचार करती हैं। मैं फिर पूँछता हूँ कि इसमें दोष किसका है? उन औरतोंका कसूर नहीं है, उन पुरुषोंका दोष नहीं है, उन बच्चोंका अपराध नहीं है बल्कि ये सारा दोष शर्तबन्दीकी कुली प्रथाका है।

जब फिजीसे मेरे पास चिट्ठियाँ आई तार भी आये कि यह कुली प्रथा पाँच वर्षके लिये और भी जारी रहेगी और लन्दनसे भी मुझे

ह पता लगा कि सचमुच इस बातका खतरा है, तो मैंने सोचा कि
अब चुपचाप बैठे रहनेका वक्त नहीं है, अब समय आगया है कि
खुल्लम खुल्ला सब बातें कह दूँ। १५ अक्टूम्बर सन् १९१५ के खरी-
में भारत सरकारने इन दुराचारों आत्मघातों और हत्याओंको स्वीकार
किया है। आज फर्वरी सन् १९१७ है।

उपस्थित सज्जनो और माताओ! अब बस बहुत देर हो चुकी,
अब हम इस गुलामीको अधिक सहन नहीं कर सकते, हमारा धैर्य्य अब
जवाब दे चुका है। अक्टूबर १९१५ से फर्वरी सन् १९१७ तक नवीन
भारतीय स्त्रियाँ फिजीमें व्यभिचार पूर्ण जीवन व्यतीत करनेके लिये भेजी
जाती रही हैं, नये बच्चे अपवित्र पाप पूर्ण परिस्थितिमें पैदा होते रहे हैं,
भारतीय पुरुषोंकी मनुष्यता और आत्मसम्मान नष्ट होते रहे हैं। इस
लिये आज हम सब मिलकर एक स्वरसे यही घोषणा करते हैं कि यह
दासत्वप्रथा फौरनही बन्द करदी जावे।"

बम्बईके 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' ने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के इस व्याख्या-
के बहुत खिलाफ लिखा था। उसने लिखा था "मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को यह
हर्गिज़ नहीं चाहिये कि वे भारतीय जनताको इस प्रकार भड़कावें"
भारत सरकार भी देशमें कुली प्रथाका आन्दोलन बढ़ते देख घबड़ा गई।
सर जार्ज बार्नसने फ़ौरन ही एक तार दिल्लीसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के नाम
भेजा कि फौरन दिल्ली चले आओ। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "दिल्ली
पहुँच कर मुझे पता लगा कि सरकार मुझ पर भारत रक्षा कानूनके अनु-
सार मुकद्दमा चलानेवाली थी अथवा किसी दूसरे ढङ्गसे ही मेरे व्याख्यान
बन्द करनेवाली थी। सर जार्ज बार्नसकी बातचीतसे मुझे मालूम हुआ
कि गवर्मेण्ट मेरे आन्दोलनकी वजहसे बड़ी नाराज़ थी। गवर्मेण्टकी
सम्मति थी कि मैं महायुद्धके समयमें जातीय द्वेष उत्पन्न कर रहा था।
मैंने सर जार्ज बार्नससे कहा "अक्टूबर सन् १९१५ के खरीतेमें

गवर्मेण्ट यह बात स्वीकार कर चुकी है कि भारतीय स्त्रियोंको कुली लेनोंमें अत्यन्त दुराचारपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है। अब गवर्मेण्ट किस तरह कालोनियल आफिससे यह वायदा कर सकती है कि वह पांचवर्ष तक और हमारी भारतीय स्त्रियोंको वैसा जीवन बितानेके लिये भेज सकती है ? होम सेक्रेटरी सर जेम्स डूबूलेसे भी मैं मिला। उन्होंने भी मुझसे कहा "आपने जो काम किया है उससे गवर्मेण्टको बहुत बुरा मालूम हुआ है" उसी दिन शामको मुझे वायसरायसे भी मिलना पड़ा। जब मैं वायसराय साहबके कमरेमें गया तो वहां सर जार्ज वार्नस साहब भी बैठे हुए दीखे। पहले तो वायसरायने मेरे आन्दोलनसे बहुत असन्तोष प्रगट किया फिर पीछे जब मैंने उन्हें सब बातें सुनाई तो उनको विश्वास हो गया कि कुली प्रथाका जल्दी बन्द होना आवश्यक है और उन्होंने वचन दिया कि हम यथावसर शीघ्र ही इसे बन्द कर देंगे। इसके बाद मैंने यह प्रबन्ध किया कि महात्मा गान्धीजी वायसरायसे मिलकर इस मामले पर बातचीत करें। कुली प्रथाका आन्दोलन अब अच्छी तरह प्रारम्भ हो चुका था और मैं नेतृत्व ग्रहण नहीं करना चाहता था क्योंकि नेता बनना मेरा काम नहीं है। महात्मा गान्धीजी और वायसरायके बीचमें जो बात चीत हुई वह आशा-जनक थी लेकिन हम लोगोंने पलभरके लिये भी अपना आन्दोलन शिथिल नहीं किया। हमने सरकारसे कह दिया कि ३१ मई सन् १९१७ तक यह कुली प्रथा बिल्कुल बन्द हो जानी चाहिये। इसके बाद यदि वह एक दिन भी और जारी रही तो हम सत्याग्रहका आन्दोलन शुरू कर देंगे। दिल्लीमें मैंने एक बड़े मजेदार बात सुनी। प्रयागमें मैंने देशी भाषाओंमें जो प्रार्थना बँटवाई थी उससे गवर्मेण्ट बहुत ही डर गई थी अगर मैं अँग्रेजीमें ही अपना काम करता रहता तो शायद गवर्मेण्ट मुझे दिल्लीमें बुलाती भी नहीं लेकिन

ाघमेलाके अवसर पर देशी भाषाओंमें प्रार्थना वितरण करनेके कामको
वर्मेण्ट बहुत ही खतरनाक समझती थी।”

फ़िजीको द्वितीयवार प्रस्थान

फिजीको जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पहली बार गये थे तो वहांसे लौटने
वाद उन्होंने एक स्कीम तय्यार की थी।
उसका अभिप्राय यह था कि केवल कुटुम्ब ही
फिजीको भेजे जावें। फिजीमें ये २ वर्ष तक
चाहे जिस कोठीपर काम करें। ठेका सिर्फ़
क एक महीनाका हो, और दो वर्ष वाद ये मजदूर स्वतंत्र होकर अपनी
ती स्वतंत्र रूपसे करने लगें।

जिन दिनों मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने फर्वरी सन् १९१७ में कुली प्रथाके
वेरुद्ध आन्दोलन शुरू किया था उन्हीं दिनों उनकी समझमें अपनी
ूल आगई। उन्होंने अब यही परिणाम निकाला कि फिजीको इस
थामें कुली भेजनेसे फिर भी शर्तवन्दी की, बुराइयाँ आजावेंगी और
ससे फिजी प्रवासी भारतीय स्वतंत्र नहीं होंगे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने
ाह बात समाचार पत्रोंमें प्रकाशित कर दी। जैसा कि हम पहले लिख
ुके हैं मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ अपना मत परिवर्तन करनेमें कोई बुराई नहीं
ामझते जब उन्हें अपनी भूल मालूम हो जाती है तो वे फ़ौरन ही उसे
ीकार कर लेते हैं। उसी समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने फिजीको द्वितीय
ार जानेका निश्चय किया। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं “मैंने उस समय
ह तय किया कि मैं अपने मत परिवर्तनकी वात फिजी जाकर
ाण्टरोंको सुना दूँगा, इस प्रश्नको फिर अच्छी तरह अध्ययन करूँगा
ौर शर्तवन्दीकी प्रथाके विषयमें और भी जाँच करूँगा। इस दूसरी
िजी यात्राको मैंने अपनी पहली फिजी यात्राकी भूलोंका प्राय-
श्चित्त समझा।”

" उस समय कविवर रवीन्द्रनाथ जापानसे हालहीमें वापस आये थे। मैं केवल दो दिनसे अधिक उनके साथ नहीं रह सका। इस समय भारत छोड़ते हुए मुझे बड़ा दुःख था। मेरा स्वास्थ्य उन दिनों बहुत ही खराब था और मेरी यह हार्दिक इच्छा थी कि मैं गुरुदेवके साथ शान्ति निकेतनमें रह कर कुछ दिनों तक विश्राम करूं। मुझे इस बातका बड़ा खेद था कि उनके जापानसे लौटनेके दो दिन बादही मुझे फिजीको चल देना पड़ा। जब मैं कोलम्बो पहुँचा तो मेरे बड़ी बुरी चोट लग गई। पानीसे भरा हुआ बड़ा घड़ा हाथोंमें लिये हुए मैं सीढ़ीयोंसे नीचे उतर रहा था कि पाँव फिसलगया। घड़ा नीचे गिर पड़ा और उसके ज़ोरके साथ मैं भी रीढ़के बल नीचे आगिरा। पांच मिनट तक तो ऐसा दर्द हुआ जिसका ठिकाना नहीं। ऐसा मालूम होने लगा कि मानों मेरे शरीर की एक ओरको लकवा मार-गया हो। लेकिन सौभाग्यकी बात यह थी कि चोटका धक्का रीढ़की हड्डीपर नहीं आया बल्कि कूलेपर आया। कोलम्बोमें जहाज़ दो दिन ठहरा था। पहले तो मैंने सोचा कि मुझे यहीं कोलम्बोमें अस्पतालमें पड़ा रहना पड़ेगा लेकिन फिर चोटको कुछ आराम हो गया और मैं उसी जहाज़से फिजीके लिये रवानः हुआ। जहाज़पर डाक्टरने मेरा इलाज़ किया। रास्ते भर मुझे इसी तरह बीमार पड़ा रहना पड़ा। इस चोटके दर्दने साल भर तक मेरा पीछा नहीं छोड़ा। पहले तो मैंने यह ख्याल किया था कि यह आफ़त हमेशाके लिये मेरे पीछे लगी लेकिन सौभाग्यवश ऐसा नहीं हुआ। सालभर बाद यह दर्द जाता रहा।"

जब मैं दूसरी बार फिजी पहुँचा तो वहां सारा मामला दूसरा ही होगया था। सर बिकहम स्वीटऐस्काट साहब गवर्नर थे। पहले तो उन्होंने

रे साथ अत्यन्त मित्रताका वर्ताव किया, लेकिन जब उन्हें यह मालूम आ कि मेरे कामसे उनके कार्य्य क्षेत्रमें वाधा पड़ेगी तो वे मुझसे बड़े ाराज़ हो गये और उन्होंने मुझे फिजीसे निकाल देनेकी धमकी भी ो। यद्यपि उन्होंने देश निकालेका शब्द प्रयोग नहीं किया था लेकिन फिर भी जो बातें उन्होंने मुझसे कही थीं उनका तात्पर्य्य यही था। र बिकहम स्वीटऐस्काट बहुत तेज मिज़ाजके आदमी थे और वे ाहे जब नाराज़ हो जाते थे। इसी कारण उनके पास रहनेवाले फ़सर हमेशा उनसे डरते रहते थे।

इस बार मैं कई दिन तक जार्ज सुचितके साथ, जो हिन्दुस्तानी साई हैं, ठहरा था। उनके दो बच्चे जैफरे और मार्जरी मुझे बड़े प्यारे गते थे। सूवाके हिन्दुस्तानियोंने अबकी बार मेरे लिये एक छोटासा र किरायेपर लेलिया था और मैं उसीमें रहा था, लेकिन भोजन, मैं ार्ज सुचितके यहां ही करता था। स्वामी राममनोहरानन्दने भी दो ार दिन मेरे साथ काम किया था, लेकिन पीछे मैंने अपने आप केले ही काम करना ठीक समझा। मेरी यात्राके अन्तिम दिनोंमें वामीजी मेरे विरोधी होगये थे और उन्होंने मेरे बारेमें तरह तरहकी फवाह उड़ाना शुरू कर दिया था। मैंने उनके साथ बराबर मित्रताका ी वर्ताव किया क्योंकि मैं किसी भी फिजी प्रवासी भाईसे झगड़ा हीं करना चाहता था। मेरा उद्देश्य यथाशक्ति प्रवासी भाइयोंकी ाहायता करना ही था न कि उनके साथ लड़ाई झगड़ा करना। मैं ायः प्रवासी हिन्दुस्तानियोंके झोंपडेमें रहा और मैंने उनके यहां न्हींका भोजन किया। सरकारी दुभाषियोंके साथ भी मैं रहा था योंकि वे बहुत भले आदमी थे और उनसे मुझे प्रवासी भारतीयोंके ेषयमें बहुतसी बातें मालूम हो सकती थीं। अपनी इस दूसरी यात्रामें झे अपनी पहली यात्राकी अपेक्षा बहुत अधिक बातें मालूम हुईं।

प्रवासी भारतीय स्त्रियों और पुरुषोंने बड़ी स्वतंत्रापूर्वक अपना सब हाल मुझे सुनाया। इधर उधर बहुत घूमने और हिन्दुस्तानी मज़दूरोंके यहाँ जैसा तैसा खाना खानेसे मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया और मैं बहुत चिन्तित रहने लगा। भारतमें सन् १९११—१९१२ में मुझे मलेरिया ज्वरने पीड़ित करना प्रारम्भ किया था, तबसे मेरे स्वास्थ्यमें यह खराबी पैदा होगई है कि जब कभी मैं अधिक बीमार होता हूँ मुझे बड़ी फिक्रें आघेरती हैं ये फिकरें अपने बारे में नहीं होती दूसरोंके बारे में होती हैं। फिजी में भी ऐसा ही हुआ। अन्तमें मुझे अस्पतालमें जाना पड़ा। तदनन्तर मैंने आस्ट्रेलियाके लिये प्रस्थान किया। आस्ट्रेलियाके मुख्य मुख्य नगरोंमें मैंने फिजीकी हिन्दुस्तानी स्त्रियोंकी दुर्दशा का वर्णन किया जिससे आस्ट्रेलियन स्त्रियों के हृदय में भारतीय स्त्रियों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होगई। इन आस्ट्रेलियन औरतोंने मुझे बड़ी सहायता दी। आस्ट्रेलिया में अधिक दिन तक ठहरने से दो लाभ हुए एक तो यह कि मिस प्रीस्ट और मिस डिक्सन फिजी को गईं और दूसरा यह कि आस्ट्रेलियन स्त्रियोंने मिलकर अपनी ओर से मिस गार्नहमको फिजी के भारतीयोंकी दशाकी स्वतंत्र जाँच करनेके लिये भेजा। मिस गार्नहमकी स्वतंत्र जाँच की रिपोर्ट से बड़ा काम निकला। मैंने अपनी रिपोर्टोंमें जो बातें लिखी थीं मिस गार्नहमकी स्वतंत्र जाँच की रिपोर्ट से उनका पूरा पूरा समर्थन हुआ। इन आस्ट्रेलियन स्त्रियों के परोपकार से मुझे जो अनुभव हुआ वह ब्रिटिश साम्राज्य सम्बन्धी मेरे सम्पूर्ण अनुभवोंमें सर्वोत्तम था।

ब्रिसबेनके बन्दरगाहसे मैं भारतके लिये रवानः हुआ। एक सप्ताह मैं जावामें रहा और वहां मैंने बोरोबूदरके सुप्रसिद्ध मन्दिरको देखा। फेडरेटेड मलाया स्टेट्समें भी मैं तीन सप्ताह तक रहा और वहां भी मैंने प्रवासी हिन्दुस्तानी मज़दूरोंकी दशा देखी।

फेडरेटेड मलाया स्टेट्सके भारतीय मजदूरोंकी दुर्दशा

मलाया स्टेट्सके इन भारतीय मज़दूरोंके विषयमें तीन वातोंकी ओर मेरा ध्यान विशेषरूपसे गया। **पहली वात** तो यह थी कि एक ही कोठीपर मद्रासी मज़दूरोंके साथ शर्तवंधे चीनी मज़दूर भी काम पर लगाये जाते थे। चीनी लोग अपनी औरतें वहां नहीं लेजाते इस लिये उनके दुरा-रोंके कारण मद्रासी मज़दूरोंकी स्त्रियोंको वड़ा ख़तरा रहता है।

दूसरी वात यह है कि तैमिल कुलियोंको मलेरियासे परिपूर्ण ोठियोंपर भेजनेके प्रलोभन दिये जाते हैं। इन कोठियोंमें कभी कभी मृत्यु संख्याका औसत एक हज़ार पीछे १५० तक पहुंच जाता। जब ये तैमिल मज़दूर वहांसे निकलना चाहते हैं तो अन्याययुक्त ीकोंसे उनको वहीं रहनेके लिये वाध्य किया जाता है।

तीसरी वात यह है कि जिन जहाज़ोंमें ये लोग मद्रास भेजे ाते हैं अथवा मलाया स्टेट्ससे वापस लौटाये जाते हैं वे अत्यन्त न्दे होते हैं। मैं स्वयं एक ऐसे ही जहाज़में वहांसे आया था और ने अपनी आंखोंसे यह अवर्णनीय गन्दगी देखी थी”

नवाँ अध्याय।

मिस्टर ऐण्ड्रयूजने कुली प्रथा कैसे बन्द कराई!

यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि यदि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ अपनी सम्पूर्ण शक्तिके साथ कुली प्रथाके विरुद्ध आन्दोलन नहीं करते तो सन् १९२१ तक तो कुलियोंकी भर्ती जारी रहती और उपनिवेशोंमें मजदूरोंकी शर्तबन्दी सन् १९२६ तक पूरी नहीं होती। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को इस कार्य्यमें सफलता किस प्रकार प्राप्त हुई यह समझ लेना हम लोगोंके लिये अत्यन्त आवश्यक है।

उनकी सफलताके मार्गमें कई बातें बड़ी सहायक हुई हैं। **पहली बात** तो यह है कि वे गांव वालोंको अच्छी तरह जानते हैं और शर्तबन्दीमें प्रायः गांववाले ही भेजे जाते थे **दूसरी बात** यह है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ हिन्दी आसानीके साथ बोल सकते हैं। यदि वे हिन्दी नहीं जानते तो जाँचका काम उनके लिये अत्यन्त कठिन हो जाता।

तीसरी बात यह है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कुली प्रथाके विषयमें जो कुछ लिखा है अपनी आँखोंसे देखकर लिखा है। सैकण्ड हैण्ड—दूसरोंसे सुनी सुनाई बातें—आप नहीं लिखते। यही कारण है कि आपकी दोनों रिपोर्टोंमें कोई बात ऐसी नहीं निकली जिसका खण्डन फिजीकी गवर्मेण्ट या प्लाण्टर कर सकते। यद्यपि फिजीके प्लाण्टरोंने आपको गालियाँ बहुत दी थीं लेकिन कोई भूल वे आपकी रिपोर्टोंमें नहीं निकाल सके। अपनी पहली फिजी यात्रामें आपको प्रवासी भारतीयोंकी दुर्दशाका उतना पता नहीं लगा जितना द्वितीय यात्रामें लगा था। इस दुर्दशाके दो तीन दृष्टान्त यहाँ लिखना आवश्यक है। पाठक इन दृष्टा-

न्तोंसे समझ सकेंगे कि कुलीप्रथा कितनी भयंकर थी और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उसके वन्द करनेके लिये असाधारण परिश्रम कर भारतभूमिकी कितनी भारी सेवा की है। शर्तबँधे हिन्दुस्तानियोंके दुश्चरित्रोंका वर्णन करते हुए आप अपनी द्वितिय रिपोर्टमें लिखते हैं।

"ये पाप-कर्म फिजीमें इस प्रकार प्रचलित हैं मानों दुराचारोंकी कोई महामारी ही फैल गई हो, और कुछ स्थान ऐसे हैं जहांसे वद चलनीकी यह प्लेग फैलती है और अपने संसर्गसे दूसरोंको कलंकित करती है। अनेक बड़ी बड़ी कुली लेनोंमें पापपूर्ण परिस्थिति अपनी पराकाष्ठाको पहुंच गई है। प्रत्येक नवीन कुटुम्ब जो भारत वर्षसे आता है और फिजीकी कुली लेनोके वायुमंडलमें प्रवेश करता है, वह भी इसी रोगमें फंस जाता है। पतिसे कहा जाता है कि तुझे अपनी पत्नी व्यभिचारके लिये दूसरे आदमियोंको देनी पड़ेगी, क्योंकि यहां (फिजीमें) कितने ही आदमी पत्नी रहित हैं। यह फिजीका "दस्तूर" है। अगर पहिले पहल वह आदमी इस वात पर घोर आपत्ति करता है (जैसा कि प्रायः हुआ करता है) तो उससे कह दिया जाता है कि यह हिन्दुस्तान नहीं फिजी है—फिजी, और भाई फिजीमें तो ऐसा ही दस्तूर है। अविवाहित पुरुषोंका विवाहित स्त्रियोंके साथ जो सम्बन्ध इस प्रकार होता है उसे "दोस्ती" कहते हैं और फिजीमें 'दोस्त' शब्दका प्रयोग प्रायः बुरे अर्थमें ही होता है। फिजी—प्रवासी भारतीयोंके यहां जो घोर अपराध और जुर्म होते हैं वे लगभग सभी इसी दोस्तीके सम्बन्धोंकी वजहसे होते हैं और विचारी औरतें इनकी शिकार होती हैं।"

इस अवतरणसे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि यदि सन् १९२१ तक कुलियों की भर्ती कायम रहती और सन् १९२६ तक शर्तबन्दी में भारतीय पुरुषों और स्त्रियों को काम करना पड़ता तो जाने

कितनी सहस्र भारतीय स्त्रियों का सतीत्व इस व्यभिचार पूर्ण कुली प्रथा द्वारा नष्ट होगया होता ! विलायतके कालोनियल आफिस ने तो अपनी ओर से कोई कसर रक्खी नहीं थी और भारत सरकार भी दब जाने के लिये तय्यार ही थी। सौभाग्य वश मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ को, जब कि वे जापान में थे, फिजीके पत्रोंसे यह खबर लगगई। फौरन ही आप भारत वर्षको लौट आये। इसके बाद उन्होंने जो घोर आन्दोलन किया उसका वृत्तान्त पाठक पढ़ ही चुके हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उस समय महात्मा गान्धीजीके साथ यह बात तय करली थी कि जेल चले जाँयगे लेकिन इस व्यभिचार पूर्ण कुली प्रथाको जारी नहीं रहने देंगे। वायसरायने यद्यपि यह प्रतिज्ञा करदी थी कि कुली प्रथा बन्द-कर दीजावेगी लेकिन फिर भी मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने अपना आन्दोलन शिथिल नहीं किया। आपने उस समय यह तय किया था कि आप फिजीको दूसरी बार जाकर इस संग्रामके लिये तय्यार होंगे और तबतक यहाँ भारत में महात्मा गान्धीजी आन्दोलन करेंगे। ३१ मई सन् १९१७ की तारीख महात्मा गान्धीजीने निश्चित की थी। यद्यपि मि. ऐण्ड्रयूज़ इसके लिये राज़ी नहीं थे क्योंकि इस बातकी आशङ्का थी कि ३१ मई तक १ हजार स्त्रीपुरुष फिजीको दुराचारपूर्ण जीवन व्यतीत करनेके लिये और भेजे जावेंगे। ईश्वर कृपासे और कोई जहाज़ कुली लेकर फिजीको नहीं गया और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ की आत्माको इससे परम सन्तोष हुआ।

फिजी जाकर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। प्रातःकालसे लेकर रात्रि तक बराबर आप खेतोंपर और कुली लेनोंमें घूमते थे और हिन्दुस्तानी कुलियों की दुर्दशा पर आँसू बहाते थे। फिजी प्रवासी एक भारतीय भगिनीने मिस्टर ऐण्ड्रयुज़के विषयमें एक तुक बन्दी, मैं तो उसे कविता कहने के लिये उद्यत हूँ, बनाई थी। इससे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ के प्रेम और परिश्रम का पता लग सकता है:—

माता धन्य सती के लाल,
सोकर तीन वजे उठते हैं।

उठते प्रथम फराकत जाय, मुख मंजन कर लेत नहाय
ईश्वर ध्यान सदा करते हैं।

करके परमेश्वरका ध्यान, थोड़ी टी पीलिये महान।
परस्वारथमें आप फिरते हैं।

जो कोई मिले दुखी वा दीन, उससे पूँछें आप प्रवीन।
मनमें उसके दुख धरते हैं।

ह्यां पर मिले न ऐसे वीर, तनमन धन दे दिये सरीर
हरते हैं दुखियोंकी पीर, निद्रा नहीं उन्हें परते हैं।

खोया है फीजीका पाप, मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ प्रतापी आप
मेरे लगें धर्मके वाप, पुत्रिनसे पूछा करते हैं।

भगवती देवी सरन तुम्हारि, मंगलमूरति लिये निहारि।
जैसे किये आपने कार, मन मन्दिरमें सो फिरते हैं॥

फिजीकी भारतीय अवलाओंकी दुर्दशा देखकर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का हृदय अत्यन्त पीड़ित हो गया था। इन पंक्तियोंका लेखक चौथी मई सन् १९१८ के दिनको कदापि नहीं भूल सकता जव मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने वड़ी करुणोत्पादक भाषामें प्रवासी वहनोंकी दुर्दशाका चित्र खींचा था। उनके चेहरे पर उस समय क्रोध था, करुणा थी और दुःख था। नेत्रोंमें आँसुओंकी झलक थी। जव मैं उनके उस समयके अश्रुपूर्ण चेहरेका स्मरण करता हूँ तो मुझे "राष्ट्रीय—पथिक" का निम्नलिखित पद्य याद आजाता है:—

"सवा, गर 'हिन्द' से गुज़रे, न हमको, तू भुलादेना
हमारे गम, अलमकी याद भी उनको दिला देना

नशेमें जो वड़प्पनके बने मदहोश फिरते हों
उन्हें " ऐण्ड्र्यूज़के आँसू पिला देना पिला देना "

अपनी द्वितीय वारकी फिजी-यात्रामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को फिजी सरकारकी कौंसिलका ५४ वाँ पत्र हाथ लग गया। इस पत्रमें एक वड़ा भयंकर वाक्य था । उसे भी सुनली जिये " When one indentured Indian woman has to serve three indentured men as well as various outsiders, the results as regards syphilis and gonovrrhoca cnnnot be in doubt, "

(Fiji Government Council paper No 54) अर्थात् " जव कि एक शर्तवँधी हिन्दुस्तानी औरतको तीन शर्तवँधे पुरुषों तथा इनके सिवा कितने ही वाहरवालोंका काम चलाना पड़ता है, तो परिणाम स्वरूप गर्मी और सुज़ाकके होनेमें कभी सन्देह किया ही नहीं जा सकता। "

यह वात ध्यान देने योग्य है कि यह वाक्य फिजीकी व्यवस्थापक सभाद्वारा पास की हुई रिपोर्टमें था ! ब्रिटिश साम्राज्यमें रहते हुए वीसवीं शताब्दीमें हमारी मातृभूमिको कैसी भयंकर गुलामी सहन करनी पड़ी और गवर्मेण्ट द्वारा संचालित शर्तवन्दी द्वारा हमारी भारतीय स्त्रियोंका सतीत्व कैसे नष्ट किया गया, इसका जीता जागता उदाहरण पाठकोंको उपर्युक्त वाक्यसे मिल जावेगा। जव कभी स्वाधीन भारतका सच्चा इतिहास लिखा जावेगा उस समय हम लोग समझेंगे कि पराधीनताके कारण हमारी माताओंका और मातृभूमिका किस प्रकार अपमान किया गया।

इस उपर्युक्त वाक्यने कुली प्रथाका अन्त करनेमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को वड़ीभारी सहायता दी। फिजीसे लौट कर आप दिल्ली गये और वहां आपने श्रीमान वायसराय और भारत सचिव मिस्टर मौण्टेगसे मुलाकात

की। दोनोंको ही आपने फिजीके कौंसिल पेपर नं ५४ का वह वाक्य दिखला दिया। उस वाक्यको पढ़कर मिस्टर मौण्टेगने ऐण्ड्रयूज़ साहबसे कहा " That's enough. I do not want anything more " " बस अब रहने दीजिये। यह वाक्य ही काफ़ी है। इससे अधिक कुछ भी कहनेकी आवश्यकता नहीं। " इसी समय मिस्टर ऐण्ड्रयूजने भारतसचिवको फिजीके विषयमें एक पत्र दिया जिसमें कि वहांकी स्थिति सुधारनेके कुछ उपाय बतलाये गये थे। मि. मौण्टेगने वचन दिया कि इन सुधारोंके करनेका प्रयत्न किया जावेगा। तदनन्तर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ शान्तिनिकेतनको चले आये और यहां आकर आपने फिजीके विषयमें अपनी द्वितीय रिपोर्ट लिखी। यह रिपोर्ट लेखरूपमें माडर्नरिव्यूमें प्रकाशित हुई थी और भारतके सभी मुख्य मुख्य पत्रोंने इसे उद्धृत किया था।

बहुत कम लोग इस बातको जानते होंगे कि शर्तबन्दीकी दासत्व प्रथा बन्द करानेमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को कितना अधिक परिश्रम और स्वार्थ-त्याग करना पड़ा। लड़ाईके दिनोंमें समुद्रयात्रा करना कोई सरल बात नहीं थी। जर्मन जहाज़ समुद्रोंमें इधरसे उधर घूम रहे थे और कभी कभी तो जानका भी ख़तरा था। इन यात्राओंमें डरके कारण जहाजों की रोशनी रातके वक्त बन्द कर दी जाती थी। यात्रियोंको मार्गमें ड्रिल कराई जाती थी। इस ड्रिलमें उन्हें यह बतलाया जाता था कि जहाज़के डूबते समय प्राण रक्षा किस प्रकार करनी चाहिये। एक बार जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ फिजीके निकट एक छोटेसे स्टीमरमें यात्रा करते थे उनके स्टीमरसे थोड़ी दूर पर जर्मनोंका एक जहाज़ दीख पड़ा। उस समय समुद्र अशान्त था इस लिये जर्मन जहाज़के आद-मियोंकी दृष्टि इस स्टीमर पर नहीं पड़ी। यदि दृष्टि पड़जाती तो क्या होता इसकी कल्पना भी भयप्रद है। दूसरे ही दिन यह जर्मन जहाज़ पकड़ लिया गया था।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के दासत्व प्रथाके बन्द करानेमें सबसे अधिक सहायता इस बातने दी है कि वे स्वयं किसीके दास नहीं हैं। वे पूर्णतया स्वतंत्र हैं। अगर वे किसी कालेजके प्रिंसीपल होते तो उनके लिये यह कार्य्य करना सम्भव नहीं था। किसीके वे नौकर नहीं, और उनको अपने समय पर पूर्ण अधिकार है। विवाह उन्होंने किया नहीं इस लिये उन्हें गृहस्थीकी चिन्ता हो ही नहीं सकती। रुपये पैसेके मामलेमें ईश्वर कृपासे उन्हें कभी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। उन्होंने अपना खर्च इतना कम कर रक्खा है और अपनी आवश्यकताओंको इतना घटा दिया है कि आर्थिक चिन्ताऐं उन्हें विशेष कष्ट नहीं दे सकतीं। जब जब उन्हें रुपयोंकी आवश्यकता हुई है कहीं न कहींसे रुपया मिल गया है। स्वयं वे इस लिये निर्धन हैं।कि वे निर्धन रहना ही चाहते हैं। अपने शरीरके लिये वे अधिक व्यय करना नहीं चाहते हां अपने आन्दोलन कार्य्यमें उन्हें यात्रा पोस्टेज तथा तार इत्यादिमें कई सहस्र रुपये प्रतिवर्ष व्यय करने पड़ते हैं। कभी कभी सभाओंसे आपको सहायता मिल जाती है। दो एक बारको छोड़कर आपको अपने आन्दोलन कार्य्यमें कभी रुपयेकी कमी नहीं पड़ी। अपना सब काम अपने हाथोंसे करनेके कारण आपको किसीका मुंह नहीं ताकना पड़ता। पाठकोंको यह बात सुनकर आश्चर्य्य होगा कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को कभी कभी अपने लेखोंकी आठ आठ प्रतियाँ स्वयं ही करनी पड़ी हैं! कभी आपने अपना कोई सेक्रेटरी नहीं रक्खा। टाइप राइटिङ्ग मशीन भी अब सिर्फ आठ ही महीनेसे आप रखने लगे हैं। अपने साथियोंसे काम न लेकर आप अपना कार्य्य स्वयं ही करते हैं।

यह प्रायः देखा गया है कि बीमारी की हालतमें भी आप अपने लेख और पत्र स्वयं ही लिखनेका प्रयत्न करते हैं और इसी के कारण

आप को स्वस्थ होनेमें और भी दिन लग जाते हैं। जब बीमारी से बिल्कुल शक्तिहीन होकर आप खाट पर पड़ रहते हैं तब कहीं आप दूसरों से पत्र लिखाते हैं। असाधारण परिश्रम करने की यह शक्ति आप को कुली प्रथाके बन्द करनेमें बड़े भारी सहायक हुई थी। इसके अतिरिक्त आपमें यह बड़ी खूबी है कि आप किसी विशेष राजनैतिक दलसे सम्बन्ध नहीं रखते। इसी कारण नरम और गरम दोनों दलों के मनुष्योंने आपको यथाशक्ति सहायता दी थी। यद्यपि आप नेतृत्व ग्रहण करनेके घोर विरोधी हैं पर कुली प्रथाके विरुद्ध आन्दोलन करते समय आपको एक प्रकार से नेता बनना पड़ा था। इसका कारण यही था कि इस प्रश्न पर भारतके अन्य नेताओंने विशेष ध्यान नहीं दिया था। यद्यपि महात्मा गोखलेने सबसे पहले इस गुलामीका घोर विरोध किया था लेकिन उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई थी। सन् १९१२ में उन्होंने इस प्रथाके विरुद्ध कौंसिलमें जो प्रस्ताव किया था सरकार ने उसे अस्वीकृत कर दिया था। तत्पश्चात् यह मामला जहाँका तहाँ पड़ा हुआ था। मिस्टर मैकनील और लाला चिम्मनलाल ने तो इस कुली प्रथाको दीर्घ जीवनके लिये अपना आशीर्वाद भी देदिया था। ऐसी स्थितिमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजको नेतृत्व ग्रहण करना पड़ा। अंग्रेज़ होनेके कारण भी आपको कुछ सुभीता हुआ क्योंकि किसी हिन्दुस्तानी नेताके लिये आस्ट्रेलिया में फिजीकी कुली प्रथाके विरुद्ध लोकमत जागृत करना सम्भव नहीं था। यह बात ध्यान देने योग्य है कि कुली प्रथाको बन्द कराना कोई आसान काम नहीं था। स्वार्थी गोरे प्लाण्टरोंका इस गुलामीकी प्रथासे बड़ा भारी लाभ था और उन्होंने इस प्रथाको जारी रखनेके लिये भरपूर प्रयत्न भी किया था। हमारी सरकार भी उस समय प्लाण्टरोंकी हानि नहीं पहूँचाना चाहती थी। युद्धके दिनोंमें दो बार फिजी यात्रा करना भारतके लोकमतको

जागृत करना और सरकार पर दवाव डालकर इस विषय पर उसके दृष्टि कोण को वदलना कोई सरल कार्य्य न्हीं था। जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज द्वितीय वार फिजी गये थे एक प्लाण्टरने नाराज़ होकर कहा था "अगर मिस्टर ऐण्ड्रयूज मेरे जिलेमें आवें तो मैं उन्हें गोलीसे मार दूँगा" इसकी कुछ पर्वाह न करते हुए भी आप उस जिलेमें गये थे। जव स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जावेगा उस समय निष्पक्ष लेखकोंको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मिस्टर ऐण्ड्रयूजने कितने परिश्रमके साथ दासत्व प्रथाकी शृंखलाओंको तोड़ा। दक्षिण आस्ट्रेलिया से एक अपरिचित डाक्टर फ्रान्सिस. ऐल हर्डिन M. D ने अपने १२. १–२१ के पत्रमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजको लिखा है।

"We cannot all command success! You have achieved great things. You have been privileged to see complete success follow upon your work. You have abolished chattel slavery in Fiji. This is no small performance. Some happy day I may meet you. In my childhood Garrisson, Wilberforce and Elizabethe Fry were my demi-gods. Your work will stand and be regarded by the impartial historians of the future as of equal value with them."

अर्थात् "हम सवको अपने उद्देश्यमें सफल होनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं होता, लेकिन आपको वड़ी भारी सफलतायें प्राप्त हुई हैं। आपकी यह वड़ी खुशकिस्मती है कि आपने अपने कामको इस तरह पूरी तौरसे कामयाव होते हुए देखा। आपने ही फिजीमें गुलामीकी प्रथा वन्द कराई है। यह कोई छोटी वात नहीं है। कभी मुझे भी आपके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा। मैं अपनी वाल्यावस्थामें गैरीसन विलवर फोर्स और ऐलीज़ावेथ फ्राईको अपने देवता की भाँति स्मरण किया करता

था भविष्यके निष्पक्ष इतिहास लेखक आपके कार्य्यको भी उन्हींके समान उच्च कोटिका समझेंगे। ”

यहाँ पर पाठकों के मनोरंजनार्थ एक विचित्र घटना लिख देना उचित होगा। २५ मई सन् १९१७ को जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ आस्ट्रेलिया में अपनी माता का जन्म दिवस मना रहे थे उसी दिन आपने वहाँके एक पत्रमें रायटर का तार पढ़ा कि भारत सरकार ने शर्तबन्दी की प्रथाका हमेशा के लिये अन्त कर दिया। मि. ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं “ उस समय मैं अकेला था और मुझे उस वक्त जो प्रसन्नता हुई थी उसे मैं ही जानता हूँ। यह मेरे लिये अत्यन्त हर्षकी बात थी कि मेरी माता के जन्म दिवस के दिन मुझे यह शुभ समाचार सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरी प्यारी माता ने अपनी बीमारीमें भी मुझे दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयों की सेवा करनेकी आज्ञा दी थी। यदि मेरी माँ जीवित होती तो उन्हें कितनी प्रसन्नता होती ! मेरा विश्वास है कि इस दासत्वशृंखलाके तोड़नेमें मेरी माता ने भी कुछ सहायता दी है। ”

इङ्गलैण्ड से क्रीत दासोंका व्यापार उठानेवाले बक्सटन साहबके भी जीवन में इसी प्रकार की एक विचित्र घटना हुई थी। उन्होंने वर्षों-तक गुलामों की स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न किया था। प्रिसिला नामकी एक स्त्री उनकी सहायक और मित्र थी। मरते समय इस स्त्री ने बक्सटन साहब से कहा था “ भाई, देखना क्रीत दासों की स्वाधीनता पर भली भाँति ध्यान रखना ” बक्सटन साहब ने उस स्त्रीकी अन्तिम आज्ञा को कभी विस्मरण नहीं किया, बल्कि उसके चिरस्मरणार्थ उन्होंने अपनी कन्या का नाम प्रिसिला रख दिया था। सन् १८३४ में, जिस दिन वह कन्या विवाहित होकर अपनी ससुरालको गई, उसी दिन इङ्गलैण्डके सब क्रीतदास स्वाधीन होगये। उसदिन बक्सटन साहबने

अपने किसी मित्र को एक पत्र में लिखा था "भाई, पुत्री आज ससुराल को बिदा होगई और सभी बातें ईश्वर कृपा से बड़ी उत्तमतापूर्वक निपट गईं। आज इङ्गलैण्डमें एक भी क्रीतदास न रहा।"

यद्यपि बक्सटन और ऐण्ड्रयूज़की तरहके सौभाग्यशाली हम सब नहीं हो सकते और न हम सबको उनके समान सफलता मिल सकती है फिर भी अपने कर्तव्यको पालन करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये। अँग्रेज़ीमें एक कहावत है "We cannot all command success but we will do better, we will deserve it" अर्थात् सफलता प्राप्त करना हमारे हाथमें नहीं है लेकिन हम इससे भी उत्तम तर कार्य्य कर सकते हैं, वह यह कि हम अपनेको सफलताके अधिकारी बना सकते हैं।" इसी आदर्शको सम्मुख रखकर हम अपनी मातृभूमिको पराधीनताकी बेड़ियोंसे मुक्त करनेके लिये प्रयत्न करें, यही परम्पिता परमात्मासे हमारी प्रार्थना है।

माननीय मालवीयजीकी सहायता

इस वृत्तान्तके समाप्त करनेके प्रथम यह बतला देना हमारा कर्तव्य है कि माननीय मालवीयजीने कुली प्रथा बन्द करानेके कार्य्यमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को अच्छी सहायता दी थी। वैसे तो भारतमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के कितने ही मित्र हैं लेकिन माननीय मालवीयजीके समान गाढ़ परिचय आपका थोडे लोगोंसे ही है। ऐसा होना स्वभाविक ही है। स्वर्गीय महात्मा गोखलेके बाद यदि किसी भारतीय नेताने प्रवासी भारतीयोंके लिये कुछ किया है तो वे पूज्य पं. मालवीयजी ही हैं। प्रवासी भारतीयोंके लिये काम करते वक्त और आगे चलकर पंजाबी भाइयोंकी सेवा करते समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को कितने ही बार मालवीयजीके सत्सङ्गका सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। मालवीयजीके प्रति आपके हृदयमें बड़ी श्रद्धा है और मालवीयजी भी आपको प्रेमकी दृष्टिसे देखते हैं।

पिताजीकी मृत्यु।

फिजीसे लौटनेके बाद दिल्ली होते हुए मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कलकत्ते चले आये थे और वहाँ जोरांसकोमें कविवर रवीन्द्रनाथके साथ ठहरे हुए थे। उन्हीं दिनों शान्तिनिकेतनमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के नाम विलायतसे एक तार आया जिसमें उनके पिताकी मृत्युका समाचार था। शान्तिनिकेतनसे यह तार श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरके नाम कलकत्ते भेज दिया गया। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "पिताजीकी मृत्युका दुःखद समाचार मेरे लिये आश्चर्य्य जनक था क्योंकि यद्यपि वे बहुत दिनोंसे बीमार थे लेकिन मुझे इस बातकी बिल्कुल आशङ्का नहीं थी कि उनका अन्त समय इतना निकट होगा। गुरुदेव श्रीरवीन्द्रनाथने मुझे यह समाचार सुनाया। उस समय उन्होंने मुझे जो सान्त्वना दी उसकी याद मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। पिताजीकी उम्र उस समय ८५ वर्ष थी। मेरी माताकी मृत्युके बाद उन्हें अपना जीवन एक प्रकारसे भार हो गया था। स्वास्थ्य भी उनका बहुत खराब हो गया था। अपने आन्तिम दिनोंमें वे प्रायः सरल भाषामें कुछ पद्य लिखकर अपने मनको तसल्ली दिया करते थे मैंने इन पद्योंमेंसे कुछ तो छपा दिये हैं और शेषको भी छपानेका प्रयत्न करूँगा।"

महायुद्धके सम्बन्धमें कुछ विचार।

पिताजीकी मृत्युके समाचार सुननेके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ शान्तिनिकेतनको चले आये। यहाँ पर आपके समयका अधिकांश भाग फिजीके विषयमें लेख लिखते और भारत सरकारके साथ फिजीके विषयमें पत्र व्यवहार करते हुए व्यतीत हुआ। मई सन् १९१८ में आप दिल्ली गये। महात्मा गान्धीजी उस समय दिल्लीमें युद्ध कान्फ्रेंसके लिये गये हुए थे। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "इसके कुछ दिनों पहले मुझे इङ्गलैण्ड तथा इटलीकी गुप्त सन्धिके नियम

मालूम हो गये थे। इसे बोलशेवकोंने प्रकाशित कर दिया था। यह सन्धि अब Pact of London 'लन्दनकी सन्धि' के नामसे प्रसिद्ध है। इन नियमोंमें टर्कीके पूर्णतया अङ्गभङ्ग करनेका निश्चय किया गया था और यह निकृष्ट कोटिके साम्राज्यवादके जीते जागते प्रमाण थे। मैंने महात्माजीसे कहा " How can we possibly sympathise with England if she behaves so treacherously as that to her Indian Musalmans ? She promised the Musalmans not to interfere with the Khilafat yet this completely cuts into pieces and destroys the basis of the Khilafat itself. "

अर्थात् अब हम लोगोंके लिये इङ्गलैण्डसे सहानुभूति रखना किस तरह सम्भव है ? जब इङ्गलैण्ड अपने हिन्दुस्तानी मुसलमान प्रजाके साथ यह विश्वासघात कर रहा है तो हम लोग उसके साथ कैसे सहानुभूति रख सकते हैं ? इङ्गलैण्डने मुसलमानोंके साथ यह वायदा किया था कि वह खिलाफतमें हस्तक्षेप न करेगा लेकिन इस गुप्त सन्धिके अनुसार तो उसने अपनी प्रतिज्ञाको टुकड़े कर दिया है और खिलाफत की तो जड़ ही काट दी है" युद्धके दिनोंमें मेरे हृदयको इङ्गलैण्डकी इस अन्यायपूर्ण नीतिसे बड़ा धक्का पहुँचा। अब मुझे इङ्गलैण्डकी सच्चाईमें सन्देह होने लगा। इसके पहले इङ्गलैण्डने फारिसको दो भागोंमें विभाजित कर उसके साथ जो सन्धि की थी उससे भी मेरे हृदयमें अनेक आशङ्काएं उत्पन्न हो गई थीं। इङ्गलैण्डकी रूसके साथ यह सन्धि होनेकी वजहसे मेरा हृदय पूर्णतया इस बातको स्वीकार नहीं करता था कि इङ्गलैण्डका पक्ष न्याययुक्त और जर्मनीका अन्याययुक्त है। प्रारम्भसे ही मैं मिस्टर रैमसे मैकडोनैल्डके इस कथनको सच मानता था कि रूस भी युद्ध करनेके लिये उतना ही उद्यत था जितना जर्मनी इस लिये इङ्गलैण्डको रूसके ज़ारके साथ सन्धि हर्गिज़ नहीं

करनी चाहिये थी। इङ्गलैण्डका यह कार्य्य मुझे प्रजातंत्रके लिये अत्यन्त घातक प्रतीत हुआ था। दूसरी ओर जर्मनीका वेलजियम पर धावा करना भी मैंने अत्यन्त अन्यायपूर्ण समझा था। इस प्रकार युद्धके विषयमें मेरे विचार कुछ गड़बड़से थे। फिर भी मैं बराबर यही आशा करता रहा था कि जर्मनीकी अपेक्षा इङ्गलैण्डका पक्ष कम अन्याययुक्त है लेकिन जब मैंने यह विश्वासघातपूर्ण गुप्त सन्धि देखी तो मेरा विश्वास मित्र दलकी न्यायप्रियतामें बिल्कुल जाता रहा और मैंने समझ लिया कि मित्र दल भी उतना ही अन्यायी है जितना जर्मनी। इन्हीं सब बातों पर बहुत कुछ ख्याल करते हुए मैंने महात्माजीको गुप्त सन्धिके नियम दिखलाते हुए कहा "कृपया इसे देखिये। मैं अब सरकार की नीति से कुछ भी सहानुभूति नहीं रख सकता और यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि आप किस प्रकार सरकार से सहानुभूति रख सकते हैं।" यह सुन कर महात्माजी के हृदयमें बड़ी आशङ्का उत्पन्न हुई। उस समय युद्ध का जमाना था और इङ्गलैण्ड पर बड़ा भारी संकट था। वायसरायने भारतवासियों से सहायता देनेके लिये प्रार्थना की थी। गान्धीजी सहायता देनेका निश्चय करके ही दिल्ली आये थे लेकिन इस गुप्त सन्धि को देखकर उनके हृदय में बड़ी घृणा हुई। जब वायसराय से महात्माजी ने इस बात का ज़िक्र किया तो वायस राय ने उन्हें इस प्रकार समझा दिया "इङ्गलैण्डके विरुद्ध तो बात आप कहते हैं वह प्रमाण नहीं मानी जा सकती। शायद यह गुप्त सन्धि, जो बोलशेवको ने प्रकाशितकी है, झूठी है। बोलशेवकों के लिये ऐसा करना कोई कठिन बात नहीं है।" महात्माजी ने वायसरायकी बात पर विश्वास करके उसे स्वीकृत कर लिया। दिल्ली से गुजरात को वापस जाकर उन्होंने ग्रामोंमें रँगरूट भर्ती करना शुरू किया। मुझे इस बात की स्वप्न में भी

आशङ्का नहीं थी कि अहिंसाके पक्षपाती महात्मा गान्धीजी स्वयं रँगरूट भरती करके लड़ाई पर भेजेंगे । मैंने बीसियों चिट्ठियाँ महात्माजी को इस विषय पर भेजीं और उनसे पचासों बार प्रार्थना की कि आप युद्धके लिये रँगरूट भर्ती न कीजिये, लेकिन महात्माजी ने मेरी बात नहीं मानी । इस वर्ष मैं बराबर शान्ति निकेतन में ही रहा। अक्टूबर के महीने में मुझे तार मिला कि महात्माजी अत्यन्त बीमार हैं। फौरन ही मैं अहमदाबाद को रवानः हुआ और वहाँ मैंने उन्हें लगभग मरणासन्न देखा । अनेक सप्ताहों तक मुझे उन्हीं के पास आश्रम में रहना पड़ा । जब उनकी तबियत सुधर गई तो मैं वहाँ से शान्तिनिकेतनको वापस चला आया । ”

दसवाँ अध्याय ।
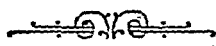
पंजाब में मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का कार्य्य ।

महात्मा गान्धीजीने पंजाबसे अपने पत्र, नवजीवनके २-११-१९ के अङ्कमें लिखा था “ मिस्टर ऐण्ड्रयूजने पंजाबकी जो सेवा की है उसका अनुमान करना असम्भव है । उन्होंने अपना कार्य्य अदृश्य रीतिसे किया है । मिस्टर ऐण्ड्रयूजके विषयमें यह कहावत ठीक तरह से चरितार्थ होती है कि उनका दाहिना हाथ भी नहीं जानता कि उनका बाँया हाथ क्या काम करता है । मैंने यह बात अपने मनमें अच्छी तरह समझ ली है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी सेवा शुद्ध गुप्त दानके समान है । जहाँ पर दूसरोंको पहुँचना बहुत मुश्किल है उन स्थानोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज पहुँच सके हैं” इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब

की आपत्तिके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजने पंजाबी भाइयोंकी जो सेवा की, वह भारतके इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। ज्यों ही पजाब में अत्याचार होने प्रारम्भ हुए त्यों ही आप शान्तिनिकेतनके शान्तिमय जीवन को छोड़कर शीघ्र ही पंजाबके लिये रवानः हुए।

दिल्लीमें कार्य्य।

आप पंजाब को जारहे थे कि बीचमें दिल्लीवालोंने आपको रोक लिया। उस समय दिल्लीकी अवस्था बड़ी संकटमय थी। इस लिये आपने दिल्ली निवासियोंकी आज्ञा मान कर पहले वहीं कार्य्य करना प्रारम्भ किया। हकीम अजमल खाँ, डाक्टर अंसारी और स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ आपको दिन रात परिश्रम करना पड़ा। ऐङ्गलो इण्डियन पत्र उस समय सरकारको यही उपदेश दे रहे थे कि दिल्लीमें भी मार्शल ला जारी कर दो। इन ऐङ्गलो इण्डियन पत्रोंमें जो लेख निकलरहे थे उनका लिखाने वाला कोई और ही था। यह बात लग भग निश्चित थी कि ये लेख पंजाब के किसी उच्च पदाधिकारीकी प्रेरणासे लिखे जार हे थे। लाहौरके अखबार "सिविल और मिलिटरी गजट" के कालम इसी बातसे रंगे रहते थे। प्रयागका सरकारी पंडा पायोनियर भी सिविल और मिलिटरी गज़टके लेखोंको उद्धृत कर रहा था और इसके सिवाय उच्च पदाधिकारियों द्वारा प्रेरित इसी आशयके अन्य पत्र भी छाप रहा था। इन ऐङ्गलो इण्डियन पत्रोंकी सम्मति यही थी कि दिल्लीमें मार्शल ला जारी किये बिना पंजाबमें मार्शल लाका प्रयोग दृढ़ता पूर्वक नहीं हो सकता।

इन सब बातोंका परिणाम यह हुआ था कि दिल्लीके चीफ कमिश्नर मिस्टर बैरौनके पास मार्शल ला जारी करनेका हुक्म आ भी गया था और वे उसे चाहे जब जारी कर सकते थे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "मैंने दिल्ली नगरके निवासियोंको अत्यन्त क्रुद्ध पाया। स्वयं उनके नगरमें जो दुर्घटनाएं हो चुकीं थी उनके कारण तो वे नाराज़ थे ही,

लेकिन पंजाबसे अत्याचारोंके जो समाचार आरहे थे, उनसे वे और भी उत्तेजित हो गये थे। मेरा दृढ़ विचार दिल्लीसे सीधे लाहौर और अमृतसर जानेका था लेकिन सबने दिल्लीमें मुझसे यही कहा " तुम दिल्लीमें ही ठहरो, और यहाँकी प्रजा तथा यहाँके अधिकारियोंके बीचमें पड़कर इस मामलेको सुलझाओ " मुझे प्रतीत हुआ कि दिल्लीमें रहकर मैं दिल्ली निवासियोंकी कुछ सेवा कर सकूँगा, इसी लिये मैंने पहले दिल्लीमें ठहरना ही उचित समझा। प्रायः मुझे दिन दिन भर और फिर रातके एक एक दो दो बजे तक जागकर परिश्रम करना पड़ा। ईश्वर कृपासे यह कार्य्य सफल हुआ। दिल्लीमें मार्शल ला जारी नहीं होने पाया। "

सन्धिके लिये शिमला गमन।

" दिल्लीके मुख्य मुख्य नागरिकोंने मुझे आज्ञा दी मैं शिमले जाकर वायसरायसे मिलूँ। मैं इसीके लिये शिमला गया, लेकिन वायसरायने मुझसे मिलना स्वीकृत नहीं किया। मैंने उस समय भारत सरकारके अधिकारियोंसे बड़ी दृढ़ता पूर्वक यही निवेदन किया था कि मुसलमानोंके प्रश्नोंका समझौता हो जाना चाहिये और टर्कीके साथ सन्धिमें नर्मीके साथ बर्ताव होना चाहिये। खिलाफतका प्रश्न उस समय मेरे दिमागमें था, और इसीके उद्देश्य से मुझे शिमले जाना पड़ा था, लेकिन वहाँ पहुँचकर मुझे [illegible]जान्त निराश होना पड़ा। अपने उद्देश्यमें मुझे कुछ भी सफलत[illegible] काय्यें [illegible]। इसके कुछ दिनोंबाद अफगान युद्ध प्रारम्भ हुआ और हकीम[illegible] ठीक[illegible]खाँ और स्वामी श्रद्धानन्द दोनोंने मुझसे अलग अलग यही कहा कि मैं फिर शिमले जाकर वायसरायसे मिलूँ और वायसरायको विश्वास दिलाऊँ कि यदि वे मार्शल ला उठादें तो हम दोनों (हकीम साहब और स्वामीजी) पंजाब प्रान्तकी शान्तिकी गारण्टी कर सकते हैं। इस बार मुझे ये बातें वायसरायके सम्मुख रखनेका अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन मैंने उन्हें इस

विषय पर बिल्कुल शुष्क पाया। होम आफिसके प्रधान सर विलियम विनसेण्ट भी उतने ही शुष्क और उदासीन प्रतीत हुए। सर विलियम विनसेण्ट मुझसे नहीं मिले लेकिन सर विलियम मैरिससे, जो होमसेक्रेटरी थे, मैंने बहुत देर तक बातचीत की। उनका बर्ताव यद्यपि सहानुभूतियुक्त था, लेकिन उनकी बातचीतसे मुझे यह पता लग गया कि उनके विभागके प्रधान सर विलियम विनसेण्ट पंजाबसे मार्शल ला नहीं उठाना चाहते थे।"

अमृतसर यात्रा

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने लार्ड चैम्सफोर्डसे बातचीत करते हुए अपने पंजाब जानेका विचार भी प्रगट किया। लीडर, इंडिपैण्डेण्ट, पत्रिका, न्यूइडिया, हिन्दू और 'बंगाली' इन पत्रोंने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को पंजाब जानेके लिये अपना प्रतिनिधि चुना था और वायसराय साहब के पास इस आशयका तार भेजा था कि वे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को पंजाब जानेकी आज्ञा देदें। वायसरायने जो शब्द उस समय कहे उनका तात्पर्य मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने यही समझा कि वायसरायने उन्हें पंजाब जानेकी आज्ञा दे दी है। वायसरायने उनसे यह भी कहा कि लाहौर पहुँचने पर सर ऐडवर्ड मैकलीगन और सर माइकेल ओडवायरसे भी मिल लेना। पंजाब प्रान्तके चीफ सेक्रेटरीको तार देकर दूसरी ट्रेनसे आप पंजाबके लिये रवानः हुए। अमृतसर स्टेशन पर पहुँचते ही आपको जनरल डायरकी फौजके आदमियोंने गिरफ्तार कर लिया। मिलिटरी पुलिसके आदमियोंने आपको जनरल डायरके अफसरके हवाले किया। इस अफसरने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से कहा "तुम्हें जनरल डायरके सामने चलना पड़ेगा" दिन भर आप पर फौजी पहरा रहा। बन्दूक लिये हुए दो अँग्रेज़ सिपाही आप पर तैनात किये गये। सन्ध्या समय आपको पंजाब प्रान्तसे निकाले जानेका हुक्म मिला। इस प्रकार पकड़े जाने, और प्रान्तसे बाहर निकाले जानेमें आपका बड़ा अप-

मान हुआ लेकिन आपने इस बातकी कुछ पर्वाह नहीं की। मातृभूमि भारतकी सेवा करनेमें यदि आपको जेल भी जाना पड़े तो आप उसके लिये भी सहर्ष उद्यत रहते हैं।

दिल्ली पहुँचनेपर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को महात्मा गान्धीजीका तार मिला " पंजाबमें अभी मत जाओ " पंजाब प्रान्तके चीफ सेक्रेटरीका तार भी आपको मिला " You have apparently misunderstood position. Under the martial Law, requests for permission to enter martial Law area are dealt with by military authorities. Punjab Government understand that if you attempt to enter area you will probably be arrested and dealt with under martial Law " " यह स्पष्ट है कि आपने भूल की है। मार्शललाके दिनोंमें फौजी कानूनके अधीन प्रान्तमें प्रवेश करनेकी आज्ञा फौजी अधिकारियोंसे ही लेनी पड़ती है। पंजाब गवर्मेण्ट समझती है कि अगर आप पंजाबमें घुसनेका प्रयत्न करेंगे तो पकड़ लिये जावेंगे, और मार्शललाके अनुसार आप पर मामला चलाया जावेगा "

होम विभागसे आपको तार मिला " You are mistaken in thinking you had Viceroy's permission to enter Punjab. His Excellency, understanding that you were going, advised you to see Lieutenant Governor andr Sir Edward Madagan; but he had no knowedge that permission had been refused and will not interfere with orders passed"

अर्थात् " आपका यह ख्याल कि, आपको वायसरायने पंजाबमें घुसनेकी आज्ञा देदी है, गलत है। श्रीमान वायसराय साहबने यह समझ कर कि आप पंजाब जारहे हैं आपको यह सलाह दी थी कि आप पंजाबके लॅफ्टीनेण्ट गवर्नर तथा सर ऐडवर्ड मैकलेगनसे भी मिललें, लेकिन जनाब वायसरायको यह बात नहीं मालूम थी कि आपकी

पंजाबमें जानेकी प्रार्थना अस्वीकृत हो चुकी है। जो हुक्म आपको मिल चुका है वायसराय उसमें दस्तनदाज़ी नहीं करना चाहते।"

आश्चर्य्यकी बात तो यह थी कि न तो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अपने पकड़े जानेके पहले ही या उसके बाद ही कोई हुक्म इस आशयका मिला था कि आपको पंजाबमें जानेकी आज्ञा नहीं है! फिर होम विभाग वालोंने यह परिणाम कहाँसे निकाल लिया कि आपको पंजाबमें प्रवेश करनेकी मनाई हो चुकी है?

जब माननीय पं. मदन मोहन मालवीयजीने इस विषय में कौंसिलमें प्रश्न किया था उस समय उनके मुख से मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के नाम की जगह मिस्टर ह्यूम निकल गया था। पाठकोंको यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि कौंसिल में माननीय पंडितजी को कितनी लम्बी लम्बी स्पीचें देनी पड़ी थीं; कितनी भिन्न भिन्न बातों का वर्णन करना पड़ा था, किस कठिन परिस्थिति में उन्हें यह भाषण करने पड़े थे और फिर उनकी स्पीचों के बीच बीच में कौंसिल के गोरे सभासदों ने कितनी बाधाएं डाली थीं। यदि इस स्थिति में भूल से उनके मुखसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के नाम के बजाय मिस्टर ह्यूम निकल गया तो कोई विचित्र बात नहीं थी लेकिन आनरेबल मिस्टर थामसन ने माननीय पंडितजी की इस बात का मज़ाक उड़ाते हुए कौंसिल में कहा था।

"The first case he mentioned was that of the exclusion of a gentleman from the Punjab who was so wellknown that the Pundit could not even give us his correct name; called him Mr. Hume."

अर्थात् माननीय पंडितजीने पहले एक ऐसे सज्जनका ज़िक्र किया है जो पंजाबसे निकाल दिये गये थे। ये सज्जन इतने सुप्रसिद्ध हैं कि पंडितजी हम लोगोंको उनका ठीक ठीक नाम भी नहीं बतला सके। पंडितजीने उनका नाम मिस्टर ह्यूम बतलाया था।"

मिस्टर थामसनने अपने इस भाषणमें व्यङ्गोक्ति द्वारा यह भी कटाक्ष किया था कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ भारतमें प्रसिद्ध नहीं हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए ट्रिब्यूनने लिखा था "मिस्टर थामसनको शायद यह सुन कर आश्चर्य्य होगा कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का नाम सम्पूर्ण भारतके शिक्षित जन समुदायके घर घरमें व्याप्त हो रहा है। इङ्गलैण्डमें भी उनका नाम उतना ही प्रसिद्ध है जितना मि. थामसनके साथी किसी भी आई. सी. ऐस. का, और उपनिवेशोंमें तो मि. ऐण्ड्र्यूज़का नाम जितना सुप्रसिद्ध है उतना इंडियन सिविल सर्विसके किसी भी मेम्बरका न होगा। यही नहीं, हम यह भी कहेंगे कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उन अंग्रेजोंमेंसे हैं जिनका भारतसे सम्बन्ध होना ब्रिटिश साम्राज्य भरके लिये कोई गौरवकी चीज़ है। और जो इस सिद्धान्तके, कि पूर्व पूर्व है तथा पश्चिम पश्चिम और दोनोंका संयोग नहीं होसकता, खंडन करनेवाले जीते जागते प्रमाण हैं।"

इसी सम्बन्धमें यहाँ उस बातचीतका ज़िक्र कर देना उचित होगा जो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ और श्रीमान वायसरायमें हुई थी। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इन प्राइवेट बातोंको किसी पत्र सम्पादक या संवाद दातासे नहीं कहा था, हाँ उन्होंने बंगालके एक सुप्रसिद्ध नेतासे वार्तालाप करते हुए कुछ बातें अवश्य कह दी थीं, शायद उन्होंने 'नायक' पत्रके सम्पादकको यह बातें बतला दीं। नायक पत्रने लिखा था "श्रीमान लाट साहबने कटाक्ष करते हुए मि. ऐण्ड्र्यूज़से कहा था।

"भारत वर्षमें अंग्रेज़ मात्रका जीवन पवित्र है। किसी अंग्रेज़ पर हाथ उठाना हिन्दुस्तानीके लिये घोर अपराध है। भारतमें अँग्रेज़ोंके जीवनकी रक्षाके लिये जो कुछ मुझसे हो सकेगा मैं करूँगा। पंजाबमें नौ अँग्रेज़ मारे जा चुके हैं और आप भी एक अँग्रेज़ हैं। मैं नहीं समझता कि आप इस बातको किस तरह भूल सकते हैं!"

इस पर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने कहा "लेकिन हमारी ओरसे—अँग्रेज़ोंकी ओरसे—भी बहुतसे अपराध हुए हैं।"

श्रीमान वायसरायने पूँछा "हम लोगोंने क्या अपराध किये है?"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने कहा "सबसे प्रथम अपराध तो स्वयं आपने ही किया है।"

वायसराय—"क्या?"

ऐण्ड्र्यूज़ "सम्पूर्ण भारतीय मेम्बरोंके मतके विरुद्ध आपने ही तो रौलेट बिल पास किये।"

पंजाबसे निकाले जानेके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ सीधे महात्मा गान्धीजी के पास गये। वहां महात्मा गान्धीजीमें और आपमें बहुत देर तक इस बात पर वाद्‌विवाद होता रहा कि आप दोनोंके विरुद्ध पंजाबमें प्रवेश निषेधकी जो आज्ञा थी उसे आप तोड़ें या नहीं। मि. ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं:— "मुझे उस समय इस बात की पूरी पूरी चिन्ता थी कि अगर महात्मा गान्धीजी पकड़े गये तो ज़रूर खून खच्चर हो जावेगा इस लिये मैं उनके पंजाब जानेका विरोधी था, लेकिन मैंने यह निश्चय कर लिया था कि अगर महात्माजी पंजाबको जावेंगे तो उनके साथ जाना मेरा कर्तव्य होगा। अन्तमें महात्माजीनें यही निश्चित किया कि नहीं जाना ही उचित होगा। महात्माजीको उस समय भी आशा थी कि सरकारी कमीशन न्याय करेगा"

'सर' रवीन्द्रनाथका उपाधि-त्याग.

महात्माजीसे मिलनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कलकत्तेको वापस चले आये और गुरुदेव रवीन्द्रनाथके साथ रहे। उन्हीं दिनों रवीन्द्रनाथने अपनी 'सर' की उपाधि त्यागनेका विचार मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ के सामने प्रगट किया और उनकी सम्मति पूँछी। एक बार जापानमें भी उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से अपना यही

विचार प्रगट किया था। उस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उनसे यही कहा था "इस समय आप 'सर' की उपाधिको न छोड़िये, कभी उचित अवसर पर ऐसा कीजियेगा" अब पंजाबके अत्याचारोंके बाद जब इस विषयमें सर रवीन्द्रनाथने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की सम्मति पूँछी तो आपने यही कहा "हां उपाधि छोड़नेके लिये यही उपयुक्त समय है" श्रीयुत रवीन्द्रनाथजीने पत्र अपने आप लिख कर मिस्टर ऐण्ड्रयू-ज़को दिखलाया। आपने उनसे कहा "इसमें एक भी शब्दके बद-लेनेकी आवश्यकता नहीं आप इसे ज्यों का त्यों छपनेके लिये भेज दीजिये। इस पत्रके विषयमें यहां इतना ही कहना पर्य्याप्त है कि यह पत्र भारतके इतिहाससे चिरस्मरणीय होगा। इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रत्येक शब्द अमूल्य रत्नके समान है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "मैं इस पत्रको ऐसोयेटैड प्रैसके मैनेजरके पास लेगया और मैंने उनसे निवेदन किया कि आप इसे तारद्वारा समाचार पत्रोंमें भेज दीजिये। मैनेजर साहेबने कहा "इसे छपा कर मुझे जेलकी हवा थोड़े ही खानी है। मैं ऐसा नहीं कर सकता।" तत्पश्चात् मैं इस पत्र को स्वयं ही स्टेट्समैन, इङ्गलिशमैन और इंडियन डेलीन्यूज़के सम्पा-दकोंके पास लेगया। इन्होंने फौरन ही श्री रवीन्द्रनाथका यह पत्र छाप दिया। पीछे अमृतबाज़ार पत्रिका और बंगालीमें भी यह छपा। मैंने भारतके मुख्य मुख्य अखबारोंको यह पत्र तार द्वारा भेजा और इङ्ग-लैण्ड, आयर्लैण्ड तथा अमेरिकाके अखबारोंको भी तारके ज़रियेसे मैंने यह पत्र भेजा। इसका बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। भारत सरकारके सिर पर तो यह वज्रपातकी तरह जमकर बैठा।"

सीलोन-यात्रा

अगस्त सन् १९१९ में मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ सीलोन वर्कर वैलफेयर लीग (सीलोनकी मज़दूर सहायक सभा) के बुलाने पर सीलोन गये। इस मज़दूर सहायक सभाके सभापति श्रीमान् सर. पी. अरुणा-

चलम थे। सीलोनके गोरे प्लाण्टरोंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से कहा "जब तक आपका इस मज़दूर सभासे कुछ भी सम्बन्ध रहेगा तब तक हम लोग आपसे कुछ बात चीत नहीं कर सकते।" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इसका उत्तर दिया "चाहे आप बात चीत करें या न करें मैं उस सभासे अपना सम्बन्ध कदापि नहीं छोड़ सकता। यदि आप जाँचके काममें कुछ सहायता नहीं भी करेंगे तब भी मैं अपनी स्वतंत्र जाँच बराबर जारी रक्खूंगा।" जब प्लाण्टरोंने देखा कि आप अपनी बात पर दृढ़ हैं तो प्लाण्टर दब गये और उन्होंने कहा "अच्छा आप हमारी कोठियों पर जाँच कर सकते हैं।"

जाँच करनेके बाद आपने जो बातें निश्चित कीं उनमें मुख्य ये हैं।

(१) कुलियों पर जो ऋण है वह सब काट दिया जावे और भविष्यमें कोई कुली कर्जेके ज़रियेसे कोठीकी नौकरीके बन्धनमें न फसा ज़ावे, क्योंकि ऐसा करना एक प्रकारसे शर्तबन्दीकी गुलामीके समान ही है।

(२) मज़दूरीके अपराधोंके लिये कुलियों पर फौजदारीमें अभियोग चलाकर। जेल न की जावे।

(३) कुलियोंका वेतन बढ़ा दिया जावे। वेतन बढ़ानेके बजाय चांवल देनेकी जो प्रथा है वह बिल्कुल बन्द कर दी जावे।

जो अनुभव मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अपनी फिजी यात्राओंमें प्राप्त हुआ था उनसे उन्हें इस सीलोन सम्बन्धी कार्य्यमें बड़ी भारी सहायता मिली थी सीलोनके गवर्नरने भी आपसे इस विषयमें बहुत कुछ बातें पूँछी थीं।

सीलोनसे वापस आनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने श्रीरवीन्द्रनाथसे कहा "मैं अपने पंजाबी भाइयोंकी सेवा करनेके लिये फिर पंजाबको जाना चाहता हूँ। कृपा कर आप आशीर्वाद दीजिये जिससे मैं अपने उद्देश्यमें सफल होऊँ।" आज्ञा

पंजाबमें जाँचका काम।

लेकर आप पंजाबके लिये रवानः हुए और सीधे लाहौर पहुँचे। यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारतीय नेताओंमें सबसे प्रथम मिस्टर ऐण्ड्रूज़ ही पंजाबी भाइयोंकी सहायताके लिये मई महीनेमें पंजाबमें गये थे। पंजाबमें दो महीने रह कर मिस्टर ऐण्ड्रूज़ने जो सेवा की वह वास्तवमें अमूल्य थी। मिस्टर ऐण्ड्रूज़के पंजाब जानेसे पंजाबी भाइयोंको बड़ी शान्ति मिली थी। अपने से भिन्न जातीय मनुष्योंको सच्ची सान्त्वना देना कोई सरल कार्य्य नहीं है। मिस्टर ऐण्ड्रूज़को इस कार्य्यमें असाधाराण सफलता प्राप्त हुई, इसका कारण यही है कि उनका हृदय निर्मल प्रेम और सच्ची सहानुभूतिसे परिपूर्ण है" दुःखी लोगोंके दुःखको वे अपना ही दुःख समझते हैं। अत्याचार-पीड़ितोंका करुणा जनक स्वर मिस्टर ऐण्ड्रूज़के हृदयके लिये असह्य है। दुखियोंके दुःख दर्द दूर करनेके लिये आप सहस्रों मील दूर फिजी, दक्षिण अफ्रिका, सीलौन, और पूर्वी अफ्रिका तक जाचुके हैं फिर पंजाबका तो कहना ही क्या है क्योंकि आपके प्रथम दस वर्ष मुख्य-तया पंजाबमें ही व्यतीत हुए थे और पंजाबकी भूमिसे आपको प्रेम भी बहुत है।

१८ जुलाई तक तो मार्शललाके कारण पंजाबमें आपको जानेकी मनाई थी। इसके बाद आपको सीलोन जाना पड़ा था। सलौनसे वापस जानेके बाद ही आप पंजाबको रवानः हुए और २२ दिसम्बरको लाहौर पहुँचे। पहले पहल तो आपने लाहौरके विद्यार्थि-योंके विषयमें लेख लिखने प्रारम्भ किये। कर्नल फ्रांक जानसनकी महरबानीसे कितनी ही विद्यार्थी स्कूलों और कालेजोंसे निकाल दिये गये थे। इन विद्यार्थियोंको क्षमा प्रदान करना मिस्टर ऐण्ड्रूज़का पहला कार्य था। तत्पश्चात् आप अमृतसर गये और वहां जाकर आपने जलियांवाला बाग़के दर्शन किये और वह गली भी देखी, जहां

हिन्दुस्तानी पेटके बल चलाये गये थे। इन्हें देखकर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के हृदयको जो धक्का लगा उसे वे ही जानते थे। अमृतसरमें अनेक दिन तक काम करनेके बाद आप गुजरानवाला गये। गुजरानवालेके निवासियों पर जो जुर्माना हुआ था उसे आपने बहुत कुछ घटवा दिया। विधवाओं और असमर्थोंसे भी जो टैक्स जुर्मानेके बतौर उगाया जानेवाला था उसे आपने बिल्कुल ही दूर करवा दिया। इस कृपाके लिये उस नगरके सहस्रों कुटुम्ब आपके अत्यन्त कृतज्ञ हुए। तत्पश्चात् आप वज़ीराबाद् रामनगर सांगला लायलपुर इत्यादि अनेक नगरोंमें गये और वहां मार्शल लाके अत्याचारोंकी जाँच की। दूर दूरके गांवोंसे सन्देश आने लगे "पादरी साहबको हमारे गांवमें भेजो, हम उनके सामने अपना सब रोना रोवेंगे।" गांवोंके भोले भाले पंजाबी स्त्री पुरुषोंनें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ पर पूरा पूरा विश्वास किया। मेरे एक सुयोग्य मित्र जो पंजाब यात्रामें बराबर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के साथ रहे थे कहते हैं।

मानियावाला और रामनगरमें अनेक स्त्रियां मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के निकट आतीं उनके चरणोंपर माथा टेकतीं और जाते समय उनके वस्त्रोंको छूतीं तथा आंखोंमें आंसू लाकर कहती थीं "तूं साडा रब है" (तू हमारा प्रभु है) इन स्त्रियोंकी भक्तिका कारण यही था कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के मुखमण्डलसे गम्भीर शान्ति और आकर्षक धार्मिकता टपकती थी।"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की पंजाब यात्राकी अनेक घटनाऐं बड़ी चित्ताकर्षक और हृदय वेधक हैं। स्थानाभावसे वे सब घटनाऐं इस जीवनीमें नहीं लिखी जा सकतीं। उदाहरणके लिये हम यहां केवल दो घटनाऐं पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करते हैं।

जब आप गुजरानवालेमें थे आपने सुना कि मार्शल लाके दिनोंमें लाहौरके निकट एक ग्रामीण सिख लम्बरदारके साथ फौजी गोरोंने

अत्यन्त नीचता और निर्दयताका व्यवहार किया है। फौरन ही आप उस लम्बरदारके गांवको गये और वहां उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त पूँछा। लम्बरदारने कहा "मेरे गांवसे छः मील दूर पर किसीने तार काट डाला था मुझे नहीं मालूम यह तार किसने काट डाला था। दूसरे दिन लाहौरसे फौजी सामानसे भरी हुई गाडी आपहुंची और प्रातःकाल होनेके पहले ही गोरे सिपाहियोंने मेरे गांवको घेर लिया। इन सिपाहियोंने मुझे पकड़ लिया और एक पेड़से बांध दिया। मेरे पांव कमर और हाथ कस दिये गये। इसके बाद उन्होंने मेरे कोड़े लगाने शुरू किये। इन कोड़ोंकी चोटके मारे मैं बेहोश होगया। रस्सियाँ कब खोली गईं इसका मुझे पता नहीं। जब मुझे होश आया तो गोरे सिपाहियोंने मुझे आज्ञा दी कि मैं जुर्माने के २००) रु. इन गांवोंसे वसूल करूं। साहब आप अन्दाज कर सकते हैं कि इन दो सौ रुपयोंका एक छोटेसे गांवसे उगाना कोई आसान काम नहीं था। खैर जैसे तैसे गांववालोंने ये रुपये इकठे करके इन गोरे सिपाहियोंके हवाले किये। देखिये साहब मेरी पीठपर और उसके नीचे कोड़ोंके निशान अब भी बने हुए हैं। सरकारकी ओरसे मैं कई लड़ाइयोंमें लड़ चुका हूँ और बहादूरीके लिये मुझे प्रशंसा पत्र भी मिल चुके हैं। अपनी राजभक्तिके लिये सरकारसे अब यह इनाम मिली है। देखो साहब यह कोड़ोंके निशान देखो।"

मिस्टर ऐण्ड्रयूजने अपनी आंखोंसे ये निशान देखे। फिर वह सिख भोले भाले मुखसे मधुर पंजाबी भाषामें बोला "साव अगर मैं नूं कोई जहाज रा किराया देदे त मैं वलायत जाऊं। उथे बादशाह दे महल विच पौंचके बादशाहनूं कवां 'तेरे अफसराने ए कीता हैं"

यह अत्याचारपूर्ण कथा सुनकर मिस्टर ऐण्ड्रयूजका हृदय द्रवित हो गया और आपके आंसू निकल आये। कितनी ही देर तक तो आप

बोल भी नहीं सके । फिर अपनेको कुछ सम्हाल कर आपने उससे कहा "देखो भाई गुरू नानकने ग्रन्थ साहबमें कहा है "फरीद, अगर तुम्हारे कोई तमाचा मारे तो तुम झुक कर उसके चरणोंकी धूल अपने माथेसे लगालो । इस प्रकार तुम परमात्माके मन्दिरमें प्रवेश कर सकोगे।" देखो भाई लम्बरदारजी, तुम मुझे क्षमा प्रदान करो । तुम्हारे ऊपर तो अत्याचार किया है वह अँग्रेज़ोंने किया है। मैं भी अँग्रेज़ हूँ और अँग्रेज़ मेरे भाई हैं । इस लिये अपने भाइयोंके पापका बोझा मेरे सिर पर है। मेरे देशवासियोंका किया हुआ कसूर मेरा ही कसूर है । गुरु नानकने माफ़ करनेकी आज्ञा दी है इस लिये हे भाई तुम मेरे कसूर माफ़ करो" ऐसा कह कर ऐण्ड्रूयूज साहबने अपना सिर लम्बरदारके सामने नबाया और झुक कर उसके चरणोंकी धूल ली और उससे माफी मांगी । यह देखकर लम्बरदार पहले तो भौचक्कासा रह गया और झट पीछे हट गया । वह मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़से बोला "नहीं साहब, नहीं आप ऐसा नहीं कीजिये, यह ठीक नहीं" मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ने कहा "जरूर मैं ऐसा करूंगा, यह मेरा फर्ज़ है । मेरे भाइयोंने बड़ा भारी पाप किया उसका प्रायश्चित्त मुझे करना ही होगा" यह सुनकर वह भोला भाला सिख रोने लगा । मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ने उसे अपने हृदयसे लगा लिया और उसके गलेसे लिपट गये । वह लम्बरदार सिसक सिसक कर रो रहा था और उसके आंसू मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के कन्धे पर गिर रहे थे। बहुत देर बाद वह बोल सका । उसने कहा "इतने महीनों बाद आज मुझे तसल्ली मिली है । अब मुझे कुछ नहीं चाहिये । मेरे हृदयको अब सन्तोष हो गया । साहब अब मैं कुछ नहीं चाहता । बस अब मैं आनन्दमें हूँ" मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ने कहा "क्या सारा मामला ख़तम हो गया लम्बरदार साहब ?" उस सिखने कहा हां, सारा मामला ख़तम हो गया" —उस दिनसे उस सिखके हृदयका

सम्पूर्ण द्वेष दूर हो गया और वह पहलेकी भाँति ही प्रसन्नतापूर्वक रहने लगा।

दूसरी घटना इस प्रकार है। ज्यों ही मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ लाहौर पहुँचे यह समाचार आस पासके गांवोंमें फैलगया कितने ही ग्रामीण मनुष्य इधरसे उधरसे आपके निकट आने लगे। वे लोग कहते थे "पादरी साहब, गांवोंके आदमी इतने डरे हुए हैं कि अगर कोई दूसरा गांवेंमें जावेगा तो वे उसे कुछ नहीं बतलावेंगे इस लिये पादरी साहब आप ही चलिये; आपके सामने वे सब बातें कह देंगे।"

इसी प्रकारकी घटनाऐं फिजीमें हुई थीं। एक दिन मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ प्रातःकालमें ईश्वर प्रार्थना करनेके बाद बैठे ही थे कि मद्रासी मज़दूरोंका एक झुंड आपहुँचा। ये सब मद्रासी मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के चरणोंपर गिर पड़े और उनसे प्रार्थना की "आप नाबुआके निकटकी कुली लैन चलकर देखिये" लतौकामें भी ऐसा ही हुआ। एक हिन्दुस्तानी रातभर रास्ता चलकर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के निकट पहुँचा और उनसे कहा "नार्दीको जो सड़क जाती है उसके निकट एक कोठीमें बड़ा जुल्म हुआ है। महरबानी करके आप वहां चलिये" फिजीमें ऐसा कितनी ही बार हुआ था। पंजाबमें भी अब ऐसा ही हुआ। अपने एक रिश्तेदारके साथ एक ग्रामीण पंजाबी स्त्री आई। उसने बहुत देर तक मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अपने ऊपर किये गये भयंकर अत्याचारोंकी कहानी सुनाई। यह सुनकर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उसके गांवको जानेका निश्चय किया। थोड़े दिनों बाद आप उस गांवमें पहुँचे और वहां उस स्त्रीको देखा। गांववालोंने आपको अपना आतिथि बनाया। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उन्हींके साथ भोजन किया और कई दिन उनके यहां रहे। गांवके लगभग सब आदमी आपसे मिलनेके लिये आये। विशेषतः उस गांवकी बहुतसी स्त्रियां आईं और उन्होंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अपने कष्ट

सुनाने शुरू किये। इन स्त्रियोंने कहा "स्मिथ साहब (बोसवर्थ स्मिथ) ने हमारे पुरुषोंको दूर भेज दिया और फिर हम सबको एक दीवालके निकट खड़ा किया। हमने लज्जासे अपना घूंघट मार लिया था और अपना मुंह दीवालकी ओर कर लिया था लेकिन स्मिथ साहबने हमारे घूंघट खुलवाये, हममेंसे कईके बेंत भी लगाये और हमसे बड़ी बुरी बुरी बातें कहीं।"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कहते हैं "उस दृश्यको, जब ये स्त्रियां अत्यन्त दुःख और क्रोधके साथ मुझे अपने अत्याचारोंका वृत्तान्त सुना रही थीं, मैं कदापि नहीं भूल सकता। इनकी बातें सुनकर यह स्पष्टतया प्रगट होता था कि उनकी बतलाई हुई बातें सत्य हैं। जब मैं लार्ड हंटरसे मिला तो मैंने उनसे निवेदन किया "किसी दिन प्रातःकालके समय आप किसी गांवको, जहां मार्शल लाके दिनोंमें अत्याचार हुए हों, जाइए और खुद गांववालोंके मुखसे उनका वृत्तान्त सुनिये। वहां जिरह करके वहां सच झूठ जानना कोई मुश्किल बात न होगी। पंजाब सरकारके चीफ़ सेक्रेटरी मिस्टर थामसनसे भी मैंने इस विषयमें कहा था कि वे इस तरहका प्रवन्ध करदें क्योंकि गांववालोंके विषयमें सत्य घटनाओंके जाननेका सीधा सादा मार्ग यही है लेकिन थामसनने यह जवाब दिया "कमेटी (हंटर कमेटी) को यहांसे किसी गांवमें उठाले जानेमें बड़ी भारी असुविधा होगी" दुर्भाग्यवश हंटर कमेटीने इस प्रकार गांवमें जाकर कुछ भी अनुसंधान नहीं किया। मैंने उस गांवमें रहकर साधारण जिरहद्वारा जो सत्य बातें थीं शीघ्र ही जानलीं। मेरे पूर्वी अफ्रिका चले जानेके वाद श्रीयुत लाभसिंह उसी गांवको गये थे और पीछे उन्होंने जो कुछ जांच की थी उससे मेरी जांचका समर्थन हुआ यह सम्भव है कि इसमें कुछ वातें वढ़ाकर कही गई हों लेकिन इस वातमें मुझे विल्कुल सन्देह नहीं कि वे स्त्रियां दीवालके

किनारे एक लैनमें खड़ी की गई थीं और उनके घूंघट खोल दिये गये थे और उन्हें बड़ी भद्दी भद्दी गालियां दी गई थीं।"

ये घटनायें पराधीन भारतके इतिहासकी चिरस्मरणीय घटनायें हैं। जब हम स्वाधीन होंगे तब हम याद किया करेंगे कि पराधीनताके कारण हमारी माताओंको कैसे कैसे अपमान और अत्याचार सहन करने पड़े।

भाई परमानन्दके छुटकारेके लिये प्रयत्न

कुछ दिन हुए आर्य गज़टके सम्पादक श्रीयुत खुशहाल चन्दजीने 'प्रभामें' भाई परमानन्दजीके जीवनके विषयमें लिखते हुए हमें बतलाया था कि भाईजीके छुटकारका श्रेय अधिकांशमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को है। बहुत कम लोगोंको यह बात मालूम होगी कि भाई परमानन्दके छुटकारेके लिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को कितनी चिन्ता करनी पड़ी थी। दुःखियोंके दुःखसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की हृदयतंत्री एक साथ प्रतिध्वनित होने लगती है। "जन्मभूमि" नामक पत्रमें एक मदरासी सज्जन श्रीयुत एस वेङ्कटरमनने लिखा था "मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का हृदय संसारके उन महान हृदयोंमेंसे है जो दूसरोंके सबसे दुःखमें अधिक दुःख अनुभव करते हैं। उन्हें ऋषियोंकीसी योग दृष्टि प्राप्त है जो जाति पांतिके संकोच तथा काले गोरेके भेदकी बाधाओंको पार करती हुई बड़ी दूर तक देख सकती है। हमारी जाति हमारे देश तथा हमारी स्प्रिटसे वे इतने मिल गये हैं कि वे हमारे प्रश्नोंका यथार्थ वर्णन कर सकते हैं।" इसमें सन्देह नहीं कि श्रीयुत वेङ्कटरमनने प्रत्युक्तिमय आलङ्कारिक भाषामें जो बात लिखी है वह मूलमें बिल्कुल सत्य है लेकिन इससे भी अधिक खूबीकी बात यह कि है मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ अपने महान हृदयके उच्च भावोंको अपनी भाषामें इतनी उत्तमताके साथ प्रगट करते हैं कि पाठकोंके सामने वह विषय ज्यों का त्यों उपस्थित हो जाता है। इसका उदाहरण भाई

परमानन्दके विषयमें लिखा हुआ उनका लेख हैं। यह लेख उन्होंने उन्हीं दिनों, जब वे पंजाबमें थे ट्रिब्यूनके लिये लिखा था। और यह भारतके सभी-मुख्य मुख्य पत्रोंमें उद्धृत हुआ था। इस लेखका आंशिक अनुवाद यहां दिया जाता है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज् भाई परमानन्दजीकी स्त्रीके घर पर जाकर उनसे मिले थे उनकी दशा देखकर आपको हार्दिक दुःख हुआ था। आपने अपने लेखमें लिखा था:—

"लाहौरमें ऐसी कितनी ही छोटी छोटी गलियां हैं, जिनके नीचेके कमरोंमें सूर्य्यका प्रकाश कभी नहीं पहुँचता। इसी तरहकी एक छोटी गलीमें, और इसी प्रकारके प्रकाशहीन एक क्षुद्र कमरेमें, मैंने अभी भाई परमानन्दकी स्त्री तथा दो बच्चोंको देखा है।

वह कमरा बहुत ही छोटा था। गर्मीकी वहां भरमार थी और अन्धकारका तो पूँछना ही क्या है? यही उस विचारीका घर था। न इस घरमें कुछ सजावट थी, न कुछ सामान था। निर्धनताका वहां साम्राज्य था। भाई परमानन्दकी स्त्री अपनी गोदमें अपने बीमार बच्चेको लिये हुए बैठी थी, और उनके पास ही दूसरा बच्चा बैठा हुआ था जो बिल्कुल दुर्बल, निर्जीव और पीला था।

जो बच्चा माँ की गोदमें था वह ज्वरसे पीड़ित था। उसकी माताने मुझसे कहा "छः महीने हुए मेरी बड़ी लड़की तपैदिकसे मर गई" उस अन्धकार मय वायुविहीन कमरेसे, और कुटुम्बकी निर्धनतापूर्ण स्थितिसे यह अनुमान करना कठिन नहीं था कि उस लड़कीको तपैदिककी बीमारी कैसे लगगई होगी। जब माताने करुणोत्पादक स्वरमें मुझसे कहा "देखो, साहब मेरे इस बच्चेको भी अब जीर्ण ज्वर आने लगा है" मेरा हृदय भर आया और मैंने दिलमें सोचा कि तपैदिककी बीमारीनें इस घरमें घर ही कर लिया है।

पूँछ ताँछ करनेपर मुझे मालूम हुआ कि भाई परमानन्दकी स्त्री कुल १७) रु. महीने पर अपनी गुज़र कर रही है। वह आर्य्य समाजके एक वर्नेक्यूलर प्राइमरी स्कूलमें पढ़ाती है। बड़ी बहादुरीके साथ उसने अपनी स्वाधीनताकी रक्षाकी है, लेकिन अनुमान तो कीजिये उस अबलाको कितना अधिक परिश्रम करना पड़ा है। चार वर्षसे अधिक व्यतीत हुए तबसे यह इसी प्रकार अपने कुटुम्बका संचालन कर रही है। हर रोज़ वह स्कूलमें पढ़ानेके लिये जाती है और अपने बच्चोंको भी साथ लिये जाती है, क्योंकि घर पर उनकी देख भाल करनेवाला कोई नहीं है।

जब भाई परमानन्दजी पकड़े गये थे उस समय जो कुछ उनकी स्त्रीके पास था सरकारने सब जब्त कर लिया। घरके छोटे छोटे बर्तन भी छीन लिये गये। वर्षोंसे भाई परमानन्दकी स्त्री इन बर्तनोंको नित्य-प्रति माँजती थी और वे उसे अत्यन्त प्यारे थे लेकिन अन्यायी कानूनके कारण वे बर्तन भी उसके पास न रहे सके! इंडियन पिनल-कोडमें एक बड़ा जंगली पनसे भरा हुआ कानून है जिसके अनुसार राजनैतिक अपराधियोंकी स्त्री और बालबच्चोंकी सब चीजें जब्त करली जाती हैं। सब जायदाद जब्त करनेका यह कानून इतना अमानुषिक है कि इसे सौं वर्ष पहले ही रद् कर देना चाहिये था। यह कानून राक्षसी युगका है और आज तक इंडियन पिनल कोडपर कलंक लगा रहा है। न इसमें कुछ सुधार होता है, न इसे कोई रद् करता है और यह खुले मैदान अपने जंगलीपनकी साक्षी दे रहा है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि पुलिस महारानीकी कृपासे भाई परमानन्दके मामलेमें इस कानूनका प्रयोग और भी कठोरताके साथ किया गया था।

इस दण्डसे सरकारकी बदला लेनेकी प्रवृत्ति प्रगट होती है और सभ्य सरकारके लिये इस प्रकारका दण्ड विधान बिल्कुल अनुपयुक्त है। लेकिन

मामला यहीं पर खतम नहीं हुआ। भाई परमानन्दकी स्त्रीने अपनी सीधी सादी भाषामें मुझसे कहा "स्वाधीनता युक्त जीवन व्यतीत करनेके लिये मैं लाहौरके नार्मल ट्रेनिङ्ग स्कूलमें दाखिल होना चाहती थी लेकिन अपने पतिके नामके कारण मुझे अधिकारियोंने वहाँ भी भर्ती नहीं होने दिया।" उस निर्धना अबलाके दुर्भाग्यकी भी कोई हद है?

भाई परमानन्दकी स्त्रीके पास कुछ मान पत्र हैं जो भाईजीको दक्षिण आफ्रिकामें दिये गये थे। इन मानपत्रोंको उसने बड़े प्रेमके साथ सुरक्षित रक्खा है। मैंने इन मानपत्रोंको देखा और उनमें नेटालके नगरोंके नाम पढ़े। मैं स्वयं दाक्षिण आफ्रिकामें भ्रमण कर चुका हूँ। इस लिये मैं इन मानपत्रोंके दिये जानेके दृश्यकी कल्पना कर सकता हूं। महात्मा गान्धीजीने खुद मुझसे कहा था कि भाई परमानन्दजीकी दक्षिण आफ्रिका यात्रा वास्तवमें बड़ी उत्साहोत्पादक थी और उनके सन्देश सचमुच उदारतापूर्ण थे।

भाई परमानन्दजीसे मेरा परिचय नहीं है लेकिन जो कुछ मैंने उनके बारेमें सुना है उससे मेरे हृदयमें उनसे मिलनेकी इच्छा उत्पन्न हो गई है। उनसे मिलनेमें मैं अपना सौभाग्य समझूँगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भाई परमानन्दके चरित्रमें कायरता या नीचताका नामोनिशान नहीं है। यदि कभी उनके विचार राज्य क्रान्ति वादियोंकी तरहके रहे भी हों (और इसके लिये न तो मेरे पास पूरी साक्षी है और न मैं यही कह सकता हूँ कि उनके विषयमें यह विचार कहाँ तक प्रमाण द्वारा सिद्ध हो सका है।) तो भी मुझे यह बात तो बिलकुल स्पष्ट मालूम होती है कि उनका चरित्र सर्वदा सच्चाई और ईमानदारीसे परिपूर्ण रहा है। उनके राजनैतिक विचार आदर्श वादियोंके तरहके हैं वे क्षुद्र अथवा नीचतापूर्ण नहीं हैं। इतिहास पढ़कर उन्होंने जो परिणाम निकाले हैं उनमें कुछ पक्षपात ज़रूर पाया जाता है लेकिन पक्के देशभक्तके विचा-

रोंमें इस पक्षपातका होना स्वाभाविक ही है। जो कुछ उन्होंने लिखा है ईमानदारीके साथ लिखा है। इसके लिये उन्हें दण्ड देनेसे क्या ऐतिहासिक अथवा राजनैतिक सत्योंका अनुसन्धान हो सकता है ?

मैंने वे चिट्ठियां देखी हैं जो भाई परमानन्दने पोर्टब्लेयरसे अपनी स्त्रीको लिखी हैं। इन चिठियोंसे भी उनके उदार चरित्रकी सच्चाई प्रगट होती है। यही नहीं बल्कि इन चिट्ठीयोंसे यह भी पता चलता है कि उनकी मानसिक दृष्टि कितनी स्पष्ट है और उनका मस्तिष्क कितना धार्मिक है। इन चिट्ठियोंमें नीचता अथवा द्वेषका एक शब्द भी नहीं है और इनका प्रत्येक वाक्य वीरता, उदारता और सच्चाईसे परिपूर्ण है जेलमें उन्हें आन्तरिक आनन्द और शान्ति की प्राप्ति हुई हैं और कोई भी कारागार उन्हें इस आनन्द और शान्तिसे वंचित नहीं कर सकता।

इन पत्रोंको पढ़ते हुए बार बार मेरे मनमें यही विचार आया है कि वर्तमान भारतके एक उच्च कोटिके विद्वानको, भाई परमानन्दकी तरहके एक उदार हृदय मनुष्यको, नीच अपराधियोंके साथ जीवन भरके लिये काले पानी भेज देना, कितना निरर्थक, कितना मूर्खतापूर्ण और कितना बाहियात काम है। ऐसे पढ़े लिखे आदमीसे दिन रात चक्की पिसवाना कैसी बेवकूफी है। दिन भर चक्की पीसो, रात बीती, फिर चीक्की पीसो—बस चक्कीही चक्की पीसो! इस चक्की पीसनेके व्यर्थ, निरर्थक और ऊटपटांग कामसे कभी छुटकारा ही नहीं! परमात्माने मनुष्यको उच्चकोटिके मस्तिष्क प्रदान किये हैं और मनुष्य इन मस्तिष्कोंका यह उपयोग करर हे हैं!

अस्तु, राजनैतिक अपराधीको जो दण्ड मिला सो मिला, उसकी सब जायदाद जब्त करके उसकी निस्सहाय पत्नी तथा बच्चोंको भी दण्ड देना, यह भी कोई मनुष्यताका काम है? राजनैतिक आदर्शवादियोंके लिये क्या वर्तमान सभ्यता कोई और उपयोग नहीं सोच सकती?

भाई परमानन्द पर भारत रक्षा कानूनके अनुसार सन् १९१५ में अभियोग चलाया गया था और उनके विरुद्ध जो प्रमाण थे इतने निर्बल थे कि सरकारी वकील मिस्टर बेवन पैटमेनने पंजाब गवर्मेण्टको यह सलाह दी थी कि भाई परमानन्द परसे मामला बिल्कुल उठा लिया जावे। मेरा विश्वास है कि यदि भाई परमानन्दजी सच्चाई और ईमानदारीके साथ अपने बयान न देते तो उनको यह दण्ड कदापि नहीं मिलता। मैं स्वयं इस बातको जानता हूं कि सर अली इमाम, जो उस समय सरकारी कौंसिलके कानूनी मेम्बर थे, इस अभियोगके विषयमें इतने चिन्तित थे कि वे उनके छुटकारेकी सलाह सरकारको देना चाहते थे। प्रारम्भसे लेकर अन्त तक भाई परमानन्द अपने विषयमें बिल्कुल लापर्वाह रहे हैं यही कारण है कि अमेरिकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी सरकारके जासूसोंने उन्हें फंसा दिया। महायुद्ध अब समाप्त हो चुका है। मुझे विश्वास है कि पंजाब सरकारको राजनैतिक अपराधियोंके मामलों पर पुनर्विचार करनेका अवसर मिलेगा। निस्सन्देह भाई परमानन्दके छूटकारेसे भारतीय जनताको जितनी प्रसन्नता होगी उतनी किसी दूसरेके छुटकारेसे नहीं हो सकती"

यद्यपि भाई परमानन्दजीके विषयमें बहुतसे लेख लिखे जा चुके थे लेकिन फिर पीछेसे मामला ठंडा हो गया था। मि. ऐण्ड्रयूज़के इस करुणोत्पादक लेखके निकलते ही समाचारपत्रोंने इस मामलेको फिर अपने हाथमें लेलिया। मि. ऐण्ड्रयूज़को इसके बारेमें कई वार सरकारी अफसरोंसे भी मिलना पड़ा था। पंजाबके छोटेलाट सर ऐडवर्ड मैकलीगनकी सिफारिशसे भाई परमानन्दजी छूट गये। गतवर्ष वे शान्तिनिकेतनमें मि. ऐण्ड्रयूज़के दर्शन करनेके लिये आये थे। उस समय उन्होंने बातचीत करते हुए कहा था "ऐण्ड्रयूज़ सचमुच बड़े तपस्वी हैं और उन्होंने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है" ट्रिब्यूनके सम्पादक बाबू

कालीनाथरायको जव जेल हुई थी उस समय भी मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने उनके लिये अत्यन्त प्रयत्न किया था। सच वात तो यह है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रयत्नके विना वावू कालीनाथरायका छूटना कठिन ही था। समाचारपत्रोंमें उन्होंने इस विषयके लेखोंकी भरमार कर दी थी कुछ दिन हुए ओडवायरने अपने एक लेखमें इस वातका ज़िक्र किया था कि एक सम्पादकके लिये जितना आन्दोलन हिन्दुस्तानियोंने किया उतना दूसरोंके लिये नहीं किया। यह वतलानेकी आवश्यकता नहीं कि इन सम्पादकसे ओडवायरका अभिप्राय श्रीयुत कालीनाथरायसे ही था और आन्दोलन करनेवालोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ ही मुख्य थे। लाला लाजपतरायजीने न्यूयार्कसे २८ जुलाईको एक हजार रुपये कालीनाथरायके अभियोगकी सहायतार्थ भेजते हुए महात्मा गान्धीजीको लिखा था "May I ask you to convey to Mr. C. F. Anderws my grateful appreciation of the noble efforts for the Panjobis? It may look like presumption, but I do want him to know what I feel. May England produce more men of his class, mind and soul." अर्थात् "कृपाकरके मिस्टर सी. एफ. ऐण्ड्र्यूज़को लिख दीजिये कि पंजावियोंके लिये जो आदरपूर्ण कार्य्य वे कर रहे हैं उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। यद्यपि ऐसा करना मेरे लिये धृष्टतापूर्ण है, लेकिन फिर भी मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ मेरे हृदयके भावोंसे परिचित हो जावें। परमात्मा करे कि इंग्लेण्डमें उनकी कोटिके मस्तिष्क और आत्माके मनुष्य अधिकाधिक उत्पन्न हों।"

कौन ऐसा भारतवासी होगा जो इस वातमें लालाजीके साथ "तथास्तु" न कहे?

पंजाबसे बिदाई और अफ्रिका यात्रा ।

जिन दिनों मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पंजाबमें काम कर रहे, थे दक्षिण अफ्रिका और पूर्वी अफ्रिकामें प्रवासी भारतीयोंकी स्थिति नित्य प्रति खराब होती जाती थी । महात्मा गान्धीजीने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से कहा “ या तो आपको या मुझे दक्षिण अफ्रिका जाना होगा ”—मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कहा “ यदि आपकी यही आज्ञा है, तो मैं जानेके लिये उद्यत हूँ ” महात्मा गान्धीजीको पंजाबमें प्रवेश करनेकी आज्ञा मिल गई थी और माननीय पं. मालवीयजी तथा पं. मोतीलालजी नैहरू पंजाबमें पहुँच चुके थे इसलिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने पंजाब छोड़कर अफ्रिका जानेका निश्चय कर लिया ।

ता. १५ नवम्बरको उनको बिदा करनेके लिये लाहौरके ब्राडला हालमें एक बड़ी भारी सभा हुई । इस सभामें कई सहस्र आदमी इकट्ठे हुए थे । ब्राडला हाल खचाखच भरगया था इसलिये सैकड़ों आदमियोंको निराश होकर लौट जाना पड़ा । इस सभामें खूबीकी बात यह थी कि इसमें सैकड़ों पंजाबी स्त्रियाँ भी इकट्ठी हुई थीं । ऊपरकी गैलरीमें स्त्रियोंकी बड़ी भीड़के कारण सभाके प्रबन्ध कर्ताओंको इस बातकी आशङ्का थी कि कहीं गैलरी न टूट पड़े और कोई दुर्घटना न हो जावे । सभापतिका आसन श्रीमान मालवीयजीने ग्रहण किया था मालवीयजीने अपने भाषणमें कहा था “ मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ भारतके सच्चे बन्धु हैं और उन्होंने हमारी आपत्तिमें हम लोगोंकी बड़ी भारी सहायता की है । ” मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को उनकी पंजाब-सेवाके लिये धन्यवाद देने और उनके प्रति कृतज्ञता प्रगट करनेका प्रस्ताव जनताके सामने उपस्थित करते हुए महात्मा गान्धीजीने एक बड़ी महत्वपूर्ण वक्तृता दी थी । इस स्पीचसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के चरित्र पर अच्छा प्रकाश पड़ता है इस लिये हम इसका अनुवाद यहाँ देते हैं । महात्माजीने कहा था “ मिस्टर

ऐण्ड्र्यूज मेरे सहोदर भाईके समान हैं इस कारण उनके बारेमें कुछ कहना मेरे लिये कठिन है । हम दोनोंके बीचमें जो पवित्र सम्बन्ध है वह मेरे बोलनेके मार्गमें बाधक होता है; लेकिन इतना तो मैं कह सकता हूँ कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ एक सच्चे अँग्रेज़ हैं, पर उन्होंने अपना जीवन भारतवर्षके लिये अर्पित कर दिया है । अपने कार्यों द्वारा मानों मि. ऐण्ड्र्यूज़ हम लोगोंसे कह रहे हैं "यह जानते हुए भी कि अँग्रेज़ आप पर जुल्म कर रहे हैं, आप उनसे द्वेष न करें ! मेरी ओर नज़र करें ।" अगर हम मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का सन्मान करना चाहते हैं तो हमको उनके प्रेमकी नकल करनी चाहिये । हमारा प्रेम अन्ध प्रेम नहीं होना चाहिये । हमारा प्रेम वैसाही होना चाहिये जैसा प्रह्लादने अपने पिताके प्रति प्रगट किया था । मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का जीवन हमें यही सिखलाता है कि अन्याय और अत्याचारका दृढ़तापूर्वक विरोध करते हुए भी हमारा यह कर्तव्य है कि हम अत्याचारीके प्रति द्वेष न करें । बहुतसे भारतीयोंकी अपेक्षा मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने भारतकी कहीं अधिक सेवा की है । उन्होंने अपने भाईयोंकी भी निन्दा करनेमें कोई कसर नहीं रक्खी, लेकिन इसका अभिप्राय यह न समझना चाहिये कि उनका अँग्रेज़ोंके प्रति कम प्रेम है । मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की तरह हम लोग भी अंग्रेज़ोंके प्रति अथवा सरकारकेप्रति द्वेष न करते हुए ही न्याय और आत्मसम्मानके लिये संग्राम कर सकते हैं ।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपनी आत्माको निचोड़कर उसका हिन्दुस्तानको सार अर्पित कर दिया है । मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कोई मामूली अँग्रेज़ नहीं हैं । वे बड़े भारी विद्वान हैं, उच्च कुलमें उनका जन्म हुआ है, वे कवि हैं और धर्मशास्त्री भी हैं । अगर वे चाहते तो ऐशो आरामके साथ अपनी जिन्दगी बिता सकते थे, अगर उनकी इच्छा होती तो वे किसी बड़े कालेजके प्रिंसीपल हो सकते थे, उच्च पदस्थ पादरी होना भी उनके लिये

आसान था, लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने लक्ष्मीको नमस्कार कर दिया है पद्वीकी भी उन्होंने कभी पर्वाह नहीं की, और वे निस्स्वार्थ रूपसे भारतकी भलाईके लिये भ्रमण कर रहे हैं। ऐसे अँग्रेज़के प्रति हमारा क्या फ़र्ज़ है? **जब तक अँग्रेज़ जातिमें एक भी ऐण्ड्रयूज विद्यमान हो तब तक हम अँग्रेज़ जातिसे द्वेष नहीं कर सकते।** यदि हम अँज़ेग्रोंसे द्वेष करेंगे तो मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के प्रति हमारा जो प्रेम है वह निर्मल नहीं रह सकता। अँग्रेज़ोंसे द्वेष करते हुए हमको यह अधिकार नहीं होगा कि हम मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी सेवा स्वीकार करसकें। यह बात तो स्पष्ट ही है।

अब सवाल ये होते हैं कि जालियानवालामें जैसा क़तल हुआ है, अंग्रेज़ सिपाही जिस तरह हमें गाली देते हैं, हमें लात मारते हैं और हमें ट्रेनमें अपने निकट नहीं बैठने देते, जिस प्रकार अंग्रेज़ अधिकारी सब अधिकार स्वयं ही भोगनेकी इच्छा करते हैं तथा अंग्रेज़ व्यापारी हिन्दुस्तानका मुख्य व्यापार अपने ही हाथमें रखते हैं; इस प्रकारकी घटनाओंके होते हुए भी हम उनके ऊपर क्रोध बिना किये कैसे रह सकते हैं? यह कठिनाई स्पष्ट ही दीख पड़ती है। जिधर देखो उधर ही द्वेष, क्रोध, तिरस्कार और असत्यही भरा हुआ दीख पड़ता है। हिंदुस्तानी हिन्दुतानीके ही प्रति सदा प्रेमकी दृष्टिसे नहीं देखता तो अंग्रेजोंके प्रति प्रेम दृष्टिसे देखनेकी तो बात ही क्या है?

इस प्रकारकी शङ्काओंमें नास्तिक वाद भरा हुआ है। बुद्धिवादसे ईश्वरका अस्तित्व स्वीकार करके कोई आस्तिक नहीं बन सकता। जिस मनुष्यमें ईश्वरके प्रति श्रद्धा है उसमें प्रेम अवश्य ही होना चाहिये। ईश्वरके प्रति श्रद्धा होना और प्रेमका न होना ये दोनों विरोधी बातें हैं। आस्तिकताका अर्थ सत्य, प्रेम इत्यादि गुण ही हैं। यदि ये गुण हम लोगोंमें एकदम पूर्ण रूपसे प्रकाशित हो जावें तो समझ लीजिये कि हम ईश्वर बन गये। इस सत्यको स्वीकार करते हुए हम उसकी ओर लक्ष्य करके चलें,

यही मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के जीवनका उपदेश है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रायश्चित्तका यही अर्थ है और उनकी गूढ़ तपश्चर्याका यही अभिप्राय है। मैंने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को हिन्दुस्तानियोंके घरोंमें घंटो तक चुप चाप बैठे हुए देखा है। हम लोगोंने उनकी अवज्ञा की है, लेकिन उन्होंने कभी क्रोध नहीं किया। हम लोगोंके यहां कुछ रूखा सूखा उन्हें मिला है वही सन्तोषपूर्वक खाते हुए मैंने उन्हें देखा है। स्वर्गीय महात्मा गोखलेकी आज्ञानुसार घड़ी भरके नोटिस पर दक्षिण अफ्रिका जाते हुए हम लोगोंने उन्हें देख चुके हैं। बिना बोले हुए चुप चाप उन्होंने बड़ी तपश्चर्या की है। दक्षिण अफ्रिका आदि देशोंमें उन्होंने हमारे लिये जो कार्य किया है वह सब हमारे लिये तपश्चर्याकी मूर्ति है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के इन कार्योंसे हम लोग उन्हें यह पहचानते हैं लेकिन जो तपस्या उन्होंने अदृश्य रूपसे की है वह बहुत ज्यादः कीमती है।

केवल मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की ख़ातिरके कारण ही हमें अंग्रेज़ोंसे द्वेष न करना चाहिये, यहीं नहीं बल्कि अगर हम कार्यसिद्धि चाहते हैं तो भी हमारा यही कर्तव्य है कि हम अँग्रेज़ोंसे द्वेष न करें। यदि हम लोग बिना क्रोधके, धैर्य्यपूर्वक, परिश्रम और सच्चाईके साथ अपना कर्तव्य निरन्तर पालन करते रहेंगे तो अंग्रेज़ोंको अपने दोष हमारे ऊपर प्रयोग करनेका अवसर ही न मिलेगा। जिस प्रकार मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ एक होते हुए भी अनेक कार्य्य कर सकते हैं उसी प्रकार एक हिन्दुस्तानी भी उनकी चाल पर चल कर अनेक काम कर सकता है और भारतकी उन्नतिका वेग बढ़ा सकता है।"

महात्माजीके इस प्रस्तावका समर्थन बंगालके सुप्रसिद्ध नेता श्रीयुत सी. आर. दास, लाहौरके श्रीयुत गनपतराय बैरिस्टर, तथा अमृतसरके लाला गिरधारी लाल इत्यादिने किया था। श्रीयुत गनपतरायजीने कहा था "मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अत्याचार पीड़ितोंके घरों पर जाकर

सबको सान्त्वनादी है और उत्साह दिलाया है। मुझे विश्वास है कि जब वर्तमान समयका इतिहास लिखा जावेगा भारतकी भावी सन्तान मिस्टर ऐण्ड्रयूजको एक ऋषिकी भांति स्मरण करेगी। हिन्दुस्तानमें अगर किसी अँग्रेज़ने वर्तमान समयमें अँग्रेज़ जातिकी इज्ज़तको क़ायम रक्खा है तो वे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ही हैं।"

इस अवसरपर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने जो स्पीच दी थी वह उनके उदार हृदयको प्रगट करनेवाली थी। आपने गद्गद कंठसे कहा था

"भाइयो, कई महीने तक आपके साथ मिलकर दिल्ली तथा पंजाबमें काम करनेके बाद आज अपने अफ्रिका प्रस्थानके समय आपको अन्तिम-नमस्कार करना मुझे अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। इस कारण मैं दो चार शब्द ही आपकी सेवामें निवेदन कर सकूँगा।

जितने दिनों तक मैंने यहाँ कार्य्य किया है, कुछ आवश्यक विषयोंको छोडकर, मैंने पंजाबकी विवादग्रस्त बातोंके बारेमें अपना मुँह बिल्कुल बन्द रक्खा है, लेकिन अब मैं दक्षिण अफ्रिकाको जा रहा हूँ, और वहाँसे लौटनेमें मुझे कमसे कम चार महीने लगेंगे, इस कारण यदि मैं बिना कुछ कहे हुए चला जाऊँगा तो लोग इस बातको अनुचित समझेंगे। इधर उधरकी बातें बिना किये मैं मुख्य विषयपर कुछ कहूँगा। संक्षेपमें मेरा मत यह है।

मैं दृढतापूर्वक यह मानता हूँ कि भडकनेके कितने ही कारण क्यों न रहे हों तथापि अमृतसर तथा अन्य स्थानोंमें अंग्रेज़ोंका खून करके लोगोंने कायरता और जंगलीपनका काम किया है। उनके इस कामका बचाव किसी भी तरहसे नहीं हो सकता। यही बात मैं गिरजाघरोंके जलानेके विषयमें कहूँगा। लेकिन सबसे अधिक नीचतापूर्ण और घातकी हमला वह था जो मिस शेरवुडपर किया गया। मिस. शेरवुडको जाननेवाले सभी हिंदुस्तानी उससे स्नेह करते थे और वह प्रभु क्राइस्टकी सच्ची अनुयायिनी थी। उसका खून करनेके लिये आक्रमण करना वास्तवमें

कायरतापूर्ण था। लेकिन जिस प्रकार मैं इन पापोंके बचावके लिये एक भी शब्द नहीं कहता उसी प्रकार मैं जलियानवाला बाग़के इरादतन किये हुए क़तलकी पूर्ण निन्दा करता हूं।

ग्लाङ्कोके क़तलने मेरे देशके इतिहासमें जो धब्बा लगा दिया है वह अमृतसरके क़तलके धब्बेसे बड़ा नहीं है। लोगोंके मुंहसे सुनी सुनाई कोई गप्प मैं आपको नहीं सुना रहा हूं बल्कि जो कुछ मैं आपकी सेवामें निवेदन कर रहा हूं वह खूब जांच पड़तालके बाद कह रहा हूँ। अमृतसरके क़तलसे सम्बन्ध रखनेवाली सब बातोंका अनुसन्धान मैंने बड़े परिश्रमके साथ किया है और मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूं कि वह क़तल इतना लज्जोत्पादक है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अमृतसरके इस क़तलका किसी प्रकार भी बचाव नहीं हो सकता, वह अक्षम्य है और उसे हम किसी बहानेसे भी माफ़ नहीं कर सकते। इन बातोंका ज़िक्र करते हुए मुझे मार्शल लाके अत्याचारोंके विषयमें भी कुछ कहना पड़ता है। जो आदमी पेटके बल चलाये गये थे उन्हें मैंने अपनी आंखोंसे देखा है, बेइज्ज़त करनेके लिये जो लोग नंगे किये गये थे उनसे मैं मिल चुका हूँ, जिन्हें धूलमें अपना पेट रगड़ना पड़ा था। उनसे मैं बात चीत कर चुका हूँ, और पबलिकके सामने जिनके कोड़े लगाये गये थे उनको मैं देख चुका हूँ। हमारे ईसाई मतके अनुसार मनुष्य ईश्वरकी आकृतिमें बनाये गये हैं। उन मनुष्योंके शरीर पर पंजाबमें न करने योग्य सैकड़ों काम किये गये हैं। पुलिस और फौजकी पाशविक शक्तिद्वारा मनुष्योंकी मनुष्यताका सत्यानाश करनेके लिये जो नीचतापूर्ण कार्य्य जान बूझकर किये गये हैं मेरी समझमें वे भी मेरे देशके नाम पर जलयानवाला बाग़के क़तलसे कम धब्बा लगानेवाले नहीं हैं।

अशान्तिके अन्तिम दिनोंमें जो अत्याचार हुए थे उनके विषयमें एक अँग्रेज़की हैसियतसे मेरे यही विचार है। अपने भारतीय साथि-

योंके साथ नित्य प्रति कार्य्य करते हुए इन अत्याचारोंकी याद मुझे बराबर आती रही है, और जो कुछ सेवा मैंने की है वह केवल प्रायश्चित्तके बतौरकी है।

लाहौरमें रहते हुए मैं प्रातःकालके समय सूर्य्योदय देखनेके लिये बगीचेको जाता रहा हूँ और वहां एकान्तमें अपने दैनिक कर्तव्य पर विचार करता रहा हूँ। आज विचार करते करते प्रातःकालमें मुझे बाईबिलका एक वाक्य याद आगया। वह यह है "परमात्मा न्यायी और अन्यायी सभीको अपने सूर्य्यका प्रकाश देता है। जिस प्रकार स्वर्गमें परमात्मा पूर्ण है उसी प्रकार तुम भी पूर्ण होनेका प्रयत्न करो" ये शब्द प्रभु क्राइस्टके हैं। ये शब्द उन्होंने तब कहे थे जब उन्होंने अपने अनुयायियोंको यह बतलाया था कि बदला लेना अथवा घृणा करना मनुष्यका कर्तव्य नहीं है, बल्कि क्षमा करना और प्रेम करना ही मनुष्यका कर्तव्य है।

इससे बहुत वर्षोंपूर्व भारतवर्षमें महात्मा बुद्ध, जिन्होंने मनुष्य समाजकी सेवा और सहायताके लिये ही अवतार लिया था, यही उपदेश दे गये हैं। आज लाहौरको छोड़ते हुए इसी उपदेश पर मेरा ध्यान गया है।

घावोंको ठीक करनेके लिये और उनके भीतरसे सब मवाद निकालनेके लिये, उन्हें भीतरसे खूब गहराई तक खोलना पड़ता है, लेकिन यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि शस्त्रक्रियामें अन्तिम काम घावोंको खोलनेका नहीं है बल्कि मलहम पट्टी करनेका है।

जब आप अत्याचारोंका अनुसन्धान कर रहे हैं, आप बदला लेनेकी प्रवृत्तिको अपने दिलमें न आने दें बल्कि क्षमा भावका सिंचन करें, द्वेषका अंधकारमय रात्रिमें आप न भटकें बल्कि ईश्वरीय प्रेमके प्रकाशमय मार्गका आप अनुसरण करें यही मेरी आपसे प्रार्थना है।"

ग्यारहवाँ अध्याय ।

पूर्वी अफ्रिकामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का काम ।

नवम्बर ता. २२ सन् १९१९ मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने बम्बईसे पूर्वी अफ्रिकाके लिये प्रस्थान किया और ३० नवम्बरको आप मोम्बासा पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही आपको आर्थिक कमीशनकी रिपोर्ट पढ़नेके लिये मिली। इस रिपोर्टमें हिन्दुस्तानियोंके चरित्र पर बड़े घृणित आक्षेप किये गये थे। इस रिपोर्टको पढ़कर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने कुछ दिनों तक पूर्वी अफ्रिकामें ही ठहरनेका निश्चय किया। वहाँ आप बहुतसे स्थानोंमें घूमे और अपने अनेक लेख पूर्वी अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंकी भलाईके लिये लिखे। इन लेखोंके कारण ही भारतीय जनताका ध्यान पूर्वी अफ्रिकाके प्रश्नोंकी ओर गया। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का पूर्वी अफ्रिका सम्बन्धी कार्य्य इतना महत्वपूर्ण है कि इस जीवनीमें उसका यथोचित रीतिसे वर्णन नहीं किया जा सकता। मेरा विचार पूर्वी अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंके विषयमें एक अलग ही पुस्तक लिखनेका है और उससे पाठकोंको मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के कार्य्यका महत्व प्रगट हो जावेगा।

हाँ एक बात बतला देना यहाँ अवश्य है। जहाँ कहीं विदेशोंमें मि. ऐण्ड्र्यूज़ जाते हैं आप हिन्दुस्तानी मज़दूरोंसे अवश्य मिलते हैं और उनकी दशाकी जाँच करते हैं। पूर्वी अफ्रिकामें भी आपने रेलमें काम करनेवाले पंजाबी मज़दूरोंकी दुर्दशा देखी थी। पंजाबमें पंजाबी भाइयों पर जो अत्याचार मार्शल लाके दिनोंमें हुए थे उनका दो महीने तक अनुसंधान करनेके बाद ही मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को पूर्वी अफ्रिका जाना पड़ा

था। इस लिये पूर्वी अफ्रिकामें भी पंजाबी भाइयोंकी खराब हालत देखकर आपको और भी अधिक दुःख हुआ। नैरोबीमें वे अत्यन्त ही गन्दे घरोंमें रहते थे। उनके लिये दवा—इत्यादिका कुछ प्रबन्ध नहीं था। अस्पतालोंका प्रबन्ध बहुत ही खराब था। किसूम्में, जो विक्टोरिया न्यांज़ा झीलके निकट है, इन मज़दूरोंके साथ और भी बुरा बर्ताव किया जाता था। यूरोपियन लोग स्वयं तो उच्चभूमि पर रहते थे लेकिन हिंदुस्थानियोंको नीची भूमिपर, जो मलेरियासे व्याप्त थी, रहना पड़ता था। यूरोपियनोंको तो नलका स्वच्छ पानी मिलता था लेकिन हिन्दुस्तानी मज़दूरोंका झीलका गदला पानी। मि. ऐण्ड्र्यूज़ स्वयं इन अत्याचार पीड़ित मज़दूरोंके गन्दे घरोंपर गये, वहाँ उनके साथ बैठ कर बातचीत की और यथाशक्ति उनकी सहायता की। हिन्दुस्तानी मज़दूर चाहे वे हावड़ामें काम करते हों या मदरासमें सीलोनमें अथवा फिजीमें मलायास्टेटमें या अफ्रिकामें, मिस्टर ऐण्ड्र्यूजको पहचानते हैं और मिस्टर ऐण्ड्र्यूज भी उन्हें जानते हैं।

युगाण्डामें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज बीमार पड़ गये और वहाँ पर कम्पलाके अस्पतालमें कई रोज़ तक आपको रहना पड़ा। १३ जानेवारीको आप ब्रिटिश पूर्वी आफ्रिकासे रवानः हुए और एक सप्ताह तक प्रोर्चुगीज़ पूर्वी अफ्रिकाके बैरा नामक स्थानमें रहे। वहाँ पर आप सुप्रसिद्ध सिंधी व्यापारी आनन्दसिंह सहानीके अतिथि थे। प्रोर्चुगीज पूर्वी अफ्रिकाके भारतीयोंने आपका खूब स्वागत किया। यह देख कर वहाँके गोरे लोग अचाम्भित होगये। एक बार एक रेलवे स्टेशन पर मेल ट्रेन आध घंटा इसी लिये ठहराई गई थी कि उससे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ दक्षिण अफ्रिका जा रहे थे और उस नगरके निवासी उनका स्वागत करना चाहते थे। स्टेशन खूब अच्छी तरह सजाया गया था। श्रीयुत आनन्दसिंहसे अनेक अंग्रेज़ोंने पूँछा था " यह कौन हैं जिनके स्वागतके लिये हिन्दुस्तानी इतना

प्रयत्न कर रहे हैं ? ” आनन्द सिंहने उनसे यही कहा था “ Why he is the best Indian we have in India ” अर्थात् “ हमारे भारतमें सर्वोत्तम भारतीय यही हैं ” यह घटना श्रीयुत आनन्दसिंहने ही, जब वे शान्ति निकेतनमें पधारे थे, मुझे सुनाई थी। वे कहते थे “ हम लोगोंको इस बातकी आशङ्का थी कि कहीं यूरोपियन लोग मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के साथ बुरा वर्ताव न करें, क्योंकि मि. ऐण्ड्रयूज़ हमारे बड़े भारी शुभचिन्तक हैं। इस लिये हम चार आदमीयोंने बड़ी दूर तक मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के साथ रेलमें यात्रा की थी, परन्तु हमने अपना उद्देश्य उन्हें नहीं बतलाया। ”

यह बात बड़े आश्चर्यकी है कि इसी प्रकारकी घटना फिजीमें भी हुई थी। फिजीके एक गोरेने धमकी दी थी “ अगर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ हमारे वा जिलेमें आवें तो हम उन्हें गोलीसे मार देंगे ” मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ इस धमकी की कुछ पर्वाह न करके उस ज़िलेको गये थे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को अपने विषयमें कुछ भी चिन्ता नहीं थी लेकिन वा के भारतवासी आपके लिये अत्यन्त चिन्तित थे । फिजीसे लौटे हुए अनेक हिन्दुस्तानियोंने मुझसे कहा था “ हम लोग ऐण्ड्रयूज़ साहबका साथ कभी नहीं छोड़ते थे क्योंकि हमें इस बातका डर था कि कहीं फिजी के गोरे लोग उनको हानि न पहुँचावें ”

जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ लन्दनके वालवर्थ नामक मुहल्लेमें निर्धन आदमियोंके साथ काम करते थे। तब भी इसी प्रकारकी घटनाएँ कई बार हुई थीं। आपके मुहल्लेके निकट ही एक मुहल्ला ऐसा था जिसमें कितने ही गुंडे रहते थे। चाहे जिसे पीटकर उसकी चीजें छीन लेना उनके लिये एक आसान काम था। जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ वालवर्थसे उस मुहल्लेकी और जाते तो मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से कहे विना ही एक न एक आदमी उनके पीछे हो लेता। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ जब फिर कर देखते

तो कोई न कोई आदमी उन्हें पीछे चलता हुआ दीख पड़ता। पूंछने पर वह कह देता "मुझे भी उधर ही कुछ काम है। इस लिये मैं भी इसी मार्गसे जा रहा हूँ" जब यह घटना कई बार हुई तो मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को कुछ आशङ्का हुई। उन्होंने एक दिन पीछे चलनेवाले आदमीसे कहा "सच सच बतलाओ तुम हमारे साथ क्यों चल रहे हो? उस आदमीने कहा सच बात तो यह है कि हम लोगोंको इस बात की आशङ्का है कि बदमाशोंके उस मुहल्लेमें कोई बदमाश आपको कहीं तङ्ग न करे इस लिये हम लोगोंने आपसमें यह तय कर लिया है कि आपको उस मुहल्लेमें अकेले नहीं जाने देंगे। इस लिये बिना आपको बतलाये हुए हममेंसे कोई न कोई आपके साथ हो लेता है।"

प्रसंगवश यहाँ हमें महात्मा गान्धीजीके जीवनकी एक ऐसी ही घटना याद आती है। जब दक्षिण अफ्रिकामें कितने ही आदमी महात्मा गान्धीजीको मार डालना चाहते थे, मिस्टर केलन बेक, जो एक जर्मन थे और जो महात्माजीके बड़े मित्र थे, एक पिस्तौल लिये हुए बराबर उनके साथ घूमते थे। यह पिस्तौल वे छिपा कर रखते थे, और यह बात उन्होंने महात्माजीको नहीं बतलाई थी। अकस्मात् इसकी खबर महात्माजीको लग गई और उन्होंने मिस्टर केलन बेकसे कहा "मेरी रक्षाके लिये आप ऐसा कदापि न कीजिये।" तबसे मिस्टर केलन बेकने पिस्तौल साथ रखना छोड़ दिया।

पोर्चुगीज़ अफ्रिकासे रोडैसिया होते हुए मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ट्रान्सवाल पहुँचे। इस बार आपके समयका अधिकांश ग्रामोंकी ओर बसे हुए प्रवासी भारतीयोंकी स्थिति देखनेमें व्यतीत हुआ। केपटाउनमें भी आप लगभग ७ दिन तक रहे। ऐशियाटिक कमीशनके सामने आपने अपनी लिखी हुई गवाही दी थी। इस बार मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने दक्षिण

अफ्रिकाके निर्धन प्रवासी भारतीयोंके स्वेच्छापूर्वक भारतको लौटनेका समर्थन किया था। लेकिन यूनियन सरकारके चालाक अधिकारियोंने स्वेच्छा पूर्वक—प्रवासकी इस नीतिके बहानेसे हिन्दुस्तानियोंको दक्षिण अफ्रिकासे बाहर निकालनेका ही निश्चय कर लिया! इस बातका मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने घोर विरोध किया। वास्तवमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने Voluntary repatriation की नीतिका समर्थन करनेमें बड़ी भूल की थी, लेकिन ज्यों ही उन्हें अपनी भूल मालूम हुई उन्होंने फौरन ही उसे स्वीकार करलिया, और समाचार पत्रोंमें यह बात प्रकाशित कर दी। पाठकोंको यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ज़िद्दी आदमी नहीं हैं, वे अपनी भूल स्वीकार करने और उसे सुधारनेके लिये सर्वदा उद्यत रहते हैं।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का वर्तमान कार्य

मार्च सन १९२० में दक्षिण अफ्रिकासे रवाना होकर मि. ऐण्ड्रयूज़ अप्रैलमें भारत वर्षमें आपहुँचे। अप्रैलके महीनेमें आपने गुरुदेव श्रीरवीन्द्रनाथके साथ गुजरात और काठियावाड़में यात्रा की। मई मासमें श्रीरवीन्द्रनाथजीने विलायतके लिये प्रस्थान किया, तबसे आश्रमका प्रबन्ध और उत्तर दायित्व मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पर ही है। तबसे आप बराबर आश्रममें ही हैं लेकिन इस बीचमें आपको अनेक बार देशके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाना पड़ा है। जुलाई सन् १९२० में आप स्वर्गीय पं. सत्यनारायणजी कविरत्नके चित्रको खोलनेके लिये फीरोजाबाद गये थे। और वहां अपने मित्र पं. तोतारामजी सनाढ्यके अतिथि रहे थे। उस समय अनेक ग्रामीण मनुष्य आपके दर्शन करनेके लिये आसपासके ग्रामोंसे आये थे। प्रवासी भारतीयोंकी दुर्दशा पर वहां आपने एक व्याख्यान भी दिया था। फीरोजाबाद नगरके निवासी आपके सरल जीवन और मधुर स्वभावसे अत्यन्त प्रसन्न हुए।

अब भी वहांके कितने ही आदमी कहा करते हैं "ऐण्ड्रयूज़ साहब तो सचमुच एक "अँग्रेज़ साधु" हैं। ऐसा सज्जन दूसरा अँग्रेज़ हमने नहीं देखा।"

तत्पश्चात् आपने सिन्ध गुजरातकी यात्रा की। इस यात्रामें आपने कई स्थानोंपर प्रवासी भारतीयोंके विषयमें व्याख्यान भी दिये थे। शिमला प्रान्तके बेगारियोंकी हालत देखनेके लिये आपको कोटगढ़ भी जाना पड़ा था। पूर्वी आफ्रिका प्रवासी भारतीयोंके विषयमें व्याख्यान देनेके लिये आपको बम्बईकी भी कई बार यात्रा करनी पड़ी। विहारके छात्र सम्मेलनके आप सभापति चुने गये थे। यह सम्मेलन डाल्टन गंजमें हुआ था और वहां आपने बड़ी महत्वपूर्ण वक्तृता दी थी। बम्बईके छात्र सम्मेलनके भी आप सभापति हुए थे।

लिलुआके सहस्रों मज़दूरोंकी हड़तालके झगड़ेको आपने ही सुलझाया था। यह देख कर आश्चर्य्य होता है कि भारतीय मज़दूरोंके विश्वास पात्र आप कितने शीघ्र बन सकते हैं। हावड़ामें बहुत दौड़ धूप करनेके कारण आप बीमार पड़ गये थे और वहाँके ही अस्पतालमें कमज़ोरीकी हालतमें पड़े हुए थे। डाक्टरके बहुत मना करने पर भी लिलुआके बीसियों मज़दूरोंको आप अपने कमरेमें बैठाये रहते थे। पाँच सात मज़-दूर तो आपकी खाट पर ही बैठे हुए दीखते थे। लिलुआमें काम करने वाले बूढ़े कारीगरोंसे आपकी खास मित्रता ही होगई थी। बड़े प्रेम पूर्वक आप उन्हें अपने हृदयसे लगाते थे, मानों ये बूढ़े इनके बाल्य कालके साथी ही हों!

लिलुआका झगड़ा तय करानेके बाद आपको लखनऊ जाना पड़ा। वहाँ ओ. आर. आर. रेलके कई सहस्र आदमियोंकी हड़ताल थी। एक मीटिङ्गमें लगभग २०० आदमी, जो वृद्ध होनेके कारण रेलकी नौकरीसे अलग कर दिये गये थे, आये और उन्होंने मि. ऐण्ड्रयूज़से कहा "साहब हम लोगोंके लिये भी कुछ कीजिये"

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ इन लोगोंसे कह सकते थे " मैं इन बीचके झगड़ोंमें नहीं पड़ना चाहता पहले मुझे मुख्य झगड़ा सुलझाना है " लेकिन मि. ऐण्ड्रयूज़के लिये ऐसा कहना असम्भव था। आप कड़ी दोपहरीमें इन लोगोंके साथ अस्पतालको गये और वहाँ इनकी दृष्टिकी परीक्षा कराई। यद्यपि इस काममें आपको कई बार इधरसे उधर चक्कर लगाना पड़ा और बहुतसा समय भी लगा लेकिन इस कारण वे वृद्ध आदमी आपसे बड़े प्रसन्न हो गये और उन्होंने एक मीटिङ्गमें कहा भी " मि. ऐण्ड्रयूज़! आप ही हम लोगोंके पिता हैं, आपने हमारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया " मि. ऐण्ड्रयूज़को इस प्रेम पूर्ण बर्तावके कारण झगड़ेको सुलझानेमें बड़ी मदद मिली।

लखनऊके बाद आप रेलवे बोर्डके अधिकारियोंसे मिलनेके लिये शिमला गये। वहां पर बोर्डने आपको कहा कि आप ई. बी. ऐस. आर की हड़तालवालोंसे भी मिलकर झगड़ा तय करादें। इस लिये आपको कंचनपाड़ेको जाना पड़ा। इस बार आपसे एक भूल होगई। आपका यह नियम है कि आप बिना किसी सिफारिशके सीधे मज़दूरों अथवा हड़तालियोंमें चले जाते हैं और अपने सरल स्वभाव तथा निष्कपट सच्चाई और मनोहर सादगीसे शीघ्र ही उन्हें अपने वशमें कर लेते हैं। रेलवे बोर्डने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से कहा था कि पहले कलकत्तेमें ई. बी. ऐस. आरके एजेण्टसे मिल लेना। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ एजेण्टसे मिलनेके लिये गये। बातचीत हुई। उस समय मि. ऐण्ड्रयूज़ बहुत थके हुए थे क्योंकि उन्हें कितने ही दिनोंसे विश्राम नहीं मिला था जब आप कंचन पाड़ेके लिये टिकट लेनेके लिये जाने लगे तो एजेण्टने कहा " आप टिकट लेनेके लिये क्यों कष्ट करते हैं ? मैं आपको पास ला दूँगा। " थके थकाये तो आप थे ही, आपने कहा " अच्छा, आप पास दे दीजिये " रेलका पास लेकर आप कंचन पाड़े

गये। आपको स्वप्नमें भी इस बातकी ख्याल नहीं था कि इस पासके लेनेका क्या परिणाम होगा। ज्यों ही आप पास लेकर कंचन पाड़े पर उतरे, रेलवालोंको यह आशङ्का होगई कि आप रेलवे कम्पनीके ओरसे दलाल बन कर आये हैं और कम्पनीके ही तरफ़दार हैं। बस यही अनुमान करके रेलवालोंने आप पर अविश्वास करना प्रारम्भ कर दिया। मि. ऐण्ड्रयूज़ पहले तो समझ ही नहीं सके कि ये लोग मेरे विरोधी क्यों बन गये हैं, फिर पीछे आपको यह बात सूझी कि सारा मामला उस पासने बिगाड़ दिया है। सम्मान करनेके बजाय रेल-वालोंने आपका अपमान भी किया। मि. ऐण्ड्रयूज़ सोचते थे कि पास लेनेकी भूलको सुधारनेका कोई अवसर मिले तो काम बने। यह अवसर आपको शीघ्र ही मिल गया। एक मीटिङ्ग होनेवाली थी। आप भी उसमें गये। वहाँ पर एक तख्त बिछा हुआ था। उस पर सारी जगह एक मौलवी साहब और एक स्वामीजीने घेर रक्खी थी। किसी भले आदमीने मि. ऐण्ड्रयूज़से यह भी नहीं कहा कि आप अच्छी जगह पर बैठें, और आप भी बिना किसी सङ्कोचके मौलवी साहब और साधुजीके चरणोंके नीचे ही ज़मीन पर बैठ गये। यही नहीं इन लोगोंने मि. ऐण्ड्रयूज़के प्रति कुछ अपमान जनक शब्द भी कहे। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की तरफ इशारा करते हुए स्वामीजीने अपनी वक्तृतामें कहा "देखो, ये साहब लोग ही हम ग़रीब हिन्दुस्तानियोंका ख़ून चूसते हैं। निर्धनों पर अत्याचार करके ये साहब स्वयं मौज करते हैं" मि. ऐण्ड्रयूज़को कम्पनीका दलाल समझ कर स्वामीजी न जाने क्या २ अनाप सनाप बक गये और मौलवी साहबने भी उनकी ताईद की। इन्हीं लोगोंके पांवके नीचे बैठे हुए मि. ऐण्ड्रयूज़ मुस्करा रहे थे और बड़े धैर्य्यपूर्वक अपनी इस प्रशंसाको सुन रहे थे। आपने इस अपमानको बिल्कुल बुरा नहीं माना, और अपनेको बिल्कुल विचलित नहीं होने

दिया। आपने इसके बजाय उन लोगोंके साथ बहुत ही अच्छा वर्ताव किया। परिणाम यह हुआ कि उन लोगोंको अपनी भूल मालूम होगई और उन्होंने अपने अपराधके लिये मि. ऐण्ड्र्यूज़से क्षमा याचना भी की। आप इतने अधिक नम्र हैं। और अपनेको इतना तुच्छ समझते हैं कि आपका अपमान करना सम्भव नहीं, क्योंकि आप उस अपमानके अपमान समझते ही नहीं, जिससे अपमान करनेवालेको उल्टा लज्जित होना पड़ता है।

एजेण्टसे पास लेकर मि. ऐण्ड्र्यूज़ने जो भूल की थी उसे आपने इस तरह ठीक कर लिया। सब लोगोंकी श्रद्धा आप पर हो गई और इस कारण झगडा तय कराना आपके लिये आसान होगया।

आसामकी दुर्घटना और चांदपुरमें काम

जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कंचनपाड़ेमें थे आपको आसामके कुलियोंकी दुर्घटनाके समाचार मिले, लेकिन एक कामको समाप्त किये बिना दूसरेको हाथमें लेना आपने ठीक नहीं समझा। जब वहां की हड़तालका झगड़ा करीब करीब तय होगया, आप ५½ बजे प्रातःकालमें कंचनपाड़ेसे बोलपुरके लिये रवानः हुए, लेकिन जब आप नैहाटी स्टेशनपर पहुँचे तो आपको वहांके प्लेटफार्म पर दो कुली हैज़ेकी बीमारीसे मरते हुए दीख पड़े। आप फौरनही रेलमेंसे उतर पड़े और उन दोनों कुलियोंको फौरन ही अस्पताल भिजवाया। फिर रेलमें बैठ गये, परन्तु उन कुलियोंकी दुर्दशाका दृश्य आपकी आंखोंके सामने बराबर घूमता रहा। बन्देल स्टेशन तक पहुँचते पहुँचते आपको जो समय बीता उसमें आपका हृदय इतना व्यथित होगया कि आपने बोलपुर जानेका विचार छोड़ दिया, सारा प्रोग्राम बदल दिया और कलकत्ते होते हुए सीधे चांदपुर रवानः होगये। जितना काम मि. ऐण्ड्र्यूज़ने आगे चलकर आसामके मज़दूरोंके किया,

उतना किसीने भी नहीं किया, और जितना परिश्रम उन्हें करना पड़ा उतना किसी दूसरेको नहीं करना पड़ा, लेकिन इस सब बोझेको सिर पर उठानेका निश्चिय मि. ऐण्ड्रूज़ने नैहाटी और बन्देल स्टेशनके बीचकी यात्रामें २०–२५ मिनटमें ही कर लिया था। बड़ेसे बड़े कामोंको हाथमें लेते हुए मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को बहुत सोच विचार नहीं करना पड़ता। जिन कामोंमें आपके महीनों लग जाते हैं, उनके प्रारम्भका निश्चय आप मिनटोंमें करते हैं। अस्तु जब आप प्रातःकालके समय चांदपुर पहुँचे तो आपने समाचार सुना कि रातके समय गोरखोंने निहत्थे कुलियोंपर बड़ी निर्दयता पूर्वक आक्रमण किया था। गोरखे सिपाहियोंके हाथसे घायल एक लड़की और कई औरते आपने अपनी आंखोंसे देखीं। उनको देखते ही आपका खून उबलने लगा और आपने उनकी सेवा करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया।

फौरन ही कुलियोंके ठहरनेकी जगहपर गये। देखते ही सैकड़ों कुली स्त्री और पुरुष आपकी ओर चरण छूने के लिये आगे बढे। यद्यपि स्वयं-सेवकोंने उन्हें रोका, क्योंकि भीड़की भीड़ एक साथ इस तरह चरण छूनेके लिये गिरनेसे मि. ऐण्ड्रयूजके चोट लगजानेकी आशंका थी, लेकिन वे लोग न माने। दीन दुखियोंके बीचमें काम करते हुए मि. ऐण्ड्रयूज़ के चहरे पर सच्चाई और करुणाके जो भाव झलकते हैं, वे इतने अधिक प्रभावशाली और आकर्षक होते हैं कि सहृदय मनुष्योंको उनके प्रति एक साथ श्रद्धा उत्पन्न होजाती है। चाँदपुरमें आपने किस प्रकार दिन रात परिश्रम किया, किस तरह आपने दार्जिलिङ्ग जाकर सरकारी अफसरोंसे इस काममें सहायता पानेके लिये प्रयत्न किया, किस तरह आपको निराश होना पड़ा, और फिर किस प्रकार आपने कलकत्तेमें आकर जोशपूर्ण व्याख्यान दिया, इत्यादि बातोंको समाचार पत्रोंके पाठक जानते ही हैं। मैं यहां केवल एक दृश्यका वर्णन करूँगा। जब मि.

ऐण्ड्र्यूज अपने कार्य्यको समाप्त करके चाँदपुरसे कलकत्ते लौटे तो इंडियन ऐसोसियेशनके भवनमें आपका अनुभव सुननेके लिये एक सभा हुई। सभापति थे श्रीयुत श्यामसुन्दर चक्रवर्ती। मि. ऐण्ड्र्यूज़ने पहले सरकार की हृदयहीनताकी घोर निन्दा की और फिर आपने यह बतलाया कि रेल और स्टीमरकी हडतालोंको अधिक दिनों तक कायम रखनेके कारण बीसीयों कुली चांदपुरमें हैज़ेसे मर गये। आपने हड़तालोंको अधिक दिन तक कायम रखनेका घोर विरोध किया। लेकिन जनता हड़तालोंके पक्षमें थी। मि. ऐण्ड्र्यूज़के बोल चुकनेके बाद. अनेक वक्ताओंने मि. ऐण्ड्र्यूज़की बातोंका खण्ड़न किया और किसीने कहा अगर ३० करोड़ आदमियोंकी भलाईके लिये ३०० कुली मर गये तो क्या हुआ?" श्रोता लोगोंमें अधिकांश मि. ऐण्ड्र्यूज़के विपक्षके थे। उन्होंने विरोधी वक्ताओंके भाषणोंमें खूब करतलध्वनि की। सभापतिका मत मि. ऐण्ड्र्यूज़के पक्षमें था, इस लिये जब सभापति महाशय बोलनेके लिये खड़े हुए तो उन पर भी लोगोंने खूब कटाक्ष किये। इसके बाद मि. ऐण्ड्र्यूज़ उत्तर देनेके लिये खड़े हुए। उपस्थित जनता बड़ी उत्तेजित थी और सब यह जाननेके लिये उत्सुक थे कि देखें मि. ऐण्ड्र्यूज़ क्या उत्तर देते हैं। बड़ी नम्रतापूर्वक आपने अपना उत्तर दिया। आपने कहा था "जो महाशय यह तर्क कहते हैं कि ३० करोड़के लिये ३०० कुली मरगये तो क्या हुआ, वे बड़ी भारी भूल करते हैं। मेरा भारत वह भारत होगा जो अपनी ३० करोड़ सन्तानोंको ३० दुःख पीड़ित कुलियोंके लिये मर मिटने दे और इस प्रकार संसारमें अमर होजाय।" फिर आपने हाथ जोड़कर बड़े करुणोत्पादक शब्दोंमें कहा "इन मजदूरोंको घर तक पहुँचाने और उनका प्रबन्ध करनेके लिये मैं कल ही गोरखपुर प्रयाग और काशी जाऊंगा। आप लोगोंके सामने मेरी हाथ जोड़कर यही प्रार्थना है कि आप हमारे इन दीन हीन भाइयोंकी उसी तरहसे सहायता करें जिस तरह आपने अबतक की है"

मुझे वह दृश्य कभी नहीं भूल सकता जब कि मि. ऐण्ड्रयूज़, जो अनेक सप्ताहोंतक निरन्तर परिश्रम करनेके कारण बिल्कुल थके हुए थे, हाथ जोड़े हुए और आंखोंमें करुणाके अश्रुबिन्दु भरे हुए खड़े थे और दीन हीन आसामी कुलियोंकी सहायताके लिये उपस्थित जनतासे प्रार्थना कर रहे थे। इस दृश्यने मीटिङ्गका रङ्गरूप ही बदल दिया। विरोधी श्रोताओंका विरोध एकदम दूर होगया और सबने मि. ऐण्ड्रयूज़के कार्य्यमें पूर्ण सहानुभूति प्रगटकी। इसके बाद आप गोरखपुर प्रयाग और काशी गये और वहां आपने आसामसे लौटे हुए कुलियोंके साथ अच्छा वर्ताव करनेके विषयमें व्याख्यान दिये। उन दिनों आपके पैरमें बड़ी तकलीफ थी और इधर उधर जानेमें आपको कष्ट होता था। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के आसाम सम्बन्धी कार्यकी प्रशंसा करते हुए महात्मा गान्धी-जीने उनके लिये "दीन बन्धु" शब्दका प्रयोग किया था। इसमें सन्देह नहीं कि यह विशेषण मि. ऐण्ड्रयूज़के लिये सर्वथा उपयुक्त है। जब इँगलिशमैनके संवाद दाताद्वारा मि. ऐण्ड्रयूज़के आसाम सम्बन्धी भाषणोंका वृत्तान्त विलायतमें पहुँचा तो पार्लमिण्टमें सर फ्रैडरिक हालने मि. ऐण्ड्रयूज़के व्याख्यानोंको राजद्रोहात्मक बतलाते हुए उन्हें "नाम मात्रका भद्र पुरुष" कहा और उनको भारतसे देश निकाला देकर विलायत भेजे जानेके विषयमें प्रश्न किया इस प्रकार सर फ्रैडरिक हालने अपने अज्ञान धृष्टता और असभ्यताका अच्छा परिचय दिया। सर फ्रैडरिक हाल तथा उनके भाई बन्धु ऐङ्गलो इण्डियन यह नहीं जानते कि मि. ऐण्ड्रयूज़ अपने कार्य्योंसे अपनी मातृभूमि इङ्गलैण्डका कितना उपकार कर रहे हैं। अब भी अंग्रेज़ जातिके प्रति जो थोड़ी बहुत इज्जत हम लोगोंके दिलमें बच रही है वह सी. ऐफ. ऐण्ड्रयूज़ कैसे उदार हृदय सज्जनोंके कारणसे ही रह गई है।

आज कल मि. ऐण्ड्र्यूज़ पूर्वी आफ्रिकामें प्रवासी भारतीयोंके लिये परिश्रम कर रहे हैं। दो तीन दिन हुए हमने क्रानीकल नामक पत्रमें पढ़ा था कि पुंगाडा प्रान्तको जाते समय स्टेशनपर किसी दुष्ट गोरेने उन पर हमला किया! इस प्रकार अपने ही भाइयोंद्वारा अपमान सहते हुए भारतभक्त ऐण्ड्र्यूज़ हमारी मातृभूमिकी स्वाधीनताके लिये संग्राम कर रहे हैं। प्रवासी भारतीयोंके लिये दो वार आप दक्षिण अफ्रिका जाचुके, दो वार फिजी, दो वार पूर्वी आफ्रिका, और एक वार सीलोन, फेडरेटेड मलाया स्टेट्स, अस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलेण्डका चक्कर लगा चुके हैं। पूर्वी आफ्रिकासे लौटनेके वाद सम्भवतः आपको तीसरी वार फिर फिजी जाना पड़ेगा। लेकिन यह सव कार्य्य उस कामके मुकावलेमें कुछ भी नहीं है जो मि. ऐण्ड्र्यूज़ नित्यप्रति १४ घंटे शान्तिनिकेतनमें किया करते हैं। महात्मा गान्धीजीने अपने लाहौरवाले व्याख्यानमें कहा था "मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अदृश्य रूपसे जो कार्य किया है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है" वास्तवमें महात्माजीका कथन सर्वथा सत्य है। निस्सन्देह मि. ऐण्ड्र्यूज़ भारतकी स्वाधीनताके लिये कठोर तपस्या कर रहे हैं और अपने जातिवन्धु अंग्रेज़ोंके पापोंका प्रायश्चित्त कर रहे हैं। फिर भी फ्रैडरिक हालकी तरहके कृतघ्न अँग्रेज़ उन्हें देश निकालेका दण्ड दिलवाना चाहते हैं!

प्रवासी भारतीयों पर किये गये अत्याचारोंके समाचार फिजीसे आये हैं, रातके वारह वजे तक आप वरावर लेख लिखते हैं और फिर चार पाँच वजे उठकर उन लेखोंकी स्वयं ही नकल करके सव पत्रोंको भेजते हैं। लिखते लिखते उंगलियाँ दर्द करने लगती हैं, कमरमें पीड़ा होने लगती है लेकिन मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को विश्राम कहाँ? जो लोग समाचार पत्रोंको पढ़ते हैं वे जानते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कैसे जवरदस्त लेखक हैं। सन् १९१४ में महात्मा गोखलेने विलायतमें

आपसे कहा था " परिश्रम करते करते आप अपनेको मारे डालते हैं " आज सन् १९२१ में भी महात्मा गोखलेकी यह बात ज्योंकी त्यों ठीक है । स्वास्थ्य खराब और शरीर निर्बल होते हुए भी उनको बराबर काम करते हुए देखकर यह बात अच्छी तरह समझमें आ सकती है कि उनकी इच्छाशक्ति कितनी ज़ोरदार है । आश्चर्य्यकी बात तो यह है कि निर्बल अवस्थामें उनकी कार्य्य कारिणी शक्ति और भी प्रबल हो जाती है । इनफ्लूऐंजासे अत्यन्त पीड़ित होने पर भी एक दिन आपने ३५ चिट्ठियाँ बोलकर लिखाई ! और ये पत्र कोई मामूली पत्र नहीं थे । कई तो इनमें महत्वपूर्ण विषयों पर थे बीसियों चिठियाँ मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को नित्य प्रति लिखनी पड़ती हैं । भारतके भिन्न भिन्न भागोंसे और प्रवासी भारतीयोंसे जो पत्र आपके पास आते हैं, उनकी संख्या अत्यधिक है । आप स्वयं ही प्रत्येक पत्रका उत्तर देते हैं । यादि आपको दिन दिन भर बैठे हुए पत्रोंको उत्तर देते हुए कोई देखें तो उसे यह फौरन ही मालूम हो जावेगा कि महापुरुष होना भी कैसी बड़ी आफत है । कोई पूँछता है कि अमुक पुस्तकका पता क्या है, कोई कहता है रोडेसिया (अफ्रिकाके) स्कूलोंके इन्सपैक्टरका नाम क्या है ! कोई लिखता है " मैं अमेरिका जाना चाहता हूँ कैसे जाऊँ " कोई अपनी ऊटपटाङ्ग अँग्रेज़ी कविता शुद्ध करनेके लिये भेजता है, और कोई अपने ग्रंथकी भूमिका लिखनेकी प्रार्थना करता है । मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ बड़ी नम्रतापूर्वक सबके पत्रोंका उत्तर अपने आप ही देते हैं ।

आश्रमका काम भी कुछ थोड़ा नहीं है । आश्रमके आर्थिक प्रबन्धकी चिन्ता भी आपको करनी पड़ती है ।

प्रवासी भारतीयोंका कार्य्य तो अपने ऊपर ले ही लिया है । जितना काम अकेले मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ प्रवासी भारतीयोंके लिये कर रहे हैं उतना

एक संस्था भी नहीं कर सकती । सच बात तो यह है कि आपने अपने को एक संस्था बना लिया है । गवर्मेण्ट भी इस विषयमें आपसे प्रायः सम्मति लिया करती है । अभी दो महीनेके बीचमें भारत सरकार फिजीके मामलेमें सलाह लेनेके लिये तीन बार आपको दिल्ली बुला चुकी है । तबियत ठीक न होते हुए भी तीनों बार आप वहां गये हैं ।

कोई दिन ऐसा व्यतीत नहीं होता जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ मातृभूमि भारतकी सेवाके लिये कोई न कोई काम न करें, और शायद ही कोई महीना ऐसा बीतता हो जिसमें आपको इसी लिये यात्रा न करनी पड़ती हो । प्रिय पाठक गण !

अपनी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार मैंने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनकी अब तक की घटनाओंका वर्णन आपके सम्मुख किया है । परमेश्वर करे कि वे शतायु हों और उनका भावी जीवन भारतभूमि तथा मानव-समाजके लिये और भी हितकारी हो । अगले अध्यायोंमें उनके विचार तथा उनकी रहन सहनका वर्णन किया जावेगा और फिर उनके जीवन पर एक सरसरी दृष्टि डाली जावेगी ।

बहुत कम मनुष्य ऐसे सौभाग्यशाली होते हैं जिनके मस्तिष्क इतने महान और हृदय इतने उदार हों । उच्च कोटिकी विद्वत्ता और उत्कट मानव—समाज—प्रेम परमात्मा विरले ही पुरुषोंको प्रदान करता है । हम सब ऐण्ड्रयूज़ नहीं हो सकते, फिर भी हमारी प्रार्थना यही है ।

“ हे परमात्मन् हमारे हृदयसे दुनयवीपनको दूर कर दो । धन कमानेकी धुनमें हमारा जीवन और स्वार्थमय झगड़ोंमें हमारा समय नष्ट न हो । हमें स्वातंत्र्य हो तथा अवकाश हो और हमारे चारो ओर मुक्त आकाश हो हमारे सामने एक आदर्श हो और उसकी वेदी पर अपनी सम्पूर्ण शक्तियां तथा जीवन अर्पित करनेके लिये हम सर्वदा उद्यत हों । इससे अधिक हमें कुछ नहीं चाहिये ।

बारहवाँ अध्याय।

मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के विचार

इस अध्यायको हम तीन भागोंमें बाँट सकते हैं (१) धार्मिक विचार (२) राजनैतिक विचार (३) ग्रन्थ।

धार्मिक विचार।

मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ ईसाई हैं और संसारके महापुरुषोंमें वे क्राइस्टका स्थान सर्वोच्च मानते हैं। भगवान् बुद्धको वे द्वितीय समझते हैं। यद्यपि मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के इस विचारसे हम सह मत नहीं क्योंकि हमारी सम्मतिमें भगवान बुद्धका स्थान ही सर्वोच्च है तथापि इसके लिये हम मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़को दोषी नहीं कह सकते। वे ईसाई हैं और उन्हें पूर्ण अधिकार है कि वे क्राइस्टको सर्वोच्च समझें। मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़के धार्मिक विचार बड़े उदार हैं। वे ज़िद्दी आदमी नहीं हैं। उनके धार्मिक विचारमें जो परिवर्तन हुए हैं वे हमारे इस कथनके प्रमाण हैं। बाइबिलको वे अत्यन्त पूज्य दृष्टिसे देखते हैं लेकिन उसे वे निर्भ्रान्त नहीं मानते। अद्भुत कर्मोंमें उनका विश्वास नहीं है। कविताकी दृष्टिसे वे इन अद्भुत कर्मोंको ठीक कह सकते हैं लेकिन इतिहासकी दृष्टिसे नहीं। क्राइस्टकी अलौकिक उत्पत्तिमें भी आपका विश्वास नहीं है। बाइबिलको स्कूलों और कालेजोंमें अनिवार्य्य रूपसे पढ़ानेके आप विरोधी हैं। बप्तिस्मा देकर ईसाई बनानेके कामको आप बिल्कुल महत्व नहीं देते। जिन दिनों आप ईसाई धर्मके प्रचारक थे उन दिनोंमें भी आपने किसी हिन्दुस्तानीको बप्तिस्मा देकर ईसाई नहीं बनाया। बहुत वर्ष व्यतीत हुई

एक हिन्दू सज्जनने, जो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के एक मित्रके बड़े भक्त थे, मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से अपने ईसाई हो जानेके विषयमें सलाह ली। यदि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उनसे कह देते "आप ईसाई हो जाइये" तो वे अवश्य ईसाई हो जाते, लेकिन मि. ऐण्ड्र्यूज़ने ऐसा करना अनुचित समझा। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ किसी पर दबाव नहीं डालना चाहते। शारीरिक दबावके तो वे विरोधी हैं ही लेकिन नैतिक दबावको भी वे अच्छा नहीं समझते। यद्यपि उनका व्यक्तित्व (Personality) प्रबल और प्रभावशाली है लेकिन वे दबाव डालनेके लिये उसका उपयोग नहीं करते। यद्यपि आप ईसाई बनानेके कार्य्यको महत्व नहीं देते तथापि क्राइस्टके भावोंसे प्रभावित करनेके कार्य्यमें आपका पूर्ण विश्वास है। आत्मत्याग, नम्रता, परोपकार, दीनसेवा, सादाजीवन क्राइस्टके इन गुणोंको ही आप महत्वपूर्ण समझते हैं। इन्हीं गुणोंको अपने जीवनमें लानेका आपने प्रयत्न किया है।

एक लेखकने आपके नाम Charles freer Andrews के पहले अक्षर C. F. A. का अर्थ Christ's Faithful apostle किया था। इसमें सन्देह नहीं कि आप क्राइस्टके सच्चे भक्त हैं। महात्मा गान्धीजीने अपनी लाहौरवाली स्पीचमें कहा था कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के कार्य्य तपस्या की साक्षात् मूर्ति हैं। इसमें सन्देह नहीं कि क्रिश्चियन मतका घोर द्वेषी भी यदि कुछ दिन आपके साथ रहे और आपके आत्मत्यागयुक्त जीवनको देखे तो उसे भी अपना द्वेष छोड़ देना पड़ेगा। एकबार एक ईसाई सम्पादक शान्तिनिकेतन देखनेके लिये आये थे। जब ये लौटकर इलाहाबाद गये तो एक हिन्दुस्तानी ईसाईने इनसे सवाल किया "Is Mr. Andrews putting in a word for Christ to the boys at Shantiniketan ?" अर्थात् "क्या मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ शान्तिनिकेतनके विद्यार्थियोंको क्राइस्टके विषयमें भी कुछ शब्द सुनाते हैं ?"

इसका उत्तर उन ईसाई सम्पादकने दिया था "क्राइस्टके विषयमें कुछ शब्द सुनानेके वजाय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ क्राइस्ट कैसा जीवन अवश्य व्यतीत कर रहे हैं" इसमें सन्देह नहीं कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनको देखकर कोई भी सहृदय मनुष्य ईसाई मतको तुच्छ नहीं समझ सकता।

मिस्टर ऐण्ड्रण्यूज़ उन ईसाइयोंमेंसे नहीं है जो चौराहोंपर खड़े खड़े भगवान राम और कृष्णकी निन्दा किया करते हैं और न वे उन मिशनरियोंकी तरहके हैं जो हिन्दू धर्मको क्षुद्र दृष्टिसे देखते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की जो सहानुभूति हिन्दू धर्म अथवा भारतवर्षके प्रति है वह किसी स्वार्थके उद्देश्यसे प्रेरित होकर नहीं की गई। हमारे एक मित्रने हमें एक 'शुद्ध' हुए अंग्रेज़का किस्सा सुनाया था। काशीजीमें आर्य्य समाजके प्लेटफार्म पर खड़ा हुआ, दोनों हाथ फैला फैलाकर व्याख्यान देता था "भाइयो! चले आओ, भाइयो ओ३म्के झंडेके नीचे चले आओ" लेकिन कुछ दिनों वाद ओ३म्के झंडेके नीचे वुलानेवाला यह अंग्रेज़ आर्य्यसमाजके मेम्वरोंको धमकी देने लगा कि इतने रुपये लाओ नहीं तो सरकारसे शिकायत कर दूँगा कि आर्य्यसमाज राजद्रोही है। ऐसे 'धर्मवीरों' के जीवनमें और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनमें ज़मीन आसमानका फ़र्क़ है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उन आदमियोंमेंसे नहीं हैं जो धर्म या राजनीतिके क्षेत्रमें स्वार्थके लिये इधरसे उधर चक्कर मारते हैं अथवा यों कहिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ धार्मिक या राजनैतिक दुस्साहसी adventurer नहीं हैं। उनके आचरण इतने शुद्ध कि शुद्धताका अभिमान करनेवाले हम लोगोंको वे सिखा सकते हैं कि शुद्धता किस चीज़का नाम है। हम लोगोंमें एक वड़ी भारी त्रुटि है, वह यह कि हम अपने विजातीय शुभचिन्तकोंसे यह आशा करते हैं कि धार्मिक अथवा राजनैतिक क्षेत्रमें वे हमारे पूरे सोलह आना अनुयायी वनजावें। यह कैसे हो सकता है? भिन्न भिन्न जातियोंके संस्कार भिन्न भिन्न होते हैं। परम्प-

रागत इन संस्कारोंकी बाधाओंको पार करना अत्यन्त कठिन है। इस बातपर ध्यान देते हुए हमारा यह कर्तव्य है कि विजातीयोंसे हम अत्यधिक आशा न करें।

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज् भारतमें आये थे आपका विश्वास था कि ईसाई हुए विना भारतका उद्धार नहीं हो सकता। इस विचारको आप अब भ्रान्तिमूलक मानते हैं। आपका विश्वास है कि उच्च कोटिके ईसाई धर्म तथा उच्च कोटिके हिन्दू धर्ममें विशेष अन्तर नहीं है। इसका सर्वोत्तम प्रमाण स्वयं मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का जीवन ही है। हिन्दू धर्मके उच्च आदर्शोंमें आपको पूर्ण श्रद्धा है और आर्य्यसमाजके भी उत्तम कार्य्योंसे आपको सहानुभूति है। स्वामी श्रद्धानन्दजीसे आपका घनिष्ट सम्बन्ध है। जिन दिनों आप ईसाई मिशनरी थे। उन दिनों भी आपके विचार संकुचित नहीं थे। स्वामी रामतीर्थके अँग्रेज़ी व्याख्यान जब पहले पहल प्रकाशित हुए थे तब इन व्याख्यानोंकी भूमिका मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने लिखी थी। इस भूमिकासे पाठकोंको पता लग सकता है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने प्रारम्भसे ही अपने मस्तिष्कको निष्पक्ष रखनेका कितना प्रयत्न किया है। संन् १९१० इ० में जब आर्य्यसमाजियोंपर पटियाला अभियोग चल रहा था और अधिकारी लोग आर्य्यसमाज तथा सत्यार्थ प्रकाशको राजद्रोहपूर्ण सिद्ध करनेकी चेष्टा कर रहे थे उस समय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने स्वामीज़ी तथा उनके ग्रन्थोंके विषयमें अपनी अपनी स्पष्ट सम्मति देकर आर्य्य समाजकी कुछ भलाई की थी। आपने लिखा था।

"मैं फौरन ही यह कहूँगा कि स्वामी दयानन्दके शिक्षण पर और उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर जो कटाक्ष किये गये हैं वे अत्यन्त अनुचित हैं। इन कटाक्षोंके करनेवाले यह अनुभव नहीं करते कि स्वामीजीने अपनी पुस्तकमें हर प्रकारसे वैदिक समयके

आदर्शको वर्णन करनेकी चेष्टा की है, न कि वर्तमान राज्य तथा राजनैतिक बातोंसे कुछ सम्बन्ध बतलाया है। स्वामी दयानन्दके जीवन सम्बन्धी जितने ग्रन्थ मुझे मिले हैं, मैंने सावधानीसे पढ़े हैं; और उन पुरुषोंसे भी जो स्वामीजीको जानते और उनके विषयमें कुछ बतला सकते थे मैं मिल चुका हूँ और उनके आचरणों तथा शिक्षा सम्बन्धी बातोंके बारेमें मैंने अपनी स्पष्ट सम्मति निश्चित कर ली है। वह दिल व दिमाग़से धार्मिक तथा सामाजिक सुधारक थे और उन्होंने वर्तमान राजनैतिक विषयों पर उसी सीमा तक लिखा है जितना कि उच्च श्रेणीके और उदार हृदय धार्मिक सुधारकोंको समाजके अन्तर्गत राजनैतिक विषयोंके सम्बन्धमें लिखना उचित है। मुझे अत्यन्त दुःख है कि मेरे ईसाई धर्मके सम्बन्धमें उन्होंने कुछ कटु वचनोंका प्रयोग किया ह परन्तु मुझे विश्वास है कि यदि आज वे ज़िन्दा होते तो वे उन शब्दोंको अवश्य निकाल देते, क्योंकि वे सत्य के एक दृढ़ चित्त अन्वेषी थे। हरद्वारके गुरुकुलके लिये मेरे मनमें उत्तमोत्तम आदरके भाव हैं और आशा है कि मैं उसे शीघ्र ही देखूँगा और स्वयं सब कुछ अनुभव करूँगा। अपने अँग्रेज़ तथा अमेरिकन मित्रोंसे, जो गुरुकुलको देख आये हैं, बातचीत करने पर जो कुछ मैंने गुरुकुलके विषयमें सुना है, उससे मुझे विश्वास हो गया है कि गुरुकुल नितान्त धार्मिक नींव पर चलाया जा रहा है और किसी अंशमें भी वर्तमान राजनैतिक आन्दोलनसे उसका सम्बन्ध नहीं है।"

इसके कई वर्ष बाद आप गुरुकुल काँगड़ीको गये थे वहाँ कुछ दिन रहे भी थे। शान्ति निकेतनके मन्दिरमें भी आप प्रायः उपासना किया करते हैं। अभी कुछ दिन हुए कलकत्तेमें स्वामी विवेकानन्दके जन्मोत्सवके दिन आप सभापति बनाये गये थे। नागपुरमें कांग्रेसके साथ जो अखिल भारतवर्षीय गो कान्फ्रेस हुई थी उसका सभापतित्व पहले

आपको दिया गया था लेकिन नागपुर जानेसे आपको कांग्रेसमें सम्मिलित होना पड़ता इसलिये आपने उसे स्वीकृत नहीं किया। तत्पश्चात् श्रीमान् लाला लाजपतराय जी सभापति बनाये गये थे।

रेवरैण्डकी पदवी क्यों छोड़ दी?

बहुतसे लोगोंको यह बात ठीक ठीक तरहसे मालूम नहीं है कि मिस्टर ऐण्ड्रूयूजने रेवरैण्डकी पदवी क्यों छोड़ दी थी। इसका कारण भी सुन लीजिये। जब मिस्टर ऐण्ड्रूयूज शान्तिनिकेतन आश्रममें आगये थे आप प्रत्येक रविवारको वहाँसे गिरजेमें प्रार्थना करनेके लिये बर्द्धवानको जाया करते थे। एक रविवारको, जिसे ट्रिनिटी—रविवार कहते हैं, आप बर्द्धवान गये। वहाँ आपको उस दिन ईसाइयोंकी प्रार्थना पुस्तकसे निम्नलिखित विधान पढ़ना था " यदि कोई मनुष्य ईसाई धर्म पर विश्वास नहीं करेगा तो उसकी आत्मा निस्सन्देह सदाके लिये नष्ट हो जावेगी " ये शब्द मिस्टर ऐण्ड्रूयूजके हृदयमें अनेक वर्षोंसे खटक रहे थे और आप बराबर यही प्रयत्न करते थे कि गिरजाघरमें आपको ये वाक्य दुहराने न पड़ें। इस ट्रिनिटी रविवारको भी आपने अपनी उपासनामेंसे ये शब्द बिल्कुल उड़ा दिये।

श्रीयुत रवीन्द्रनाथ ठाकुरके सत्सङ्गसे मिस्टर ऐण्ड्रूयूजका अन्तःकरण और भी अधिक शुद्ध हो गया था और वे उपर्युक्त शब्दोंको बिल्कुल सहन नहीं कर सकते थे। बहुतसे पादरी लोग उपर्युक्त शब्दोंका भयंकर अर्थ समझते हुए भी उन्हें दुहराया करते हैं इस प्रकारकी छोटी छोटी बातें उनके अन्तःकरणको नहीं खटकतीं। वे कह देते हैं कि ये वाक्य पुराने और ऐतिहासिक हैं, अब इनका शाब्दिक अर्थ नहीं लेना चाहिये, लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रूयूजकी आत्मा इन शब्दोंके विरुद्ध गवाही देती थी। एक दिन आप श्रीयुत रवीन्द्रनाथके साथ भोजन करनेके लिये बैठे उस समय शान्तिमय पवित्र मुख मंडलको देखकर आपने

अपने मनमें कहा " अपने अन्तःकरणको थोड़ासा भी अपवित्र रखते हुए मैं गुरुदेवके सत्सङ्गका अधिकारी नहीं हो सकता " आपने उसी दिन समाचार पत्रोंको यह खबर भेजदी कि मैंने रैवरेण्डकी पदवी छोड़ दी है, मैं अब पादरी नहीं रहा, अब भविष्यमें मुझे कोई रैवरैण्ड न लिखा करे।

उसी समय आपने अपने पूज्य पिताजीको भी लिख दिया उन दिनों आपके पिताजी बीमार थे और उनका हृदय भी निर्बल था तथापि आपने उन्हें यह समाचार भेज देना अपना कर्तव्य समझा। जिस प्रकार आपने अर्विङ्गाइट सम्प्रदाय छोड़ते समय अपने पिताजीकी सेवामें स्पष्ट निवेदन कर दिया था कि आपके सम्प्रदायमें मेरा विश्वास नहीं रहा उसी प्रकार आपने इस बार भी किया। पिताजीको पत्र भेजनेके बाद जो ४–५ सप्ताह आपके बीते उनमें आपको अत्यन्त चिन्तित रहना पड़ा। आप यही सोचते रहे कि मेरे रैवरैण्ड पदवी त्याग देनेसे पिताजीके निर्बल हृदयको कितना भारी धक्का लगेगा। यद्यपि आपके पिताजी इस समाचारको पढ़कर अत्यन्त दुःखित हुए थे, और वे आपके बतलाए हुए कारणोंसे सहमत नहीं हो सके थे, तथापि उन्होंने आपको अपना आशीर्वाद भेजते हुए उन्होंने लिखा था " मुझे निश्चय है कि परमात्मा तुम्हारे जीवनको सीधे मार्ग पर लेजा रहा है "

आपके रैवरैण्ड पदवी छोडनेका परिणाम यह हुआ कि बहुतसे मिशनरी उस दिनसे आपको ईसाई ही नहीं मानते ! आस्ट्रेलिया आफ्रिका तथा इङ्गलेण्डके ईसाई समाजमें यह बात प्रसिद्ध होगई कि मिस्टर ऐण्ड्रूज " नास्तिक " होगये हैं। ईसाई मतकी एक त्रैमासिक पत्रिकाने इसी कारण आपके लेख छापना अस्वीकार कर दिया ! बहुत दिन तक भारत तथा इङ्गलैण्डके ईसाई पत्र आपके लेखोंपर अविश्वास करते रहे।

अब तक कितने ही देशोंके ईसाई यही ख्याल करते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ परमात्मामें अविश्वास करते हैं। जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अस्ट्रेलियामें सी. ऐस. आर. कम्पनीके विरुद्ध घोर आन्दोलन किया था उस समय कितने ही गोरोंने आपकी बदनामी करनेके लिये तरह तरहकी अफवाएँ उड़ादी थीं। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने इस बातकी कुछ भी पर्वाह नहीं की और न अपने ऊपर किये हुए कटाक्षोंका उत्तर ही दिया। आपने यही कहा "इन कटाक्षोंकी उत्तरमें मैं सच्चा ईसाई जीवन व्यतीत करूंगा"

गतवर्ष जब आप ईसाइयोंकी कान्फ्रेसमें पूना गये थे कितने ही कम समझ ईसाइयोंने आपसे कहा था "आप इस बातकी घोषणा कर दीजिये कि मैं ईसाई हूँ" आपने इसका यही उत्तर दिया था "यदि मेरे कार्य्योंसे यह प्रगट नहीं होता कि मैं ईसाई हूँ तो मैं अपनी जीभसे घोषणा करके यह बात प्रगट नहीं करना चाहता।" डब्ल्यू. टी. स्टैड प्रायः कहा करते थे "लोगोंसे क्रिश्चियन बननेके लिये मत कहो बल्कि उनसे यही कहो कि वे क्राइस्टकी तरह अपना जीवन बनावें" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ भी इसी मतके अनुयायी हैं। वे बातें कम करते हैं कार्य्य अधिक, और वे दूसरोंको उपदेश कम देते है, स्वयं उन उपदेशोंपर चलनेकी चेष्टा अधिक करते हैं।

यह सौभाग्यकी बात है कि भारतीयोंने आपके विषयमें कभी भूल नहीं की। भारतीयोंका यही विश्वास है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ ही भारतमें एक सच्चे ईसाई हैं। हिन्डस्तानी ईसाई तो आपको अपना आदर्श मानते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रभावसे प्रभावित होकर अनेक हिन्डुस्तानी ईसाई राष्ट्रीयताकी ओर झुक गये हैं।

इन दृष्टान्तोंसे पाठक मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के अन्तःकरणकी निर्मलताका अनुमान कर सकते हैं।

आपके धार्मिक विचार उस उच्च कोटिके हैं, जहां धर्मसम्बन्धी क्षुद्र झगडोंकी पहुँच नहीं हो सकती। सच बात तो यह है कि आप सच्चे " अंग्रेज़ साधु " हैं। हम हिन्दुलोग सदासे साधुओंकी जाति पांति और वर्णभेदकी ओर ध्यान न देते हुए उनके प्रति श्रद्धा तथा भक्ति करते है। क्या इस दृष्टिसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ भी हमारी श्रद्धाके पात्र नहीं हैं?

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के राजनैतिक विचारोंका वर्णन करनेके पहले दो बातें बतला देना आवश्यक है, एक तो यह कि

राजनैतिक विचार। आप राजनीतिज्ञ नहीं हैं, पालिटिक्स आपका पेशा नहीं हैं। राजनीतिको भी आप धार्मिक दृष्टिसे देखते हैं और राजनैतिक विषयों पर जो कुछ आपने लिखा है वह एक इतिहासज्ञ और विचारकी हैसियतसे लिखा है। दूसरी बात यह है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के राजनैतिक विचारोंमें बड़े परिवर्तन हो चुके हैं। जिस समय आप भारतको आये थे आप कट्टर साम्राज्यवादी थे लेकिन इस समय आप भारतकी पूर्ण स्वाधीनताके पक्षपाती हैं। आपका विश्वास है कि भारतके लिये उपर्युक्त स्थान ब्रिटिश साम्राज्यके बाहर ही है। जिस समय आप बालक ही थे आपके पिता आपको ब्रिटिश साम्राज्यका गौरव बतलाया करते थे। उनका विश्वास था कि ब्रिटिशसाम्राज्य संसारमें दैवी साम्राज्य है। आपके पिताजीने आपको यह भी बतलाया था कि ब्रिटिश शासनने भारतके साथ क्या क्या भलाईकी हैं। कलकत्तेमें व्याख्यान देते हुए मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कहा था—

" जब मैं भारतको आया था मेरी उम्र अधिक हो चुकी थी और मेरे विचार एक प्रकारसे निश्चित हो चुके थे। न तो स्कूलमें न कालेजमें और न विश्वविद्यालयमें ही मुझे भारतके विषयमें ठीक ठीक बातें बतलाई गई। मेरे बाप दादोंके भारतके विषयमें जो ख्याल थे उन्हीं ख्यालोंको लेकर मैं भारतको आया था। मेरी नस नसमें साम्राज्य

वादियोंकी तरहके विचार भरे हुए थे। मैं अधेड़ अवस्थामें भारतमें पहुँचा। जब कोई आदमी अधेड़ अवस्थामें पहुँच जाता है तो उसके विचारोंमें परिवर्तन होना अत्यन्त कठिन हो जाता है। मैं आपको बतला नहीं सकता कि मुझे अपनी आत्माके साथ कैसा युद्ध करना पड़ा। जब भारतवासी मुझसे कहते थे "ब्रिटिश राज्यमें भारत नित्य प्रति अधिकाधिक ग़रीब, पराधीन और असन्तुष्ट होता जाता है" तब मैं जबरदस्ती अपने मनसे कहलाता "नहीं, यह भारतवासी ठीक बात नहीं कह रहे" इस प्रकार मैं कितने ही दिनों तक सत्यके विरुद्ध युद्ध करता रहा। अन्तमें मुझे हार माननी पड़ी और सच्ची घटनाओंने मेरे विश्वासोंमें परिवर्तन कर दिया। तब मेरी समझमें यह बात आई कि भारतीयोंका कथन सत्य है और मेरे देशबन्धुओंका असत्य। मैं प्रायः ग्रामोंमें गया और मैंने ग्रामोंकी हालत अपनी आंखोंसे देखी। भारतमें जितना मैं घूमा हूँ उतना बहुत कम अँग्रेज़ घूमे होंगे। मैं हिन्दुस्तानियोंके घर पर रहा हूँ, उनके घर पर मैंने उन्हीं कैसा भोजन किया है। मैं प्रायः हिन्दुस्तानी कपड़े पहनता रहा हूँ। इन कारणोंसे हिन्दुस्तानियोंने मेरे सामने वैसी चापलूसीकी बातें नहीं कीं, जैसी 'साहबों' के सामने की जाती हैं। हिन्दुस्तानियोंने मेरी खुशामद नहीं की बल्कि उन्होंने मुझे ठीक ठीक बातें ही बतलाई हैं। इस तरह धीरे धीरे मुझे यह पता लग गया कि भारत एक भयंकर रोगसे पीड़ित है और यह रोग अब असाध्य होता जा रहा है।"

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विचारोंका परिवर्तन बहुतसे आदमियोंको अत्यन्त आश्चर्य जनक प्रतीत होता है लेकिन इसमें आश्चर्य्यकी कोई बात नहीं है। 'प्रताप' ने इस विषयमें एक योग्यतापूर्ण टिप्पणी लिखी थी। वह हमारे कथनको इतनी अच्छी तरह समर्थन करती है कि हम उसे उद्धृत किये बिना नहीं रह सकते। 'प्रताप' ने लिखा था।

"संसारकी गति और मतिको देखकर मनुष्योंके मतोंमें कैसा परिवर्तन होता है, इसे वे लोग, जो केवल अपनी एकाङ्गी दृष्टिसे मनुष्य स्वभावका अवलोकन करते हैं, नहीं समझ सकते। कभी कभी इस विचार परिवर्तनकी द्रुत गतिको वे लोग अवाक्‌से रह जाते हैं और उन मनुष्यों पर जिनमें इस प्रकारके मत-परिवर्तनके चिन्ह प्रतिलक्षित होते हैं, अनिश्चितताका दोष मढ़नेको भी उद्यत हो जाते हैं। उदाहरणार्थ यदि आज लाला लजपतराय देशके युवकोंको सेवाके लिये आह्वान करते हैं तो लोग ऐसा करनेमें उनकी हार्दिक विश्वासनीयता पर आक्षेप कर बैठते हैं। वे कहने लग जाते हैं कि ये वही लालाजी हैं जिन्होंने अपने कलकत्ता स्पेशल कांग्रेसके अन्तवाले भाषणमें कहा था कि गवर्मेण्टकी सहायताके विना शिक्षाको राष्ट्रीय बनाना असम्भव है, और आज ये ही लालाजी डी. ए. वी. कालेज लाहौरको इस प्रकार नेस्तनाबूद करने पर उतारू हैं। कहनेवाले ऐसा कह सकते हैं लेकिन हम उनसे पूँछते हैं "क्या आपने इस बात पर भी ध्यान दिया है कि तबसे अब तक देशमें किस प्रकारकी विचार तरङ्ग बहती रही है और क्या यह विचार प्रवाह इतना निर्बल था कि मनुष्यको पुनर्विचार करनेका मौका न देता ?

ठीक इसी प्रकारके कुछ सज्जन मिस्टर सी. एफ. ऐण्ड्रयूज़के विचारोंसे बहुत चौंक पड़े हैं। हालमें हम अपने एक अँग्रेज़ मित्रसे बातें कह रहे थे। वे पादरी हैं। उनका जीवन उज्ज्वल है। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के विचार, जो उन्होंने हालमें ही कलकत्तेमें प्रगट किये थे, उन्हें हैरतमें डाले हुए हैं। वे कहने लगे "मैं नहीं समझता कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कैसी बातें करते हैं। कोई दस वर्षपूर्व मैंने उनकी एक पुस्तक पढ़ी थी। उसीने मुझे भारतमें आनेके लिये आकर्षित किया। मैं उनका बड़ा आदर करता हूँ, किन्तु मैं यह नहीं समझ सकता कि ये जो बातें उन्होंने कही हैं कैसे कही हैं ?"

आश्चर्य्य की इसमें रंचमात्र भी कोई बात नहीं। विशिष्ट रूपसे शुद्ध हृदयमें ब्रिटिश साम्राज्य वादियोंकी महत्वाकांक्षाके आघात प्रत्याघात कैसा आन्दोलन कर देते हैं, दासत्व—शृङ्खलाबद्ध जातिका अहिंसात्मक स्वातंत्र्य युद्ध एक सच्चे ईसाईके मन—मन्दिरमें किस प्रकार पूजित होता है—महात्मा ऐण्ड्रयूज़के विचार इन्हीं बातोंके द्योतक हैं, और कुछ नहीं।" कट्टर साम्राज्यवादीसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ भारतकी पूर्ण स्वाधीनताके पक्ष-पाती किस प्रकार बनगये इस महान विचार परिवर्तनके कारण हम मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के ही शब्दोंमें पाठकोंके सामने उपस्थित करते हैं।

भारतका स्थान कहाँ है? *

ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर या बाहर?

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ कहते हैं "भारतमें तथा विदेशोंमें यात्रा करनेसे जो अनुभव मुझे हुए हैं उनके कारण मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूँ कि ब्रिटिश साम्राज्यके बाहर चले जानेमें ही भारत वर्षकी भलाई है। इस परिणाम पर पहुँचना मेरे लिये कोई सरल बात नहीं थी। मैंने इस प्रश्न पर बहुत दिनों तक गम्भीरता पूर्वक विचार किया है और तत्पश्चात् मुझे इस नतीज़े पर आना पड़ा है, और कोई मार्ग मुझे युक्तिसंगत प्रतीत नहीं हुआ। इस अनिवार्य्य परिणाम पर पहुंचनेके बाद अब मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि सर्व साधारणके सामने मैं अपना अन्तिम मत प्रगट कर दूँ।

यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि भारतीय समाचार पत्रोंके लिये "पूर्ण स्वाधीनता" का विचार कुछ नवीन ही है तथापि मुझे यह विश्वास है कि

* Within or without the British Empire नामक एक लेख मालासे ये विचार लिये गये हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज इस लेख मालाको शीघ्र ही प्रकाशित करेंगे। —लेखक

शिक्षित भारतीयोंके हृदयमें पूर्ण स्वाधीनताका भाव बहुत दिनोंसे विद्यमान है। यह भाव अब तक दबी हुई हालतमें रहा है। मेरा यक़ीन है कि जब पूर्ण स्वाधीनताके भावका भारतमें पूर्णतया प्रचार हो जावेगा, उस समय हम लोग अपनी पिछली बातोंको देखकर आश्चर्य्य करेंगे और कहेंगे "ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर स्वराज्य तथा इसी तरहके अन्य सिद्धान्तोंके साथ हम इतने दिनों तक क्यों खेल खेलते रहे? शायद हमारी गुलामीका ही यह एक लक्षण था कि हम उस समय ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर रहनेके सिद्धान्तके अनुयायी थे" भावी इतिहास लेखक अपनी ऐतिहासिक पुस्तकोंमें लिखेंगे "यह बात बड़े अचम्भेकी है कि कभी हिन्दुस्तानी पूर्ण स्वाधीनताके बजाय होमरूलकी ही बातोंसे सन्तुष्ट थे और ब्रिटिश साम्राज्यकी प्रजा होने पर गर्व करते थे। पहलेसे ही उन्होंने इस बातको नहीं समझा था कि जिस ब्रिटिश साम्राज्यकी छत्र छायामें रहनेसे वे सन्तुष्ट थे आखिर वह विदेशी ही था।

अब 'स्वाधीनता' का शब्द सर्वसाधारणके प्रयोगमें आने लगा है। मेरा विश्वास है कि वर्तमान समयमें हमारे लिये केवल एक ही लक्ष्य सन्तोष जनक है और वह है पूर्ण स्वाधीनताका। यही हमारा अन्तिम लक्ष्य होना चाहिये।"

आगे चलकर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने लिखा है "२० अगस्त सन् १९१७ में ब्रिटिश सरकारने जो घोषणा की थी कि भारतको ब्रिटिश साम्राज्यके एक खास और जरूरी भाग की हैसियतसे उत्तर दायित्व पूर्ण स्वराज्य देना हमारा उद्देश्य है। इस उद्देश्यकी सफलतासे भारतवर्षकी कठिनाइयाँ दूर नहीं हो सकतीं। इन कठिनाइयोंके दूर करनेका एकही-मार्ग है, वह यह कि भारतवर्ष इस साम्राज्यसे बाहर निकल जाय। "नान्यः पन्था विद्यते।" भारतके ब्रिटिश साम्राज्यसे बाहर जानेके उद्देश्यको आप क्यों उत्तम तर समझते हैं इसके कारण भी आपके ही शब्दोंमें सुन लीजिये।

(१) भारतका ब्रिटिश साम्राज्यके साथ अनन्त सम्बन्ध बनाये रखनेसे भारत उतनी शीघ्र उन्नति नहीं कर सकता जितनी शीघ्र वह साम्राज्यसे बाहर निकल जाने पर कर सकता है । जब मैं भारतके व्यापार, उद्योगधंदे या आर्थिक स्थितिके क्षेत्रपर विचार करता हूँ तो मुझे यही विश्वास होता है कि पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हुए बिना इनकी यथोचित उन्नति नहीं हो सकती । अथवा जब मैं भारतीय साहित्य संगीत तथा कला कौशल पर ख्याल करता हूँ तब भी मैं इसी परिणामपर पहुँचता हूँ । समाजसुधार, आन्तरिक व्यवस्था तथा धार्मिक संगठनपर विचार करते हुए भी मुझे इसी नतीजेपर पहुँचना पड़ता है कि ब्रिटिश साम्राज्यकी पराधीनतामें इनकी पूरी पूरी उन्नति होना सम्भव नहीं ।

(२) भारतकी जन संख्या ३२ करोड़ है और यह बढ़ रही है। भारतवासियोंका अतीत काल गौरव मंय रहचुका है और उनकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। यह बात असम्भव है कि इन ३२ करोड़ आदमियोंके स्वभाव और प्रवृत्ति एक सुदूरदेश इङ्गलेण्डके निवासी अल्पसंख्याक विदेशी लोगोंके स्वभाव और प्रवृत्तिके अनुरूप बन जावें । इङ्गलेण्डकी जलवायु, जाति, भाषा, सभ्यता और धर्म भारतसे बिल्कुल भिन्न हैं इसलिये भारतवासियोंकी प्रकृति इङ्गलैण्डवासियोंकी प्रकृति के अनुरूप नहीं बन सकती । भारत स्वयं एक महाद्वीप है । वह स्वतः सम्पूर्ण और समृद्ध है और वह हमेशाके लिये ब्रिटिश साम्राज्यके विस्तारका एक भाग नहीं बन सकता । इसी बातको दूसरे शब्दोंमें हम यों कह सकते हैं कि जो भारतीय सभ्यता प्राचीन कालसे अबतक धर्म, विद्या—बुद्धि, कला कौशल इत्यादिके क्षेत्रमें उच्चकोटिके प्रतिभा शाली पुरुष उत्पन्न करती रही है, वह सदा ही अंग्रेज़ जातिके संसारमें विस्तार करने के लिये साधनका काम नहीं देसकती ।

(३) अंग्रेज़ जातिका विस्तार न्यूजीलेण्ड, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रिका, उत्तर अफ्रिका इत्यादि देशोंमें सदाके लिये स्थायी हो सकता है क्योंकि ये स्थान समशीतोष्ण कटिबंधमें हैं और खाली हैं, लेकिन एशियाका दक्षिण पूर्वी भाग जो प्रायः उष्णकटिबंधमें है और जहां की जनसंख्या बहुत बढ़ी हुई है, अंग्रेज़ जातिके विस्तारके लिये उपयुक्त स्थान नहीं और न यह विस्तार लाभदायक ही हो सकता है।

(४) भारतके ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर रहनेका एक ही अर्थ हो सकता है और वह अर्थ यही है कि भारतवर्ष सदा अपने आदर्शोंके लिये विलायतका मुँह ताका करे। ब्रिटिश साम्राज्यके केन्द्रस्थान विलायतमें ही होगा और जब तक भारत ब्रिटिश साम्राज्यका एक खास और ज़रूरी हिस्सा रहेगा तब तक भारतको अपने आदर्शोंके लिये विलायतका मुहँ ताकना ही पड़ेगा। बाहरी घटाटोप और आडम्बरकी चिकनी चुपड़ी बातोंमें आकर हम लोग भले ही कहा करें कि ब्रिटिश साम्राज्यसे सम्बद्ध बने रहनेसे भारतका यह लाभ होगा वह लाभ होगा, लेकिन असली बात यही है कि भारतमें—पराधीनता विलायतका मुहँ ताकनेकी पराधीनता—ज़रूर बनी रहेगी। "ब्रिटिश साम्राज्यका एक खास और ज़रूरी भाग" का असली अर्थ यही है। आस्ट्रेलिया और कनाडावाले इस अधीनताको भले ही अनुभव करें क्योंकि वहांके निवासी अंग्रेज़ोंके कुटुम्बी हैं, लेकिन हिन्दुस्तानियोंके लिये अंग्रेज़ सदा विदेशी हैं और सदा विदेशी ही रहेंगे इस लिये हिन्दुस्तानियोंको यह अधीनता ज़रूर खटकती रहेगी। ब्रिटिशसाम्राज्यका केन्द्र भारतीयोंके लिये विदेशी ही रहेगा इस लिये वे इसे नापसंद करेंगे। इन कारणोंसे भारतवासी "पूर्ण स्वाधीनता" में जितना गौरव समझेंगे उतना गौरव वे "साम्राज्यके भीतर स्वराज्य" में कदापि नहीं समझ सकते।

(५) आस्ट्रेलिया, कनाडा तथा न्यूज़ीलेण्ड ये तीनों विलायतको

अपनी मातृभूमि कह सकते हैं। ये तीनों देश विलायतकी पुत्रियोंके समान हैं और जिस तरह पुत्री कुटुम्बमें शामिल हो सकती है उसी तरह ये देश भी साम्राज्यके अङ्ग बने रह सकते हैं, लेकिन विलायत और भारतभूमिका सम्बन्ध माता और पुत्रीका सम्बन्ध कदापि नहीं कहा जा सकता भारतभूमि स्वयं अनेक सभ्यताओंकी माता है। प्राचीनकालमें अपनी बुद्धि और अनुभवके कारण भारतभूमि कितने ही राष्ट्रोंकी माता रह चुकी है। इसी वजहसे वह विलायतकी पुत्री कदापि नहीं हो सकती। यदि किसी साम्राज्यका संगठन स्वाभाविक और मानुषिक ढङ्ग पर हो तो उसका सम्बन्ध अपने भिन्न भिन्न हिस्सोंमें वैसा ही होना चाहिये जैसा एक कुटुम्बके आदमियोंका पारस्परिक सम्बन्ध होता है, अथवा जिस तरह शरीरका सम्बन्ध अपने भिन्न भिन्न भागोंसे होता है, लेकिन भारतवर्ष और विलायतमें ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं है। दोनों देशोंके इतिहासमें उतनी ही भिन्नता है जितनी दक्षिणी ध्रुवमें और उत्तरी ध्रुवमें, और पाशविक बलके कारण ही प्रारम्भमें विलायतने भारतको अपने अधीन किया है।

(६) जनसंख्या पर दृष्टि डालते हुए भी यही प्रतीत होता है कि ब्रिटिश साम्राज्यका सम्बन्ध भारतवर्षसे बहुत दिनों तक नहीं रह सकता। रेखागणितके नियमानुसार छोटी चीज़ बड़ी चीज़का भाग बन सकती है न कि बड़ी वस्तु छोटी वस्तुका। ३२ करोड़ आदमियोंके शासनका केन्द्र लन्दनमें रक्खा जावे और इस केन्द्रके चारों ओर ये ३२ करोड़ आदमी चक्कर लगावें (चाहे भारतको होमरूलका निजी चक्कर भी मिल जावे) इस बेढब गतिमें क्या सहूलियत और सुभीता हो सकता है! ३२ करोड़ आदमियोंके शासनका केन्द्र सहस्रों मील दूर लन्दनमें रखना उतनी ही उल्टी बात है जितनी पृथ्वीके चारों ओर सूर्य्यका चक्कर लगाना!

(७) स्थायी अधीनता नैतिक अधःपतनका कारण है। सर जान सीलीका यह ऐतिहासिक वाक्य बिल्कुल सत्य है कि एक विदेशी शक्तिकी पराधीनतासे बढ़कर नैतिक अधःपतनका दूसरा कारण नहीं होसकता।'

विदेशी शासनके कारण शासित जातिकी गतिमें जो अस्वभाविकता आजाती है और शासित जातिके मनुष्य दुरंगी चाल चलनेके लिये बाध्य हो जाते हैं। विदेशी जातिका शासन शासितोंके आचरणकी सत्यता, ईमानदारी और निर्भयताके स्रोतको ही नष्ट कर देता है। बहुत कम शिक्षित भारतवासी ऐसे होंगे जिन्होंने विदेशी शासनके भयंकर परिणामको अपनी आत्मामें अनुभव न किया हो। विदेशी शासनसे लोगोंकी जो मानहानि होती हैं वह रुपये पैसेसे पूरी नहीं हो सकती और न रुपया पैसा इस अपमानका कोई इलाज़ ही है। **विदेशी शासन मस्तिष्ककी दासता उत्पन्न करता है।** ऐसे आदमियोंकी संख्या अत्यल्प ही होती है जो अपने आन्तरिक आत्मिक बलके द्वारा दासत्व-पूर्ण बाह्य परिस्थितिसे ऊंचे उठ सकें और उसकी बुराइयोंसे बच सकें। इस समय वायसराय तथा उनकी कौंसिलको जो अनियंत्रित अधिकार प्राप्त हैं उनके स्थानमें "साम्राज्यके भीतर स्वराज्य" का सिद्धान्त भले ही अत्युत्तम प्रतीत हो, लेकिन मैं इस बातको निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर रहते हुए भारतकी परिस्थितिमें कुछ दासत्व, पराधीनता, पराश्रय या विदेशीपन न आजावे यह बात असम्भव है। मैं अँग्रेज़ हूँ और अँग्रेज़ होनेकी वजहसे अपने देशवासियोंकी प्रवृत्तिको जितना मैं समझ सकता हूँ उतना किसी हिन्दुस्तानीके लिये समझना अत्यन्त कठिन है। ब्रिटिश जातिके शासनमें जो अधीनता होगी उसे चाहे कितना ही दबा कर रक्खा जावे लेकिन अन्तमें वह शासित जातिके अधःपतनका कारण अवश्य होगी।

(८) जब तक भारत ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर रहेगा तब तक

विदेशी लोग इसका रक्त शोषण करते ही रहेंगे। भारतकी लक्ष्मी विलायत पहुँचती रहेगी। किसान लोग बराबर ज्यों के त्यों निर्धन बने रहेंगे।

(९) इस समय संसारमें चारों ओर " गोरी जातियोंकी प्रभुता " का ' धर्म ' स्थापित हो रहा है। गोरे लोग समझते हैं कि हम ऊँचे हैं और काले आदमी नीचे। मैं स्वयं गोरी जातिका हूँ लेकिन मैं सर्व साधारणके सामने यह दृढ़तापूर्वक कहदेना चाहता हूँ कि मैं " गोरी जातियोंकी प्रभुताके धर्म " का घोर विरोधी हूँ। हिन्दुस्तानियोंकी अज्ञानुसार मैं फिजी, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलेण्ड, पूर्व अफ्रिका, और दक्षिण आफ्रिकाकी यात्रा कर चुका हूँ और वहाँ मैं देखचुका हूँ कि ब्रिटिश साम्राज्यकी प्रजा होने पर भी हिन्दुस्तानियोंकी वहाँ मट्टी पलीद है। सच बात तो यह है कि भारतीयोंके लिये ब्रिटिश साम्राज्यके नागरिक होनेका कुछ अर्थ ही नहीं। गोरे लोग हर जगह पर हिन्दुस्तानियोंसे द्वेष करते हैं। जब तक भारत ब्रिटिश साम्राज्यमें रहेगा तब तक यह हालत बनी रहेगी। इसलिये साम्राज्यसे बाहर जानेमें ही भलाई है।

इनके सिवाय मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपनी लेखमालामें और भी कितने ही कारण बतलाये हैं। यह बात हम यहाँ फिर दुहरा देना चाहते हैं कि मि. ऐण्ड्र्यूज़ कोई राजनीतिज्ञ नहीं और न उन्होंने अपने सिद्धान्तोंको कार्य्यरूपमें परिणत करनेके लिये कोई राजनैतिक प्रोग्राम ही बनाया है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रति पूर्ण सम्मान रखते हुए भी हमें यह कहना पड़ता है कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ राजनैतिक प्रोग्राम बना भी नहीं सकते। इसकी योग्यता ही उनमें नहीं है। यह उनकी सामर्थ्यके बाहर है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ वे राजनीति पर भी धर्मकी दृष्टिसे देखते हैं। आपने एक जगह लिखा है " रात्रिकी निस्तब्धतामें और प्रातःकालकी उपासनामें क्राइस्टके ये शब्द मेरे मनमें घूमते रहे हैं " जिस बर्तावकी इच्छा तुम अपने लिये दूसरोंसे करते हो वैसा ही बर्ताव तुम

उनके साथ करो" उपासनाके समय मैं प्रायः अपने मनमें यही कहता रहा हूँ "तुम अंग्रेज़ हो, तुम्हें अपनी स्वाधीनता अत्यन्त प्यारी है, तुम किस मुखसे हिन्दुस्तानियोंको इस स्वाधीनतासे वंचित रखनेके लिये कह सकते हो?"

नागपुर कांग्रेसके सभापति श्रीविजयराधवाचार्य्यने अपनी स्पीच लिखनेके पूर्व मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को एक पत्र भेजा था। उसमें उन्होंने लिखा था "आपके लेखोंसे यह प्रगट होता है कि आप भारतके ब्रिटिश साम्राज्यसे बाहर निकल जानेके पक्षमें हैं कृपया इसका प्रोग्राम बना दीजिये" मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कोई प्रोग्राम नहीं बनासके। वे कहते हैं "राजनैतिक प्रोग्राम बनाना यह राजनीतिज्ञोंका काम है। मैं तो इतिहासका विद्यार्थी और विचारक हूँ, और इसी दृष्टिसे सर्वसाधारणके सामने अपने विचार रखना मेरा कर्तव्य है।"

यद्यपि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कोई राजनैतिक प्रोग्राम नहीं बना सकते तथापि उनके विचार *गम्भीरतापूर्वक ध्यान देने योग्य* हैं। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उन इने गिने आदमियोंमें से हैं जो भारतकी राजनैतिक परिस्थिति पर मौलिक विचार प्रगट कर सकते हैं। वे स्वयं ब्रिटिश साम्राज्यके भिन्न भिन्न भागोंमें घूम आये हैं अतएव जो कुछ वे कहते हैं अधिकारपूर्वक कहते हैं। दिल्लगीकी बात तो यह है कि हमारे यहां कुछ पढ़े लिखे भारतवासी ऐसे भी हैं, जो घरसे कभी बाहर नहीं निकले और जिन्हें इस बातका कुछ भी अनुभव नहीं कि ब्रिटिश साम्राज्यमें भारतीयोंको कैसे अपमान सहन करने पड़ते हैं, ऐसे भारतवासी भी मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के पूर्ण-स्वाधीनताके सिद्धान्तके विरोधी हैं। यहां पर यह बतला देनेकी आवश्यकता है कि "पूर्ण स्वाधीनता"का सिद्धान्त भारतके लिये कोई नवीन सिद्धान्त नहीं है और मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने कभी इसके प्रथम प्रचारक होनेका दावा भी नहीं किया स्वदेशी आन्दोलनके

युगमें स्वनामधन्य श्रीयुत अरविन्द घोष और सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बाबू बिपिनचन्द्र पाल इसी सिद्धान्तके अनुयायी थे।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ राजनैतिक कार्य्योंमें भी मानव—समाज-सेवाके उच्च उद्देश्यसे ही भाग लेते हैं। लीड़र होना, अथवा येन केन प्रकारेण जनप्रिय बनना, आपका उद्देश्य नहीं है। कुछ शिक्षित भलेमानसोंको हमने कहते हुए सुना है "गोरे आदमियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। हमारी कमज़ोरी देखनेके लिये हमारे बीचमें आते हैं। देखो अमुकने पहले भारतकी भलाई करनेका कितना ढौंग किया था, लेकिन अब उसके विश्वास घातसे भारतका कितना नुकसान हो रहा है। पहले जिन लोगोंने उसे सिर पर चढ़ा लिया था वे ही अब पछता रहे हैं किस उन्नत अवस्थासे उसका कैसा पतन हुआ है! देखो गोरोंपर कभी विश्वास न करना चाहिये।" ऐसे महानुभावोंसे हमारा यही निवेदन है कि लोगोंके सिर पर चढ़कर उन्नत होना और नेता बनना ही जिनका उद्देश्य है, उनका पतन होसकता है, लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने सन् १९०५ में ही, जब उन्होंने सैण्ट स्टीफन्स कालेजका प्रिन्सिपल बनना अस्वीकार किया था, यह निश्चय कर लिया था कि मैं नेतृत्व ग्रहण नहीं करूंगा। तबसे आप बराबर इसी नियमका पालन कर रहे हैं। जिसने स्वयं अपनेको अत्यन्त नम्र बना लिया हो उसका पतन क्या होगा?

लगभग चार पांच वर्षसे कांग्रेसमें बराबर एक प्रस्ताव मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को, उनकी सेवाओंके लिये धन्यवाद देनेका होता है, लेकिन आप सन् १९०६को छोडकर और कभी कांग्रेसमें नहीं गये। फिजी तथा पूर्वी अफ्रिका इत्यादिके विषयोंपर आपकी बात सबसे अधिक प्रमाण मानी जाती है। यदि आप कभी कांग्रेसमें जावें तो आपका अच्छा स्वागत हो। जिस समय महात्मा गान्धीजीने कांग्रेस विधानके

परिवर्तन पर अपना भाषण दिया था और कहा था "मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ भारतके पूर्ण स्वाधीन होनेके पक्षमें हैं। वे भारतका ब्रिटिश साम्राज्यसे बिल्कुल सम्बन्ध नहीं रखना चाहते" उस समय लोगोंने खूब करतल-ध्वनि की थी। प्रतिवर्ष कांग्रेस तथा राजनैतिक कानफरेंसोंके निमंत्रण आपके पास आते हैं लेकिन आप बराबर यही कहते हैं "मेरा काम भारतकी सेवा करना है नेता बनना नहीं। भारतकी भलाई करनेकी इच्छा करनेवाले अँग्रेज़के लिये केवल एक ही मार्ग है अधीन होकर सेवा करना। दूसरा कोई मार्ग नहीं।"

असहयोग आन्दोलनके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के विचार।

असहयोग आन्दोलनके तीन कारण हैं (१) खिलाफत (२) पंजाब (३) स्वराज्य। खिलाफत आन्दोलनसे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की सहानुभूति है। टर्किश सन्धिके विषयमें आपने एक बड़ी योग्यतापूर्ण लेख-माला लिखी थी और उसमें आपने साम्राज्यवादियोंकी अच्छी तरह खबर ली थी, लेकिन आप इस बातके पक्षमें नहीं हैं कि आर्मीनिया तथा अरबके निवासी फिर टर्कीके अधीन कर दिये जावें। आप कहते हैं कि स्वभाग्य निर्णयके पक्षपाती भारतीयोंको यह उचित है कि वे आर्मीनिया तथा अरबके निवासियोंके प्रश्नों पर न्याय और समानताकी दृष्टिसे विचार करें।

पंजाबके विषयमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने जो कार्य्य किया था उसका वृत्तान्त पाठक पढ़ ही चुके हैं। पंजाबकी दुर्घटनाके बारेमें भारतीय-नेताओंके जो विचार हैं वही विचार मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के भी हैं, लेकिन एक बातमें आपका मतभेद है, वह यह कि आप जलियानवाला मैमोरियलके पक्षमें नहीं हैं। आप कहते हैं "यह सम्भव है इस मैमोरियलसे द्वेषका भाव चिरस्थायी हो जावे, और यह बात अनुचित होगी।" यह ध्यान देने योग्य है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ऐङ्गलो इण्डि-

यनोंके मैमोरियलोंके भी घोर विरोधी हैं। आप कहते हैं "ब्लैक होलका मैमोरियल, दिल्लीमें निकलसन तथा लाहौरमें लारेंसकी मूर्ति और कानपुरके कुएका स्मारक ये सब अवश्य नष्ट कर देने चाहिये" इनके बारेमें आपने अपने विचार सर्व साधारणमें प्रगट भी कर दिये हैं। श्रीरवीन्द्रनाथके साथ आपने भी जलियानवाला बागके स्मारकका विरोध किया था। पंजाबमें दो महीने तक घोर परिश्रम करनेके बाद जब आप अफ्रिकाको जाने लगे थे, उस समय आपने सुप्रसिद्ध भाषणके अन्तमें कहा था।

"आपसे मेरी यही प्रार्थना है कि आप द्वेषकी अन्धकारमय रात्रिमें न भटकें बल्कि ईश्वरीय प्रेमके प्रकाशमय मार्गका अनुसरण करें" इसमें सन्देह नहीं कि मिस्टर ऐण्ड्रूयूज् कैसे साधुचरित्र मनुष्यके मुखसे यह बात शोभा देती है। महात्मा गान्धीजीने कहा था कि मिस्टर ऐण्ड्रूयूज्के जीवनका उपदेश यही है कि वे अन्याय तथा अत्याचारका घोर विरोध करते हुए भी अन्यायी तथा अत्याचारीसे द्वेष नहीं करते। इसके सिवाय पंजाबमें मिस्टर ऐण्ड्रूयूज्ने जो सेवा कार्य्य किया था उसके कारण आपको इस विषयपर बोलनेका पूर्ण अधिकार भी है। और जब वे ब्लैक होल इत्यादि के स्मारकके विरुद्ध हैं तो जलियाँवाला बागके स्मारकके विरुद्ध होना उनके लिये स्वाभाविक और तर्कयुक्त भी है। इन सब बातोंके होते हुए भी हम मिस्टर ऐण्ड्रूयूज्से सहमत नहीं। जलिया नवाला बागका स्मारक तो होना ही चाहिये। हमें स्वाधीन होनेके लिये यह बराबर उत्तेजित करता रहेगा और स्वाधीन होनेपर हमें याद दिलाता रहेगा कि पराधीनताके दिनोंमें हमारी मातृभूमिके सैकड़ों निरपराध देशबन्धुओंके प्राण विदेशी शासकोंने किस प्रकार लिये थे।

विदेशी वस्त्रोंके जलानेके आप घोर विरोधी हैं। आपका मत है कि ये कपड़े जाड़ेसे मरनेवाले गरिबोंमें बांट देने चाहिये।

स्वराज्यके विषयमें आपके जो विचार हैं उन्हें दुहरानेकी आवश्यकता नहीं।

जिस समय आपने बंबई छात्रसंमेलनके सभापति की हैसियतसे— शिक्षा सम्बन्धी असहयोगका स्वागत किया था "टाइम्स ऑफ इंडिया" ने आपके व्याख्यानको Fatrago of Nonsense" (बिल्कुल बेहूदा) बतलाते हुए लिखा था।

"It is tragic to see a man who professes to understand crowd psychology deliberately using the wiles of a demagogue upon a gathering of excitable young men. It is the wanton counsel of men like Mr. Andrews, who are intoxicated with their ability to rouse the passions of the mobs, that is answerable for such instances of freedom as the shouting down of Mrs. Besant by students."

"एक ऐसे आदमीको, जो कम समझ लोगोंके दलके मनोविज्ञानको जाननेका दावा करता है, भड़कनेवाले विद्यार्थियोंके सामने बेअसूल वक्तओंकी चालाकियोंका प्रयोग जान बूझकर करते हुए देखकर अत्यन्त दुःख होता है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की तरहके आदमी इस बातसे मदान्ध हो जाते हैं कि उनमें लोगोंके भड़कानेकी शक्ति विद्यमान है जिस स्वतंत्रतासे प्रेरित होकर विद्यार्थियोंने ऊधम मचाकर मिसेज़ बेसेण्टको बोलने नहीं दिया था वह मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कैसे वक्ताओंके बेहूदा उपदेशोंका ही फल है।

यद्यपि असहयोग आन्दोलनसे आपकी पूर्ण और हार्दिक सहानुभूति है तथापि व्यावहारिक रूपसे आप उसमें शामिल नहीं हैं। आपने अपनेको "स्वतंत्र समालोचक" की हैसियतमें रखना ही उचित समझा है। दुःखितों और पीड़ितोंकी सहायताके काममें आप इस समय

भी गवर्मेण्टसे सहयोग करनेमें कोई बुराई नहीं समझते। फिजी तथा अफ्रिका इत्यादिके प्रश्नों पर आप स्वयं सरकारकी सहायता करना ही उचित समझते हैं। मानव समाज सेवाके कार्य्यको ही आप सर्वोच्च स्थान देते हैं, राजनीतिको नहीं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ अहिंसा धर्मके बड़े भारी पक्षपाती हैं। महायुद्धके दिनोंमें आपने बहुत कुछ विचार करनेके बाद यही निश्चय किया था "चाहे मेरी मातृभूमि इङ्गलेण्ड पर ही हमला क्यों न हों मैं मार काटके बदले मारकाट कर अपने देशकी रक्षा नहीं करूँगा" जिस समय महात्मा गान्धीजीने सरकारके लिये गुजरातमें रँगरूट भर्ती करना शुरू किया था उस समय भी आपने बीसियों बार उन्हें इस बातके विरुद्ध लिखा था। वर्सेलीजकी सन्धिको आपने अन्याययुक्त बतलाया था और सन्धि उत्सव मनानेका आपने विरोध किया था। टर्कीके विरुद्ध जो सन्धि सेवर्णमें हुई थी उसके विरुद्ध आपने बहुत कुछ लिखा था। ड्यूक ऑफ केनाटके स्वागतके भी विपक्षमें आपने लिखा था।

अभी आपने भारतीय पत्रोंमें एक विचारपूर्ण लेखमाला लिखी है जिसका नाम है "Immediate need for independence" 'स्वाधीनताकी अविलम्ब आवश्यकता' इस लेखमालाके अन्तमें आपने लिखा है "भारतके इतिहासके एक ऐसे नाजुक समयमें जब कि पराधीनता और परवशता हमें असह्य हो रही है, भाग्यवश हम लोगोंको एक ऐसे व्यक्ति मिलगये हैं जिन्होंने हमारे पुराने नियमों और लोकाचारोंको अच्छी तरह हिला दिया और यह घोषणा कर दी है "स्वतंत्र हो जाओ और दास न रहो"........ यह सत्य है कि महात्मा गान्धी रूपी ज्वालामुखीसे संहार बहुत होगा। किसी नवीन भवनके बननेके पहले पुरान भवन अवश्य गिराया जायगा, परन्तु अन्तमें नवीन भाव, नवीन उत्साह और नवीन चैतन्यका प्रगट

हो जाना ही प्रधान रहेगा। इसका अन्तिम परिणाम संहारक नहीं बल्कि क्रियात्मक होगा ... ... मुझे यह बात स्पष्टतया दीख पड़ती है कि महात्मा गान्धीजी रोगकी जड़ ही काट रहें हैं। वे रोगीको दवा पिला पिला कर चंगा करनेकी इच्छा करनेवाले वैद्यकी अपेक्षा चीरा लगा कर दूषित अङ्गको ही काटफेंकनेवाले सर्जन कैसा काम कर रहें हैं और चीरा जैसा जैसा गहन होता जारहा है रोगी भी वैसा ही चैतन्य होता हुआ दिखाई देता है हिंदुस्तानके लोग अब इस बातको समझने लगे हैं कि विदेशियोंका राज्य बनाये रखनेमें उनकी मदद करना बड़ी लज्जाकी बात है। महात्मा गान्धी जैसे व्यक्ति जो समस्त राष्ट्रको एक भावसे भावान्वित कर देते हैं, मानव जातिके इतिहासमें बिरले ही होते हैं। हम साधारण आदमियोंका कर्तव्य यही है कि ऐसे ईश्वरदत्त अवसरसे हम पूरा पूरा लाभ उठावें। हमारे अन्दर एक आध्यात्मिक शक्ति होनेसे ही पराधीतानके दुर्गतिचक्रसे हम छूट सकते हैं और भारतकी आत्मा स्वतंत्र हो सकती है।'

ग्रन्थ।

मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी लिखी हुई तीन पुस्तक अब तक प्रकाशित हुई हैं (१) the North India (उत्तरी भारत) (२) the Renaissance in India (भारतीय जागृति) (३) Motherland and other poems (मातृभूमि तथा अन्य पद्य)

पहली पुस्तक सन् १९०८ की लिखी हुई है और उत्तरी भारतमें ईसाई धर्मका प्रचार किस प्रकार हुआ इसका मनोरंजक इतिहास उसमें लिखा गया है। दूसरी पुस्तक सन् १९१०-११ में लिखी गई थी। इसका विषय नामसे ही स्पष्ट है। इन दोनों पुस्तकोंमें कई बातें ऐसी हैं जो हम लोगोंको भ्रान्तिमूलक प्रतीत होंगी, लेकिन हमें यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि ये पुस्तक ईसाइयोंकी दृष्टिसे लिखी गई हैं। इसके

अतिरिक्त यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पिछली दस वर्षोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के विचारोंमें बड़ा भारी परिवर्तन हो गया है। इन पुस्तकोंका मुख्य गुण यही है कि इनमें राष्ट्रीयताके प्रतिपूर्ण सहानुभूति प्रगट की गई है।

तृतीय पुस्तक मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की कुछ कविताओंका संग्रह है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ अँग्रेज़ीमें अच्छी कविता कर लेते हैं। आपकी दो भाव पूर्ण कविताऐं अँग्रेज़ी पढ़े हुए पाठकोंके लिये यहाँ उद्धृत की जाती हैं।

The awakening.

There is a call to the Nations of the East,—
It is the Voice of God!

Awake, awake. the night is past, ye sleeping ones!
Arise, arise, lift up your heads, ye dreaming ones!
Your ancient glory shall return,
And your high star of destiny more brightly burn.
There is a call to the Nations of the East,—
The Voice has sounded forth!
Japan's bright isles first flashed its message o'er the sea,
Himalaya's snows caught up the gleam exultingly,
Southward it lights all Hindustan
And fires the soul of chivalry in old Iran.
There is a call to the Nations of the East,—
'Shew forth Your Righteousness!'
Give to each brother every due of brotherhood,
Give to each sister noblest meed of womanhood.
So shall the Motherland be strong,
To struggle for the right and overthrow the wrong!

There is a call to the Nations of the East,—
Put trust in God and Truth!
Then, like her own strong mountains, all unmoveable.
Resting on sure foundations, unassailable,
A Greater Asia shall arise,
Her foot set firm on earth, her head above the skies.

अनुवाद

[यह अनुवाद श्रीयुत रामनारायण मिश्रने २६ अगस्त
सन् १९१८ के 'प्रताप' में छपवाया था]

जागृति। *

है पूर्व्वीय जातियोंके हित एक सुखद सन्देश।
"वह है परमेश्वरकी वाणीका शुचितम आदेश॥
"जागो! जागो!! बीत गई निशि सोनेवालो! जागो!
"उठो! उठो!! निज शीश उठाओ स्वप्न सौख्य भ्रम त्यागो!!
"लौटेगा प्रताप प्रतिभामय फिर प्राचीन तुम्हारा।
"चमकेगा फिर नभोदेशमें तव सौभाग्य सितारा"॥ १॥
है पूर्व्वीय जातियोंके हित एक सुखद सन्देश।
प्रकटाती है वह विभु-वाणी स्वर उत्तुङ्ग विशेष॥
प्रथम उसे जयपाणि द्वीपने सागर पर फैलाया।
फिर सानन्द हिमालय शृंगामें प्रकाश वह पाया॥
दक्षिण सारे भारतमें जिसका उजियाला छाया।
और पुरातन फारसमें वीरत्व अनल धधकाया॥ २॥
है पूर्व्वीय जातियोंके हित एक सुखद सन्देश।
"दिखला दो जगतीमें सबको अपना सत्व अशेष॥
"बान्धव-ऋण प्रत्येक बन्धुका प्रेम समेत चुकाओ।
"भगिनी भगिनीको नार्योचित सदुपहार पहुँचाओ॥
"मातृ-भूमि परिपुष्ट तथा दृढ़ इसी भांति होवेगी।
"सत्य धर्म्मकी रक्षा करके पाप पङ्क धोवेगी"॥ ३॥

है पूर्व्वीय जातियोंके हित एक सुखद सन्देश।
" श्रद्धा भक्ति भावसे पूजो सत्य और सर्व्वेश॥
" तब गुरु विराट्ट दृढ़ अविच्चल गिरि सम गहन समा कर।
" स्थिर हो सब विधि अजित सुरक्षित निश्चित नींव जमा कर॥
" एक महान महाद्वीपोत्तम उठ एशिया जगेगा।
" जिसके पैर मही पर होंगे, शीश अकाश लगेगा " ॥ ४ ॥

आपकी एक अन्य कविता जिसका नाम Indian Women in Fiji (फिजीकी भारतीय स्त्रियाँ) है, इतनी हृदय विदारक है कि उसे हम उद्धृत किये बिना नहीं रह सकते।

Indian Women in Fiji.

They are toiling, toiling, toiling
In the dense rank sugar cane
And their hearts are burning burning
With a dull and smouldering pain.

They are weeping, weeping, weeping
For the homes left far behind
And their cry comes fainter fainter
On the distant south sea wind.

They are mute with sullen silence
Over wrongs too dark to tell
And the memory haunts and haunts them,
Of an evil black as hell.

They are dying, dying, dying
Unblest, unloved, unknown
Ah, God in heaven, in heaven
Make their dumb cry thine own.

इन पुस्तकोंके अतिरिक्त मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की शर्तवन्दी सम्बन्धी रिपोर्ट * भी पढ़ने योग्य हैं। पहली रिपोर्ट उन्होंने मिस्टर पियर्सनकी सहायतासे लिखी थी और द्वितीय रिपोर्ट स्वयं ही लिखी थी, क्योंकि पहली वार दोनों सज्जन ही फिजीको गये थे और दूसरी वार अकेले मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ही गये थे।

इसके अतिरिक्त माडर्न रिव्यू इत्यादि पत्रोंमें आपने वीसियों उत्तमोत्तम लेख लिखे हैं। इन लेखोंका संग्रह शीघ्र ही मद्रासमे प्रकाशित होनेवाला है। इन लेखोंमें दो लेख अत्यन्त महत्व पूर्ण हैं एक तो Indian History its lessons for to-day (भारतीय इतिहास और वर्तमान समयके लिये उसकी शिक्षायें) और दूसरा National literature and art (राष्ट्रीय साहित्य और कला कौशल) पहला लेख सितम्बर सन् १९०९ के माडर्न रिव्यूमें और दूसरा इसी वर्षके नवम्बर महीनेके अङ्कमें छपा था।

आपकी सुप्रसिद्ध लेखमाला "Immediate need for independence पुस्तकाकारमें प्रकाशित होगई है। यह गनेश ऐण्ड को मद्रासके पतेसे मिल सकती है आपकी To the students नामक एक पुस्तक हालमें ही छपी है।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उच्च कोटिके साहित्य सेवी हैं। धन कमाना उन्होंने अपने जीवनका उद्देश्य नहीं वनाया। खेदकी वात है कि हमारे यहाँ कितने ही ऐसे हिन्दी लेखक उत्पन्न हो गये हैं जो केवल रुपया कमानेके लिये ही लिखते हैं, और जो विना पैसा लिये अपनी कलम ही नहीं उठाते! हम लोगोंको मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के उदाहरणसे कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और साहित्य क्षेत्रमें धनको प्रथम स्थान न देकर मानव समाज सेवा अथवा मातृभाषाकी सेवाको ही प्रथम स्थान देना चाहिये।

* इन रिपोर्टका अनुवाद जो 'फिजीमें भारतीय' नामसे प्रकाशित किया गया है, प्रताप कार्यालयसे मिलसकता है—प्रकाशक

तेरहवाँ अध्याय।

रहन सहन और स्वभाव।

जीवनी लेखकोंमें शिरोमणि प्लूटार्कने एक जगह लिखा है "मनुष्यके गुणों और अवगुणोंकी यथार्थ जाँच सदा उसके अत्यन्त प्रसिद्ध कार्य्योंमें हीं नहीं होती बल्कि अक्सर करके एक क्षुद्र कार्य्य, एक छोटीसी बात अथवा मज़ाक से मनुष्यके असली चरित्र पर जो प्रकाश पड़ता है वह उसके लड़ाईके दिनोंके बड़ेसे बड़े घिराव और युद्धोंसे नहीं पड़ सकता।"

प्लूटार्कका कथन अक्षरशः सत्य है। सर्वसाधारणके सामने जाते समय मनुष्योंके जीवनमें प्रायः कुछ कृत्रिमता आही जाती है लेकिन अपने दैनिक जीवनमें मनुष्य अपने स्वाभाविक ढङ्गसे रहता है और दैनिक जीवनकी छोटी छोटी बातोंसे ही मनुष्यके असली स्वभावका पता लग सकता है।

दैनिक कार्य्यक्रम—मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ प्रायः प्रातःकालमें ५ बजे उठते हैं। शौच इत्यादिसे निवृत्त होकर आप नित्यप्रति ईश्वरोपासना करते हैं। उपासनाके बाद आप कभी कभी टहलनेके लिये चले जाते हैं। वहाँसे आकर विद्यार्थियोंकी प्रार्थनामें सम्मिलित होते हैं। लग भग ६½ बजे आप अपने लिखने पढ़नेका कार्य्य आरम्भ कर देते हैं। यह ११ बजे तक जारी रहता है। इस बीचमें आपको कुछ कक्षाओंको अँग्रेज़ी भी पढ़ानी पड़ती है। ११ बजे भोजन करनेके बाद १५—२० मिनट तक कुछ पत्र इत्यादि पढ़ते रहते हैं लेकिन सोते नहीं शीघ्र ही आप लेख तथा पत्र इत्यादि लिखने बैठ जाते हैं। ५ बजे सन्ध्या समय

आप महर्षि देवेन्द्रनाथके ज्येष्ठ पुत्र ऋषिवर द्विजेन्द्रनाथ ठाकुरकी सेवामें जाते हैं। श्रीयुत द्विजेन्द्रनाथजी हमारे कवि सम्राटके ज्येष्ठ भ्राता हैं। शान्ति निकेतनमें आप "वड़े दादा के नामसे प्रसिद्ध हैं। ऐसा कोई दिन नहीं बीतता जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ "वड़े दादा" के पास न जावें। आप कहते हैं "वह समय जो मैं "बड़े दादा" के निकट बैठ कर व्यतीत करता हूँ, मैं अपने जीवनके लिये अत्यन्त पवित्र समय समझता हूँ" 'बड़े दादा' की उम्र इस समय ८४ वर्ष है परन्तु आपकी विचार शक्ति ज्योंकी त्यों स्पष्ट है। आप वड़े भारी साहित्य सेवी हैं, उच्च कोटिके कवि हैं और दर्शन शास्त्रके अत्युत्तम ज्ञाता हैं। आपका सत्सङ्ग एक अमूल्य वस्तु ही और आपकी वात चीत सुनना मानों आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करना है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का यह सौभाग्य है कि वे "बड़े दादा" के कृपा पात्र हैं।

जब मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ आश्रमसे वाहर कहीं जाते हैं तो 'वड़े दादा' उनके वियोगको सहन नहीं कर सकते। अभी हाल मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ गुजरात सिन्ध अथवा वम्वई जानेके लिये स्टेशनकी ओर गये है, 'वड़े दादा' अपने नौकरसे पूँछते है "कखन आसिवे ?". "कब लौटेंगे ?" मिस्टर ऐड्र्यूज़के वाहर चले जाने पर आप उन्हें बड़े करुणा-जनक पत्र लिखते हैं। वात असलमें यह है कि 'वड़े दादा' के स्वभामें छोटे छोटे वाललोंके स्वभाव किसी सरलता है।

बडे दादाके यहाँसे लौटकर आप भोजन करते और फिर लिखनेके बैठ जाते हैं। दस वजे आप सोजाते हैं। कार्य्य अधिक होनेपर आपको १२—१ वजे तक उठाना पड़ता है।

बहुत ज्याद: परिश्रम करनेसे आप प्राय: बीमार हो जाते हैं। निर्व्वल अवस्थामें लिखने पढ़नेका काम स्वास्थ्याके लिये अत्यन्त हानिकारक हैं यह जानते हुए भी आप अपने स्वास्थ्य पर समुचित ध्यान

नहीं देते । आपको वार २ वीमारे पड़ते हुए देखकर महात्मा गान्धी-जीने अभी आपको लिखा था " मेरे जर्मन मित्र केलन वेक कहा करते थे कि जर्मन सेनामें किसी सैनिकके पैरमें चोट होना वड़ा भारी अपराध समझा जाता है । तुम परमात्माकी फौजके सैनिक हो तुम्हारा वार वार वीमार होना घोर अपराध है । "

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के मित्र प्रायः उन्हें लिखा करते हैं और कुछ नहीं तो मातृभूमि भारतका ही ख्याल करके आप अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दिया कीजिये " लेकिन यह सव लिखना व्यर्थ ही जाता है । हमें यह कहनेमें कुछ भी सङ्कोच नहीं है कि स्वास्थ्य पर समुचित ध्यान न देना मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का एक वड़ा अवगुण है । हमें उनके गुणोंका ही अनुकरण करना चाहिये अवगुणोंका नहीं ।

आइये पाठक हम लोग शान्ति निकेतनमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को रहते हुए देखें ।

प्रातःकालका समय है । शीतल मन्द पवन चल रही है । भगवान भुवन भास्कर अव उदित होने ही वाले हैं । जुहीके पुष्पोंकी भीनी भीनी सुगन्ध चली आरही है । विशाल शाल वृक्षोंके नीचे शान्ति निकेतनके विद्यार्थी और अध्यापक ईश्वर प्रार्थनाके लिये एकत्रित हो रहे हैं । वह देखिये 'वेणु-कुंज' की ओरसे कौन चला आ रहा है ? खद्दरका कुड़ता है, खद्दरकी धोती है, रंग श्वेत है मुस्कराता हुआ चहरा है, वड़ी दाढ़ी है, आँखोंसे " सच्चाई और सहानुभूति प्रगट हो रही है । आप पहचान जाइये यही मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ हैं ।

प्रार्थना समाप्त होती है आइये मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के साथ उनके कमरे (वेणुकुंज) को चलें । वाँसके वृक्षोंके वीचमें एक छोटासा घर है । न उसमें कुछ सजावट है और न उसमें कुछ दिखावट है । कमरा साद-गीका नमूना है । पाठक, इस समय आप किसी साधारण मनुष्यके कम-

रेमें नहीं हैं बल्कि एक साहित्य सेवी और तपस्वीकी कुटी पर हैं। समाचार पत्रोंका ढेर लगा हुआ है, तथा किताबें तितर बितर इधरकी उधर पड़ी हुई हैं। जो फिजी, पूर्वी आफ्रिका तथा दक्षिण आफ्रिकाके प्रवासी भाइयोंकी भलाईका प्रबन्ध अत्युत्तम रीतिसे कर सकते हैं, पाठक आश्चर्य्य करेंगे, उनसे अपने कमरेका समुचित प्रबन्ध नहीं हो सकता। जो अपने उत्तमोत्तम लेखोंसे मासिक पत्रोंको सुशोभित किया करते हैं वे अपने कमरेको नहीं सजा सकते! तीन चार कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं और कुछ मूढ़े भी हैं। एक दो कुर्सी तो ऐसी हैं जिन पर बैठनेसे धड़ामधम पाताल चले जानेकी आशंका बनी रहती है और एक कुर्सीका निर्बल शरीर किसी रस्सीके बलपर थमा हुआ है। टेबिल पर कोई कपड़ा नहीं बिछा। उस पर माता पिताके चित्र रक्खे हुए हैं। शान्ति निकेतनके विद्यार्थियोंके भेंट किये हुए फूल रक्खे हुए हैं और उसी टेबिल पर दवात, होल्डर, चाकू किताब अखबार, लिखे हुए लेख और छोटासा सन्दूक भी रक्खा हुआ है! समाचार पत्रोंके इसी गड़ बड़ समुद्रके बीचमें आप अपना चश्मा रखकर भूल गये हैं। घबड़ाये हुए इधरसे उधर तलाश कर रहें हैं! पूंछते हैं "कहीं हमारा चश्मा तो नहीं देखा?" उस गोल मालमें चश्मेका पता लगाना कोई आसान बात नहीं। कभी श्री. रवीन्द्रनाथका कोई पत्र रखकर आप भूल जाते हैं। वैसे आपकी स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र है। तीन वर्ष पहले फिजीमें देखे हुए दो सिखोंको देखकर आपने फौरन ही कह दिया "अमुक जिलेकी अमुक कोठीके अमुक खेत पर मैंने आपको देखा था" वे सिख, जिनसे फिजीमें मिस्टर ऐण्ड्रूज़से बातचीत भी नहीं हुई थी, यह सुनकर अचम्भेमें रह गये। एक दूसरे फिजी प्रवासी भारतीयसे आपने कहा "आपका घर फिजीके अमुक स्थानमें उस गलीकी मोड़ पर है। मैं वहीं इस समय भी अकेला पहुँच सकता हूँ उस घरको मैं भूला नहीं" लेकिन पाँच मिनट पहले रक्खे हुए चश्मेको आप प्रायः भूल जाते हैं।

कलकत्ता कांग्रेसके बाद सितम्बर सन् १९२० में महात्मा गान्धीजी शान्तिनिकेतनमें आये हुए थे। वे श्रीयुत रवीन्द्रनाथके बँगले पर ठहरे हुए थे। वहीं बातचीत करते हुए नियमानुसार मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का चश्मा खोगया। घंटे भर बाद घबड़ाते हुए आये और महात्माजीसे कहा "मेरा चश्मा खोगया है। यहां तो नहीं है?" मौलाना शौकत-अलीके चश्मेका घर वहां रक्खा हुआ था। महात्माजीने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़्से कहा "देखिये, यह तो नहीं है" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने चश्मा निकालकर लगा लिया और कहा "हां बस यही है" फिर आपने उस चश्मे के घरमें भीतर रक्खा हुआ एक तार देखा, खोलने पर मालूम हुआ कि वह तार मौ. शौकतअलीके नामका है। फिर आपने कहा 'यह मेरा चश्मा नहीं है।" महात्मा गान्धीजी तथा उनकी धर्मपत्नी इत्यादि जो वहां बैठे हुए थे सब खिल खिलाकर हँसने लगे। फिर महात्माजीकी धर्मपत्नीने एक चश्मेका घर मि. ऐण्ड्रयूज़को दिया और कहा "देखो, इसमें तो नहीं है तुम्हारा चश्मा?" चश्मेका घर खोला तो उसमें कोई चश्मा था ही नहीं, वह खाली था। मि. ऐण्ड्रयूज़् लज्जित होगये, सब फिर खूब हँसने लगे। महात्मा गान्धीजीको बहुत हँसते हुए देखकर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने कहा "I have lost my spactacles and you all are laughing this is no matter for laughing." मेरा चश्मा खोगया है, आप सब लोग हँस रहे हैं इसमें हँसनेकी क्या बात है?" महात्माजीने फिर हँसकर कहा "You have lost your spectacles, not we. For us it is a matter for laughing" "तुम्हारा चश्मा खोगया है, हमारा नहीं, हमारे लिये तो यह हँसी की बात ही है।"

कमरेमें तालोंका नामनिशान नहीं है। अलमारी जिसमें कपड़े रक्खे हुए हैं खुली हुई है। वह सन्दूक भी खुला हुआ है जिसमें श्रीरवीन्द्र-नाथकी चिट्ठियाँ, जिन्हें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़् अत्यन्त मूल्यवान समझते हैं,

रक्खी हुई हैं। रुपये पैसे या नोट भी कभी-कभी वहीं खुले हुए पड़े रहते हैं। यह बात महीने दो महीनेसे या साल दो सालसे नहीं है, १७ वर्षसे, जबसे आप भारतमें आये हैं, आपने अपनी चीज़ोंको कभी तालेमें नहीं रक्खा! आश्चर्य्यकी बात तो यह है कि कभी आपकी कोई चीज़ चोरी नहीं गई।

आपके पत्र भी टेबिल पर पड़े हुए हैं प्रत्येक विद्यार्थी और प्रत्येक अध्यापकको उनके पढ़नेका अधिकार प्राप्त है। जो चाहे सो पढ़ले। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के पढ़नेके पहले ही उनके साथी प्रायः उनके पत्र खोलकर पढ़ लेते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को इसमें कुछ भी आपत्ति नहीं है। कोई चीज़ छिपानेकी आवश्यकता नहीं। जिस प्रकार मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का हृदय सबके लिये खुला हुआ है, उसी प्रकार उनका कमरा भी सबके लिये खुला हुआ है। कभी बीसियों छोटे छोटे लड़के भागते हुए आपके कमरेमें चले आते हैं। शान्ति निकेतनके बालकोंको विदेशोंके स्टाम्प इकट्ठे करनेका शौक है और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के पास विदेशोंसे बहुतसे पत्र आया करते हैं। एक लड़का आता है और कहता है " साहब टिकिट " उसे टिकट देते हैं। पाँच मिनट बाद दूसरा आता है और कहता है " साहब टिकट " उसे भी स्टाम्प देते हैं फिर तीसरा आता है, इस प्रकार कभी कभी पन्द्रह बीस लड़के थोड़ी थोड़ी देर बाद आकर उनके अमूल्य समयको नष्ट करते रहते हैं।

फिजी प्रवासी भारतीयोंके भविष्यके विषयमें लेख लिख रहे हैं। कोई मन चला लड़का, जो पहले स्टाम्प ले गया था, फिर दूसरा स्टाम्प लेनेके लिये आता है! आप बड़ी गम्भीरता पूर्वक पूछते हैं "यह लड़का पहले स्टाम्प नहीं ले गया था?" आपकी उस समयकी गम्भीरता देख कर यही प्रतीत होता है कि मानों फिजी प्रवासी भारतीयोंका भविष्य इस लड़केके स्टाम्प ले जाने या न ले जाने पर ही निर्भर है

कभी कभी साहबका बूढ़ा रसोई दार जौहरी बहुत नाराज़ होता है और कहता है "ये लड़के बहुत ऊधम मचाते हैं। साहब, आप किसीको भी स्टाम्प मत दो।" फिजीके उद्दण्ड गोरे प्लाण्टरोंके मुख पर उन्हें कोरी कोरी सुनानेवाले मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ जौहरीकी बात सुनकर चुप रह जाते हैं! जिस समय लॉर्ड चैम्सफोर्डने नाराज़ होकर आपसे कहा था "अँग्रेज़ोंने क्या अपराध किया है" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने फौरन ही उनके मुँह पर कह दिया था "पहला अपराध जनाब आपने ही किया था और वह था सब भारतीय मेम्बरोंके मतके विरुद्ध रौलेट बिल पास करना!" लार्ड चैम्सफोर्डके सामने इस तरहका ज़ोरदार जवाब आप दे सकते हैं लेकिन जिस समय आपका बूढ़ा रसोईदार जौहरी नाराज़ होकर कहता है "अपने खानेका मक्खन आपने दूसरेको क्यों भेज दिया?" उस समय बड़े अपराधीकी तरह मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ चुप हो जाते हैं!

कमरा सबके लिये खुला तो है ही, भिखारी फिखारी जिसके मनमें आता है, वहाँ पहुँच जाता है। एक बार एक बहुत बुड्ढा पागल आदमी भीख माँगता माँगता वहाँ पहुँच गया। उसका काला शरीर मैलकी वजहसे और भी काला दीख पड़ता था। छोटीसी लँगोटी उसके बदन पर थी और वह बिल्कुल नंगा था। वह अपनी बात न जाने किस भाषामें कहता था, मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उसे समझ ही नहीं सकते थे। आपने उसे एक अपना नया डुपट्टा दे दिया। वह उस भिखारीने लेलिया, लेकिन फिर भी वह कुछ कह रहा था। उसकी बात मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी समझमें नहीं आई। मुझसे कहा "इसके लिये कुछ पैसे ले आओ" अपने कमरेमें मैं पैसे लेनेके लिये आया। वापस जाकर वहाँ देखता क्या हूँ कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उस बूढ़े पागल भिखारीको अपने गलेसे लगाकर मिल रहे हैं! देखकर मैं आश्चर्य्यमें रह गया। उस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूजकी आँखोंमें प्रेमके आँसू थे। बहुत प्रसन्न होकर बड़े भोलेपनके

साथ मुस्करा कर आपने कहा "I have been so pleased with this old chap. He is a poor mad man." "इस बुढ्ढेसे मिलकर मुझे बड़ी खुषी हुई है। यह विचारा पागल है।" वह पागल भी बड़ा प्रसन्न था और हँस रहा था। दोनों एक दूसरेकी भाषा नहीं जानते थे, लेकिन दोनोंके हृदय पारस्परिक भावकी भाषा समझ सकते थे।

यह दृश्य देखकर मैंने दिलमें सोचा "इस पागल भिखारीकी तरह ऐण्ड्र्यूज़ साहब भी पागल हैं क्योंकि प्रेमकी पराकाष्ठाका नाम भी पागल पन ही है।" अगर अकस्मात् मेरी यह क्षुद्र पुस्तक मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के हाथमें पड़जावे और वे कहीं इस बातको पढे तो मैं उनसे प्रार्थना करूँगा कि इस "पागल" विशेषणके लिये वे मुझे क्षमा कर दें। फिजीके एक लडकेका कपड़ोंका सन्दूक हावड़ा स्टेशन पर चोरी चला गया। वह शान्तिनिकेतनमें आया। फटे कपड़े पहने हुए था। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपने ३०–४० रु. के कपड़े उसे देदिये। दोपहरीका समय है। कडी धूप पड़ रही है। शान्तिनिकेतनके विद्यार्थी और अध्यापक विश्राम कर रहे हैं। लेकिन मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को विश्राम कहां! बराबर लेख लिख रहे हैं। न कमरेमें कोई पंखा है, न खसकी टट्टियां। कमीज़ पसीनेमें तरबतर हो रही है कंधे पर वह फटी भी है लेकिन लेख लिखनेमें मस्त है।

शामके चार बजेका समय है कागज और कलम लिये हुए लम्बी २ डग भरते हुए डाकखानेकी ओर भागे जा रहे हैं। डाक निकलनेका वक्त हो चुका है लेकिन चिट्ठियाँ लिखना अभी समाप्त नहीं हुआ। रातका एक बजा है। शान्तिनिकेतनमें सन्नाटा है। बिजलीकी रोशनी कभी की बन्द हो चुकी लेकिन वेणुकुंजमें प्रकाश दीख पड़ता है। टेबल पर डिट्ज लालटैन रक्खे हुए मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ लेख लिख रहे हैं। क्यों? कल २५ तारीख है और माडर्न रिव्यूके सम्पादकने इसी अङ्कके लिये न्यूज़ीलेण्ड प्रवासी भारतीयोंके विषयमें एक लेख माँगा है।

फिजीसे लौटे हुए आदमियोंसे मिलनेके लिये आप मटिया बुर्जको, जो कलकत्तेमें खिदिरपुरके निकट है, गये थे। मटिया बुर्जकी तरह गन्दी जगह शायद ही कोई दूसरी हो। फिजीकी कुली लैन भी उसके सामने मात हैं। ज़मीन नम, पानी खराब, सड़कोंपर गन्दगी और हवामें खराब धुँआही धुआ दीख पड़ता है। ज्वरकी इसे मातृभूमि कहना अनुचित न होगा। ३०—३२ फिजी प्रवासी भारतीय इसीके कारण यहां मर गये! मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के पहुँचते ही सब फिजीसे लौटे हुए आदमी "पादरी साहब आगये, पादरी साहब आगये" कहते हुए इकठे होगये। आप उन्हींके साथ नम ज़मीन पर बैठ गये। बड़ी देर तक बातचीत होती रही। परिणाम यह हुआ कि आपको इनफ्ल्यूऐंजा होगया। ८, १० दिन तक बीमार रहे, बड़ी कमज़ोरी होगई लेकिन फिर भी कहते थे "फिजीका जहाज़ जब आवे तब उसे देखनेके लिये मैं खिदिरपुर फिर जाना चाहता हूँ।"

बिहारके छात्र सम्मेलनके सभापति आप चुने गये थे। डाल्टन गंज जानेके लिये आप हावड़ा पहुँचे। सैकंड क्लासके जिस डिब्बेमें आपकी सीट (जगह) थी उसी डिब्बेमें कई गोरे बैठे हुए थे। इनमेंसे एक गोरा, जिसकी उम्र लगभग ५० वर्षकी थी, शराबमें बिल्कुल धत था। वह लड़ खड़ाता हुआ मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के निकट आया, और उनके कंधे पर हाथ रखकर बेतुकी बातें कहने लगा। फिजीसे निर्वासित हरपाल महाराज और फज़ल अहमदखाँको मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से मिलानेके लिये मुझे भी हावड़ा स्टेशन पर जाना पड़ा था। हम लोग उस शराबीको इस दशामें देखकर हँसी न रोक सके, लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ बड़े गम्भीर थे। थोड़ी देर बाद वह शराबी नशेमें अपने डिब्बेसे ५० कदम दूर आदमियोंकी भीड़में कहीं चला गया। गाड़ी छूटने ही वाली थी। हम लोगोंने सोचा, चलो अच्छा हुआ, नहीं तो रातमें यह मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को न सोने देता। मैं फिजीके आदमियोंसे बातचीत कर रहा

था। थोड़ी देरमें हम क्या देखते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उसका हाथ पकड़ कर उसे ला रहे हैं आपने अपने डिब्बेमें उसे बिठला दिया। गाड़ी रवान: हो गई। हम लोग वापस चले आये, लेकिन दिलमें हमारे यही आशङ्का थी कि आज रातभर यह गाड़ीमें शोर करेगा और मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को सोने न देगा। हमारी यह आशङ्का ठीक निकली। चार पांच रोज़ बाद डाल्टन गंजसे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़का एक पत्र शान्तिनिकेतनके मुख्याध्यापक श्रीमान बाबू जगदानन्द रायके नाम आया। उसमें लिखा था।

"रात भर जगनेके बाद मैं सोनईस्ट बैङ्क स्टेशन पर सवेरेके चार बजे पहुँचा। जगनेका कारण यह था कि मेरे डिब्बेमें तीन ज़हाजी गोरे शराब पिये हुए बैठे थे। ये बम्बई जारहे थे। एक तो मेरे सिरके ऊपरके तख्ते पर लेटा हुआ था। शराबके नशेमें यह बार बार तख्ते पर जो नीचे लुड़का पड़ता था, लेकिन फिर जंजीर पकड़कर थम जाता था। मेरा ख्याल है कि कमसे कम सौ बार तो उसके पैर मेरे सिरके ऊपर आये होंगे। इन तीन आदमियोंमेंसे एक कुछ कम पिये हुए था, और जरा होशमें था। यह आदमी उस ऊपरवालेके बड़े जोरसे धक्का देता और कहता "Get up, john, don't you see you're interfering with the gentleman below, who wants to sleep. Get up, john." "ए! जौन, उठके बैठो, देखते नहीं तुम नीचे पड़े हुए भले मानसकी नींदमें बाधा डालते हो! वे सोना चाहते हैं। ए जौन, उठो तो सही।" लेकिन भला जौन क्यों सुनने लगा! वह शराबमें धत था, और उसे धक्कोंका भी कुछ अनुभव नहीं होता था। यद्यपि ये लोग पहलेसे भी पिये हुए थे, लेकिन इन्होंने रात भरमें शराबकी एक बोतल और पीडाली।"

मेरा अनुमान है कि रहम करके जिस शराबीको मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ बड़ी दूरसे तलाश करके अपने डिब्बे पर ले आये थे वही महाशय जौन थे! जब चार बजे ट्रेन सोन ईस्ट बैङ्क स्टेशन पर पहुँची वहाँ

पर विद्यार्थियोंने, जो मिस्टर ऐण्ड्रयूजके स्वागतके लिये आये हुए थे, वन्दे मातरम्की घोर ध्वनि आरम्भ की। ट्रेनमें जो गोरे थे वे वन्देमातरम्की आवाज़ सुनकर चौंक पड़े। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने अपने पत्रमें लिखा था "शायद मेरे देशबन्धुओंने उस समय मुझे अच्छी तरह दिलसे कोसा होगा, क्योंकि मेरे कारण ही उस वक्त उनकी नींद उचट गई थी।"

शान्तिनिकेतन आश्रमके सुयोग्य अध्यापक श्रीयुत सन्तोष चन्द्र मजूमदार कहते हैं। "जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को शान्तिनिकेतनमें आये हुए एक ही महीना हुआ था, आश्रम देखनेके लिये दो अँग्रेज़ आये। ये अँग्रेज़ शान्तिनिकेतनकी तो प्रशंसा करते थे, लेकिन बंगाली जातिकी निन्दा। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उन दिनोंमें भी कुड़ता और धोती पहने ही यहाँ रहते थे। यह देखकर भोजन करते समय उन दोनोंमेंसे एक ने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से कहा " you look comfortable ' Mr andrews, but dont ' you have a sense of nakedness in this garment. „ " मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ इस पोशाकमें आपको आराम तो मालूम होता है, लेकिन क्या नंगे उघारे रहनेमें आप कुछ लज्जाका भाव प्रतीत नहीं करते ? " यह सुनकर मिस्टर ऐण्ड्रयूजका मुख लाल हो गया, लेकिन वे चुप रहे। दूसरी बार जब वे दोनों अँग्रेज़ मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के कमरेमें खाना खानेके लिये आये तो उन्होंने देखा कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने अपने शरीरसे कुड़ता भी उतार दिया है और कंधोंपर एक पतला डुपट्टा डाले हुए बैठे हैं! कहनेकी ज़रूरत नहीं कि यह काम मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उन अँगरेज़ोंके कटाक्षके उत्तरमें किया था।

वास्तवमें उन अँग्रेज़ोंकी यह असभ्यता थी कि हमारे अतिथि होकर भी वे हमारे सामने ही हमारी जातिकी निन्दा करते थे।"

इन छोटी छोटी बातोंसे पाठक मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के स्वभाव और रहन सहनका अनुमान कर सकते हैं। किसी जीवन लेखकके लिये ज्यों का

त्यों चरित्र-चित्रण करना उतना ही कठिन है जितना चित्रकारके लिये किसी मनुष्यका ज्यों का त्यों चित्र बनाना। मैं इस कार्य्यमें सफल हुआ या नहीं इसका फैसला मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के साथी और मित्र ही कर सकते हैं, लेकिन एक बात मैं अवश्य कहूंगा; कुछ लोगोंका कथन है कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ बड़े विद्वान हैं, दूसरे कहते हैं कि वे बड़े विचारक और लेखक हैं और कोई कहते हैं कि वे ब्रिटिश साम्राज्यके सुप्रसिद्ध पुरुषोंमेंसे एक हैं, लेकिन इन पंक्तियोंका तुच्छ लेखक यही कहेगा कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का मनुष्यत्व ' उनकी ' विद्वत्ता ' ' विचार शक्ति ' ' लेखनशक्ति ' तथा उनकी ' प्रसिद्धि ' से कहीं अधिक महान है।

चौदहवाँ अध्याय।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनपर एक दृष्टि

यदि कोई हमसे पूँछे कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के जीवनका सार क्या है तो हम फौरन उससे यही कहेंगे " सच्चाई और सहृदयता "। ये दो शब्द जितनी अच्छी तरह उनके जीवनको प्रगट कर सकते हैं उतनी अच्छीतरह मेरी यह क्षुद्र पुस्तक कदापि नहीं कर सकती।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का जीवन निर्मल दर्पणके समान स्पष्ट है जो भाव उनके भीतर हैं वही उनके बाहर हैं। थोड़ी देर बातचीत करनेके बाद ही उनकी सच्चाईका पता लग जाता है। इसका एक मनोरंजक उदाहरण सुन लीजिये। मार्शल लाके दिनोंके बाद जब मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पंजाबमें काम करनेके लिये गये थे पंजाबके एक उच्च पदाधिकारी साहबने आपसे कहा था " आप अमुक पुलिस इन्सपेक्टरसे अवश्य

मिललें ” तदनुसार मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ उससे मिलनेके लिये गये । मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से मिलनेके बाद उस पुलिस ऑफिसरने, जो अँग्रेज़ था, अपने अँग्रेज़ मित्रोंसे कहा था “ मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के बारेमें आप लोग चाहे जो कुछ कहें लेकिन मैं एक बात कहूँगा । मुझे अपने जीवनभरमें ऐसा कोई आदमी नहीं मिला जिसके हृदयकी सच्चाई इसप्रकार ऊपर झलकती हो ! ” यह बात ध्यान देने योग्य है कि कुछ दिन पहले मार्शल लाके दिनोंमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ मिलिटरी पुलिसद्वारा पकड़े जाकर पंजाबसे निर्वासित हो चुके थे, इसके सिवाय भारतवासियोंके साथ सहानुभूति रखनेके कारण गोरोंके भाव मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रति प्रायः बुरे ही होते हैं । इस स्थितिमें पंजाबके एक गोरे पुलिस आफिसरकी उपर्युक्त बातका कुछ महत्व है ।

लोग कहते हैं कि सच्चाई निर्भयताका बराबर साथ रहता है । फिजीके उद्दण्ड स्वार्थी गोरोंके मुँह पर कोरी कोरी और खरी खरी बातें सुनाना कम साहसकी बात नहीं थी । महाशक्तिशाली सी. ऐस. आर कम्पनीके विरुद्ध आस्ट्रेलियामें आन्दोलन करना बड़ी निर्भयताका काम था । प्रतिवर्ष करोडोंका लाभ करनेवाली इस कम्पनीका प्रभाव केवल इसी बातसे जाना जासकता है कि आस्ट्रेलियाका कोई पत्र इस कम्पनीके विरुद्ध लेख छापनेका साहस नहीं करता था, और फिजीकी असली शासक तो यह कम्पनी ही है । पाठक पढ चुके हैं कि बा के गोरे द्वारा गोलीसे मारे जानेकी धमकी सुनकर भी आपने उस जिलेमें जाकर बराबर काम किया था । मैलबोर्नके एक सुप्रसिद्ध प्रोफेसरने फिजी ऑफ टु-डेके लेखक मिस्टर बर्टनसे कहा था “ मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ बड़े निर्भय मनुष्य हैं जिस तरह अपनेको खतरेमें डालकर वे फिजीको गये हैं उसी परिस्थितिमें कोई दूसरा अंग्रेज़ अपनेको इस तरह खतरेमें न डालता । ” लार्ड चैम्सफोर्डको जो स्पष्ट बातें आपने सुनाई थीं उन्हें पाठक पढ़ ही चुके हैं । कहा जाता है कि जिस समय भारत सचिव

मिस्टर मौण्टेगने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से अपनी सुधार स्कीमके बारेमें पूँछा था " What do you think, Mr. Andrews, about the Reform Scheme?" "मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ आपकी सम्मति रिफार्म स्कीमके विषयमें क्या है ?" मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने उत्तर दिया था " You are fiddling while the Rome is burning."

" रोम नगरमें आग लगी है और आप चैनकी वंशी बजा रहे हैं " यह सुनकर मि. मौण्टेगको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उन्होंने कहा " इससे आपका क्या अभिप्राय है ? " मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने जबाब दिया " भारतीयों पर ज्याद: तर अत्याचार पुलिसके द्वाराही होते हैं। आपकी स्कीमके प्रचलित होने पर भी पुलिसके अत्याचार ज्योंके त्यों ज़ारी रहेंगे। इन अत्याचारोंके सामने रिफार्म स्कीमका मूल्य बहुत घट जावेगा, इसी कारण मैंने यह वाक्य आपसे कहा है। "

पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि यदि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़में सच्चाई न होती तो वे भारतवासियोंके इतने विश्वासपात्र कदापि न बन सकते। कोरमकोर विद्वत्ता या सहानुभूतिसे काम नहीं चल सकता। हृदयके लिये सबसे अधिक आकर्षक वस्तु सच्चाई ही है। यदि सच्चाईके साथ सहृदयता मिल जावे तो बस सोने और सुगन्ध कैसा मेल हो जाता है। सौभाग्यवश यह सम्मेलन मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के चरित्रमें विशेष रूपसे पाया जाता है। पंजाबके अत्याचारोंके विषयमें जो गैर सरकारी रिपोर्ट महात्मा गान्धीजी तथा अन्य सज्जनोंने लिखी थी उसमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को " a gentleman of unimpeachable veracity " (ऐसे सज्जन जिनकी सच्चाई पर कोई धब्बा नहीं लगा सकता) लिखा गया था।

आज भारतमें अकेले मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ही एक ऐसे अँग्रेज़ हैं जिन पर भारतीय जनताका इतना अधिक विश्वास है और जिनके हृदयमें भारतीयोंके प्रति इतनी सच्ची सहानुभूति है।

यहां पर यह बतला देना भी आवश्यक है कि भारत वासियोंसे सच्ची सहानुभूति रखनेके कारण मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के कितने ही देशबन्धु उनसे बहुत जलते हैं। जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पंजाबमें काम कर रहे थे, और मार्शल लाके अत्याचारोंसे पीड़ित पंजाबी भाइयोंकी सेवा कर रहे थे, उस वक्त कलकत्तेके इंगलिश मैनने लिखा था।

" There is the less reason for comment on the activities of Mr. C. F. Andrews because he has gone there not as an unbiassed enquirer but as the agent of a political body. The letters he has written to the Anglo-vernacular press show as complete a bias and as great reluctance to believe in official statements as have been displayed by the most extreme Extremists. A question that may be asked Mr. Andrews is this. He has had a great deal of experience of students. Does he believe that they have a greater regard for the truth and a larger sense of responsibility than a Lieutenant-Governor ? If he does not, why does he set the statements made by boys, who have been punished for an offence, against the statement of those who punished them ?

... ...

...The heart of Mr. Andrews is bleeding for the students but one notices that it has not bled for those unfortunate Europeans who were battered to death in Amritsar and Kasur."

मिस्टर सी. ऐफ. ऐण्ड्रयूज़के पंजाब सम्बन्धी काम पर अधिक टीका टिप्पणी करनेकी जरूरत नहीं क्योंकि वे पंजाबको निष्पक्ष जांच करनेवालेकी हैसियत से नहीं गये बल्कि एक एजनैतिक सभा के

एजेण्ट बनकर गये हैं। जो चिट्ठियां उन्होंने हिंदुस्थानियोंके द्वारा संचालित अंग्रेज़ी पत्रोंमें लिखी हैं उनसे प्रगट होता है कि जैसा पक्षपात तथा सरकारी बयानोंमें अविश्वास घोरसे घोर गरम दलके हिन्दुस्तानियोंमें पाया जाता है वैसा ही पक्षपात मिस्टर ऐण्ड्रयूज़में है और महाघोर गरम दलवालेकी तरह वे भी सरकारी वर्णनमें अविश्वास करते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़से हम एक प्रश्न करते हैं। उन्हें विद्यार्थियोंका बहुत काफ़ी अनुभव है। क्या मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ यह ख्याल करते हैं कि एक लफ्टीनेंट गवर्नरकी अपेक्षा विद्यार्थियोंमें अधिक सत्यप्रियता और ज़िम्मेदारी होगी? अगर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ ऐसा ख्याल नहीं करते तो फिर वे अफसरोंके बयानके समक्ष लड़कोंकी बातोंको क्यों महत्व देते हैं। इन लड़कोंको अपने अपराधके लिये ही अफसरोंके द्वारा दण्ड मिला था। .... विद्यार्थियोंके लिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के दिलसे खून निकलता है लेकिन हम देखते हैं कि अमृतसर और कासुरमें मारे गये अभागे यूरोपियनोंके लिये मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के दिलसे खून नहीं निकला था।"

इस पत्रने अपने लेखमें यह भी लिखा था कि पंजाबमें मि. ऐण्ड्रयूज़का काम बन्द हो जाना चाहिये। इस पर टिप्पणी करना व्यर्थही है।

जिस समय फर्वरी सन् १९२० में दक्षिण अफ्रिकासे मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने तार दिया था "Worst situation since 1913. Every right endangered" अर्थात् "१९१३ के बादसे यहाँकी स्थिति अत्यन्त खराब है। प्रत्येक अधिकार खतरेमें है" उस समय बम्बईके टाइम्सने अपने अग्रलेखमें मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के विरुद्ध बहुतसी बातें लिखी थीं। टाइम्सने आपके कथनको असत्यकी उपाधि दी थी और लिखा था "But even if it were a true summary of the position, this wild attempt to stamped public opinion into violence and bitterness is criminally wicked at this juncture."

अर्थात् " अगर यह मान भी लिया जावे कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का तार दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतीयोंकी वास्तविक स्थितिको संक्षेपमें प्रगट करता है तब भी इस मौके पर भारतीय जनताको भड़काकर हिंसा और द्वेषकी ओर प्रेरित करनेका प्रयत्न असभ्यता, अपराध और दुष्टताका काम है " टाइम्सने मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के तारको ' hysterical shrieking' ' उन्मत्त प्रलाप ' बतलाया था और यूनियन सरकारके कमीशनकी रिपोर्टकी प्रतीक्षा करनेका उपदेश दिया था। पाठकोंको यह बात जान लेनी चाहिये कि अब यह रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है और मिस्टर ऐण्ड्रयूज़का अनुमान सर्वथा सत्य प्रमाणित हुआ है। यहाँ तक कि टाइम्सको भी यह लिखना पड़ा है कि यह रिपोर्ट अन्याय युक्त है! दूरदर्शी मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की बातको " उन्मत्त प्रलाप " कहनेका कारण यही था कि अँग्रेज़ होते हुए भी वे भारतीय जनताके इतने विश्वास पात्र हैं।

फिजीकी सी. ऐस. आर. कम्पनीने तो अपनी रिपोर्टमें यहाँ तक लिखा था कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उस पार्टीके दूत हैं जिसका उद्देश्य भारतसे ब्रिटिश राज्यकी जड़ उखाड़ फेंकना है! फिजीके प्लाण्टरोंकी ऐसोसियेशनने लिखा था।

" Mr. Andrews belongs to the class of men who make an existence out of the discontent inherent in mankind, very often by creating dissension or by magnifying prejudices where they exist. "

अर्थात् मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ उन अदमियोंमेंसे हैं, जो मनुष्य जातिमें असन्तोष पैदा करके ही अपनी जिन्दगी बसर करते हैं, जो प्रायःफूट फैलाते हैं और यदि कहीं थोडा भी कुसंस्कार या विद्वेष होता है तो उसे ये और भी बढ़ा देते हैं" फिजीके प्लाण्टरोंको हम बधाई देते हैं क्योंकि उन्होंने इतने कम स्थानमें कितना अधिक झूट ठूंस ठूंस कर भर दिया है।

पूर्वी अफ्रिकाके गोरे अखवार ईस्ट अफ्रिकन लीडरने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को " Indian paid protagonist " अर्थात् " हिन्दुस्तानियोंसे वेतन लेकर आन्दोलन करनेवाला " बतलाया था ! आज तक मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपने निजी कामके लिये एक पैसा भी भारतीय जनतासे नहीं लिया। अपने धनका अधिकांश वे प्रवासी भारतीयोंके लिये व्यय कर चुके हैं। जब दाक्षिण अफ्रिकाका मामला चला था आपने अपने ४५००) महात्मा गोखलेको सत्याग्रह संग्रामकी सहायतार्थ देदिये थे। ऐसे निस्स्वार्थ मनुष्यको " वेतनभोगी " बतलाना कैसी धूर्तता की बात है। जिस समय फिजी प्रवासी भारतीयोंके लिये रुपयेकी आवश्यकता हुई और किसी भारतीय संस्थासे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को रुपया न मिल सका तो मिस्टर ऐण्ड्र्यूजने अपने वे रुपये, जो उन्होंने विलायत-निवासी अपनी क्वांरी बहनोंके लिये रख छोड़े थे, फिजीको भेज दिये ! उस समय आपने अपनी बहनोंको लिख दिया था " फिजीकी भारतीय भगिनियोंकी हालत बड़ी ख़राव है। आपके लिये जमा किये हुए रुपये मैंने वहां भेज दिये। आशा है कि आप भी इसे उचित समझेंगी गोरे लोगोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि जितना ही वे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से द्वेष करेंगे उतनी ही अधिक श्रद्धा मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के प्रति भारतवासी करेंगे।

यद्यपि जहाँ कहीं मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ जाते हैं ८।१० सी-आई-डी के आदमी उसी नगरमें पहुँच जाते हैं, तथापि भारत सरकार इस वातको अच्छीतरह जानती है कि बीच बिचाव तथा समझौता करानेके लिये मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से अधिक शक्ति किसी दूसरेमें नहीं है। अभी थोड़े दिन हुए हावड़ेमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कुलियोंकी हड़तालका फैसला कराके आये हैं। भारतीय मज़दूर भी ऐण्ड्र्यूज़ साहबपर कितना विश्वास करते हैं इसका दृष्टान्त सुन लीजिये। लगभग दो महीनेसे १५ सहस्त्र आदमी,

जो लिलुआमें काम करते थे, हड़तालपर थे। रोज़ कोई न कोई दुर्घटना इनके कारण होती थी। कभी ये ट्रेनोंपर पत्थर फेंकते थे, तो कभी ड्राइवरोंको तंग करते थे। झगड़ा तय करानेके लिये मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कलकत्ते गये थे। एकदिन झुटपुटेके समय आपको खबर लगी कि ५०० कुली लाठी लिये हुए गुरखे सिपाहियोंको मारने जा रहे हैं। आप फौरन ही वहाँ पहुँचे और उस झुंडके बीचमें चले गये। इन कुलियोंने आपको पहले कभी नहीं देखा था। एक सन्दूकपर खड़े होकर मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपना परिचय दिया कि किस प्रकार दक्षिण अफ्रिकामें आपने महात्मा गान्धीजीके साथ कार्य्य किया था। फिर आपने उन कुलियोंसे कहा "आप लोग अपनी लाठी रखदीजिये" लगभग सभी आदमियोंके पास लाठी थीं, कुछ अनिच्छा पूर्वक उन्होंने लाठी रखदीं। फिर आपने उनसे कहा "यदि आप हिंसा करेंगे तो मैं आपकी कुछ भी सहायता न कर सकूँगा" इस बातको सबने बड़े ध्यान पूर्वक सुना। तत्पश्चात् आपने उनसे पूँछा "क्या आप मुझे वचन दे सकते हैं कि हम हिंसा न करेंगे?" सबने कहा "हाँ, हम वचन देते हैं" तब ऐण्ड्र्यूज़ साहबने जोर से चिल्लाकर कहा "बोलो महात्मा गान्धीजी की जय" सबने बड़े उत्साहसे कहा "महात्मा गांधीजी की जय" हँसते हुए सब कुली मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के पीछे हो लिये। रास्तेमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ किसीकी लाठी कंधे पर देखते तो उसकी ओर मुस्कराकर कहते "भाई यह ठीक नहीं" बस वह फौरन लाठी नीची कर लेता। पीछे मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से एक उच्च पदाधिकारीने कहा था अगर वे लोग उस समय गुरखों पर हमला करनेके लिये जाते तो कितने ही जानसे मारे जाते। सवेरेके समय उन्होंने गुरखे सिपाहियोंको दबा लिया था इस लिये गुरखोंको आज्ञा देदी गई थी यदि वे कुली फिर हमला करें तो गोली

चलादो।" इस प्रकार दुर्घटना होते होते बची। कुलियोंका जो दल मारपीटके लिये घूम रहा था, दस मिनटमें ही विल्कुल शान्त हो गया। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ मानव प्रकृतिके अच्छे ज्ञाता हैं। और दूसरोंकी हृदय तंत्रीको सहानुभूतिसे स्पर्श कर बड़ी सफलतापूर्वक प्रतिध्वनित करा सकते हैं।

मजदूरोंकी हड़तालके ठीक करनेमें सबसे अधिक प्रभाव इस बातका पड़ा था कि हैज़ेके कारण अत्यन्त निर्बल होते हुए भी और डाक्टरके बार बार मना करने पर भी आप अस्पताल छोड़कर मज़दूरोंकी मीटिङ्गमें गये थे। कई वर्ष पूर्व मद्रासके मज़दूरोंकी हड़-तालका झगड़ा भी मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने ही तय कराया था। वहां आप मज़दूरोंके बीचमें ही जाकर रहे थे, और उनके साथ रहनेके कारण ही झगड़ा तय होसका।

इस अध्यायको समाप्त करनेके पहले दो घटनाऐं जो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के जीवन पर विशेष प्रकाश डालती हैं लिख देना आवश्यक होगा। माता मृत्युशय्या पर रक्खी हुई थी। दक्षिण अफ्रिकामें भार-तीय नाना प्रकारके कष्ट सहन करते हुए सत्याग्रहका संग्राम कर रहे थे और वहां की सरकारके अत्याचारोंका वृत्तान्त तार द्वारा भारतको आरहा था, ऐसे समयमें मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ अपनी माताजीको हिन्दुस्ता-नियोंकी विपत्तिका समाचार लिखते हैं और पूँछते हैं "क्या मैं विलायत आकर आपकी सेवा शुश्रूषा करूँ?" निस्स्वार्थ मानव जाति प्रेमी माताका उत्तर आता है "Go and help the Indian cause, and do not come back till your work is done" अर्थात् "जाओ और भारतीयोंकी सहायता करो और जब तक तुम्हारा कार्य्य समाप्त न हो जावे तब तक मत लौटो" माताका स्वर्गवास हो जाता है लेकिन धीर हृदय मि. ऐण्ड्र्यूज़ दक्षिण अफ्रिकामें अपना काम बराबर

जारी रखते हैं, और जब तक जनरल स्मट्ससे मुलाकात और समझौता कराके अपना काम समाप्त नहीं कर लेते तब तक विश्राम नहीं करते । विलायतमें माननीय श्री. गोखलेको सम्पूर्ण समाचार सुना देनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्रूज़को अपनी स्वर्गीय माताको स्मरण करनेका अवकाश मिलता है ।

जब आप दूसरी बार फिजीको गये थे जहाज़में पैर फिसल जानेके कारण आपके बड़ी चोट लगगई थी और फिजीमें पहुँचकर आप बीमार भी हो गये थे लेकिन इतने पर भी आप लँगड़ाते लँगड़ाते वहाँ पैदल घूमते थे और दीन हीन पतित हिन्दुस्तानियोंकी हालत अपनी आँखोंसे देखते थे । जब यह यात्रा समाप्त करके आप भारतको लौटे तो आपने अपने पिताजीको तार दिया "मैं ख़ुशीराज़ी हिन्दुस्तान आपहुँचा" विलायतसे उत्तर आया "तुम्हारे पिताका देहान्त होगया" इस दुःखद समाचारको पढ़कर भी आपने एक दिनके लिये भी अपना फिजी सम्बन्धी काम बन्द नहीं किया । बराबर आप भारतके नेताओंसे मिलते रहे और उन्हें प्रवासी भाइयोंके दुःखोंकी राम कहानी सुनाते रहे । कितने ही दिनों तक आपको इतना अवकाश नहीं मिला कि आप पूरे दिन भर एकान्तमें बैठकर अपने स्वर्गवासी पिताके लिये चार आँसू बहाते !

मिस्टर ऐण्ड्रूज़की कतिपय कमज़ोरिया ।

क्राम्वैलने अपने चित्रकारसे कहा था "देखो मेरा चित्र ज्यों का त्यों खींचना, अगर तुमने उसमेंसे एक भी झुर्री या घावका चिन्ह छोड़ दिया तो याद रखना, मैं तुम्हें एक शिलिङ्ग भी न दूँगा" इसी आदर्शका अनुकरण करते हुए मैं भी इस पुस्तकमें मिस्टर ऐण्ड्रूज़के चरित्रके गुण और दोष दोनों ही दिखलाना चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ उनके चरित्र चित्रणमें जहां प्रकाश मय भाग दिखलाया जाय उसके साथ ही छायामय भाग भी स्पष्ट कर

दिया जाय। जो लेखक प्रशंसात्मक शब्दोंके बाहुल्यसे प्लास्टर करके अपने चरित नायकको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करते हैं वे यथार्थमें अपने चरित नायकका अपमान करते हैं। यद्यपि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के चारित्रके प्रति मेरी भक्ति है। इस पुस्तकके आरम्भकी घटना ही मेरी भक्तिका एक प्रमाण है—तथापि मैं इस हार्दिक भक्तिको समालोचक बुद्धि पर परदा नहीं डालने दूँगा।

साधारण आदमियोंकी तरह मिस्टर ऐण्ड्रयूज़में गुण और दोष दोनों ही हैं, फर्क़ केवल इतना ही है कि उनमें गुणोंकी संख्या अधिक है, दोषोंकी कम। उनके गुणोंकी जितनी हमें प्रशंसा करनी चाहिये उतनी ही उनके दोषोंकी हमें निन्दा भी करनी चाहिये।

पहला दोष।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़में यह है कि उनकी प्रवृत्ति आवेशपूर्ण है, अर्थात् उनमें मनोवेगका प्राबल्य है। वे शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं। कविवर रवीन्द्रनाथ प्रायः कहा करते हैं "अन्य मनुष्य पहले विचारते हैं और फिर काम करते हैं लेकिन मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ पहले काम कर बैठते हैं और फिर विचारते हैं" सर्व साधारणकी सेवाकी इच्छा करनेवाले सज्जनके लिये यह दोष छोटा नहीं है।

मनोवेगके आवेशमें आप बड़ी जल्दी प्रतिज्ञा कर देते हैं और फिर उन प्रतिज्ञाओंको पूरी करनेमें आपका बहुतसा समय नष्ट चला जाता है और आपको बहुत चिन्ता भी करनी पड़ती है। जब आप फिजीको गये थे, अपने स्वभावकी इस निर्बलताके कारण आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ा था।

जहां किसीने आपसे आकर कहा "उस स्थानकी दशा अत्यन्त ख़राब है बस फिर आपके लिये अपने मनोवेगको रोकना असम्भव था। फौरन ही आप पूछते थे "वहांको रेल कै बजे जाती है। प्रथम गाड़ीसे ही चलो" दक्षिण अफ्रिकामें ऐसा कई बार हुआ था।

एक महाशयका पत्र आया। आप उसका उत्तर ठीक समय पर नहीं देसके। रातको आपको यह बात याद आई। सवेरे उठकर आप भागते हुए सीधे पोस्ट आफिस पहुँचे और आपने फौरन ही एक जरूरी तार उन्हें भेजा। फिर आपको ख्याल आया कि शायद वे सज्जन उस स्थानसे चल न दिये हों, इस लिये फौरनही आपने एक दूसरा तार दूसरे पतेसे उनके नाम भेजा। थोड़ी बार कुछ समझ कर तीसरा तार भेजना चाहते थे। यदि मनोवेगमें न आकर आप कुछ पहले विचार कर लिया करें तो आप बहुत कुछ व्यर्थ कष्ट और व्यर्थ व्ययसे बच जाया करें।

एक महाशय आपकी पुस्तकको बिना पूँछे आपके यहाँसे उठा लेगये। आप उस पुस्तकमेंसे कुछ अङ्क अपने लेखमें उद्धृत करना चाहते थे। जब आपको मालूम हुआ कि अमुक सज्जन पुस्तक लेगये हैं आप बड़े उत्तेजित होगये और घबड़ा गये और भागते हुए उनके घर पर पहुँचे। जब वह पुस्तक आपको मिल गई तो बड़े प्रसन्न हुए। सचबात तो यह है कि अनेक अंशोंमें आपका स्वभाव बालकोंसे मिलता जुलता है। लोग कहते हैं "उम्रके बढ़नेके साथ ही मिस्टर ऐण्ड्रूयूजकी प्रवृत्ति नहीं बढ़ी। उनका बालकपनका स्वभाव ज्यों का त्यों बना हुआ है।" बात वास्तवमें ठीक है।

दूसरा दोष।

मिस्टर ऐण्ड्रूयूजमें यह है कि वे अपने लेखोंमें अत्युक्ति कर जाते हैं। कल्पना शक्तिके प्रवाहमें आप स्वयं बह जाते हैं और पाठकोंको भी बहा लेजाते हैं। आपके बहुतसे लेखोंके पढ़नेके बाद यह बात हमें कहनी पड़ेगी कि आपकी भावुकता कठोर तर्ककी कसौटीपर नहीं ठहर सकती। मनुष्यता और सहृदयताकी पराकाष्ठा आपको तर्कसे दूर लेजाती है। करुणाके भावोंके कारण आप अपराधीके अपराधोंपर दृष्टि नहीं डाल सकते। लोग भले ही इसे गुण कहें लेकिन है वस्तुतः यह

दोष। यदि किसी अपराधीने अपराध किया है तो कोई भावुकता उसके अपराधको कम नहीं कर सकती।

तीसरा दोष। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़में है कि आप मनुष्योंके गुणों-को पहचान सकते हैं अवगुणोंको नहीं।

स्वर्गीय पं. सत्यनारायणजी कविरत्नने अपने विषयमें लिखा था

" जो मोसों हँसि मिले होत मैं तासु निरंतर चेरौ
बस गुन ही गुन निरखत तिहमधि सरल प्रकृतिकौ प्रेरौ॥

यह पद्य मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ के स्वभावपर भी ज्यों का त्यों चरितार्थ होता है। कोई आपसे मिलने आता है उसी को आप कहते हैं " बस यह Pure gold (शुद्ध सुवर्ण) के समान है " Best सर्वोत्तम इत्यादि विशेषणों का प्रयोग तो आपके लिये अत्यन्त ही आसान है। लेखक में इस दुर्गुण का होना अच्छा नहीं।

चौथा दोष। आप में यह है कि आप मनुष्य स्वभाव पर बहुत ज्यादः विश्वास करते हैं। वालवर्थ में, जहाँ दरिद्र, चोर और उठाई गीरे रहते थे, आपने जो नियम स्थिर कर लिया था कि सब पर अविश्वास करने के बजाय सब पर विश्वास करना अच्छा है उसी नियम पर आप अब भी चलते हैं। आपको धोखा देना अत्यन्त आसान बात है। सबपर विश्वास करने की इस प्रवृत्तिसे आपको प्रायः कष्ट सहन करना पड़ता है। हमारे एक मित्रने, जो मिस्टर एण्ड्र्यूज़ के साथ पंजाबमें काम कर चुके थे, क़हा था " मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ इतने साधु आदमी हैं कि पेचीदा मामलोंकी जाँच वे नहीं कर सकते " अनेक अंशोंमें यह कथन ठीक ही है।

आपमें यह है कि किसी विषयके ऊपर अपना मत स्थिर करते समय आप एक छोरसे दूसरे छोरतक चले जाते हैं और बड़ी देर तक इधरसे उधर झूलेकी तरह झूलते रहते हैं। बहुत देरबाद आप अपना मत स्थिरकर सकते हैं। यदि यह दोष नहीं तो कमसे कम एक त्रुटितो है-ही।

पाँचवाँ दोष।

आपमें यह है कि अपनी शक्तिसे कहीं अधिक काम आप अपने ऊपर लेलेते हैं। बीचमें स्वभावतः गलती करते हैं और फिर झट उसके लिये माफ़ी माँग लेते हैं! यद्यपि भूल हो जानेपर माफ़ी माँगना उचित ही है परन्तु बार बार सर्वसाधारणमें माफ़ी माँगना कुछ शोभा नहीं देता। आप कभी भी राजनैतिक नेता नहीं बन सकते, इसका एक कारण यह भी है।

छटवाँ दोष।

लेकिन सबसे बड़ा दोष आपमें यह है कि आप अपने व्यक्तित्वको अपनेसे उच्चतर आदमी के व्यक्तित्व के सामने स्थायी नहीं रख सकते। महात्मा गांधीजी अथवा कविसम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व के सामने प्रायः आपका व्यक्तित्व सजीव नहीं रहता। कभी कभी तो आपका व्यक्तित्व केवल निर्जीव ग्रामोफोन की तरह ही रह जाता है। यद्यपि मैं जानता हूँ कि समय समय पर आप महात्मा गांधीजी तथा कविसम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर का घोर विरोध भी कर सकते हैं और कितने ही बार आपने ऐसा किया भी है, यह भी मैं मानता हूँ कि आप का असीम प्रेम ही इस दोष का मुख्य कारण है, तथापि यह दोष कदापि क्षन्तव्य नहीं कहा जा सकता। बीसियों आदमियोंका, जो मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के साथ रहचुके हैं, यह विश्वास है कि परमात्माने जो शुद्ध मानुषिक हृदय मि. ऐण्ड्रयूज़को दिया है वह केवल सच्चरित्रा सती साध्वी भारतीय माताओं में ही पाया जाता है

सातवाँ दोष।

और शायद ही कोई भारतीय नेता आपके हृदयकी गम्भीर मानुषिकता का मुकाबिला कर सके, इसलिये अन्य मनुष्यों के सामने आपके व्यक्तित्वको होते हुए देखकर और भी अधिक खेद होता है।

जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ, मि. ऐण्ड्र्यूज़ के चरित्र को अध्ययन करने के लिये मुझे बहुतसे अवसर मिले हैं, लेकिन इन सात दोषोंको छोड़कर उनमें मुझे कोई अन्य दोष नहीं दीखे। यदि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ के साथी मुझे उनके अन्य दोष बतलाने की कृपा करेंगे तो मैं अवश्य उनको इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण में सम्मिलित कर दूँगा।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के असाधारण गुणों के साथ उनकी उपर्युक्त मानुषिक कमज़ोरियों पर दृष्टि ड़ालते हुए हमें गोल्डस्मिथ का वह पद्य याद आता है।

Even his failings lean to virtue's side अर्थात् ' त्रुटि हू वाकी सबै धर्म की ओर झुकानी '

मिस्टर ऐण्ड्रयूजके चरित्रकी कुंजी।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के चरित्रके जिस भागको चित्रित करनेमें मैं फेल होता हूँ वह उनके स्वभावकी धार्मिकता और आध्यात्मिकता है। जो मनुष्य स्वयं धार्मिक और आध्यात्मिक हो वही सफलता पूर्वक चरित्रके इस भाग पर प्रकाश डाल सकता है, लेखकमें इन दोनों बातोंका सर्वथा अभाव होनेके कारण उसका इस भागमें फेल होना स्वाभाविक ही है। महात्मा गान्धीजीने अपने लाहौरवाले व्याख्यानमें कहा था कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ अन्याय तथा अत्याचारका घोर विरोध करते हुए भी अन्यायी और अत्याचारीके प्रति द्वेष नहीं करते और इसका कारण यही है कि वे आस्तिक हैं, ईश्वरमें उनका दृढ़ विश्वास है।

मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ स्वयं कहते हैं "धार्मिकता तथा आस्तिकबुद्धि मुझे अपनी माँसे मिली है जीवनभरमें मैंने कभी परमात्मामें अविश्वास नहीं किया"

ज्यों ज्यों मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की उम्र बढ़ती जाती है उनकी धार्मिक प्रवृत्ति और भी अधिक प्रबल होती जाती है। जिस समय आपकी

उम्रके ५० वर्ष पूरे हुए थे, आप दक्षिण अफ्रिकामें थे। आपकी वर्ष गांठके दिन वहाँके प्रवासी भारतीयोंने उत्सव मनाया था और मीटिङ्गमें सैकड़ों भारतीय मज़दूर इकट्ठे हुए थे। उस समय आपने कहा था "मेरे जीवनके अब ५० वर्ष पूरे हो चुके। मेरी अधिकाधिक इच्छा अब यही होती है कि राजनैतिक कार्य्योंके क्षेत्रसे दूर मैं किसी शान्तिमय स्थानमें अपनी वानप्रस्थ अवस्था धार्मिक भक्तिमें व्यतीत करूँ"

राजनैतिक उत्तेजनाओंके बीचमें आप बहुत देर तक नहीं रह सकते थोड़े दिनों बाद ही आपकी आत्मा एकान्त तथा शान्तिके लिये भटकने लगती है, और आपको शान्तिनिकेतनके लिये वापस लौटना पड़ता है। यदि आप बहुत देर तक अशान्तिमय वायुमंडलमें ठहरें तो आपके जीवनकी उत्साहदायिनी शक्ति नष्ट भ्रष्ट हो जावे, इसमें सन्देह नहीं।

मिस्टर ऐण्ड्रयूज़की भक्ति तीन प्रकारके मनुष्योंके प्रति है।

प्रथम—माताऐं।

द्वितीय—विद्यार्थी-समाज।

तृतीय—दीनदुखी समुदाय।

पाठक इस बातको भूले न होंगे कि मिस्टर ऐण्ड्रयूज़के दो बार फिजी जानेका मुख्य कारण यही था कि आप वहाँकी भारतीय माताओंके कष्टोंके विचारको सहन नहीं कर सकते थे। माताओंके प्रति आपके हृदयमें सर्वोच्च श्रद्धा है और उनकी उपस्थितिमें आपका हृदय विचित्र पवित्रताका अनुभव करता है। विद्यार्थी समाजके प्रति आपकी जो भक्ति है उसे द्वितीय स्थान देना चाहिये। सन् १९०९ में विद्यार्थियोंके सामने व्याख्यान देते हुए महात्मा गोखलेने कहा था।

"There is no greater friend of Indian students and Indian aspirations than Rev. C. F. Andrews."

"भारतीय विद्यार्थियों और भारतीय आकांक्षाओंका सहायक रैवरैण्ड ऐण्ड्रयूज़से बढ़कर दूसरा कोई नहीं है"

यद्यपि आपको छोटे छोटे बालकोंसे बहुत प्रेम है तथापि आपके हृदयको सबसे अधिक आकर्षित करते हैं कालेजके विद्यार्थी।

तृतीय स्थान दीनदुखी समुदायका है जब कभी आप दीनदुखियोंकी सेवाके लिये बाहर जाते हैं, आप अपने विद्यार्थियोंसे सम्मति लेकर जाते हैं और लौटने पर सब वृत्तान्त विद्यार्थियोंको सुनाते हैं, क्योंकि आपके विद्यार्थी भी आपके कार्य्योंको जाननेके लिये अत्यन्त उत्सुक रहते हैं।

इसके बाद साहित्य-सेवा आती है। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़को अपने जीवन भर दो बातोंके बीचमें संग्राम करना पड़ा है (१) साहित्यसेवा (२) दीनदुखियोंकी सेवा। ऐसे सौभाग्यशाली मनुष्य विरले ही होते हैं जिनमें इतनी उच्च कोटिकी विद्वत्ता, विचार शक्ति तथा लेखन शक्ति हो और साथही साथ जिनके हृदयमें दीन दुखियोंके लिये इतना अधिक प्रेम हो। पाठक इस बातको भूले न होंगे कि बड़े सम्मान पूर्वक केम्ब्रिज विश्वविद्यालयसे अपनी अन्तिम परीक्षा पास करनेके बाद मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने अपने जीवनके लगभग चार बहुमूल्य वर्ष लन्दनके गन्दे मुहल्लोंमें गरीबोंकी सेवा करते हुए व्यतीत किये थे। उस समय आपके लिये केम्ब्रिजमें उच्च पद पानेके प्रलोभन थे, साहित्य सेवा करनेका पूर्ण अवसर था, प्रसिद्धि प्राप्त करनेका अच्छा मौका था लेकिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर लंदनके गन्दे मुहल्लोंमें मानव-समाज-सेवा करना ही उत्तम तर समझा। मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की पिछली ३० वर्षोंका इतिहास मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की दो इच्छाओंके संग्रामका इतिहास है। कभी तो उनकी यह इच्छा होती है कि शान्ति पूर्वक एक जगह बैठकर विचार करें और उच्च कोटिके ग्रन्थों द्वारा उन्हें प्रगट करें, लेकिन फिर उनकी दूसरी इच्छा होती है कि दीन दुःखियोंकी सेवा ही करते रहें। यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं कि उनकी दूसरी इच्छा ही सर्वदा प्रबल सिद्ध होती है।

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ने श्रीरवीन्द्रनाथको पत्र लिखा था कि मैं अपनी सेवा--शान्तिनिकेतनको अर्पित करता हूँ उस समय भी आपके हृदयमें इन्हीं दोनों इच्छाओंका संग्राम हो रहा था क्योंकि उसी पत्र में आपने उन्हें लिख दिया था " अगर महात्मा गोखलेकी आज्ञा होगी तो मुझे दक्षिण अफ्रिका जाना पड़ेगा " निदान आपको दक्षिण अफ्रिका जाना ही पड़ा। तत्पश्चात् दो बार आप फिजी गये पूर्वी अफ्रिका गये दूसरी बार दक्षिण अफ्रिका गये, सीलोन गये। और गरज़ यह कि दीन दुखियोंकी सेवाके सामने साहित्य सम्बन्धी काम जहाँका तहाँ पड़ा रह जाता है।

कभी कभी लेखकोंके हृदयमें लिखनेकी विशेष प्रवृत्ति होती है और उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई शक्ति भाव प्रगट करनेके लिये अत्यन्त उत्सुक है। ऐसे अवसर प्रायः सभी अच्छे लेखकोंके अनुभवमें आते हैं। मिस्टर ऐण्ड्रयूज़ भी कभी कभी ऐसा अनुभव करते हैं कि यदि हम इस समय कुछ लिखेंगे तो वह अत्युत्तम होगा; लेकिन दुर्भाग्यवश इन अवसरों पर कोई न कोई मामला ऐसा आजाता है कि वह अवसर हाथसे निकल जाता है। आजकल आप Within or without the Empire साम्राज्यके भीतर या बाहर नामक एक लेख माला लिख रहे हैं। एक दिन आपकी प्रबल इच्छा हुई कि इस लेख मालाको दुहराकर समाप्त करदें। यह काम आप हाथमें लेने ही वाले थे कि दो सिख फिजीके करेंसी नोट लिये हुए आपहुँचे। नोट १७०२ पौण्डके थे। चक्कर लगाते लगाते बिचारे हैरान हो चुके थे। १० मार्च सन् १९२१ को ये सिख फिजीसे लौटे थे, और ३१ मार्चको फिर फिजी वापस जारहे थे, और सिर्फ इसी उद्देश्यसे जारहे थे कि वहां नोट भना लेंगे। मैं भी इन नोटोंको लियेहुए अनेक स्थानोंमें घूम आया था लेकिन फिजीके नोट कोई बैङ्क लेनेके लिये तय्यार नहीं थी। आखिर मिस्टर ऐण्ड्रयूज़को इसी चक्करमें दो दिन

ख़राब करने पड़े। मोटर गाड़ी, साइकिल और ट्रामसे बचते बचाते और हरेक बैङ्कका दरवाज़ा खटखटाते हुए आपके नाकों दम आगया। उस समय आप सोचते थे "यह काम मेरा नहीं है, इसे तो कोई दूसरा भी कर सकता था, मुझे बड़े जरूरी लेख लिखने हैं" फिर आप उन भोले भाले सिखोंके मुंहकी ओर देखते ओर सोचते "नहीं, यह काम मेरा ही है, मुझे ही करना होगा" दो दिनके कठिन परिश्रमके बाद जैसे तैसे इन नोटोंका प्रबन्ध ठीक हुआ। इस गड़बड़में "साम्राज्यके भीतर या बाहर" वाले लेख जहांके तहां पड़े रह गये!

उपनिवेशोंसे लौटे हुए आदमियोंको अगर तसल्ली मिलती है तो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़से ही। शायद ही कोई ऐसा सप्ताह बीतता हो जब फिजी या ब्रिटिश गायनासे लौटा हुआ कोई आदमी शान्तिनिकेतनमें न आवे। उनकी रामकहानी सुनने तथा उनके ठहराने इत्यादिके प्रबन्धमें मिस्टर ऐण्ड्रयूजका बहुतसा बहुमूल्य समय यों ही चला जाता है।

पंजाबके एक उच्च पदाधिकारी अंग्रेज़ अफसरने मिस्टर ऐण्ड्र्यूजसे कहा था "भारतमें ऐसा कोई दूसरा अंग्रेज़ नहीं है जो इतना भारतीय बन गया हो और साथ ही साथ जिसमें आपकी तरहकी विद्वत्ता और लेखन शक्ति हो। यदि आप शान्तिपूर्वक एक स्थान पर बैठकर भारतीय भावोंको पाश्चात्य संसारके सामने लानेके लिये ग्रन्थ रचना करें तो इससे मानव—समाजका बड़ा हित हो। पूर्वके उत्कृष्ट लेखक कविशिरोमणि रवीन्द्रनाथके सत्संगका सौभाग्य भी आपको प्राप्त है। लेकिन बजाय इसके आप मज़दूरोंके झगड़े सुलझानेके लिये इधरसे उधर भागे भागे फिर रहे हैं और इस प्रकार अपनी शक्तियोंका दुरुपयोग कर रहे हैं।"

कुछ अंशोंमें उपर्युक्त कथन ठीक भी है। यदि भगिनी निवेदिता अकाल पीड़ितोंका ही काम बराबर करती रहतीं और साहित्य सेवा न करतीं, तो मानव समाज web of Indian life इत्यादि सर्वोत्तम पुस्तकोंसे वंचित रह जाता। साहित्य सेवा भी मावन–समाज–सेवा ही है।

कभी कभी मिस्टर ऐण्ड्रूयूज़ कहा करते हैं "मैं ५० वर्षसे अधिक हो चुका। अपने जीवनके शेष वर्ष साहित्य सेवामें व्यतीत करना चाहता हूँ ; अब इधर उधर भागे फिरना ठीक नहीं।" लेकिन ज्योंही कहींसे दुखियोंकी पुकार आई कि आपका उपर्युक्त विचार शिथिल हो जाता है। बेगारियोंकी दशा देखनेके लिये आप शिमला प्रान्तको गये थे, फिर गढ़वाल जानेवाले थे और गर्मीके मौसममें राजपूताने जाना चाहते थे। साहित्य सेवाके लिये समय मिले तो मिले कहाँसे ? हम तो समझते हैं जिस दिन मिस्टर ऐंड्रूयूज़ने केम्ब्रिजसे सम्मानपूर्वक परीक्षा पास करनेके बाद १० शिलिङ्ग प्रति सप्ताह पर मज़दूरोंकी तरह लन्दनके गन्दे मुहल्लोंमें रहनेका निश्चय किया था, उसी दिन उनके जीवनका भावीक्रम निश्चित होगया था। रूसी देशभक्त स्वर्गीय कर्मवीर क्रोपाटकिनके जीवनमें भी एक ऐसा ही अवसर आया था। वे अत्युच्च कोटिके विज्ञान वेत्ता थे लेकिन फिनलैण्डके दीन दुखी किसानोंकी दुर्दशा देखकर आपने मनमें कहा था "संसारमें विज्ञानकी जितनी उन्नति हो चुकी है वह बहुत काफी है, पहले इन अत्याचार पीड़ित भूखे किसानोंके पेट भरनेका प्रबन्ध होना चाहिये। मुझे क्या अधिकार है कि मैं इन लोगोंको इस दुर्दशामें छोड़कर स्वयं वैज्ञानिक अनुसंधान करूँ ?" बस उस दिनसे ही उन्होंने अपने किसान भाइयोंकी सेवा करना निश्चित कर-लिया। जो प्रतिभा विज्ञानके सूक्ष्म तत्वोंके अनुसंधान में लगती थी वह किसानोंको मोटी मोटी बातें समझानेमें व्यतीत होने लगी। इसका जो परिणाम हुआ वह संसार जानता है। रूसकी वर्तमान जागृतिका श्रेय मुख्यतया तीन आदमियोंको है टालसटाय, क्रोपाटकिन और लैनिन। अस्तु, मेरे कहनेका अभिप्राय यह है कि जबतक कोई आत्मा अपनी प्रतिभाकी आहुति दीन-सेवाके यज्ञमें नहीं देती, तब तक जागृतिकी ज्योति उत्पन्न नहीं होती।

लोग कहते हैं कि मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ने ४५००) दक्षिण अफ्रिका फंडमें देकर बड़ा आत्मत्याग किया, लेकिन हम इसे अधिक महत्व नहीं देसकते। सबसे बड़ा आत्मत्याग जो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़ कर रहे हैं वह यही है कि वे अपनी उच्चकोटिकी मानसिक शक्तियोंकी आहुति भारतके दीन दुखियोंकी सेवारूपी वेदीपर दे रहे हैं।

प्रिय पाठक गण, आपने मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़की जीवनी पढ़ली। आपने देखा कि एक निर्बल अँग्रेज़ बालकने, जिसे मातापिताकी निर्धनताके कारण कभी सूखी रोटी खाकर ही पेट भरना पड़ता था, अपने परिश्रमसे भारतीय जनताके हृदयमें कितना उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है कि आज भारतके सर्वश्रेष्ठ नेता महात्मा गान्धीजीको लिखना पड़ा है।

"मेरा विश्वास है कि भारतभरमें ऐण्ड्र्यूज़से ज्याद: सच्चा, उनसे बढ़कर नम्र और उनसे अधिक भारतभक्त दूसरा कोई विद्यमान नहीं है ....जब तक अंग्रेज़ जातिमें एक भी ऐण्ड्र्यूज़ विद्यमान हो तब तक हम अंग्रेज़ जातिसे द्वेष नहीं कर सकते"

मैं जानता हूँ कि इस पर भी कुछ लोग कहेंगे "गोरे सभी दुष्ट होते हैं। गोरोंपर कभी विश्वास न करना चाहिये!" ऐसे सहृदय (?) सज्जनोंसे मैं क्षमा माँगता हूँ।

भारत भक्त ऐण्ड्र्यूज़ उन व्यक्तियोंमेंसे हैं जिनका नाम स्वाधीन भारत भूमिके इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जावेगा। समय आवेगा जब लोग कहेंगे कि हमारी मातृभूमिको पराधीनतासे छुड़ानेमें एक अंग्रेज़ने भी सेवक बनकर निस्स्वार्थ रूपसे सहायता दी थी। प्रवासी भारतीयोंका इतिहास तो मिस्टर ऐण्ड्र्यूज़के जीवनसे इतना अधिक सम्बन्द्ध है कि वह बिना उनके जीवन चरित्रके पूर्ण हो ही नहीं सकता। राष्ट्रीय शिक्षाके भावी इतिहास लेखकको भी सी. ऐफ. ऐण्ड्र्यूज़का नाम कृतज्ञताके साथ स्मरण करना पड़ेगा और जब लोग शर्तबन्दी गुलामीका

वृत्तान्त लिखने बैठेंगे तो उन्हें लिखना पड़ेगा कि उदार हृदय ऐण्ड्रयूजने इस दासत्वकी जंजीरोंको किस प्रकार तोड़ा।

पाठक वृन्द !

इस समय रात्रिका एक बज रहा है। सर्वत्र शान्ति है। वसन्त ऋतुकी शीतल मन्द सुगन्ध पवन चल रही है। शान्तिनिकेतनके असंख्य तारागण पूरित आकाश मंडलकी ओर देखते हुए मुझे कविसम्राट श्रीरवीन्द्रनाथका यह पद्य याद आरहा है।

" तार आकाश भरा कोले
मोदेर दोले हृदय दोले
मोरा वारे वारे देखितारे नित्यई नूतन "

नित्य नवीन शोभा प्राप्त इस पवित्र तीर्थस्थानके इसी प्रकाशके नीचे परमात्मासे चरितनायकके चिरायु होनेकी प्रार्थना करते हुए मैं भी यही कहता हूँ:—

" स्वत्व रक्षा दीनोंका मान तुम्हारे जीवनका है सार
जगतके सब वैभवको छोड़ किया है प्रेम पन्थ स्वीकार
तुम्हारा उच्चाशय सन्देश, हमारा है आदर्श महान
तुम्हारा जीवन क्या है देव वीणाकी है शुभ तान। "
न होने देते हरण कदापि स्वत्व दीनोंके पूज्य महान
सहन होता है तनिक न तुम्हें देवियोंका रंचक अपमान
कहीं यदि होता है अन्याय त्रसित होते भारत सन्तान
अड़ादेते हो अपनी देह, लड़ा देते हो अपनी जान।
जगाओ प्रिय भारतके भाग्य सुनाओ प्रिय रवीन्द्र सन्देश
तुम्हारे अनुकंपामय कार्य्य मिटादें माताके सब क्लेश
उठे इस भारतमें वह राग, शिथिल हो कभी न जिसकी तान
जगे हममें वह जागृति ज्योति, न जिसका बुझे प्रकाश महान।"

वन्दे मातरम्।